अप्रैल (प्रथम) 1994, रुपए 14.00

सरिता

पर्यटन विशेषां

पूर्व अर्ध भारत के 35 से अधिक पर्यट
स्थलों की महत्त्वपूर्ण जानकारी




VIPU
SAREE
THE DESIRE OF A BEAUTIFUL WOMAN.
VIPUL SARE
WITH
OVER 200
NEW DESIG
EVERY MON
TO CHOOSE
FROM.
IN GORGEO
GEORGETTE
NISHI, ULT
CHIC CHIFF
CRISPAL
LA DONA.
SWISS MIC
EXQUISITE
POLYESTER
PRINTS
VIPUL
SAREES AND FASHION FABRICS

पर्यटन विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक
की पाक्षिक

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 935 अप्रैल (

लेख

पर्यटन परिशिष्ट

कथा साहित्य



स्तंभ

कविताएं



मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कायालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
अन्य कार्यालय : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
जी-3, एचवीएस कोर्ट, कनिंघम रोड, बंगलौर-560052. 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फ्लैट नं. बी-जी/3, 4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001.
111, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, पटना-800001. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य : केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लिमिटेड' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. नहीं

विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 20 सेंट अमेरिकी डालर, डाक व्यय अतिरिक्त
वार्षिक : 20.00 अमेरिकी डालर, समुद्री डाक से
45.00 अमेरिकी डालर, हवाई डाक से

मूल्य : एक प्रति 10 रुपए. वार्षिक 240 रुपए. यह प्रति 14 रुपए
वायुसेवा आधभार 75 पैसे प्रति.
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

ब्रिटैनिया

फल दिलरुबा



सामग्री

ब्रिटैनिया वैनिला चॉकलेट रिबन केक	3 स्लाइस
सेब	1/2
हरे अंगूर	1/4 कप
चीकू	1/2
संतरा	1/2
पपीता	1/4 कप
चीनी	4 बड़े चम्मच
पानी	1/4 कप

विधि

फलों को साफ करके पतला काट लें.

चीनी एक बरतन में डाल कर धीमी आंच पर कैरामेल होने के लिए रखें. जब लाल होकर भुन जाए तो पानी मिला दें. अब फल डाल कर एक मिनट पकाएं. आंच पर से उतार लें.

एक प्लेट में केक के स्लाइस रखें और ऊपर से कैरामेल और फल डाल दें. इसे आप फेंटी हुई क्रीम से सजा सकती हैं.

मुलायम, मज़ेदार ब्रिटैनिया केक्स. तरह-तरह के स्वाद. ऐसे, कि दिल पिघल जाएं. किसी भी टॉपिंग के साथ लाजवाब.

दीवाना आपको करें



ब्रिटैनिया केक्स

मुफ़्त रेसिपी बुक के लिए, अपने नाम व पते के साथ लिखें : पी. ओ. बॉक्स नं. 471, बैंगलोर 560 004.

Enterprise/Blr/BIL/187 Hi

आप के पत्र



सरित प्रवाह/फरवरी/द्वितीय

राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा के प्रति आप की टिप्पणी सटीक लगी. शंकर दयाल शर्मा राष्ट्र की किसी और प्रकार से भी सेवा कर सकते हैं. अपनी अस्वस्थता के कारण वह भारत की छवि बिगाड़ रहे हैं. वास्तव में हमारी नायकवादी प्रवृत्ति ही हमें ऐसा करने पर विवश करती है वरना ऐसे बीमार और लाचार व्यक्ति इतने महत्त्वपूर्ण पद पर न बैठते. हमारी पुरातन के प्रति रुचि के कारण संग्रहालयों में सुसज्जित वस्तुएं भी हमें सजीव लगती हैं.

शारीरिक अपंगता के अलावा मानसिक अपंगता भी हम में कम नहीं है. सुखराम जैसे मंत्री जो क्षेत्रीय लगाव से ऊपर उठ कर राष्ट्रीय धारा में मिलना ही नहीं चाहते और अपने विभाग की अनियमितताओं पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे हैं तथा राजेश पायलट जैसे चाणक्य बारबार कशमीर समस्या को उलझा कर भी वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं, कम विकलांग नहीं हैं. ये लोग देश को भी अपंग बनाए रखना चाहते हैं.

—बालकृष्ण चौधरी

*

मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के नामांतरण से हुए हंगामे पर आप के विचार अच्छे लगे. राजनीतिबाजों व तथाकथित मसीहाओं के नाम पर शिक्षण संस्थाओं को चलाने की प्रथा निश्चय ही समयसमय पर सामाजिक टकरावों को जन्म देती है. मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नामांतरण किसी भी दृष्टि से तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता. विश्वविद्यालयों का नाम स्थान विशेष के नाम पर होना चाहिए. प्राचीन काल में नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला विश्वविद्यालय तथा आधुनिक भारत के कलकत्ता, बंबई, मद्रास और इलाहाबाद विश्वविद्यालय इस के उदाहरण हैं.

स्कूलों के नामकरण के लिए हम भूतपूर्व सोवियत संघ से सीख ले सकते हैं जहां स्कूल संख्या से जाने जाते हैं.

गलियों, सड़कों आदि के नामकरण के लिए बंगलौर वाली व्यवस्था उचित है जहां हर महल्ले में विभिन्न सड़कों की पहचान निश्चित संख्या से की जाती है. जैसे जालहल्ली छठा क्रास चौथी गली.

—नलिन मल्हीपुरी

अस्तित्व का प्रश्न

लेख 'मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नामांतरण: बेबात का विवाद' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. आज जबकि हर चीज का राजनीतिकरण हो गया है तब अगर विश्वविद्यालय का नाम बदल कर वोट बैंक पुख्ता कर लिया जाए तो बुरा क्या है?

सतही तौर पर हर राजनीतिक विवाद बेबात का लगता है लेकिन हमारे राजनीतिबाजों के लिए यह अपने अस्तित्व का प्रश्न होता है. विश्वविद्यालय का नाम बदलना मुख्यमंत्री शरद पवार के लिए राजनीतिक मजबूरी बन गया था. जिस प्रकार उत्तर प्रदेश के चुनावों में कांग्रेस का पारंपरिक दलित वोट खिसक कर सपाबसपा की झोली में चला गया तथा विश्वनाथ प्रताप सिंह व कांशी राम के बीच जिस प्रकार नजदीकियां बढ़ रही हैं, शरद पवार के लिए अंबेडकर का पत्ता खेलना आवश्यक हो गया था.

—हिमांशु कुमार 'मिश्र'

*

खौफनाक स्थिति

लेख 'कितना बदल गया कशमीर' (फरवरी/द्वितीय) में जो कशमीर की तसवीर दिखाई गई है वह दिल दहलाने वाली व खौफनाक लगी.

डल झील के सुंदर शिकारों के बीच गश्ती कमांडो की बोट दिखाई पड़ना घाटी की खौफनाक स्थिति की कहानी स्वयं कह देता है.

क्या युवा पीढ़ी इस की सुंदरता का अवलोकन कर पाएगी. या उसे सिर्फ खंडहर व उजाड़ बगीचों में बने बंकरों के अवशेष ही देखने को मिलेंगे.

—सतीश शर्मा

*

सर्कस कलाकारों का दर्द

लेख 'सर्कस आया शहर में' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. दूसरों के मनोरंजन व अपने पेट की खातिर सर्कस के कलाकारों को कितने कष्ट सहने पड़ते हैं. राजकपूर ने अपनी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में इन के दर्द का सजीव चित्रण किया था. इन पर यह शेर सही बैठता है:

होंठों पर हंसी देख ली अंदर नहीं देखा,
यारों ने मेरे गम का समंदर नहीं देखा.

—बृजबाला कंसल

*

अपने अंदर झांकें

लेख 'तौल कर बोलिए' (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा. किसी ने ठीक ही कहा है कि कमान से निकला तीर और जबान से निकली बात एक सा ही काम करती है. दूसरों के दोष ढूंढ़ने से पहले अपने अंदर झांक कर देखें.

—मो. इरफान राईन

*

मूर्ख बनाने की कला

लेख 'क्या सम्मोहन से मनचाहा कार्य संभव है?' (फरवरी/द्वितीय) विचारोत्तेजक लगा. तंत्रमंत्र द्वारा सीधेसादे वर्ग को कुछ पाखंडी लोग मूर्ख बनाते रहते हैं.

आगे

'सरिता' पाखंडियों की पोल खोलने में काफी हद तक सफल रही है. —महेश मोदी

*

फिल्मी कलाकारों की मजबूरी

लेख 'इमेज की मार और ये फिल्मी कलाकार' (फरवरी/द्वितीय) सशक्त था. हमारी फिल्मों की यह बहुत ही गलत परंपरा रही है कि जब किसी कलाकार की कोई फिल्म हिट हो जाती है तो वह उसी तरह के रोल में बंध जाता है क्योंकि दर्शक उसे उसी रूप में देखना चाहते हैं. कलाकारों को यह कोशिश करनी चाहिए कि वे इस इमेज के चक्कर से निकल कर अभिनय पर ध्यान दें. बेहतर अभिनय से ही वे इसे तोड़ने में सफल हो सकते हैं. —ऋषि कुमार खदरिया

*

गलतियां

लेख '1993 का संगीत : फिल्मी तथा गैरफिल्मी संगीत का लेखाजोखा' (फरवरी/प्रथम) बहुत पसंद आया, लेकिन इस में कुछ गलतियां छूट गई हैं.

फिल्म 'अनाड़ी' के संगीतकार का नाम नदीम श्रवण दिया गया है जबकि इस फिल्म के संगीतकार आनंद मिलिंद थे.

फिल्म 'बाजीगर' का गाना 'ये काली काली आंखें...' को अनुराधा पौडवाल का हिट गाना बताया गया है जबकि इसे कुमार शानू व अनु मलिक ने गाया है.

फिल्म 'डर' का गाना 'दरवाजा बंद कर लो' हरिहरन द्वारा गाया हुआ बताया है जबकि इसे अभिजीत ने गाया था. कृपया आगे से ऐसी गलतियां दोबारा न करें. —विमल भट्टराई

*

लेख '1993 का संगीत : फिल्मी तथा गैर फिल्मी संगीत का लेखाजोखा' (फरवरी/प्रथम) काफी जानकारी समेटे था. परंतु एक जगह गलती से फिल्म 'डर' का गीत 'दरवाजा बंद कर लो' हरिहरन का गाया हुआ बताया गया है. यह गाना वास्तव में अभिजीत ने गाया था. —अर्चना वर्मा

*

चंचल छाया (जनवरी/प्रथम) स्तंभ के अंतर्गत फिल्म 'डर' की समीक्षा पढ़ी. इसे मात्र 2 ही स्टार दिए गए हैं जबकि यह दर्शकों को बेहद पसंद आई थी. सरिता में फिल्म की समीक्षा किस आधार पर की जाती है, कृपया बताएं ? —हरमिंदर

सच कहना

जब भोर लजाती
पूरब से
उषा ने घूंघट
खोला था,
तब नीलगगन
के आंचल में
सिहरन न हुई थी,
सच कहना.

जब अमराई में
बौर खिले
कोयल ने
तुम्हें पुकारा था,
तब तन के
इस गुलदस्ते में
हलचल न हुई थी,
सच कहना.

जब नयन
अजाने
विहंसे थे
होंठों ने
गीत संवारा था,
तब मन के
निश्चल कोने में
विचलन न हुई थी,
सच कहना.

—पदमा जगदीश



बच्चों के मुख से

मेरा 5 वर्षीय बेटा आभास बहुत बातूनी व हाजिरजवाब है. एक बार वह अपनी खिलौने की बंदूक से पिताजी को मारने का अभिनय कर रहा था. मेरे मामाजी ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "आभास, गोली लग जाएगी तो जेल में तुम्हें चक्की पीसनी पड़ेगी."

आभास ने बहुत मासूमियत से जवाब दिया, "मामाजी, चक्की तो लड़कियां पीसती हैं. मैं तो लड़का हूं, इसलिए पत्थर तोड़ूंगा." —शानू मोहन



हम लोग दिल्ली के एक म्यूजियम में घूम रहे थे. वहां अंगरेजों की विभिन्न पोशाकों व वेशभूषा को देख कर मेरे 6 वर्षीय बेटे ने पूछा, "ये सब क्या है?"

मैं ने कह दिया, "ये सब अंगरेजों के कपड़े हैं."

थोड़ी देर सोचने के बाद बेटे ने कहा, "मां, क्या अंगरेज यहां से नंगे ही भागे थे?"

—संतोष चोपड़ा

*

एक बार मैं कक्षा में बच्चों को मनुष्य के अंगों व उन की उपयोगिता के बारे में बता रहा था. बीचबीच में बच्चों से प्रश्न भी पूछ लेता था.

तभी मेरी निगाह एक बच्चे पर पड़ी जो टाफी खा रहा था. गुस्से में मैं ने उस से पूछा, "तुम्हारे मुंह में क्या है?"

"जी, जीभ व दांत," उस ने बहुत मासूमियत से जवाब दिया. —प्रदीप कुमार वर्मा

*

मैं ने अपने 3 वर्षीय बेटे विक्की से कहा, "तुम्हारे पिताजी झूठ बोल कर जाते हैं. दोपहर में आने को कहा था, शाम हो गई, अभी तक नहीं आए."

मेरी बात सुनते ही विक्की बोला, "मां, मेरे पिताजी झूठ बोल कर नहीं, 'टाटा' बोल कर जाते हैं." अनीता सिन्हा

*

एक बार मेरे पिताजी कपड़े धोने का घटिया पाउडर ले आए. मां ने कहा, "यह कौन सा पाउडर आप उठा लाए?"

तभी पास बैठे मेरे 5 वर्षीय भतीजे ने फौरन कहा, "लगता है दादाजी ने कल इस का विज्ञापन टीवी पर देख लिया था." —कु. आलिया खानम

*

मैं ने अपने 5 वर्षीय बेटे को हिंदी पढ़ाते हुए पूछा, "बैठक का अर्थ जानते हो?"

वह तुरंत खड़े हो कर अभिनय के साथ बोला, "हां मां, बैठक का अर्थ होता है उठा बैठक." अनीता तिवारी

अध्यापिका ने कक्षा में पढ़ाते हुए कहा, "मानव वही है जो दूसरों के काम आए?"

मेरे 8 वर्षीय भानजे ने कहा, "लेकिन परीक्षा भवन में न तो आप स्वयं हमारे किसी काम आती हैं, न हमें दूसरों के काम आने देती हैं."

—सुखराज सिंह देवल

*

हम लोग सपरिवार यात्रा के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे. वहां एक नवनिर्मित फव्वारा चल रहा था और उस पर एक

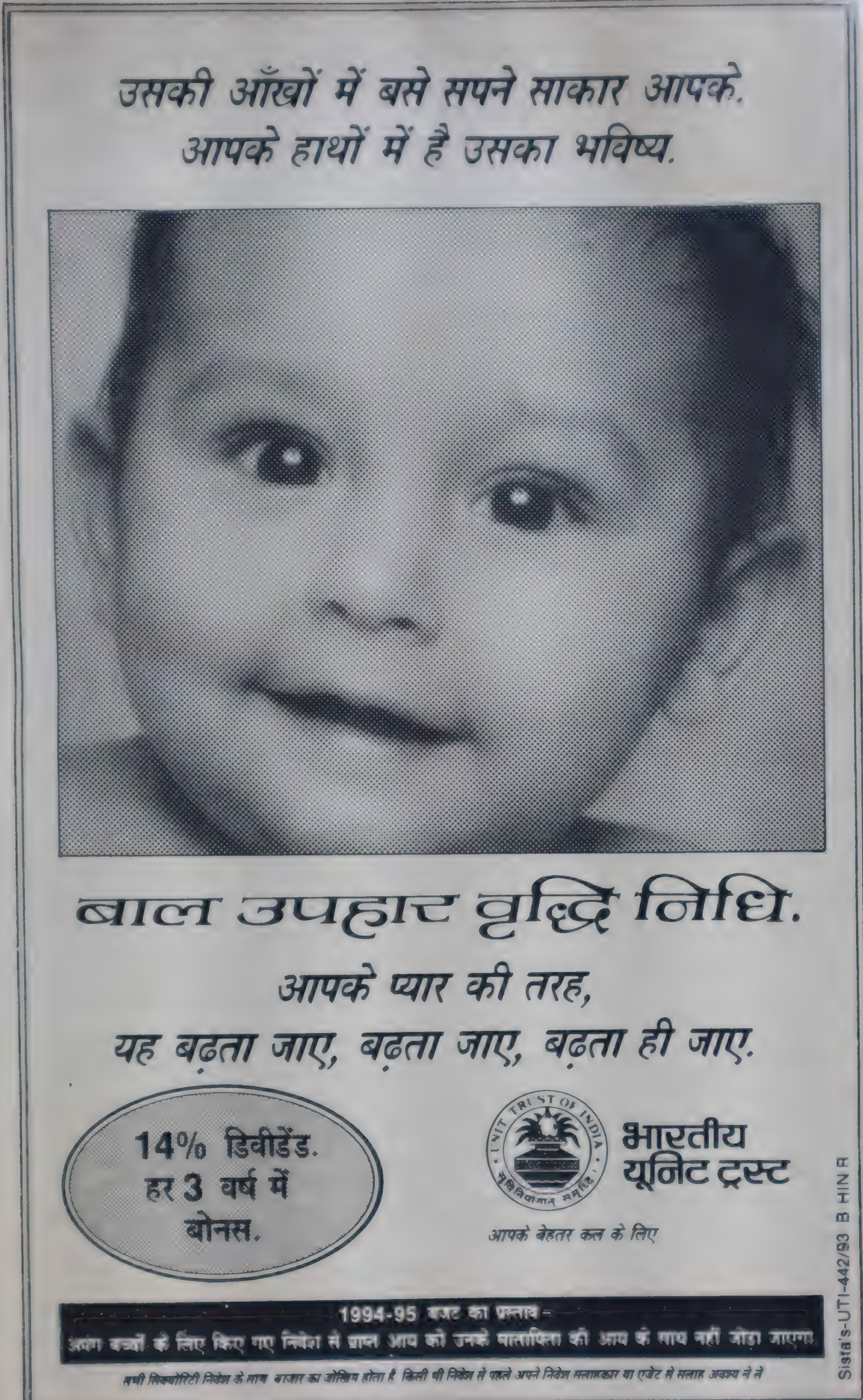


कंपनी का नाम लिखा था 'आई टी.सी. के सौजन्य से.'

जब हम प्लेटफार्म पर पहुंचे तो रेलवे की एक फटी पाइप से फव्वारे की तरह पानी निकल रहा था. उसे देख कर हमारे 6 वर्षीय भतीजे ने पूछा, "चाचाजी, क्या यह भी आई.टी.-सी. के सौजन्य से लगा है?"

अनुज कुमार जैन●

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.


उसकी आँखों में बसे सपने साकार आपके.
आपके हाथों में है उसका भविष्य.
बाल उपहार वृद्धि निधि.
आपके प्यार की तरह,
यह बढ़ता जाए, बढ़ता जाए, बढ़ता ही जाए.
14% डिवीडेंड.
हर 3 वर्ष में
बोनस.
UNIT TRUST OF INDIA
भारतीय
यूनिट ट्रस्ट
आपके बेहतर कल के लिए
1994-95 बजट का प्रस्ताव –
अवयस्क बच्चों के लिए किए गए निवेश से प्राप्त आय को उनके मातापिता की आय के साथ नहीं जोड़ा जाएगा.
सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाजार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या एजेंट से सलाह अवश्य ले लें
Sista's-UTI-442/93 B HIN R

सरित प्रवाह

वर्ष 1994-95 के बजट में जहां अनेक वस्तुओं पर उत्पादन शुल्क (एक्साइज ड्यूटी) और आयात शुल्क (इंपोर्ट ड्यूटी) कम की गई है, वहां अनेक वस्तुओं पर नई एक्साइज ड्यूटी थोप दी गई है. जैसे आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक दवाइयों, कीटनाशक दवाओं, बरतनों, जूतों और चमड़े के सामान पर. इस के अलावा जो सब से ज्यादा आपत्तिजनक प्रावधान है सेवाओं पर उत्पादन शुल्क–फिलहाल यह टैक्स टेलीफोन के बिल, विविध बीमा और शेयर दलालों की कमीशन पर ही है. इस समय यह टैक्स 5% है, पर इस के क्षेत्र और दरें बढ़ने का रास्ता खोला जा रहा है.

शुरूशुरू में जब उत्पादन शुल्क लगाया गया था तो यह केवल कुछ सामान पर और वह भी केवल 1% था. अब शायद ही इस टैक्स से कोई चीज बची हो. यही हाल सेवाओं पर लगने वाले नए टैक्स का होगा और धीरेधीरे यह सभी सेवाओं पर लगने लगेगा.

समझ में नहीं आता कि जब हर व्यक्ति और संस्थान आयकर देता है और उपभोक्ता हर सामान पर उत्पादन शुल्क देता है तो यह नया टैक्स लगाने की क्या जरूरत थी? इस नए टैक्स को वसूल करने के लिए सरकारी टैक्स अमला बढ़ाया जाएगा और नागरिकों को एक नई मुसीबत में डाला जाएगा.

हमारे पुस्तक लिखने वाले अर्थशास्त्री व सरकारी अफसर अकसर कहते हैं कि इतने बड़े देश के केवल कुल एक लाख व्यक्ति ही आयकर देते हैं. इन की संख्या बढ़नी चाहिए. पर हुजूर, आप जब हर वस्तु पर एक्साइज और सेल्स टैक्स इत्यादि लगा कर भरपूर कर वसूल कर लेते हैं तो इस से क्या फर्क पड़ता है कि आयकर देने वाले व्यक्ति केवल एक लाख हैं? कर की मार से तो कोई भी बचता ही नहीं, गरीब से गरीब, अमीर से अमीर, क्योंकि जो भी वह सामान केवल जीवित रहने भर के लिए खरीदता है, उस पर पहले ही टैक्स लदा होता है.

आवश्यकता तो सरकारी खर्च कम कर के टैक्स कम करने की है, न कि नएनए टैक्स आविष्कार कर के जनता को सरकारी अमले की ऐयाशी के लिए हजारों करोड़ रुपए चूसने की, हर वर्ष बढ़ते हुए सरकारी अमले, नुकसान देती सरकारी कंपनियों के फालतू कर्मचारियों और अफसरों को बजाय रिटायर करने के उन्हें पालनेपोसने पर खर्च होते हैं. ये खर्च क्यों नहीं काटे जाते? इन कंपनियों में 1,00,000 करोड़ रुपए से अधिक पूंजी लगी है, और इन से आय 1% से अधिक नहीं होती. इन सफेद हाथियों को पालने के लिए मेहनत करने वाले नागरिकों पर क्यों नए और अधिक टैक्स लगाए जाएं, क्यों फालतू नोट छाप कर सामान और सेवाओं को सरकार द्वारा जब्त कर लिया जाए?

*

राज्य सभा में पिछले महीने कुछ सदस्यों ने मांग उठाई कि हिंदू अनुसूचित जातियों और आदिवासियों की तरह ईसाई धर्मावलंबी अनुसूचित जातियों व आदिवासियों के लिए भी वही सुविधाएं उपलब्ध

कराई जाएं क्योंकि वे लोग भी उन्हीं बाधाओं और प्रतिबंधों और जुल्मों के शिकार हैं जिन के हिंदू अनुसूचित/आदिवासी लोग हैं.

पर ईसाई मजहब के धर्माधिकारियों, धर्मबाजों की तो मान्यता यही है कि उन के धर्म में इस प्रकार का कोई भेदभाव है ही नहीं, वहां सब एक स्तर के लोग हैं, और सभी एकसाथ 'गौड' के दरबार में पहुंचेंगे. फिर अगर भेदभाव, बाधाएं हैं, तो ये धर्मबाज पहले अपने धर्म में सुधार क्यों नहीं करते, क्योंकि इसी आधार पर तो उन्होंने हिंदू जातियों को ईसाई बनाया था?

अगर यह कहा जाए कि क्रिश्चियन अनुसूचित जाति वाले गरीब हैं और गरीबी और मुफलिसी के आधार पर उन्हें आरक्षण मिलना चाहिए तो फिर अनुसूचित/आदिवासी जातियों का जाति के आधार पर आरक्षण का प्रश्न ही नहीं उठता. फिर तो केवल गरीबी/अमीरी के आधार पर सरकारी सुविधाएं दी जानी चाहिए, न कि जाति और धर्म के नाम पर.

इस मांग से यह भी साबित होता है कि केवल धर्म परिवर्तन से कोई लाभ इन जातियों को नहीं पहुंचता, और जिन लोगों ने धर्म के नाम पर हिंदू समाज को तिलांजलि दी उन्होंने न स्वयं कोई लाभ उठाया, न बाकी बचे लोगों को कोई सही राह दिखाई. इस विषय में भीमराव अंबेडकर के अनुयायियों की क्या धारणा है? अंबेडकर ने बौद्ध धर्म बड़ी धूमधाम से ग्रहण किया. पर इस से किसी को क्या लाभ हुआ?

वैसे हिंदू समाज को इस पर कोई बड़ी आपत्ति नहीं हुई क्योंकि बौद्ध धर्म तो हिंदू धर्म के दायरे ही में आता है.

यह सारा वादविवाद एक बार फिर यह साबित करता है कि धर्म/मजहब मानव को, समाज को, टुकड़ों में बांटता है. एकदूसरे को आपस में लड़ाता है. एकदूसरे का खून बहाने में सब से बड़ा सहायक और उकसाने वाला है.

धर्म/मजहब के मामले में भारत के उच्चतम न्यायालय ने पिछले महीने एक बहुत महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया है. इस निर्णय का संबंध दिसंबर 1992 की अयोध्या घटना के बाद केंद्र द्वारा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकारों को बरखास्त करने से है.

जब केंद्र की कांग्रेसी सरकार ने इन भाजपा सरकारों को बरखास्त कर दिया तो कुछ लोगों ने इस कदम के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील की– क्या केंद्र को संविधान की धारा 356 के अंतर्गत राज्य सरकारों को बरखास्त करने का अनियंत्रित अधिकार है?

न्यायालय ने इस विषय में कहा है कि आगे से केंद्रीय सरकार बिना संसद के दोनों सदनों द्वारा पास की गई उद्घोषणा के किसी राज्य विधानसभा को बरखास्त नहीं कर सकती और यह कदम न्यायालय की जांच की परिधि दायरे में आता है. न्यायालय सरकार से इस मामले में जवाबतलब कर सकता है कि बरखास्तगी का क्या कारण है और यह कारण उचित था या नहीं, यह भी फैसला कर सकता है.

दूसरी बात जो न्यायालय ने कही वह यह है कि धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान का मूलभूत सिद्धांत है और जो सरकार इस के विरुद्ध कोई कदम उठाती है, उसे बरखास्त किया जा सकता है. इसी आधार पर न्यायालय ने भाजपा की सरकारों की बरखास्तगी को उचित बतलाया.

परंतु राजस्थान, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश की सरकारों द्वारा धर्मनिरपेक्षता का क्या उल्लंघन हुआ था, यह न्यायालय ने, प्रकाशित समाचारों के अनुसार, स्पष्ट नहीं किया.

जहां तक धर्म का प्रश्न है वहां तक तो यह ठीक है. पर भारतीय संविधान का दूसरा प्रमुख सिद्धांत समाजवाद भी तो है. यदि कोई पार्टी समाजवाद के बजाय खुले

बाजार, उपभोक्ता के सर्वोपरि होने की पैरवी करती है तो क्या वह भी संसद और विधानसभाओं के लिए अछूत मानी जाएगी?

*

दिल्ली की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने कर्मचारियों के लिए नए न्यूनतम वेतनमान निर्धारित किए हैं जो देश में सब से अधिक हैं. मुख्यमंत्री मदनलाल खुराना ने इस कारगुजारी पर अपनी पीठ ठोंकी है.

दिल्ली में एक अकुशल कर्मचारी का वेतन 1,382 रुपए रखा गया है जबकि बंबई में यह 1,128, कलकत्ता में 700, अहमदाबाद में 807, हरियाणा में 1,046, उत्तर प्रदेश में 1,037, और पंजाब में 1,075 है.

न्यूनतम वेतन एक हद तक तो ठीक है पर जब इस में अति हो जाए तो यह मूल्य नियंत्रण 'प्राइस कंट्रोल' की तरह बन जाता है और इस की बड़े पैमाने पर अवहेलना होती है.

चीजों और सेवाओं के दाम बाजार-भाव, मांग और उपलब्धि पर निर्भर रहते हैं और जहां भी, जब भी, इन पर कंट्रोल हुआ तो कालाबाजार पैदा हो जाता है और कानून की अवहेलना होती है. हर व्यक्ति को बेईमान बनना पड़ता है. महंगाई के अनुपात में तो वेतन बढ़ना ही चाहिए और स्वयंमेव बढ़ता ही रहता है पर इस पर भी सरकारी कंट्रोल क्यों हो? जहां वेतन पर्याप्त नहीं होते वहां कर्मचारी अपनेआप गायब हो जाते हैं और मजबूरन वेतन बढ़ते रहते हैं.

वैसे भी, एक ओर तो सरकार यह रोना रोती है कि दिल्ली में हर वर्ष कई लाख नए व्यक्ति बाहर से आ कर बसते हैं और इन के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हैं. यदि दिल्ली में सब से अधिक वेतन दिए जाएंगे तो क्या यहां बाहर के लोगों की बाढ़ नहीं आ जाएगी? क्या दिल्ली से प्रदूषण, आवास, पानी, बिजली की किल्लत और यातायात से और घुटन पैदा नहीं होगी?

आज आवश्यकता तो दिल्ली में न केवल आबादी बढ़ने से रोकने की है बल्कि घटाने की है. न्यूनतम वेतनों में असाधारण वृद्धि कर के दिल्ली सरकार क्या करना चाहती है?

*

दैनिक जनजीवन में कंपिटीशन, प्रतिस्पर्धा का क्या महत्त्व है इस का उदाहरण भारत सरकार के एकाधिकार आकाशवाणी रेडियो और दूरदर्शन टीवी हैं.

कुछ दिनों पहले तक इन दोनों का किसी से कोई मुकाबला नहीं था. इन के अधिकारी मनमरजी का सामान जनता के आगे परोसते थे. और यदि कोई आलोचना या असंतोष जाहिर किया जाता तो कहते, आप को नहीं सुनना, देखना हो तो स्विच बंद कर दीजिए. हमारे पास तो और कुछ नहीं है, हमें आप की परवाह भी नहीं है. हमारी रोजीरोटी आप पर निर्भर नहीं है.

पर केबल और स्टार टीवी के आने से टीवी की तो कायापलट ही हो गई है. उपग्रह द्वारा प्रसारित और घरघर में केबल आपरेटरों द्वारा इन की पहुंच ने दूरदर्शन को झंझोड़ दिया है. दूरदर्शन के दर्शकों ने अंगरेजी के स्टार टीवी और उसी के द्वारा प्रसारित हिंदी के जी टीवी को बड़े उत्साह और हर्ष से अपना लिया. दूरदर्शन पर से विज्ञापन गायब होने लगे हैं, जिन से उसे कई सौ करोड़ रुपए वार्षिक की मोटी आमदनी थी. पत्रपत्रिकाओं में व आपसी बातचीत में दोनों विदेशी टीवी तंत्रों की प्रशंसा व चर्चा होने लगी है. यहां तक कि भारत सरकार के मंत्री व विपक्षी राजनीतिक नेता भी जी टीवी के कार्यक्रमों में खुल कर भाग लेने लगे हैं, जिन में से 'आप की अदालत' उल्लेखनीय है. जिन नेताओं, प्रतिष्ठित लोगों और अधिकारियों को दूरदर्शन दूर से भी नहीं छूता था वे सब जी टीवी पर आने लगे. यानी दूरदर्शन लगभग अछूत बन कर रह गया है.

अब इस जोरदार धक्के में दूरदर्शन के मालिकों को कुछ सबक मिला है. वे लोग

भी जनसाधारण की परवाह करने लगे हैं. उसे फिर मोहना शुरू कर रहे हैं. दूरदर्शन की नईनई सरणियां (चैनल) बनाई जा रही हैं. नए निजी क्षेत्र से धारावाहिक व अन्य प्रोग्राम लिए जा रहे हैं. स्टार व जी टीवी से संघर्ष की तैयारी की जा रही है. दर्शकों को इस से काफी राहत मिली है. और उसे अपनी पसंद के दृश्य देखने का ज्यादा मौका मिल रहा है.

यद्यपि रेडियो के सामने अभी कोई कंपिटीशन नहीं आया है, पर थोड़ाबहुत परिवर्तन वहां भी हुआ है. एफ-एम की चैनल का कुछ भाग निजी प्रोग्रामों के लिए खोल दिया गया है. पर यह काफी नहीं है. रेडियो को भी निजी क्षेत्र के लिए और खोला जाना चाहिए और निजी क्षेत्र में अपने स्टेशन बनाने, प्रसारण करने के अधिकार मिलने चाहिए.

टीवी अभी भी हर घर में नहीं पहुंचा है, न पहुंचने की उम्मीद की जा सकती है क्योंकि जहां पक्की छत नहीं है वहां टीवी सेट कहां से आएगा? पर ट्रांजिस्टर तो लगभग हर घर में पहुंच ही गया है, और रेडियो जनसाधारण को प्रभावित करने का बहुत बड़ा साधन बन गया है. शायद इसीलिए सरकार इस पर से अपना एकाधिकार समाप्त नहीं करना चाहेगी.

*

दिल्ली विश्वविद्यालय की एक सलाहकार समिति ने सिफारिश की है कि 3 वर्षीय स्नातक पढ़ाई के पहले व दूसरे वर्ष की परीक्षाएं कालिज अपनेआप लें ताकि विश्वविद्यालय के परीक्षा संयंत्र पर बोझ हलका हो जाए.

यद्यपि कुछ निहित स्वार्थों के कारण यह सुझाव मंजूर नहीं हुआ, पर वास्तव में यह काफी हद तक ठीक है.

पहले जब 4 वर्ष की स्नातक पढ़ाई होती थी तो केवल दूसरे और चौथे वर्ष विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षाएं होती थीं. दूसरे वर्ष इसलिए कि बहुत से कोर्सों में इंटरमीडिएट पास करने से दाखिला मिल जाता था. पूरे स्नातक होने की आवश्यकता नहीं होती थी. अंतिम वर्ष हमेशा विश्वविद्यालय द्वारा परीक्षा लेने का होता था और आज भी वही होना चाहिए ताकि एक विश्वविद्यालय में परीक्षा की एकरूपता हो.

आजकल बी.ए., बी.एससी., बी.काम. इत्यादि 3 वर्ष के कोर्स हैं और तीनों वर्षों की परीक्षाएं विश्वविद्यालय आयोजित करते हैं. परीक्षाओं के इस केंद्रीयकरण से बहुत उलझनें पैदा होती हैं क्योंकि हजारों विद्यार्थियों की एक जगह से संचालित परीक्षाओं का प्रबंध करना, उन के परचों का निरीक्षण और फिर परीक्षाफल का प्रकाशन एक जटिल काम हो जाता है.

यदि स्नातक पढ़ाई के पहले और दूसरे वर्ष की परीक्षाएं स्वयं कालिज लें तो क्या हर्ज है? डिग्री तो विश्वविद्यालय तीसरे वर्ष की परीक्षा पर देगा, जो वह स्वयं कराएगा.

हो सकता है, पहले 2 वर्ष की परीक्षाओं में शिक्षक नंबर देने में, या अपने चहेतों को परचे आउट करने में दिलचस्पी लें. पर इस से विश्वविद्यालय या ईमानदार विद्यार्थियों को क्या फर्क पड़ता है? अगर कोई विद्यार्थी अनुचित रूप से पहले व दूसरे वर्ष की परीक्षाओं में पास भी कर दिया जाए तो तीसरे वर्ष तो उस की नौका स्वयं डूब जाएगी क्योंकि उस ने पढ़ाई करने के बजाय शिक्षकों को रिश्वत दे कर पहले 2 वर्ष परीक्षाएं पास की थीं.

इस का एक विकल्प यह भी है कि पहले 2 वर्ष की परीक्षाएं ही समाप्त कर दी जाएं, केवल अंतिम वर्ष की विश्वविद्यालय परीक्षाएं ही हों. जिस विद्यार्थी को पढ़ना है, वह तीनों वर्ष मन लगा कर पढ़ेगा, जिस को मौजमस्ती करनी है, वह उस की कीमत चुकाएगा. इस प्रकार विद्यार्थी और उस के मातापिता पर ज्यादा जिम्मेदारी आएगी, जो अच्छी ही बात है.

सत्ता का केंद्रीयकरण समाजवाद को ले डूबा, परीक्षाओं का केंद्रीयकरण आज पढ़ाई को नष्ट कर रहा है. ●

बढ़ती मुद्रास्फीति



लेख • विशेष प्रतिनिधि

मुद्रास्फीति का सीधा अर्थ है नकद रुपयों की अधिकता. जब किसी देश की सरकार अपने खर्चों पर काबू नहीं रख पाती और बजट के घाटे को पाटने के लिए अंधाधुंध नोट छापने का रास्ता इख्तियार करती है, तब अर्थव्यवस्था डगमगा जाती है. बाजार में नोटों की अधिकता हो जाती है लेकिन उस की तुलना में उत्पादन में वृद्धि नहीं होती. पैसा अधिक होने से मांग भी बढ़ जाती है लेकिन माल की उपलब्धता कम रहती है, जिस से कीमतें बढ़नी शुरू हो जाती हैं. यह अर्थशास्त्र का साधारण सा नियम है तथा आम आदमी भी जानता है कि जब बाजार में खरीदार अधिक हों तथा 'बहुत अधिक धन, बहुत कम माल का पीछा' कर रहा हो तो मुद्रास्फीति की इस स्थिति में महंगाई तेजी से बढ़ती है.

इस सिद्धांत को समझने के लिए हम अपने देश में वर्ष 1990-91 में आम जरूरत की चीजों की कीमत में हुई वृद्धि का उदाहरण ले सकते हैं. भारत में वर्ष 1989-90 में मुद्रास्फीति की औसत दर 9.1% तथा 1990-91 में 12% थी. अर्थव्यवस्था में अत्यधिक द्रव्यता (नकदी) तथा इस से पहले के वर्षों के निरंतर बजटघाटे के

बिगड़ती अर्थव्यवस्था



कारण पैदा हुई यह मुद्रास्फीति उस वर्ष के दौरान आई भयंकर महंगाई के लिए जिम्मेदार थी.

फरवरी 1991 में समाप्त हुई 12 माह की अवधि में अनाज के दामों में 23.2%, दालों में 21.0%, सब्जियों में 33.3%, फलों में 30.3%, मसालों में 37.6%, तिलहन में 36.6%, चाय व काफी के मूल्यों में 15.1% तथा कपड़े के दामों में औसतन 33.3% की बढ़ोतरी हुई थी.

मई और दिसंबर 1991 के मध्य 6 माह के अंतराल में खाद्यान के भावों में 35.0% वृद्धि हुई थी जबकि अगले ही वर्ष नरसिंह राव सरकार द्वारा सरकारी खर्चों में कटौती तथा वित्तीय अनुशासन एवं मुद्रास्फीति नियंत्रण हेतु किए गए प्रयासों के फलस्वरूप इसी अवधि में इन की कीमतों में केवल 3.5% बढ़ोतरी हुई. यों भी मुद्रास्फीति के कारण बढ़ रही महंगाई की मार सर्वप्रथम आम जरूरत की चीजों जैसे अनाज, दालों, दूध, फलसब्जी, कैरोसीन, कोयले आदि पर ही पड़ती है. जीवन के लिए अनिवार्य इन वस्तुओं की जरूरत को टाला नहीं जा सकता तथा चाहे जिन दामों पर

भी मिलें. घरगृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिए इन्हें खरीदना एक मजबूरी है.

मुद्रास्फीति तथा महंगाई—परस्पर पोषक

मुद्रास्फीति तथा महंगाई एकदूसरे के पोषक हैं यानी मुद्रास्फीति से एक ओर कीमतें बढ़ती हैं तथा दूसरी ओर इस बढ़ती महंगाई से पुनः मुद्रास्फीति और अधिक बढ़ जाती है.

मुद्रास्फीति के कारण कीमतें बढ़ने से मुद्रा की साख एवं क्रयक्षमता में कमी आ जाती है. उदाहरण के तौर पर, अगर दूध के दाम 8 रुपए प्रति लिटर से बढ़ कर 10 रुपए प्रति लिटर हो जाएं तो 100 रु. में 12½ लिटर के स्थान पर केवल 10 लिटर दूध मिलेगा.

श्रमिकों एवं वेतनभोगियों द्वारा महंगाई से निबटने के लिए अधिक वेतन की मांग होती है तथा इन लोगों की तनख्वाह के साथसाथ कच्चे माल के दामों में पहले से हो चुकी वृद्धि से उत्पादन की लागत भी बढ़ जाती है. स्वाभाविक है कि इन निर्मित वस्तुओं की उत्पादन लागत अधिक होने से बाजार में इन के मूल्यों में भी वृद्धि होगी.

इस प्रकार एक ओर महंगाई बढ़ती जाती है तथा दूसरी ओर इस महंगाई के कारण मजदूरों को अधिक वेतन दिए जाने से मुद्रास्फीति में भी बढ़ोतरी होती जाती है तथा इस विषम चक्र में फंस कर अर्थव्यवस्था नियंत्रण से बाहर हो जाती है.

जहां तक केंद्रीय सरकार का प्रश्न है, उसे भी जब महंगाई का सामना करना पड़ता है तो अपनी आय के स्रोत बढ़ाने के लिए उसे अधिक कर लगाने हेतु बाध्य होना पड़ता है. इस के साथसाथ खर्चे बढ़ जाने से सरकार का बजट घाटा भी बढ़ जाता है जिस को पूरा करने के लिए फिर नोट छाप कर तथा बाजार से ऋण ले कर काम चलाना पड़ता है. कर लगाने तथा नोट छाप कर घाटा पूरा करने के दोनों ही उपाय फिर मुद्रास्फीति को बढ़ाते हैं. इस प्रकार यह भी स्पष्ट होता है कि केवल मुद्रास्फीति ही कीमतें बढ़ने का कारण नहीं है, महंगाई भी मुद्रास्फीति को बढ़ाती है.

मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखने के पिछले बजट में वित्तमंत्री द्वारा किए गए दावों के बावजूद इस बार के बजट में अनुमानित भारी बजट घाटे के कारण मुद्रास्फीति के तेजी से बढ़ने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं. स्पष्ट है इस से देश की अर्थव्यवस्था लड़खड़ाएगी और संभवतः देश को एक बार फिर 1991 की स्थिति से दोचार होना पड़े. आखिर वे क्या कारण हैं जो मुद्रास्फीति को बढ़ा कर देश की अर्थव्यवस्था की चूलें तक हिला डालते हैं?

मुद्रास्फीति के कारण :

बजट घाटा एक सीमा से अधिक हो जाने पर मुद्रा प्रसार में बढ़ोतरी द्वारा मुद्रास्फीति में वृद्धि करता है. सरकारी बजट में अत्यधिक गैरयोजना व्यय, आग में घी का काम करता है.

सरकार द्वारा लिए गए कर्जों पर ब्याज, प्रशासन व्यवस्था, रक्षा व्यय तथा विभिन्न क्षेत्रों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता, ये सभी गैरयोजना व्यय हैं, जो अनुत्पादक होने के कारण मुद्रास्फीति में वृद्धि की जड़ हैं. वर्ष 1981-82 के बजट में



वित्तमत्री मनमोहन सिंह : वि... घाटे की विशाल रकम पर को... अंकुश न रख कर एक बहुत बड़ा जुआ खेला है.

यह व्यय केंद्रीय बजट का 58% था, जो 1986-87 में बढ़ कर 63.4% तथा 1991-92 में 70.8% हो गया. इस की राशि भी वर्ष 1981-82 के 14,133 करोड़ से बढ़ कर 1994-95 के बजट अनुमानों में 1,05,117 करोड़ रुपए तक पहुंच गई है.

केंद्रीय सरकार के बजट का एक बड़ा हिस्सा अपने कर्मचारियों की विशाल फौज के अनुत्पादक राजसी ठटबाट को यथावत बनाए रखने पर व्यय किया जाता है. सरकारी विभागों में नियुक्तियां कामकाज में बढ़ोतरी के आधार पर नहीं अपितु तथाकथित समाजवाद के नाम पर रोजगार उपलब्ध कराने के लिए की जाती रही हैं. इसी कारण जहां एक कर्मचारी की जरूरत होती है वहां 4-5 व्यक्तियों को नौकरी दी जाती रही है. आज केंद्रीय सरकार के कुल सिविल कर्मचारियों की संख्या 40 लाख से ऊपर है और इस पर भी मजे की बात यह है कि उत्पादन के नाम पर इस विशाल संख्या का योगदान शून्य है.

वर्ष 1984 से 1991 के दौरान केंद्रीय सरकार के सचिवों की संख्या 61 से बढ़ कर 131 तथा संयुक्त एवं अवर सचिवों की गिनती 258 से बढ़ कर 758 हो गई. अधिकारियों की नियुक्ति तथा नए पदों की स्थापना के पीछे केवल राजनीतिक सोच होती है. यह चुनाव आयोग को बहुसदस्यीय बनाने की केंद्रीय सरकार की काररवाई से भलीभांति समझा जा सकता है. मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन द्वारा कई अवसरों पर यह दोहराया गया है कि उन के पास जितना काम है, उस के लिए उन्हें दिनभर में केवल 10 मिनट मेज पर बैठना काफी है. काम का बोझ इतना हलका होने के बावजूद उत्तरदायित्व में उन का हाथ बंटाने के लिए दो अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति कर के केंद्र सरकार क्या सिद्ध करना चाहती थी? सरकार की नीयत केवल मुख्य चुनाव आयुक्त के अधिकारों पर अंकुश लगाने की थी लेकिन इस के लिए चुनाव आयोग के खर्चों में और वृद्धि कर दी गई.

आंकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष सेवा-निवृत्ति, मृत्यु या पदत्याग के कारण केंद्रीय सरकार के 3% कर्मचारी कम हो जाते हैं. अगर नई नियुक्तियों पर कड़ाई से नियंत्रण रखा जाए तो प्रतिवर्ष 1.5 लाख कार्यमुक्त होने वाले कर्मचारियों की संख्या के कारण ही सरकारी वेतन भुगतान के बिल में आशातीत कटौती की जा सकती है.

इस विषय में केंद्रीय सरकार ने गंभीरता से प्रयास किया ही नहीं है. जनवरी 1992 में राष्ट्रीय विकास परिषद

की बैठक में प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने केंद्र सरकार के अधीन 1,000 पद समाप्त करने की घोषणा की थी. ये पद अधिकतर उन विभागों से संबंधित थे जो उदारीकरण की प्रक्रिया में स्वतः ही निरर्थक हो गए थे. इन पदों को समाप्त कर के संबंधित कर्मचारियों को कहां खपाया गया, इस विषय में कोई सूचना नहीं दी गई. उस के पश्चात, पिछले 2 वर्षों में सरकारी कर्मचारियों की अवांछनीय विशाल संख्या में कटौती की किसी योजना पर अमल तो क्या, विचार भी नहीं किया गया है.

समय की मांग यही है कि सरकार अपने उत्तरदायित्व के प्रति चेते तथा सरकारी कर्मचारियों की संख्या में भारी कमी कर के केंद्रीय कोष पर बढ़ते हुए बोझ को सीमित करे.

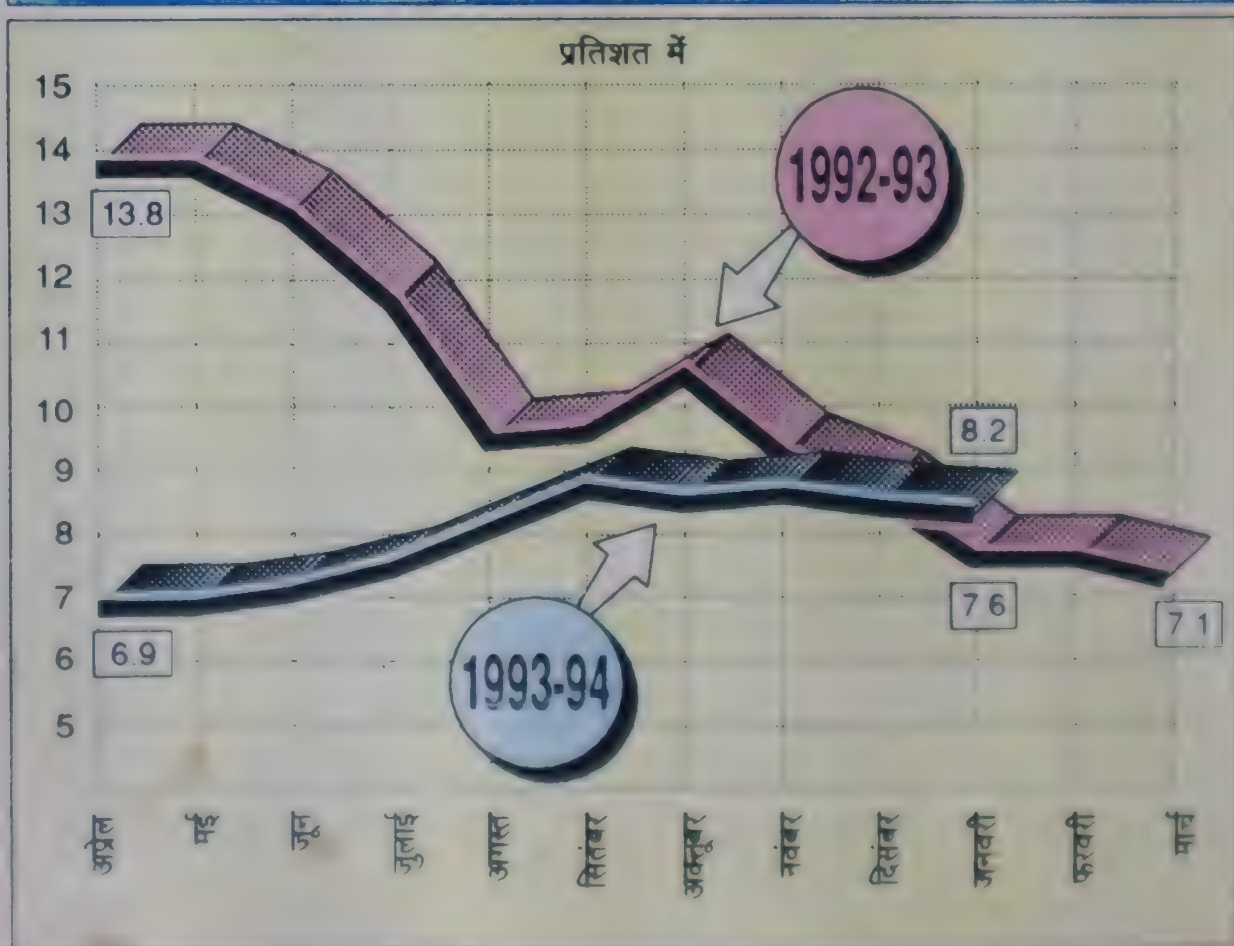
सरकारी कर्जों पर ब्याज

केंद्रीय सरकार द्वारा वर्ष 1994-95 के बजट में अपने कुल घरेलू ऋणों पर ब्याज के भुगतान हेतु 46,000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है. इतनी बड़ी रकम जब केवल ब्याज चुकाने के लिए खर्च की जाए, जिस से उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं होनी है, तब मुद्रास्फीति तथा परिणामस्वरूप कीमतों में वृद्धि की कल्पना स्वयं ही की जा सकती है.

अप्रत्यक्ष करों पर निर्भरता

जब सरकार राजस्व प्राप्ति के लिए अप्रत्यक्ष करों पर अधिक निर्भर करती है तो उस का यह कदम भी मुद्रास्फीति की बढ़ोतरी में सहायक होता है. इस का सीधा कारण यह है कि आयकर जैसे प्रत्यक्ष कर तो अर्थव्यवस्था में से द्रव्यता को कम करते हैं. जब कोई व्यक्ति आयकर चुकाता है तो उस की पैसा खर्च करने की क्षमता टैक्स की रकम के बराबर कम हो जाती है जो मुद्रास्फीति को कम करती है. दूसरी ओर,

मुद्रास्फीति की दर



उत्पादशुल्क एवं सीमा तथा आयात शुल्क अप्रत्यक्ष रूप से माल की कीमत बढ़ाते हैं. और यह तो हम जान ही चुके हैं कि कीमतों में वृद्धि पुनः मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी करती है.

वर्ष 1993-94 के बजट में वित्तमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने उत्पादन शुल्क (एक्साइज ड्यूटी) तथा सीमा शुल्क आदि में उल्लेखनीय छूट दी थी. ये अप्रत्यक्ष कर वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि द्वारा मुद्रास्फीति



को बढ़ाते हैं तथा अब इन की दरों में कमी से उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा तथा वस्तुएं सस्ती होने के कारण इन की मांग में वृद्धि होगी तथा भारतीय उद्योग उन्नति कर सकेगा.

पिछले वर्ष के बजट में चाय और काफी पर उत्पाद शुल्क बिलकुल समाप्त कर दिया गया है तथा बिस्कुट, वनस्पति, सौंदर्य प्रसाधन, साबुन, माचिस, कूलर, पंखे, बिजली के सामान, टेलीविजन, रेडियो, फ्रिज, स्कूटर, कार आदि पर यह कर पर्याप्त रूप से कम किया गया है. सरकार की इस नीति से उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा तथा परिणामस्वरूप बढ़ती कीमतों पर रोक लग सकेंगी. इस वर्ष इन्हें और भी सरल बनाया गया है तथा उत्पाद शुल्क मूल्य के अनुसार निर्धारित किया जाएगा. उत्पाद शुल्क में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन है. लगभग 586 मदों पर प्राप्त होने वाली छूट की समाप्ति. अब ऐसी छूटों के स्थान पर शुल्क सीधे 'इनवायस मूल्य' पर लगाया जाएगा.

मुद्रास्फीति बढ़ेगी तो उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें स्वतः ही बढ़ जाएंगी क्योंकि मुद्रास्फीति और महंगाई का चोली दामन का साथ है. ▲

भुगतान संतुलन तथा विदेशी मुद्रा भंडार

विदेश व्यापार में भुगतान संतुलन का घाटा तथा विदेशी मुद्रा के अपर्याप्त भंडार भी मुद्रास्फीति को भड़काते हैं. ऐसी दशा में कोई भी देश अपने सीमित विदेशी

मुद्रा भंडार को बहुत सोचसमझ कर तथा कंजूसी से खर्च करता है तथा किसी जरूरी चीज की कमी होने तथा निरंतर कीमतें बढ़ने पर भी उस वस्तु के आयात हेतु कदम नहीं उठा पाता. इस जोखिम से बचने का एक उपाय आयात के वैकल्पिक तथा स्थानीय उत्पाद तैयार करना है.

पेट्रोलियम व पेट्रोलियम उत्पादों के लिए भारत पूर्णतः विदेशों पर निर्भर है तथा इस की कीमतों में वृद्धि ने पिछले 2 दशकों में मूल्य स्तर पर अत्यधिक दबाव डाला है. वर्ष 1991 के आरंभ के इराक युद्ध के कारण भारत सरकार को पेट्रोलियम उत्पादों पर 25% का अधिभार लगाने के लिए विवश होना पड़ा था, जिस से अन्य वस्तुओं के दामों पर भी असर पड़ता है. पेट्रोल का कोई विकल्प न होने के कारण इस का आयात करना हमारी विवशता है.

भारत सरकार के पास इस समय पर्याप्त मात्रा में विदेशी मुद्रा है जिसे बखूबी सुरक्षा कवच के रूप में प्रयोग किया जा सकता है. किसी भी अनिवार्य वस्तु की कमी होने पर सरकार के लिए उस के आयात हेतु निर्णय लेने में कठिनाई उत्पन्न नहीं होगी तथा इस की उचित आपूर्ति द्वारा कीमतें स्थिर रखी जा सकेंगी.

सुधारात्मक उपाय

मुद्रास्फीति के कई कारण हो सकते हैं लेकिन इस पर नियंत्रण का सर्वोत्तम उपाय है आम उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति को बनाए रखना. खाद्यान्नों तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के पर्याप्त भंडार कीमतों में वृद्धि के विरुद्ध अचूक हथियार हैं जिन्हें उचित वितरण व्यवस्था द्वारा भलीभांति प्रयोग किया जा सकता है.

सरकार के पास अक्तूबर 1993 में 250 लाख टन अनाज का भंडार था जो 1992 की तुलना में 90 लाख टन अधिक था. वितरण व्यवस्था को अधिक सुचारू बनाने के लिए सरकार ने भारतीय खाद्य निगम को खुले बाजार में गेहूं बेचने का अधिकार दिया है. यह बिक्री नवंबर 1993 में आरंभ हो गई तथा गेहूं खुदरा एवं थोक व्यापारियों, चक्कियों, बेकरी, कनफैक्शनरी, सुपर बाजार को कम से कम 20 टन खरीदने पर बेचा जाएगा. आटा मिलों एवं नागरिक आपूर्ति निगमों के लिए यह सीमा न्यूनतम 100 टन होगी. इस योजना में बिक्री के लिए अधिकतम सीमा नहीं रखी गई है तथा कोई व्यक्ति या संस्थान कितनी ही मात्रा में गेहूं खरीद सकता है. इस कदम से गेहूं की आपूर्ति ढंग से होगी तथा वित्तीय वर्ष 1993-94 के प्रथम छः माह में हुई कीमतों में वृद्धि पर अंकुश लग सकेगा.

वर्ष 1994-95 के लिए पेश बजट में दिए गए आंकड़ों के अनुसार केंद्रीय सरकार का बजट घाटा पिछले वर्ष 1993-94 में 9,060 करोड़ रुपए था. यह बजट अनुमान की राशि 4314 करोड़ रुपए की तुलना में दोगुने से अधिक है. हालांकि अगले वर्ष के लिए बजट घाटे का अनुमान 6,000 करोड़ रुपए है लेकिन यह तो समय ही बताएगा कि वित्त मंत्रालय इसे इसी स्तर तक सीमित रखने के लक्ष्य में कहां तक सफल होता है.

वर्ष 1993-94 के बजट अनुमान 36,959 करोड़ रुपए की तुलना में वित्तीय घाटे का संशोधित अनुमान 58,551 करोड़ रुपए है. कहने का तात्पर्य यह है कि वित्तीय घाटा जो कि सकल राष्ट्रीय उत्पादन के 4.7% तक रखने का विचार था, उस पर सरकार अमल न कर सकी तथा यह इस के 7.3% के स्तर तक पहुंच गया. यह स्तर 1980 के दशक के अंतिम वर्षों के समान है, जिस के कारण देश वर्ष 1991 में आर्थिक दिवालिएपन के कगार तक पहुंच गया था.

वित्त मंत्रालय में सचिव मोंटेक सिंह अहलूवालिया का कहना है कि वर्ष 1994-95 का अनुमानित वित्तीय घाटा 54,915 करोड़ रुपए, सकल राष्ट्रीय उत्पादन का केवल 6% होगा. यह स्तर हमारे 13 अरब डालर के विदेशी मुद्रा भंडार, चालू खाते में घाटे के केवल 0.5% स्तर, साधारण

यूगोस्लाविया : मूल्यहीन मुद्रा

जब से दुनिया में मुद्रा का चलन आरंभ हुआ, तब से ले कर आज तक इतिहास में किसी मुद्रा के आगे इतने शून्य नहीं लगे होंगे जितने कि यूगोस्लावियाई मुद्रा के आगे लग रहे हैं. मामूली से मामूली वस्तु के दाम लाखों और करोड़ों दीनार में लिखे और बोले जाते हैं, जिसे समझ पाना भी जनता के लिए एक समस्या है.

सितंबर 1993 के अंत में यूगोस्लाविया द्वारा अपनी मुद्रा का पुनः नवीनीकरण किया गया जो कि वर्ष 1990 के पश्चात इस प्रकार का चौथा प्रयास था. सभी प्रकार के नोटों की मूल्य संख्याओं में से 6 शून्य हटा लिए गए यानी 10 लाख दीनार अब एक दीनार कहलाएगा. अब तो एक अरब दीनार का नोट भी छापा जा चुका है जिस का मूल्य बाजार में 5 जर्मन मार्क (लगभग 90 रुपए) के बराबर है.



अर्थव्यवस्था के विघटन तथा सरकार द्वारा अपने खर्चों और घाटे की रकम पूरा करने के लिए अनियंत्रित रूप से नोट छापने के परिणामस्वरूप पैदा हुई यह स्थिति मनोरंजक आंकड़े तो पेश करती है लेकिन वहां की जनता के लिए दो वक्त का भोजन जुटाना कोई मजाक न रह कर, गंभीर समस्या बन चुका है. रोजमर्रा की जरूरत की वस्तुओं के भाव आसमान को छू रहे हैं तथा इन की खरीद के लिए भी लंबी लाइनें लगती हैं.

मुद्रास्फीति की दर तथा अनाज के विशाल भंडार को देखते हुए अधिक चिंतनीय नहीं है. वह यह भूल रहे हैं कि बजट के पिछले वर्ष के अनुमानों की तुलना में वास्तविक सरकारी व्ययों और घाटे में जमीनआसमान का अंतर है तथा भविष्य में भी क्या गारंटी कि इस की पुनरावृत्ति नहीं होगी.

वित्तीय घाटा : बारूद का ढेर

कुल मिला कर 1994-95 के बजट को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वित्तमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने वित्तीय घाटे की विशाल रकम पर कोई अंकुश न रख कर बहुत बड़ा जुआ खेला है. उन का कहना है कि सरकारी व्यय अर्थव्यवस्था में वृद्धि में सहायक होगा, जिस के फलस्वरूप सरकार को करों से राजस्व प्राप्ति में बढ़ोतरी होगी. इस प्रकार आय बढ़ा कर घाटे की खाई को पाटा जा सकेगा.

डा. मनमोहन सिंह द्वारा पेश की जा रही आशाजनक भविष्य की तसवीर पर आशंकाओं के साए भी हैं. जिस पैमाने पर देश में कर वंचना होती है, उसे देखते हुए जरूरी नहीं कि अर्थव्यवस्था में वृद्धि से राजस्व आय में भी बढ़ोतरी हो. दूसरी ओर, लगातार 6 वर्षों के अच्छे मानसून के बाद, एक या दो वर्ष भी अगर सूखा पड़ा तो खाद्यान्न की स्थिति गंभीर हो सकती है. साथ ही विश्व बाजार में पेट्रोल की कीमतें, जो अभी 13 डालर प्रति बैरल के निम्न स्तर पर हैं, अगर बढ़ीं तो हमारे विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से खाली हो सकते हैं. ये आशंकाएं अगर सच हो गईं तो सरकार का वित्तीय घाटा देश में 1991 की स्थिति की पुनरावृत्ति कर सकता है और मुद्रास्फीति की दर 20% तक पहुंचने का भय है.

अरसे बाद कुछ अच्छे इश्यू

लेख • कपिल अग्रवाल

शेयर बाजार में बजट के बाद से कोई खास उत्साह नहीं है. बजट से जो अपेक्षाएं थीं वे इस बार पूरी नहीं हुईं. शेयर बाजारों की प्रकृति व भारतीय कंपनियों की स्थिति को देखते हुए विदेशी संस्थागत निवेशक भी उदासीन हो गए हैं. बढ़ती सट्टेबाजी के चलते वे मानने लगे हैं कि भारत की व्यवस्था सुधर नहीं सकती. इसीलिए रुख अब चीन व जापान की ओर मुड़ गया है.

पिछले दिनों एक अमेरिकीजरमनी प्रतिनिधिमंडल भारत आया था जिस ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारतीय कंपनियां स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से बचती हैं और यहां शेयरों में कृत्रिम तेजी लाई जाती है. खराब से खराब कंपनी के शेयर भी औनेपौने चढ़े रहते हैं. अनिवासी भारतीय स्वराजपाल की भी यही राय है. शायद इसीलिए कई अच्छेअच्छे प्रोजेक्ट भी रद्द हो गए. सेबी की नई व्यवस्थाएं इसीलिए लागू हुई हैं.

हालांकि अभी तक इश्यू के औचित्य पर कोई ठोस नियम नहीं बनाए गए हैं, पर उम्मीद है कि इस बाबत कुछ किया जाएगा. तब उलटेसीधे प्रोजेक्ट ले कर मैदान में उतरने वाली कंपनियों की बाढ़ कम हो जाएगी.

दरअसल, विदेशी निवेशक चाहते हैं कि पूंजी बाजार में आने वाली कंपनियां बिलकुल साफसुथरी यानी क्रीम हों. प्रीमियम भी लिया जाए तो सोचसमझ कर. इस हफ्ते पूंजी बाजार में आ रही कुछ अच्छी कंपनियों ने बड़े भारीभरकम प्रीमियम रखे हैं. प्रीमियम लेना गलत नहीं

APPLICATION FORM FOR ...
(PLEASE READ THE INSTRUCTIONS ON THE REVERSE CAREFULLY)

ISSUE OPENS ON	:	WEDNESDAY, 30TH MARCH, 1994
EARLIEST CLOSING	:	MONDAY, 4TH APRIL, 1994
CLOSING NOT LATER THAN	:	FRIDAY, 8TH APRIL, 1994

Birla Growth Fund Limited

SERIAL NO. 9819725

(Incorporated on 26th June, 1986 under the Companies Act, 1956)
Registered Office : A-54, MIDC, Marol Industrial Area, Andheri (East), Bombay 400 093

UNDERWRITER'S STAMP & CODE	BROKER'S STAMP & CODE	SUB BROKER'S CODE	BANK'S STAMP	BANK'S SERIAL NO
BHARAT BHUSHAN & CO. 05/0010-1		3150		

Public Issue of 22,88,000 Equity Shares of Rs. 10/- each for cash at a premium of Rs. 25/- per Share aggregating Rs. 793.80 lacs. Net Offer to the Indian Public Rs. 787.50 lacs

APPLICATION MUST BE FOR A MINIMUM OF 200 EQUITY SHARES AND IN MULTIPLES OF 100 THEREAFTER

TERMS OF PAYMENT
ON APPLICATION RS. 20 PER EQUITY SHARE
ON ALLOTMENT RS. 15 PER EQUITY SHARE

REGISTRAR'S SERIAL NO.

Computation Table for the amount payable on Application

Equity Shares	Rupees
200	4,0..
300	6,0..
400	8,..
500	10,..
1000	20,..

To,
The Board of Directors
BIRLA GROWTH FUND LIMITED
A-54, MIDC, Marol Industrial Area, Andheri (East), Bombay 400 093

Dear Sirs,

On the basis of the Company's Prospectus dated February 25, 1994, I/we hereby apply to you for allotment to me/us of the Equity Shares stated below ... [illegible]

पर राशि का निर्धारण तो सही ही होना चाहिए.

इस बार की समीक्षाधीन कंपनियों में कुछ कंपनियां निवेश योग्य हैं. पर निवेशकों को उन में ज्यादा राशि फंसानी पड़ेगी.

बिरला ग्रोथ फंड लि. : **बिरला ग्रुप की यह कंपनी इस 30 मार्च को 10-10 रुपए वाले 22,68,000 शेयरों के साथ पूंजी बाजार में आई है. प्रति शेयर प्रीमियम 25 रुपए रखा गया है. बिरला ग्रुप की कंपनियों की विशेषता यह है कि एक तो उन में सट्टेबाजी बहुत होती है और दूसरे उन की ट्रेडिंग बहुत कम होती है. लाभांश भी कम ही दिया जाता है.**

फाइनेंस कंपनियों की स्थिति फिलहाल बहुत अच्छी नहीं है. गत 2 सालों में 30 से भी ज्यादा वित्तीय कंपनियां पूंजी बाजार में


APPLICATION FORM ... (PLEASE READ ...

OKARA LEASING AND INVESTMENT LIMITED
(Incorporated on 23rd April, 1986 as a public limited company under the Companies Act, 1956)
Regd. Office : 1557, Church Road, Kashmere Gate, Delhi 110 006.
Corporate Office: 803, Vikram Tower, Rajendra Place, New Delhi 110 008.

ISSUE OPENS ON : Tuesday, 29th March, 1994
EARLIEST CLOSING : Saturday, 2nd April, 1994
CLOSING NOT LATER THAN : Saturday, 9th April, 1994

SERIAL NO. 0940414

...ER WRITER'S ...MP & CODE	BROKER'S STAMP & CODE	SUB BROKER'S STAMP	BANK'S STAMP	BANK'S SERIAL NO	REGISTRAR'S SERIAL NO
	Bharat Bhushan & Co. 05/0010-1	3150			

...BLIC ISSUE OF 45,00,000 EQUITY SHARES OF RS.10/- EACH ...OR CASH AT PAR AGGREGATING RS. 450.00 LACS FOR INDIAN PUBLIC

Please write the Application Serial No. on the reverse of the Cheque/Draft/Stockinvest

Cheques/Drafts must be marked "Name of the Bank - A/c OLI PUBLIC ISSUE"

...o
The Board of Directors
OKARA LEASING AND INVESTMENT LIMITED
... Kashmere Gate,

APLICATION MUST BE MADE FOR A MI... OF 500 EQUITY SHARES OR IN MULTIPLES OF 100 THEREAFTE...
AMOUNT PAYABLE ON APPLICATION ... PER EQUITY SHARE
COMPUTATION TABLE FOR THE AMOUNT PAYABLE ON APP...

No. of Equity Shares	Rupee...
500	2500/-
600	3000/
700	3500/
800	4000
1000	5000
1500	750...

... of the Equity shares stated ... agree to acc...

आ चुकी हैं. इन में से कई तो दोदो बार आई हैं. फाइनेंस कंपनियों के शेयरों के भाव भी बहुत ज्यादा अच्छे नहीं रहे.

बिरला ग्रोथ फंड का शेयर कई मानों में अच्छा है. कंपनी अपनी अंश पूंजी में वृद्धि कर रही है और अपनी योजनाओं की बाबत कंपनी द्वारा वित्त पोषण बहुत सुव्यवस्थित तरीके से किया गया है. कंपनी की मुख्य आय भाड़ा खरीद (हायर परचेज) से है, और आगे भी इसी पर विशेष निर्भरता है. बिरला समूह की कंपनी होने की वजह से भाड़ा खरीद पर निर्भरता गलत नहीं है.

हालांकि प्रीमियम का औचित्य समझ में तो नहीं आता पर निवेशकों को तत्काल लाभ देने के लिए यह निवेश गलत नहीं.

पता : ए–54, एम.आई. डी.सी., मरोल इंडस्ट्रियल एरिया, अंधेरी (ईस्ट) बंबई-400093.

ओकारा लीजिंग एंड इनवेस्टमेंट लि. : **फाइनेंस कंपनियों की बाढ़ में यह कंपनी 10-10 रुपए वाले 45,00,000 शेयरों के साथ 29 मार्च को पूंजी बाजार में आई है.**

कईकई महारथियों की बाढ़ के बीच आई यह कंपनी पूर्णतः जनता के पैसे पर निर्भर है. टीक प्लांटेशन योजना के तहत गत 2 सालों में कंपनी करीब 88 लाख रुपए बटोर चुकी है. इस तरह की योजनाएं कई बड़े बैनर की कंपनियां पहले भी जारी कर चुकी हैं, और यह सब दिखावे के सिवा कुछ नहीं है, यह सिद्ध हो चुका है.

कंपनी का मुख्य व्यवसाय लीजिंग का है और उसे ही वह बढ़ाना चाहती है. इस के अलावा कंपनी बिल डिस्काउंटिंग, पोर्टफोलियो मैनेजमेंट व मर्चेंट बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में भी उतरना चाहती है. दरअसल, इस क्षेत्र में बड़ी जबरदस्त गलाकाट प्रतिस्पर्धा है और कंपनी अभी इस मुकाबले में बहुत पीछे है.

वर्ष 1986 में स्थापित इस कंपनी ने 4 साल बाद कारोबार शुरू किया. इस के बाद 4 साल के कारोबार में कंपनी एक बार में 40 लाख के सकल लाभ भी नहीं कमा पाई. प्रति शेयर आय भी बहुत कम है.

पता : 1557, चर्च रोड, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली-110006.

नटको लैब. : **28 मार्च को इस कंपनी ने 10-10 रुपए वाले 55,00,000 शेयरों के साथ पूंजी बाजार में प्रवेश किया. इस नई कंपनी ने अपने प्रोजेक्ट की बाबत वित्त की**

नजारे प्रेस कानफरेंस के आप के लिए ये...

एक एक्सपोर्ट कंपनी की प्रेस कानफरेंस लाजवाब भोजन व बेशकीमती तोहफा.

"सर, कोई परेशानी हो, कुछ पूछना चाहते हों तो बताइएगा," कंपनी के प्रतिनिधियों ने कहा.

"हां, कंपनी ने बहुत ही कम बार लाभांश दिया है, बावजूद इस के कि यह 20 साल पुरानी कंपनी है," मैं ने पूछा.

"जी... जी... आप को तो सब... मालूम ही है... हैं... हैं... काफी लीजिए... हम लोग अब नियमित रूप से लाभांश देंगे... अगले 4 सालों में लगातार 30 फीसदी लाभांश दिया जाएगा." जवाब मिला.

"गत वर्ष आप की एक अन्य माइनिंग क्षेत्र की कंपनी का इश्यू आया था. वह प्रोजेक्ट 8 माह पिछड़ गया था. भविष्य की परिकल्पनाएं भी ध्वस्त हो गई थीं," मैं ने कहा.

"अरे साहब आप भी क्या ले बैठे. सब चलता है," जवाब मिला.

"इस प्रेस कानफरेंस का उद्देश्य क्या है?" मैं ने पूछा.

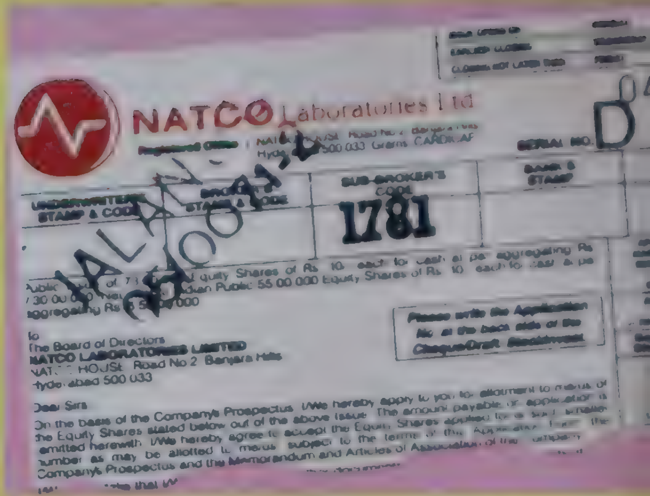
"सर, आप इस पर दस्तखत कीजिए न, आप को फ्री शेयर मिल जाएंगे... थोड़ा खयाल रखिएगा... यह आप के लिए खास तौर से कंपनी ने भेजा है." प्रतिनिधि खिसियाए.

मैं ने देखा कि वह गिफ्ट पैक था. कानफरेंस में मौजूद निवेशक झल्लाझल्ला कर कंपनियों के प्रतिनिधियों को कोस रहे थे.

कंपनी 23 मार्च को प्रति शेयर 26 रुपए के प्रीमियम के साथ पूंजी बाजार में आई और काफी रुपया बटोर ले गई.

व्यवस्था तो बड़े उम्दा तरीके से की है पर अभी तक इसे अपने उत्पादों के निर्माण की बाबत लाइसेंस तक नहीं मिला है.

कंपनी मशीनरी के मामले में 25 फीसदी व कच्चे माल के मामले में 40 फीसदी तक विदेशों पर निर्भर है, जो कंपनी



के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगाता है.

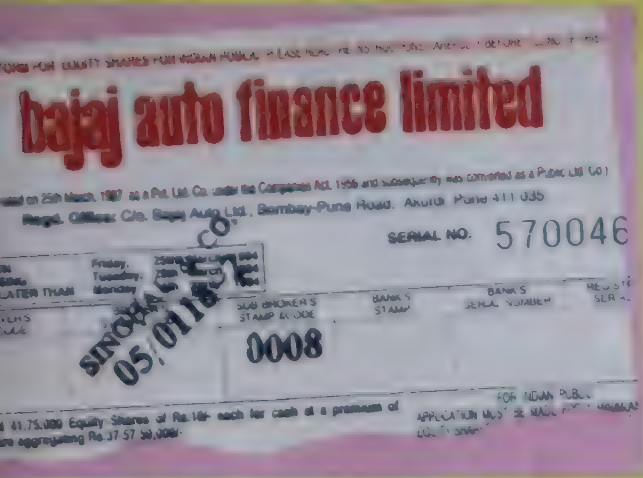
कंपनी की कुल परियोजना 45 करोड़ रुपए की है जिस में कंपनी ने मात्र 21.75 करोड़ रुपए का अंश पूंजी के रूप में प्रावधान रखा है जबकि शेष राशि विभिन्न प्रकार के ऋणों से जुटाई जाएगी. 23.25 करोड़ के ये ऋण कंपनी कैसे चुकाएगी यह चिंता का विषय है. ज्यादा ब्याज चुकाने के चक्कर में कंपनी निश्चित रूप से अपने लाभ कम करेगी. निवेश की दृष्टि से यह उचित नहीं लगता.

पता : नटको हाउस, सड़क नं. 2, बंजारा हिल्स, हैदराबाद-500033.

बजाज आटो फाइनेंस : **बजाज ग्रुप की यह कंपनी 25 मार्च को 10-10 रुपए वाले 41,75,000 शेयरों के साथ पूंजी बाजार में आई है. प्रति शेयर 80 रुपए प्रीमियम रखा गया है. बजाज आटो के शेयरों का भाव देखते हुए इतना ऊंचा प्रीमियम घाटे का सौदा नहीं प्रतीत होता.**

कंपनी गत 5 सालों से दुपहिया बजाज वाहनों की बाबत धन उपलब्ध करा रही है और अब चौपहिए वाहनों, घरेलू उपयोग की वस्तुओं आदि तमाम चीजों के लिए वित्त उपलब्ध कराएगी. इस के अलावा कंपनी नईनई जगह अपने कार्यालय खोलेगी.

कंपनी के पक्ष में खास तथ्य यह है कि कंपनी वित्तीय कारोबार के क्षेत्र में लीज फाइनेंस करेगी. और इस बाबत उसे कम कर देना पड़ेगा. साथ ही वह हायर परचेज फाइनेंसिंग का धंधा बड़े पैमाने पर शुरू



कर रही है. बिड़ला ग्रोथ फंड की तरह इस कंपनी की योजना की बाबत भी वित्त पोषण बहुत ही सुव्यवस्थित ढंग से किया गया है.

बजाज आटो फाइनेंस की प्रवर्तक बजाज आटो देश की सब से बड़ी दुपहिया व तिपहिया वाहन निर्माता कंपनी है और इस के शेयरधारी जबरदस्त फायदे में रहे हैं. हालांकि 80 रुपए का प्रीमियम छोटीमोटी राशि नहीं है पर ग्रुप के शानदार रेकार्ड को देखते हुए निवेशक 4500 रु. का जुआ खेल सकते हैं. यह बात सही है कि कंपनी इतने भारी प्रीमियम का औचित्य सिद्ध नहीं कर पाई है पर ग्रुप की अन्य कंपनियों के शेयरों की बाजार स्थिति कुछ राहत प्रदान करती है.

पता : बजाज आटो लि., बंबई पुणे रोड, अकूर्डी, पुणे-411035.

पुराने शेयर : बजट के बाद पुराने शेयरों का बाजार गिरा है पर भविष्य में चुनिंदा शेयर फिर चढ़ेंगे. सरकार द्वारा करों में जो राहत दी गई है उस से तमाम कंपनियां लाभान्वित हुई हैं. सुंदरम फाइनेंस, टाटा टी, जुवेरी एग्रो, एशियन पेंट्स, एस्कोर्ट्स ट्रैक्टर, महावीर स्पिनिंग, नाहर स्पिनिंग, टाटा यूनिसिस, पंजाब ट्रैक्टर आदि तमाम कंपनियों को बजट के द्वारा करोड़ों की राहत मिली है. पूर्ण वार्षिक परिणाम आने के बाद इन में

सब्जबाग दिखाने वाली कंपनियां

पूंजी बाजार में प्रवेश करने वाली हर कंपनी को अपने प्रोस्पेक्टस में भविष्य की परिकल्पनाएं देनी पड़ती हैं. गत 2 सालों के विश्लेषण में स्पष्ट रूप से यह तथ्य सामने आता है कि कंपनियों ने प्रोस्पेक्टस में बढ़ाचढ़ा कर अनुमान दिखाए और अरबों रुपए बाजार से बटोर कर चंपत हो गईं.

दरअसल, कंपनियों ने इस सब की बाबत जबरदस्त चतुराई दिखाई. कंपनियों ने अपने इश्यू वर्ष के अंत में जारी किए. पहली छमाही में कंपनियों के कारोबारी परिणाम बहुत अच्छे थे. उस के आधार पर ही बड़ेबड़े सब्जबाग दिखाए गए. कारोबारी परिणाम शायद कृत्रिम रूप से ही अच्छे दिखाए गए क्योंकि बाद में वार्षिक परिणाम खराब आए. यानी वास्तविकता बाद में सामने आ ही गई.

ऐसी कंपनियों की लिस्ट लंबीचौड़ी है. चुनिंदा कंपनियों की दास्तानें पेश की जा रही हैं :

***सिटीकार्प सिक्योरिटीज** : जून 1992 में पूंजी बाजार में आई इस कंपनी ने मार्च 1993 के लिए 12.09 करोड़ रु. की आय व 4.19 करोड़ रु. के शुद्ध लाभ का अनुमान दिखाया था. बाद में, वास्तविक परिणाम अनुमानों से बहुतबहुत कम रहे. कंपनी ने 2.56 करोड़ रुपए की आय की बाबत 2.4 करोड़ रु. का ब्याज अदा किया.*

***शिवाजी वर्क्स** : नवंबर 1992 में पूंजी बाजार में आई इस कंपनी ने मार्च 1993 में 48.16 करोड़ रुपए की बिक्री का अनुमान लगाया था. 20 6 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ होने का अनुमान था. वास्तविक रूप से बिक्री 9 फीसदी गिरी और शुद्ध लाभ 60 फीसदी गिरे.*

***विसाका इंड.** : यह कंपनी नवंबर 1992 में पूंजी बाजार में आई थी. कंपनी ने एक करोड़ रुपए का लाभ के अनुमान लगाया था जबकि उसे 4.54 करोड़ रुपए की जबरदस्त हानि हुई.*

***शक्ति शुगर्स** : नवंबर 1992 में पूंजी बाजार में आई इस कंपनी ने अनुमान के विपरीत बिक्री में 21 फीसदी व शुद्ध लाभ में 35 फीसदी की कमी प्रदर्शित की.*

शेयर बाजार की शब्दावली

'सरिता' के पाठकों ने शेयर बाजार में प्रचलित शब्दावली की बाबत जानकारी मांगी है. शेयर बाजार में प्रचलित शब्दावली बहुत गूढ़ होती है और बिना उसे जाने आम निवेशक सही निर्णय नहीं ले सकता. शब्दावली भलीभांति न जानने से दलाल सामनेसामने बेवकूफ बना सकता है. निवेशकों के लाभार्थ प्रमुख शब्दावली प्रस्तुत है:

बुक क्लोजर : लाभांश के भुगतान या बोनस व राइट इश्यू आदि के लिए कंपनी अपने सदस्यों का रजिस्टर कुछ समय के लिए बंद रखती है. इस दौरान शेयरों का हस्तांतरण नहीं किया जाता.

ए. ग्रुप शेयर : इन्हें विशिष्ट शेयर भी कहा जाता है. इन के सौदे वायदे पर अर्थात बिना शेयरों की डिलीवरी लिए या दिए केवल कुछ मार्जिन (अंतर) रख कर भी किए जा सकते हैं.

एट पार : समभाव अर्थात शेयर, ऋणपत्र या बांड के अंकित मूल्य के बराबर भाव को 'एट पार' कहते हैं.

बदला : तुरंत भाव चढ़ने की आशा में शेयर खरीदने पर यदि भाव नहीं बढ़ता और डिलीवरी लेने के लिए पर्याप्त धन नहीं है तो उस सौदे के लिए कुछ निश्चित 'कैरी ओवर चार्ज' (आगे ले जाने का प्रभार) दे कर अगले निपटान तक ले जाना 'सीधा बदला' कहलाता है.

इस के विपरीत जब भाव गिरने की उम्मीद से बिक्री की जाती है तो भाव न गिरने पर या तो बाजार से शेयर खरीद कर डिलीवरी दी जाती है या 'उलटा बदला' दे कर सौदे को अगले निपटान तक ले जाया जाता है.

तेजड़िया : भावों में तेजी की आशा रखने वाले व्यक्ति को तेजड़िया कहा जाता है.

मंदड़िया : भावों में गिरावट की आशा रखने वाला मंदड़िया कहलाता है.

ब्लूचिप : बड़ेबड़े औद्योगिक घरानों की प्रसिद्ध तथा लगातार लाभ कमाने वाली कंपनियां 'ब्लूचिप' कहलाती हैं.

बैड डिलीवरी : यदि शेयरों की ट्रांसफर डीड (हस्तांतरण पत्र) अशुद्ध हो तो इसे 'बैड डिलीवरी' कहा जाता है.

बुकिंग प्राफिट : खरीद भाव से अधिक भाव पर शेयर बेच कर लाभ कमाना.

जाबर : शेयर बाजारों के वे व्यक्ति जो शेयरों की खरीदबिक्री करते हैं.

ई.ओ.यू. : निर्यातोन्मुखी इकाइयां.

खोका : आंशिक रूप से परिवर्तनीय ऋणपत्र का अपरिवर्तनीय हिस्सा.

ओड लाट (ओ.एल.) : मार्केट लाट (5, 10, 50, 100) से कम शेयर.

जबरदस्त उछाल आने की उम्मीद है बशर्ते कि हिसाबकिताब सही घोषित किया जाए.

निवेशकों से

यदि आप किसी कंपनी में पैसा लगाना चाहते हैं तो उस कंपनी की बैलेंस शीट (वार्षिक ब्योरा) उन से अवश्य मंगवा लें. यदि कोई कंपनी आप को बैलेंस शीट नहीं भेजती है तो उस की विश्वसनीयता संदिग्ध हो सकती है और उस कंपनी में पैसा लगाना जोखिमभरा हो सकता है.

एक प्रसिद्ध संस्था की विशेष रिपोर्ट के मुताबिक पिछले दिनों करीब 125 कंपनियों ने अपने शुद्ध लाभों में 25 से 30 फीसदी तक की हेराफेरी की. इस बाबत 'सरिता' के पूर्व अंकों में भी चर्चा की गई थी.

पर विशुद्ध निवेश की दृष्टि से, निवेशक को केवल अपने मुनाफे पर ही ध्यान देना चाहिए. खुले बाजार से शेयर खरीद कर अधिक दिन तक डाले रखना ठीक नहीं होता. आजकल सट्टेबाजी बहुत जोरों पर है और जोखिम लेना ठीक नहीं है.●



सरिता पर्यटन प्रश्नावली

हमारे पाठक किन स्थानों का और कितनी बार पर्यटन करते हैं, यह जानकारी एकत्र करने के लिए यह सर्वेक्षण किया जा रहा है. इस सर्वेक्षण के माध्यम से आप पर्यटन स्थलों के बारे में अपने विचार भी व्यक्त कर सकते हैं जो अगले वर्षों के पर्यटन अंकों में सम्मिलित किए जा सकते हैं. आप से ली गई जानकारी हमें पाठकों की आवश्यकताएं पूरी करने में सहयोग देगी.

इस सर्वेक्षण में हम उन स्थानों के बारे में जानकारी चाहते हैं जहां आप पिछले 2 वर्ष में गए थे. उस से पहले की जानकारी पुरानी हो सकती है. आप इस पत्र को अपनी इच्छानुसार भरिए, जो जानकारी न देना चाहें न दें, अतिरिक्त पृष्ठ लगाना चाहें तो आप का स्वागत है.

10 सर्वश्रेष्ठ जानकारी देने वाले पाठकों को उपहार में एक आकर्षक पर्यटन अलार्म घड़ी दी जाएगी जो आप की अगली यात्रा में बहुपयोगी होगी.

आप इस फार्म की प्रतियां करवा सकते हैं या यह जानकारी इसी रूप में सादे कागज पर भी दे सकते हैं.

पर्यटन स्थल : ....

कब गए : .... *कितने दिन रहे :* ....

कहां ठहरे : ....

ठहरने का स्थान कैसा था : ....

आप के अनुसार अन्य उचित ठहरने के स्थान कौन से हैं :

1. .... *2.* ....

3. .... *4.* ....

पर्यटन स्थल पर किस स्थान या कार्यक्रम ने आप को सर्वाधिक आकर्षित किया : ....

....

क्या आप दोबारा जाना चाहेंगे : ....

पर्यटन स्थल की कमियां : 1. ....

2. .... *3.* ....

आप किस प्रकार गए : ....

....

इस पर्यटन स्थल पर पहुंचने का अन्य कोई सुगम तरीका : ....

....

खाने के प्रशंसनीय स्थान : 1. ....

2. .... *3.* ....

खरीदारी की उपयुक्त वस्तुएं : 1. ....

2. .... *3.* ....

4. .... *5.* ....

कृपया ✓ लगाएं

शहर की सफाई :	*अच्छी / साधारण / खराब.*
लोगों का व्यवहार :	*अच्छा / साधारण / खराब.*
परिवहन सेवा : बस :	*अच्छी / साधारण / खराब.*
टैक्सी :	*अच्छी / साधारण / खराब.*
आटो रिकशा :	*अच्छी / साधारण / खराब.*
रेल :	*अच्छी / साधारण / खराब.*

नाम : ....

पता : ....

....

व्यवसाय : .... **आय :** ....





सागर पार भारत

यद्यपि अमेरिका में आप्रवासी भारतीयों ने यहां के रहनसहन, खानपान आदि को अंगीकार कर लिया है फिर भी अपनी जातीय संस्कृति और तथाकथित धर्म के प्रति इन का मोह नहीं छूटा है. जगहजगह

अमेरिका में गंगाजल

बने मंदिर, गुरुद्वारे आदि इस के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, जहां धर्म के धंधेबाज ईश्वर, पूजापाठ, आरती आदि के नाम पर उन्हें ठगते रहते हैं. समयसमय पर भारत से कथावाचक भी यहां आ कर अपनाअपना रंग दिखा जाते हैं.

इस शृंखला में गंगाजल के माध्यम से भी आप्रवासी भारतीयों की धार्मिक भावनाओं का शोषण शुरू हो गया है. यह गंगाजल बर्कले (कैलीफोर्निया) में यूनिवर्सिटी रेवेन्यू पर अन्य भारतीय वस्तुओं की तरह उपलब्ध है. पालीथिन की हरी थैलियों में मिलने वाले इस गंगाजल की कीमत एक डालर (लगभग 30 रुपए) है.

कहा जाता है कि भारत स्थित 'गंगोत्री मिनरल प्लांट' 1990 से यहां खनिज जल के रूप में गंगाजल की आपूर्ति करता रहा है. यह गंगाजल डब्बाबंद होता है, जिस पर अंगरेजी में लिखा रहता है 'विशुद्ध गंगाजल,' 'प्राकृतिक खनिज जल'. डब्बे पर गंगा के मैदान में अवतरण का चित्र भी बना है.

हाल ही में राजीव भारद्वाज नामक एक आप्रवासी भारतीय ने उक्त कंपनी से अमेरिका और कनाडा में गंगाजल आयात करने का अनुबंध कर लिया है. एक तरह से वह यहां गंगाजल के थोक व्यापारी बन गए हैं. पहली खेप के रूप में उन्होंने ढाई टन





प्रतिदिन लाखों लोग गंगा में स्नान कर उसे इतना गंदा कर देते हैं कि वह पानी पीने योग्य रह ही नहीं जाता है.

गंगाजल मंगवाया है जो एक लाख डब्बों में आया है.

इस गंगाजल के खरीदार केवल आप्रवासी भारतीय ही हों सो बात नहीं है, कुछ अमेरिकी भी इसे खरीदते हैं. यह बात अलग है कि वे खनिज जल के रूप में इस का उपयोग करते हैं, जबकि अधिकतर आप्रवासी भारतीय उस अंधविश्वास के तहत इस का सेवन करते हैं जिस के अनुसार गंगाजल का एक घूंट पीने से मनुष्य जीवन और मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है.

समझ में नहीं आता कि अमेरिकी जैसे आधुनिक और तर्क पर आधारित समाज में रह कर भी आप्रवासी भारतीय ऐसी बेतुकी, काल्पनिक, भ्रामक और अवैज्ञानिक बातों पर विश्वास क्यों कर लेते हैं? क्या इन्हें इतना बोध नहीं है कि जीवनमरण का कोई बंधन नहीं होता, यह तो एक प्राकृतिक प्रक्रिया है? यदि एक घूंट गंगाजल के सेवन से किसी का उद्धार होता तो भारतवासी, विशेषतः गंगा नदी के किनारे रहने वाले लोग, जो दिनभर गंगाजल ही पीते रहते हैं, न जाने कब के 'मोक्ष' पा गए होते.

गंगाजल को पवित्र, उद्धारक और अमृतमय मानने वाले आप्रवासी भारतीयों को यह जान लेना चाहिए कि उन्हें मिलने वाला गंगाजल कितना प्रदूषित है. ऋषिकेश, हरिद्वार, फर्रुखाबाद, इलाहाबाद, बनारस, पटना आदि नगरों में प्रतिदिन लाखों लोग तथाकथित अपने दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों से छुटकारा पाने के लिए गोता लगाते हैं और बदले में गंगाजल को तो और अधिक गंदा करते ही हैं, खुद भी दस्त, पोलियो, टाइफाइड जैसी अनेक बीमारियां लेते हैं.

गंगा के किनारे स्थित विभिन्न नगरों में प्रतिदिन सैकड़ों शवों की भस्म गंगा जल में प्रवाहित की जाती है. गाजीपुर में अफीम के सरकारी कारखाने के जल ने गंगाजल को भी अफीमी बना दिया है. इस के अतिरिक्त सैकड़ों कारखानों का कचरा, गंदा पानी आदि भी गंगा में बहाया जाता है. एक सर्वेक्षण के अनुसार विभिन्न नगरों के निकट गंगाजल पीने और नहाने के सर्वथा अनुपयुक्त है.

यहां यह तर्क दिया जा सकता है कि अमेरिका में आयात किया जाने वाला गंगाजल 'गंगोत्री मिनरल प्लांट' द्वारा 8,500 फुट की ऊंचाई से इकट्ठा किया जाता है, जहां प्रदूषण का प्रभाव नहीं होता.

यह तर्क उचित नहीं है, क्योंकि गंगाजल का प्रदूषण तो उस के उद्गम स्थल से ही शुरू हो जाता है. तापमान में वृद्धि होने के कारण हिमनद पीछे खिसकने लगे हैं और उन के नीचे से रेत के पहाड़ टूटने लगे हैं. फलतः उद्गम स्थल पर गंगाजल में रेत के कण बढ़ गए हैं.

दूसरे, तीर्थाटन और पर्यटन के लिए गंगोत्री जाने वाले पर्यटकों की संख्या भी बढ़ी है, जिस से गंगा के जल और उस के तटवर्ती इलाकों में गंदगी बढ़ी है. कई पर्वतीय स्थानों पर मलादि सीधे गंगा में बहा दिया जाता है. अतः गंगाजल को कदापि सेवनीय नहीं माना जा सकता.

—अनिल कुमार मिश्र

"हां मैं एम टीवी, जी टीवी, राक, रैप व फिल्में सभी देखता हूं–"



टी. एन. शेषन

–मुख्य चुनाव आयुक्त

लेख • बी.के. तिवारी

अपनी कार्यपद्धति के लिए सारे देश में चर्चित मुख्य चुनाव आयुक्त तिरुनेल्लाई नारायणियर शेषन पिछले दिनों अपने पुराने मित्र, जबलपुर विश्व-विद्यालय के कुलपति शिवप्रसाद कोष्टा से मिलने जबलपुर आए थे. यहीं उन्होंने नर्मदा नदी के संगमरमरी सौंदर्य का अपनी पत्नी जयलक्ष्मी शेषन के साथ भरपूर लुत्फ उठाया. इसी समय नौका विहार के दौरान उन से व उन की पत्नी जयलक्ष्मी शेषन से हुई अंतरंग बातचीत के मुख्य अंश यहां

टी.एन. शेषन आज एक ऐसा नाम है जिस से नौकरशाह व राजनीतिबाज थर्राते हैं. आए दिन वह किसी न किसी विवाद के कारण सुर्खियों में छाए रहते हैं. लेकिन क्या उन के इस गंभीर व कठोर चेहरे के पीछे छिपे सामान्य व्यक्तित्व से भी आप परिचित हैं?

प्रस्तुत हैं. उल्लेखनीय है कि जयलक्ष्मी शेषन ने देश में पहली बार (प्रेस से बात की है.)

आप सारे देश के नौकरशाहों व राजनीतिबाजों के लिए हौआ क्यों बने हैं?

ऐसा मेरा स्वभाव ही है.

लोग आप को 'बुलडाग' तक कहते हैं, ऐसा क्यों?

कहने वाले यह नहीं जानते कि मैं सिर्फ भूंकता नहीं, काटता भी हूं.

आप का बचपन कैसा बीता?

अच्छा था. पर किताबें खरीदने को भी पैसा नहीं होता था.

आप अपने बारे में स्वतः कुछ बताएं?

जन्म 15 दिसंबर 1932 को हुआ. 1952 में आई.पी.एसः बना, पर मैं आई.ए.एस. बनना चाहता था. अतः 1955 में आई.ए.एस. बना. मेरा रक्तचाप 120/80, नाड़ी गति 72, ब्लड शुगर 75 व कोलेस्टराल 130 है. अभी मैं मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत हूं. (गंभीर मुद्रा में).

आप हंसते कब हैं?

जब मेरे स्तर के लोग मेरे साथ होते हैं.

आप रोते कब हैं?

हर समय देश की वर्तमान स्थिति पर रोता हूं.

आप को इतना क्रोध क्यों आता है?

प्रशासन चलाने के लिए जितना जरूरी है उतना ही गुस्सा आता है.

कभी आप को अपनी पत्नी से डांट पड़ी है?

जी, कई बार, जब मैं गलती करता हूं.

आप के और प्रधानमंत्री के संबंध कैसे हैं?

जैस एक मुख्य चुनाव आयुक्त व प्रधानमंत्री के होने चाहिए.

क्या प्रधानमंत्री आप को राजनीति में लाना चाहते है?

प्रधानमंत्री के मन में क्या है यह मैं नहीं जानता.

विश्व में आप कहांकहां घूम चुके हैं?

अब तक सारी दुनिया घूम चुका हूं.

क्या आप ने शादी से पहले किसी लड़की से प्यार किया था?

नहीं, कभी नहीं.

और शादी के बाद?

सिर्फ अपनी पत्नी से.

आप के परिवार में कौनकौन हैं?

मैं और मेरी पत्नी. मेरे कोई बच्चा नहीं है.

आप को बच्चों की कमी खलती होगी?

जी नहीं, सारा देश मेरा बच्चा है.

आप अपने मातापिता को कितना चाहते थे?

बहुत अधिक और वे भी मुझे बहुत चाहते थे. मैं घर में सब से छोटा था.

आप हमेशा भगवदगीता के उदाहरण देते हैं?

जी हां, गीता हमारे जीवन मूल्यों का आधार है.

मनोरंजन कैसे करते हैं?

एम. टीवी, जी.टीवी, रैप, दूरदर्शन व फिल्में देखता हूं.

आप की पसंदीदा फिल्म कौन सी है?

अभी मैं ने बाजीगर व खुद्दार देखी हैं, ठीक थीं.

आप ने कभी झूठ बोला है?

(हंसते हुए) क्या कभी मैं ने सच बोला है?

छात्रसंघों के चुनावों में जो धांधली व गुंडागर्दी होती है, आप इस बारे में क्या कहेंगे?

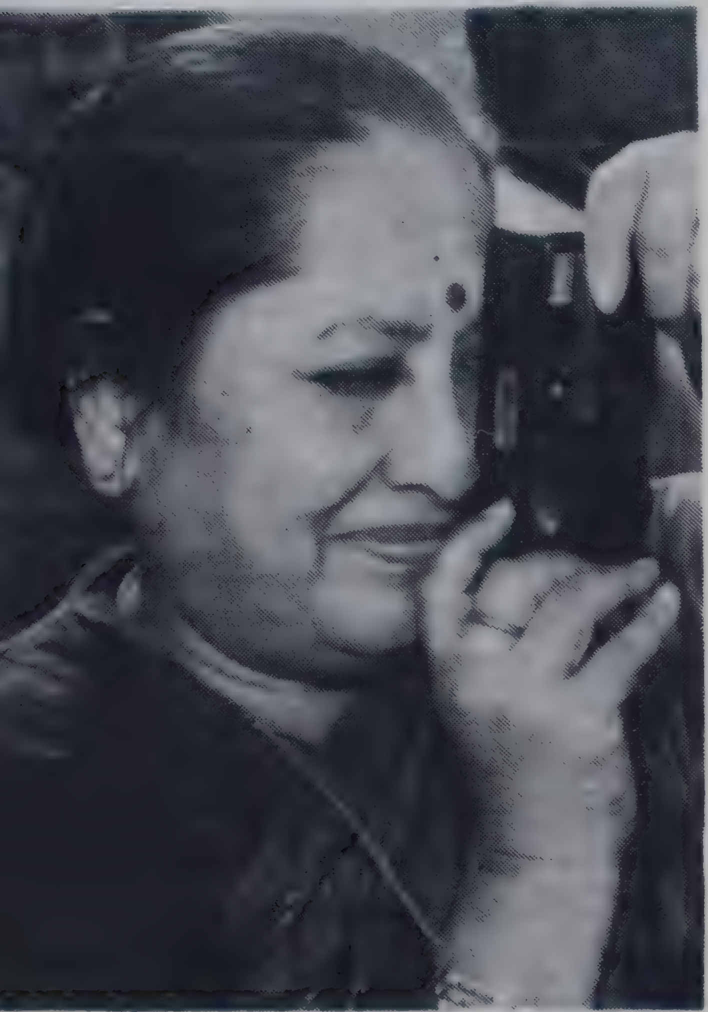
अपने मुख्यमंत्री से आदेश दिला दें, सब को ठीक कर दूंगा.

(नर्मदा नदी में नौकाविहार के दौरान) आप नर्मदा नदी के बारे में क्या जानते हैं?

मां नर्मदा सभी नदियों में श्रेष्ठ है. (संस्कृत का श्लोक बोलते हुए) यदि दिन में 3 बार मां नर्मदा का स्मरण किया जाए तो जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं.

इस संगमरमरी सौंदर्य को निखारने के लिए क्या प्रयास होना चाहिए?

मां का शृंगार कभी बेटा नहीं करता. यह प्राकृतिक रूप में ही अप्रतिम सुंदर है, इसे न छेड़ें.



जयलक्ष्मी शेषन : एक पढ़ीलिखी व बड़े घर की लड़की होने पर भी अहंकार छू तक नहीं गया है.

इस के बाद टी.एन. शेषन से उन की पत्नी जयलक्ष्मी शेषन से बात करने की आज्ञा ली तो वह बोले, लक्ष्मी प्रेस से बात नहीं करती, तुम पटा लो तो ठीक है. इस पर काफी समझाने, विश्वास दिलाने पर बुद्धिमान, गौरवमयी, सुसंस्कृत जयलक्ष्मी शेषन ने बात की जो यहां प्रस्तुत है :

मैडम, आप की शादी प्रेम विवाह थी या अरेंज्डमैरिज?

पूरी तरह अरेंज्ड मैरिज.

आप के विवाह के समय भी साहब गंजे थे या?

(बीच में ही टोकते व हंसते हुए) नहीं, उस समय साहब बहुत सुंदर थे. गंजापन तो उम्र के साथ हो गया है.

शेषन साहब घर में भी गुस्सा होते है या सिर्फ बाहर ही?

घर में भी गुस्सा होते हैं. परिस्थितियों के अनुसार उन्हें गुस्सा आता है.

साहब को जब गुस्सा आता है तब आप कैसे मनाती हैं?

मैं उन्हें वैसा ही छोड़ देती हूं, थोड़ी देर में वह खुद शांत हो जाते हैं.

और जब आप को गुस्सा आता है?

वह तुरंत मना लेते हैं, कहते हैं झगड़ा ज्यादा देर नहीं चलना चाहिए.

आप को साहब की कौन सी बात सब से ज्यादा पसंद है?

वह हर जगह सफाईपसंद हैं, चाहे घर हो, आफिस हो या उन की कार्यपद्धति.

और उन की कौन सी आदत नापसंद है?

इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती.

साहब क्या पार्टियों में जाना पसंद करते हैं?

नहीं, उन्हें भीड़भाड़ पसंद नहीं.

साहब को खाने में क्या पसंद है?

वह शुद्ध शाकाहारी भोजन पसंद करते हैं.

साहब आप के साथ रसोई में मदद करते हैं या नहीं?

खाना बनाना नहीं आता. हां मैं खाना बनाती हूं तो वह बरतन साफ कर देते हैं. प्लेट वगैरह धोते हैं.

आप को साहब सिनेमा ले जाते हैं?

शादी के शुरुआती दौर में ले जाते थे. अब तो हम घर पर ही टीवी/वीसीआर पर देख लेते हैं.

साहब परिवार के लिए समय निकालते हैं या नहीं?

हमारे बच्चे तो हैं नहीं. परिवार में मैं और साहब हैं तो साथ ही रहते हैं.

अखबारों में शेषन साहब के बारे में गंदेगंदे शब्द लिखे जाते हैं, इस से आप को कष्ट होता है?

पहले होता था, अब आदत बन गई है. अब यदि कुछ नहीं छपता है तो कष्ट होता है.

आप की नजर में साहब कैसे व्यक्ति हैं?

वह बहुत अच्छे व आकर्षक हैं.

क्या आप के पति को राजनीति में जाना चाहिए?

मुख्य चुनाव आयुक्त को राजनीति में नहीं जाना चाहिए.

जब आप की शादी हुई तब क्या शेषन साहब कलक्टर थे?

यदि वह कलक्टर नहीं होते तो मेरे पिता उन से शादी ही नहीं करते क्योंकि मैं भी पढ़ीलिखी व बड़े घर की लड़की थी. मेरे पिता केरल विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर थे. ●

पासा पलट गया

हमारी मौसीजी को अपने एम.ए. पास होने का गर्व है. अतः वह जल्दी ही किसी की बात नहीं मानतीं. एक बार हम सब को हरिद्वार जाना था. सुबहसुबह मौसीजी को रसोई में जाते देख कर मौसाजी ने मना किया, "अभी काफी अंधेरा है, बाद में चले जाना."

पर मौसीजी नहीं मानीं और रसोई में जा कर आलू उबालने को चढ़ा दिए. कुछ देर बाद जब पतीला उतारा गया तो उस में आलू के बदले प्याज थे. अंधेरे के कारण दिखाई नहीं पड़ा. और मौसीजी आलू के बदले प्याज का थैला भगोने में उलट दिया. जब सब को आलू के बदले प्याज खाने पड़े तो मौसीजी का चेहरा देखने लायक था. —संजय भारद्वाज

*

मैं अकसर अपने छोटे भाई से 'लेडीज फर्स्ट' (महिलाएं पहले) कह कर फायदे उठाती थी. जैसे क्रिकेट में पहले मैं ही बल्लेबाजी करती या मैं ही किसी चीज का चुनाव पहले करती थी.

एक बार हम दोनों में बहस हो रही थी तो मैं ने गुस्से में 'शटअप' (चुप रहो) कह दिया. इस पर उस ने तुरंत 'लेडीज फर्स्ट' कह कर मुझे निरुत्तर कर दिया.

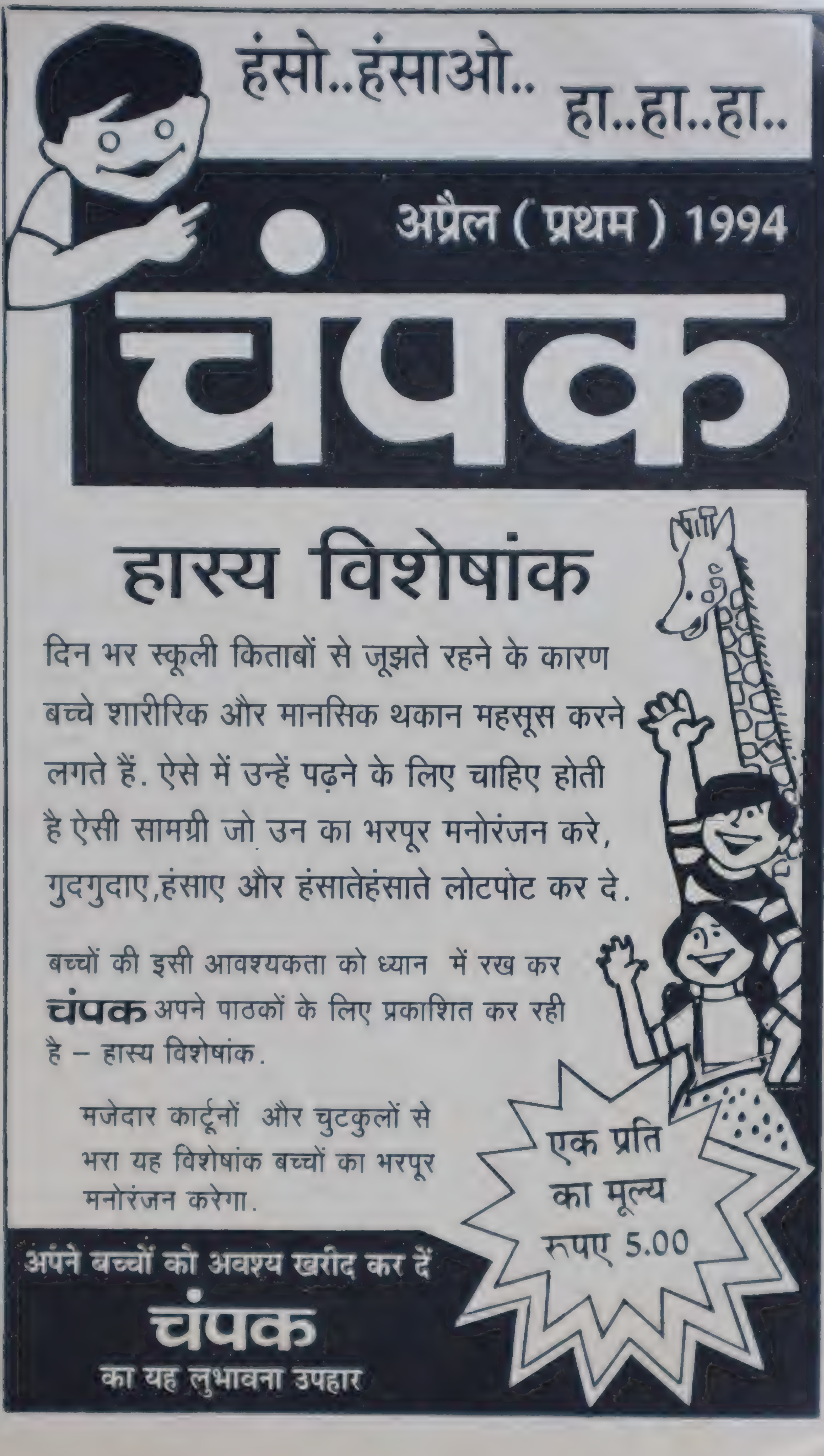
उस दिन के बाद मेरी यह आदत छूट गई. —शोभा सिंह

मैं अपने मित्र को स्टेशन पर विदा कर बस से घर लौट रहा था. बस के अंदर मैं ने देखा कि महिला सीट पर हिप्पी कट बालों वाला एक लड़का कमीज और पैंट पहने बैठा है. मैं लपक कर बैठने के उद्देश्य से सीट के पास पहुंचा ही था कि एक मधुर स्वर कानों में टकराया, "भाई साहब, यह महिलाओं की सीट है और यह मेरी बहन है."

बस में ठहाका गूंज उठा और मैं बहुत ही शर्मिंदा हुआ. दोनों बहनों की व्यंग्यभरी मुसकान के कारण बस में सफर करना मेरे लिए सांप छछूंदर की स्थिति पैदा कर रहा था. तभी एक नवदंपती का बस में आगमन हुआ. युवक अपनी नवविवाहिता को बिठाने के उद्देश्य से महिलाओं की सीट के पास पहुंचा और फैशनपरस्त लड़की का कंधा झकझोरते हुए बोला, "भाई साहब, उठिए, यह महिला सीट है."

पूरी बस में एक बार फिर जोर का ठहाका गूंजा जिस में मेरा ठहाका भी शामिल था. —विष्णु चंद्र सिंह

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055


हंसो..हंसाओ.. हा..हा..हा..
अप्रैल (प्रथम) 1994
चंपक
हास्य विशेषांक
दिन भर स्कूली किताबों से जूझते रहने के कारण बच्चे शारीरिक और मानसिक थकान महसूस करने लगते हैं. ऐसे में उन्हें पढ़ने के लिए चाहिए होती है ऐसी सामग्री जो उन का भरपूर मनोरंजन करे, गुदगुदाए,हंसाए और हंसातेहंसाते लोटपोट कर दे.
बच्चों की इसी आवश्यकता को ध्यान में रख कर चंपक अपने पाठकों के लिए प्रकाशित कर रही है – हास्य विशेषांक.
मजेदार कार्टूनों और चुटकुलों से भरा यह विशेषांक बच्चों का भरपूर मनोरंजन करेगा.
एक प्रति का मूल्य रुपए 5.00
अपने बच्चों को अवश्य खरीद कर दें
चंपक
का यह लुभावना उपहार

प्लाट के नाम पर

रोटी, कपड़ा और मकान ये तीनों मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताएं हैं. इन्हें पूरा करने के लिए आज के युग में लोगों में होड़ सी लगी रहती है. इस होड़ का फायदा उठाते हैं कुछेक सफेदपोश अपराधी जिन पर जनता आसानी से विश्वास कर बैठती है.

यों तो देश में ठगी के अनूठे तरीके प्रकाश में आते रहे हैं, प्लाट के नाम पर भोलीभाली जनता से करोड़ों की ठगी अपनेआप में एक अनूठा तरीका है. इस में लोगों को ऐसे सब्जबाग दिखाए जाते हैं कि प्लाट एवं मकान उन्हें आसानी से उपलब्ध हो जाएगा. इस के लिए प्रत्येक व्यक्ति से किस्तों में अथवा एकमुश्त रुपए ऐंठ कर, ऐसे धोखाधड़ी करने वाले लोग थोड़े ही समय में करोड़ों का चूना लगा कर फरार हो जाते हैं. दरअसल, उन के पास न तो ऐसे प्लाट होते हैं और न ही मकान जो वे जनता को आबंटित कर सकें. यह तो छलावा मात्र है.

आज जनता में मकान या प्लाट लेने की होड़ सी लगी है. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में लोग अधिक से अधिक मकान या प्लाट ले कर कुछ समय बाद दोगुनेतिगुने दामों पर बेच देने के लिए प्रयासरत रहते हैं.

इस कार्य में राजधानी के कुछ बिल्डर्स काफी पैसा हड़प रहे हैं. इन भवन निर्माताओं के पास कुछ भी न होते हुए, जनता से महज आश्वासनों पर पैसा ले रहे हैं. दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा, गुड़गांव, जयपुर आदि क्षेत्रों में कई बार ऐसी गैरकानूनी गतिविधियों (रैकेट) का पर्दाफाश हुआ है. पर फिर भी यह सिलसिला अभी थमा नहीं है.

अभी कुछ समय पहले ही यह सनसनीखेज समाचार अनेक अखबारों में प्रकाशित हुआ था कि प्लाट देने के नाम पर लोगों से करोड़ों रुपयों की ठगी करने वाले



ठगी का सिलसिला

लेख • माला गुप्ता



जे.वी.सी. हाउसिंग फाइनेंस कंपनी के प्रबंध निदेशक को दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने गिरफ्तार कर लिया. उन की गिरफ्तारी धोखा खाई हुई एक महिला की रिपोर्ट के आधार पर की गई थी. जिस से उस प्रबंध निदेशक ने 83,000 रुपए हड़प लिए थे और उस महिला को नोएडादादरी रोड पर प्लाट दिलाने का आश्वासन दिया था.

इसी प्रकार कुछ समय पूर्व ही एक और सनसनीखेज समाचार छपा था. बिहार पुलिस को अनेक घपले में एक व्यक्ति की तलाश थी. वह व्यक्ति 1992 में लोकसभा की सीट के लिए उम्मीदवार भी रहा था. पटना में मशीन का ठंडा पानी बेचने वाला वह व्यक्ति करोड़ों का घपला कर के बिहार से फरार हो कर दिल्ली में एक धनाढ्य व्यक्ति की भांति रह रहा था. उस व्यक्ति ने जयप्रकाश नारायण के नाम पर एक हाउसिंग सोसायटी बनाई थी और हजारों लोगों से करोड़ों रुपए हड़प लिए थे.

पुलिस ने उस की पत्नी को आपराधिक षड्यंत्र के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया था और मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट महोदय ने उस की जमानत नामंजूर कर दी थी. बाद में सेशन अदालत में 2 लाख के निजी मुचलके और दो वकीलों की गारंटी पर उस की जमानत हुई थी. बिहार पुलिस ने काफी भागदौड़ कर के उक्त व्यक्ति की 2 गाड़ियां जब्त कराईं और घर के सामान की कुर्की करवाई.

इसी प्रकार जैना प्रापर्टीज द्वारा गैरकानूनी ढंग से करोड़ों रुपए ऐंठे जाने का आरोप है. उन की कारगुजारियों का खमियाजा अब लोग भुगत रहे हैं क्योंकि जैना की डेढ़ दर्जन संपत्तियों पर डीडीए ताला लटका चुकी है. इन संपत्तियों में जिन लोगों ने दुकानें या कार्यालय खोले थे, उन का काम चौपट हो गया है. 'महल' देने का भरोसा दे कर 'कोठरियां' देने वाले राजेंद्र जैन के विरुद्ध लोगों की बहुत सी शिकायतें हैं.

राजेंद्र जैन द्वारा वजीरपुर औद्योगिक क्षेत्र में बनाए गए 2 सामुदायिक केंद्रों को डीडीए सील कर चुकी है. इन सामुदायिक केंद्रों में करीब 400-400 दुकानें हैं. इन दुकानों को लोगों ने 35,000 रुपए से 5 लाख रुपए तक में खरीदा पर उन्हें बिजली, पानी आदि सुविधाएं भी मुहैया नहीं हो पाई.

जैना प्रापर्टीज ने अमीरों को ही नहीं बल्कि गरीबों को भी धोखा दे कर लूटा है. कहा जाता है कि हरमेश सिंह बेदी ने जैना द्वारा दिए गए विज्ञापन के आधार पर दरियागंज में सुभाष मार्ग पर 16 वर्गफुट की एक वातानुकूलित दुकान 32,800 रुपए में खरीदने के लिए जैना से करार किया. बाद में जैना ने दुकान का क्षेत्रफल 23 वर्गफुट करने के नाम पर उन से 15,000 रुपए और वसूल किए. इस प्रकार जैना को हरमेश सिंह ने कुल 47,000 रुपए दिए. बाद में 1985 में जैना प्रापर्टीज ने उन्हें केवल 12 वर्गफुट का खोखा थमा दिया. एकाधिकार और व्यापारिक व्यवहार आयोग ने बेदी की शिकायत पर 1991 में जैना के कार्य को व्यापारिक बेईमानी की संज्ञा दे कर दोषी ठहराया. मामला

प्लाट या मकान के नाम पर ठगी कोई नई बात नहीं है. अक्सर ऐसे किस्से छपते रहते हैं. परंतु इतना कुछ जाननेसमझने के बाद भी आम जनता ठगी का शिकार हो रही है. लेकिन इस में सिर्फ आम जनता ही दोषी है? क्या सरकार का कुछ फर्ज नहीं बनता है?

उच्चतम न्यायालय तक पहुंचा और बेदी न्यायालय के चक्कर काटते रहे.

इसी प्रकार जैना प्रापर्टीज की यूसुफ सराय स्थित इमारत पर डीडीए को ताला लगवाने की नौबत आई. ऐसा आरोप है कि जहां कायदे से इमारत में मात्र 22 फ्लैट, दुकान, दफ्तर बनाए जाने थे, वहीं जैना ने कुल 102 कोठरियां बना दीं और 180 वर्गफुट क्षेत्रफल के कमरों के पैसे ऐंठ कर सिर्फ 36 वर्गफुट की कोठरियां थमा दीं. जैना ने लिफ्ट लगाने के स्थान तक को बेच डाला. डीडीए ने काफी अरसे बाद इन आरोपों के अंतर्गत दुकानों व दफ्तरों को ताला ठोंक दिया जिस से अनेक लोगों को परेशानियां सहनी पड़ रही हैं.

नोएडा औद्योगिक नगरी के बाजारों व रिहाइशी इलाकों में भी अवैध कब्जे के समाचार मिलते रहे हैं. बताते हैं, सेक्टर 8,9,19,22, 27 और 12-22 चौराहे पर सब से ज्यादा अवैध कब्जे हुए हैं.

एक अन्य घटना के अनुसार दिल्ली विकास प्राधिकरण, कड़कड़डूमा गांव की



नोएडा का बाजार : नोएडा जैसे औद्योगिक क्षेत्र के बाजारों व रिहाइशी इलाकों में भी अवैध कब्जे के समाचार मिलते रहे हैं.

सार्वजनिक भूमि को भूमि माफिया के अवैध कब्जे से मुक्त कराने में नाकाम रहा. यहां बने पंचायत घर को धर्मशाला घोषित कर के पुजारिन का डेरा तथा एक यूनियन का दफ्तर भी खोल देने का समाचार है.

विकास मार्ग तक फैली इस जमीन की कीमत करोड़ों में बताई जाती है. अक्तूबर 1992 में डीडीए के सतर्कता विभाग द्वारा यहां जांचपड़ताल किए जाने का भी समाचार है और मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा भूमि आयुक्त को तुरंत काररवाई करने की सलाह नवंबर 1992 में दिए जाने की भी खबर है. पर भूमि संरक्षण विभाग की ओर से अभी तक कोई काररवाई नहीं की गई है.

इसी प्रकार मैनपुरी शहर (आगरा) की 10.5 एकड़ सरकारी जमीन पर एक व्यक्ति द्वारा पिछले कई सालों से अवैध

कब्जा कर रखने का भी समाचार है. इस की कीमत डेढ़ करोड़ रुपए बताई जाती है.

आरोप है कि दिल्ली राज्य औद्योगिक विकास निगम ने सारे नियमों को ताक पर रख कर अपने चहेते व्यक्ति को रेडीमेड कपड़ों का उद्योग चलाने के लिए कल्याणपुरी की मुख्य सड़क पर 1200 वर्गफुट जगह अलाट कर दी, जबकि इस जगह पर दिल्ली के कमजोर तबके के लोगों के लिए कम्यूनिटी वर्क सेंटर बनना था. जमीन का अलाटी दिल्ली का वाशिंदा न हो कर एक अन्य प्रांत का रहने वाला है.

इस प्रकार फ्लैट, प्लाट या दुकान अलाट करने की धोखाधड़ी की शुरुआत अखबार में विज्ञापन निकलवा कर की जाती है. ऐसे विज्ञापन पर विश्वास कर लोग हजारोंलाखों रुपए इन विज्ञापन-कर्ताओं के पास मकान मालिक या प्लाट मालिक बनने के सपने देखते हुए जमा करा देते हैं. पर अकसर यह एक महज धोखा होता है और उन की गाढ़ी कमाई का पैसा बेकार चला जाता है.

कई बार ऐसा भी मामला प्रकाश में आया है कि सहकारी आवास समितियों के सशक्त पदाधिकारी पुराने नियमित सदस्यों को धत्ता बता कर उन के स्थान पर नए सदस्यों को घुसा कर अवैध रूप से उन्हें प्लाट या मकान आबंटित कर देते हैं.

मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट सी.के. चतुर्वेदी ने अतिक्रमणों को ले कर एक मामले में हाल ही में सुनाए गए आदेश में कहा था कि सार्वजनिक इस्तेमाल की जमीन पर कब्जा निशब्द आतंकवाद है, जिस से जनता भी निशब्द छली जाती है. राजधानी में अतिक्रमणों की समस्या के ऊपर काबू पाने के लिए मजिस्ट्रेट चतुर्वेदी ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को भी कई निर्देश जारी किए थे. सड़कों पर अतिक्रमण दिल्ली पुलिस एक्ट के अंतर्गत संज्ञेय अपराध है और कानून को लागू करना हरेक पुलिस अफसर की जिम्मेदारी है. अदालत ने यह भी कहा था कि आने वाले सालों में अतिक्रमण सब से बड़ा अपराध होगा और इसे रोकने के लिए मजिस्ट्रेट महोदय ने दिल्ली पुलिस आयुक्त को अनेक निर्देश दिए थे.

कभीकभी ऐसे मामले भी प्रकाश में आए हैं कि बिल्डर माफिया ने अथवा संबंधित अपराधियों ने उन फाइलों को ही गुम करा दिया जिन के आधार पर पुलिस केस कायम करने में सफल हो पाती और अपराधियों को न्यायालय द्वारा सजा दिलवाती. फाइलों के अभाव में महज द्वितीय श्रेणी के साक्ष्यों के आधार पर सजा दिला पाना मुशकिल हो जाता है. और फाइल गायब कराने के 1-2 नहीं, दर्जनों मामले प्रकाश में आए. इस संबंध में राज्यपाल महोदय तक शिकायत गई है. जब से फाइलों के गुम होने का पता चला है, बड़े अफसरों ने सभी महत्त्वपूर्ण फाइलों व कागजों को अपने कब्जे में ले लिया है.

सतर्क रहना जरूरी

उपर्युक्त एहतियात के अतिरिक्त ऐसी बुराई को समाप्त करने हेतु कुछ अन्य सुझाव भी जरूरी हैं. सब से बड़ी बात तो यह है कि जनता भी सतर्क रहे और ऐसे बहकावे, छल एवं भुलावे में न आए जिस से कि उन की गाढ़ी कमाई कुछ क्षणों में ही बरबाद हो जाए. उन्हें पैसा जमा करने का कदम तभी उठाना चाहिए जब वे ठोंकबजा कर पूरे तौर पर आश्वस्त हो जाएं कि विज्ञापनकर्ता भरोसे की पार्टी है और जो फ्लैट या प्लाट दिलाने का वादा किया जा रहा है, वह महज भुलावा नहीं है.

दीवानी कानून के अंतर्गत यह सिद्धांत है कि 'खरीदने वाला होशियार रहे.' ऐसा न हो कि जमीन और मकान हो ही नहीं अथवा हो भी तो उस पर किसी अन्य व्यक्ति का कब्जा हो और पैसा ले रहा हो कोई और, या एक ही संपत्ति को कोई विक्रेता 3-4 विभिन्न व्यक्तियों को अलगअलग बेच कर उन से पैसा वसूल कर रहा हो. इस में खरीदार को संबंधित क्षेत्र

के पटवारी, तहसीलदार से मिल कर यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि अमुक संपत्ति किस के नाम है और बेचने वाला कौन है.

समाचारपत्रों को भी ऐसे विज्ञापन छापने से पूर्व उन की विश्वसनीयता की जांच कर लेनी चाहिए, जैसा कि वे गुमशुदा, मृत एवं शोक समाचार आदि के संबंध में करते हैं.

कानून में संशोधन कर के यह सुनिश्चित करना भी जरूरी होगा कि ऐसे विज्ञापनों को तब तक प्रकाशित न किया जाए जबतक कि पुलिस ने उस में अपनी जांचपड़ताल कर के अपनी मोहर न लगा दी हो. इस कदम से ऐसे अनेक विज्ञापनों को छपने व जनता को धोखे में आने से रोका जा सकता है, जिन के द्वारा लोग करोड़ों रुपए की धोखाधड़ी कर के रातोंरात गायब हो जाते हैं.

एक अन्य आवश्यक सुझाव यह भी है कि इस प्रकार के धन को सीधे ही बैंक में चैक या ड्राफ्ट द्वारा जमा करने का प्रावधान हो, क्योंकि नकदी ले कर भाग जाने में आसानी होती है. बैंक खाता भी ऐसा होना चाहिए कि उस से आसानी से पैसा न निकाला जा सके और धोखाधड़ी की शिकायत आने पर पुलिस इन अपराधियों के खातों को सील कर सके. आवश्यक कागजात पर संबंधित व्यक्तियों के स्थायी पते होने पर पुलिस को कारवाई करने में सुविधा रहेगी और जनता को भी ठगे जाने का भय कम रहेगा.

भवन निर्माण से संबंधित जो बिल्डिंग नियम बने हैं, उन का कठोरता से पालन कराना भी अति आवश्यक है.

दिल्ली जैसे महानगरों तथा बड़े शहरों में पुलिस की एक अलग ऐसी इकाई होनी चाहिए जिस में इस प्रकार के विभिन्न मामलों को सीधे जांच हेतु दिया जा सके क्योंकि स्थानीय पुलिस कानून और व्यवस्था से संबंधित अपनी जिम्मेदारियों के साथ यह काम नहीं कर सकती.

ऐसे विशिष्ट मामलों में कुछ मदद केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सी बी आई) से भी ली जा सकती है.

अगर उपर्युक्त बातों पर ध्यान दिया जाए तो सरकार, जनता व पुलिस मिलजुल कर एकदूसरे को सहयोग प्रदान करते हुए इन समस्याओं का निराकरण कर सकती हैं जिस से आम आदमी बारबार ठगा न जाए और सब कुछ समाप्त हो जाने के पश्चात पुलिस को अंत में किंकर्तव्यविमूढ़ न रहना पड़े. सभी की जागृति ही समस्या का मूल समाधान है. ●

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

सरिता, संपादकीय विभाग,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

सफर में हमसफर व्यंजन

मीठी बेसनी पापड़ियां

सामग्री : 2 प्याले बेसन, ¾ प्याला तेल या घी, ½ प्याला दूध पाउडर, 1 प्याला चीनी, 15-20 बादाम, 3-4 बड़ी इलायची, थोड़ा सा जायफल पिसा.

विधि : बादाम सूखे पीस लें. इलायची भी पीस लें. चीनी में 2 बड़े चम्मच पानी डाल कर एक तार की चाशनी बना लें. घी गरम कर के बेसन भूनें. गुलाबी होने पर आंच बंद कर के या आंच से उतार कर दूध पाउडर, पिसे बादाम व जायफल मिलाएं. फिर मिश्रण को आंच पर चढ़ा कर चाशनी डाल कर गाढ़ा करें.

छोटीछोटी गोल थालियों में मिश्रण फैला कर पतली पापड़ियां बना लें. इलायची पाउडर से सजाएं.

ठंडा होने पर डब्बे में भरें और सफर पर साथ ले जाएं.

बूंदी पापड़ चिवड़ा

सामग्री : 1 प्याला बेसन की नमकीन बूंदी, 1 प्याला मुरमुरा, ½ प्याला छिलका उतरी मूंगफली, ½ प्याला भुने छिलका उतरे चने, 2 मसाला पापड़, 15-20 आलू के सूखे चिप्स, 3-4 हरी मिर्चें, 1 छोटा चम्मच जीरा, 2 बड़े चम्मच चीनी, 1



मीठी बेसनी पापड़ियां



बूंदी पापड़ चिवड़ा

छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच लाल मिर्च, थोड़े से करी पत्ते, पतला कटा नारियल, 2 छोटे चम्मच तेल, 2 बड़े चम्मच किशमिश, 1 छोटा चम्मच सौंफ.

विधि : पापड़ भून कर बारीक तोड़ लें. आलू चिप्स तेल में तल कर तोड़ लें. हरी मिर्च बारीक काट लें. तेल गरम कर के उस में जीरा, सौंफ, हरी मिर्च तथा करी पत्ते भून लें. आंच बंद कर दें. सब मसाले व बाकी सामान मिला कर एक बोतल में भर लें या पोलिथीन के बैग में भर कर रख लें.

गन पाउडर

सामग्री : ½ प्याला उड़द की धुली दाल, ½ प्याला चना दाल, ½ प्याला मूंगफली दाना, 10-12 लाल सूखी मिर्चें, 1½ छोटा चम्मच नमक, 2 छोटे चम्मच तेल.

विधि : एक चम्मच तेल गरम कर के उड़द की दाल भून लें. एक चम्मच तेल में चना दाल भून लें. मूंगफली भून कर छिलका उतार लें.

सभी चीजें व लाल मिर्चें सूखी ही बारीक पीस लें. नमक मिला कर बोतल में भर लें. सफर के दौरान इस 'गन पाउडर' को परांठे के साथ खाएं.

चाहे तो इस में पानी मिला कर चटनी बना कर ब्रेड पर लगा कर खाएं.

जीरे तेल के आलू

सामग्री : 1 किलोग्राम आलू, 2 छोटे चम्मच जीरा, 4 बड़े चम्मच सरसों का तेल, ½ छोटा चम्मच लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच भुना पिसा जीरा, ½ छोटा चम्मच काली मिर्च, 1½ छोटे चम्मच नमक.

विधि : आलू उबाल लें. उन्हें अच्छी

गन पाउडर



तरह ठंडा होने पर पोलिथीन बैग में भर लें. तेल गरम करें. अब इस में जीरा डाल कर आंच से उतार लें. तेल ठंडा होने दें. सब मसाले तेल में मिला कर एक चौड़े मुंह की शीशी में भर दें.

सफर के दौरान आलू छील काट कर तेल का मसाला मिला कर पूरी, ब्रेड या परांठे के साथ खाएं.

ध्यान दीजिए : बिना छिले आलू रखने से ये 2-3 दिन तक खराब नहीं होते.

खस्ता करेले

सामग्री : 6 बड़े लंबे करेले, 1 प्याला धुली उड़द की दाल, 2 छोटे चम्मच अमचूर, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च, 1 छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच सौंफ, ½ छोटा चम्मच मेथी दाना, ½ छोटा चम्मच कलौंजी, 1 बड़ा प्याज, तलने के लिए तेल.

विधि : दाल को सूखा बारीक पीस लें. मेथी दाना, कलौंजी व सौंफ भी सूखी पीस लें. करेले धो कर छील लें और नमक लगा कर 3-4 घंटे रख दें. फिर पानी से अच्छी तरह धो कर निचोड़ लें. प्याज कद्दूकस कर लें.

दाल को बिना तेल के भून लें. सारे मसाले व प्याज़ मिला कर करेलों में भर दें. धागे से करेले बांध दें. कड़ाही में तेल गरम कर के करेले तेल में बादामी होने तक तलें.

ये करेले कई सप्ताह तक खराब नहीं होते.

दही चावल

सामग्री : 2 प्याले चावल, 2 प्याले दूध, 1 बड़ा चम्मच दही, 1 छोटा चम्मच नमक, 1 बड़ा चम्मच तेल, 3-4 कटी हरी मिर्चें, थोड़ा करी पत्ता, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च, ¼ छोटा चम्मच सरसों.

जीरे तेल के आलू



खस्ता करेले



विधि : चावल धो कर नमक के पानी में उबालें. छलनी में डाल कर रखें जिस से कि सारा पानी निकल जाए. एक स्टील या प्लास्टिक के डब्बे में थोड़ा ठंडा होने पर भरें. दूध गुनगुना गरम करें. इस में दही डाल कर मिला कर चावलों में अच्छी तरह मिला दें. तेल गरम कर के सरसों, हरी मिर्चें व करी पत्ता भूनें. लाल मिर्च डाल कर चावल पर फैला दें.

4-5 घंटे में यह दूध जम जाएगा और आप के सफर के लिए स्वादिष्ट दही चावल तैयार हो जाएगा.

गन पाउडर या दालमोठ के साथ खाने से अधिक जायकेदार लगेगा.

गुड़ की रोटी

सामग्री : 100 ग्राम गुड़, 2 प्याले आटा, 3 बड़े चम्मच घी, 2 बड़े चम्मच तेल, 10-12 बादाम तथा काजू (ऐच्छिक), ½ प्याला नारियल कसा हुआ.

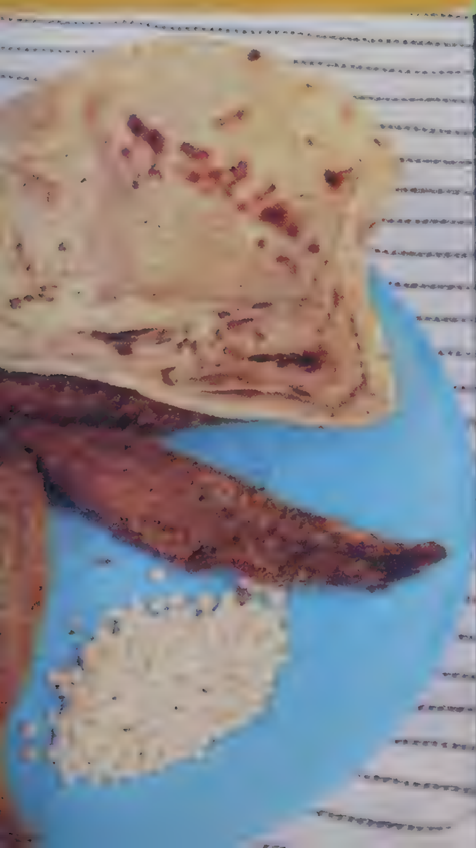
विधि : गुड़ को 3 बड़े चम्मच पानी में 3-4 घंटे के लिए भिगो दें ताकि गुड़ गल जाए.

आटे में तेल, कटे बादाम व कसा नारियल मिला कर गुड़ के पानी से कड़ा गूंध लें. दो हिस्सों में बांट कर मोटी रोटी बेल लें. 8-10 जगह पर उंगली से दबा दें व काजू चिपका दें.

तवा गरम कर के घी डालें. आंच धीमी कर के एक रोटी डालें. इस को हिलाती रहें. एक तरफ पकने पर पलट कर दूसरी तरफ घी लगा कर सेंक लें. इसी तरह दूसरी रोटी भी घी में तल लें. ऐसी रोटी बहुत ही धीमी आंच पर तैयार होती है.

ठंडी होने पर डब्बे में बंद करें. चाहे तो छोटीछोटी रोटियां भी तैयार कर सकती हैं. —विजय मेहरा ●

दही चावल





कहानी • बेला मुखर्जी

घने बादलों के साथ ठंडी हवा और बिजली की चमक देख कर सरोज ने सोचा, तेज बारिश होने के लक्षण हैं. उस ने खिड़कियों पर परदे खींच दिए. माथे पर चिंता की लकीरें गहरी हो गईं. पति शिकार करने जंगल में गए हुए थे.

वह सोचने लगी, 'घने जंगल के अंदर वर्षा में फंस गए तो?' भय से गला सूख गया. उस ने अपनेआप को कोसा, यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से मुग्ध हो यह कोठी खरीदने के लिए. पति को शिकार का नशा है, यह जान कर भी यहां हजारीबाग में घर



नहीं लेना चाहिए था.

लंबे विवाहित जीवन में पति ने इतना प्यार, सहयोग और संरक्षण दिया है कि तनमन तृप्त है सरोज का, पर यह शिकार का नशा सदा उस के सारे सुखों ... काली चादर बना छाया रहा. ... कितना प्रयास किया है उस ने इस ... पर सफल नहीं हो पाई.

हंम कग पति एक ही जवाब देते, "बस दो ही तो नशे हैं मुझे, शिकार और तुम..."

सरोज बैठक में बेचैनी से टहलने लगी. आशंकाओं ने मन को जकड़ लिया. तभी गाड़ी रुकने की आवाज से उस की जान में जान आई.

रवि लौट आए थे. उन्होंने बरामदे में पैर रखा कि मुसलाधार वर्षा आरंभ हो गई.

चाय ले कर रवि आराम से बैठ गए, फिर पत्नी को पास खींच लिया, "भई, चाय के साथ तुम नहीं तो चाय बेस्वाद..."

सरोज हंसने लगी, "मेरी जरूरत क्या चाय तक ही सीमित है?"

"जानेमन, ऐसा कह कर मेरा दिल न तोड़ो. अच्छा, यह बताओ कि इस बरसात की रात में खिलाओगी क्या?"

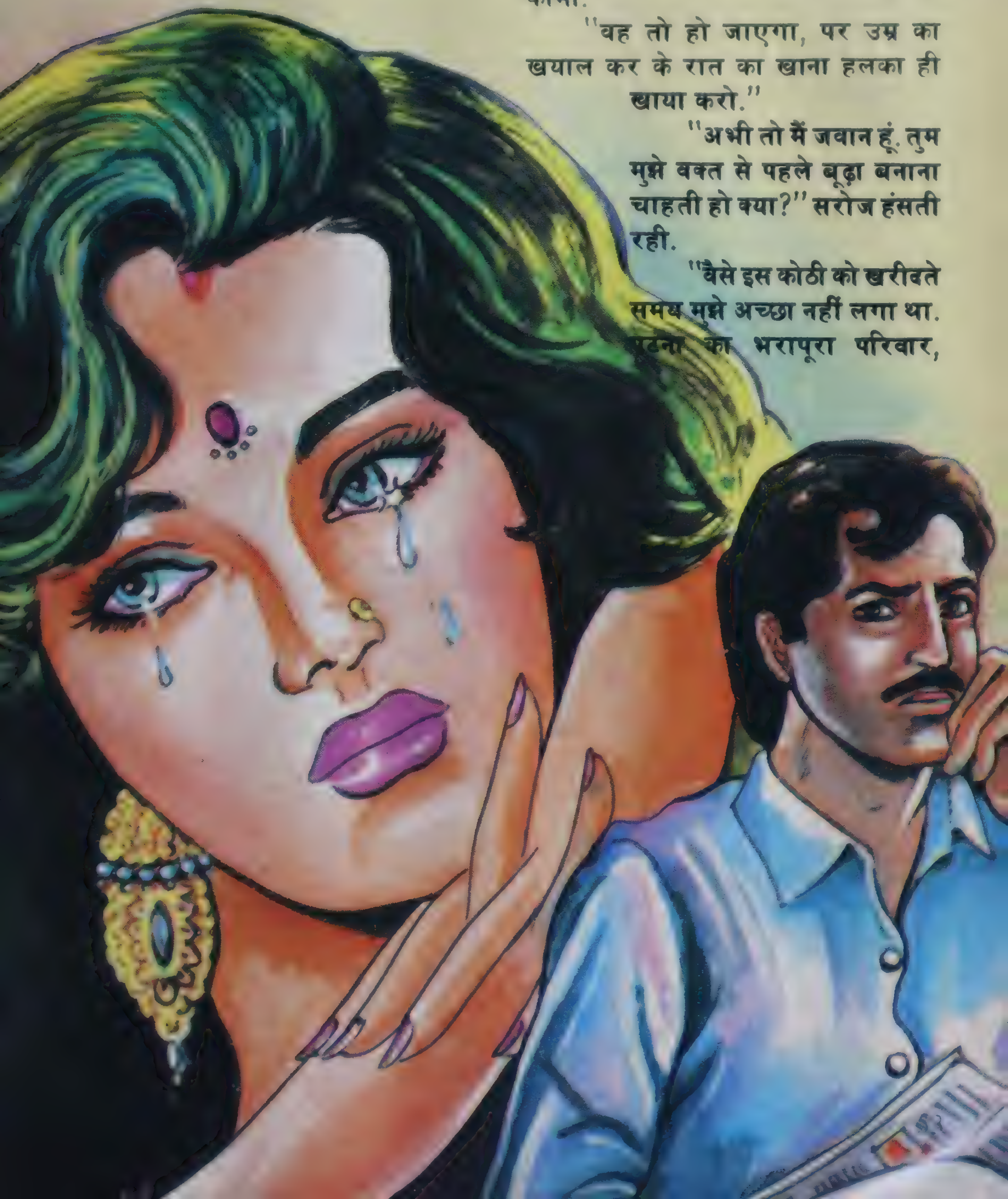
"जो तुम खाना चाहो."

"तो हो जाए खस्ता परांठा और सूखा कीमा."

"वह तो हो जाएगा, पर उम्र का खयाल कर के रात का खाना हलका ही खाया करो."

"अभी तो मैं जवान हूं. तुम मुझे वक्त से पहले बूढ़ा बनाना चाहती हो क्या?" सरोज हंसती रही.

"वैसे इस कोठी को खरीदते समय मुझे अच्छा नहीं लगा था. पटना का भरापूरा परिवार,



सरोज रवि से विवाह कर के काफी खुश थी. उसे अपने विवाहित जीवन में वह सब मिला जिस की उसे चाह थी. अचानक उस के जीवन में एक ऐसा व्यक्ति आया जिस से उस का अतीत जुड़ा था. ऐसे में क्या वह अपना विवाहित जीवन संभाल पाई?

अपना समाज, सब छोड़ कर यह जंगलनुमा शहर मुझे पसंद नहीं आया था. पर अब शिकार के मजे ले कर लगता है, तुम्हारा फैसला एकदम सही था."

"पर मैं ने सोचा था, छोटी जगह आ कर तुम शांति से घर में बैठोगे और हो गया उलटा."

"कल फिर जाऊंगा..."

"नहीं, इस वर्षा में जंगल के अंदर नहीं जाने दूंगी."

"ओह, बस यही आदत बुरी है तुम्हारी."

"देखो, खतरा मोल नहीं लेना चाहिए."

"ठीक है बाबा, कल सोचेंगे... अरे हां, यहां एक सज्जन से परिचय हुआ... मेरी ही उम्र के हैं. रिटायर हैं और यहां हमारी ही तरह एकांतवास के लिए घर खरीद कर रह रहे हैं. पढ़ने का शौक है. घर में किताबें ही किताबें भरी पड़ी हैं... तुम से खूब जमेगी."

"तुम उन के घर गए थे?"

"अरे, ज्यादा पढ़ने से लोग आधे पागल हो जाते हैं न... तो वह भी ऐसे ही हैं. जाने क्या सोचते हुए बीच सड़क से गुजर रहे थे. मैं सतर्क न रहता तो गाड़ी के नीचे आ जाते. घर तक छोड़ने चला गया था."

"पत्नी भी होगी?"

"यहां तो अकेले ही हैं, ऐसा ही बता रहे थे."

रात को सरोज देर तक जागती रही. पति गहरी नींद सो रहे थे. उस के मन में प्रेम और आदर का सोता फूट पड़ा. इतना पुराना साथ, पर सरोज का मन मानो आज भी भरा नहीं. वह सोचने लगी, कितनी सुरक्षा है पति की बांहों के घेरे में. वह मुसकराई. ढेर सा प्यार मन में ले कर पति को हलके से छुआ. फिर सो गई.

सरोज सुखी थी, जीवन भी भराभरा था, पति प्रतिष्ठित जज थे. स्वेच्छा से रिटायर हुए. पटना की सम्मानित हस्ती यानी रवि साहब की कोठी देखने योग्य थी. दोनों बेटों का विवाह हो गया था. 4 बच्चों के गुंजन से घर मुखरित रहता. सुखशांति से सजी गृहस्थी थी सरोज की.

हजारीबाग की इस कोठी को तो सरोज ने पति के आराम करने के लिए ही लिया था. उन को शिकार का शौक था और यहां शिकार के बहुत अवसर थे. यही सोचा था.

रवि शिकार से लौटे तो सरोज बरामदे में आ गई.

"जाना ही बेकार हुआ," वह बैठते ही बोले.

सरोज समझ गई कि पति के हाथ शिकार नहीं लगा है. वह हंस पड़ी, "क्या हुआ? शिकार भाग गए?"

"जाने सब कहां भाग गए."

"तुम्हारी गंध को सब पहचान गए हैं. पर इसी बहाने घर तो जल्दी लौट आए हो. इसी की मुझे खुशी है."

"तुम तो खुश हो, पर मैं ने उन सज्जन यानी नरेंद्र देव को शिकार खिलाने की रात की दावत दी थी, जाते समय."

"कोई बात नहीं, मुझ पर छोड़ो खाने का बंदोबस्त."

उधर नरेंद्र देव अपने घर में चुपचाप बैठे थे, एक किताब पकड़े. बहुत थक गए थे अपने ही जीवन का बोझ ढोतेढोते.



"आज हाथ लगा है शिकार, नरेंद्रजी, आज आप का खाना हमारे घर," रवि ने नरेंद्र से कहा.

जीवनभर घर के लोग उन को निचोड़ते रहे और अब छिलके को उठा कर बाहर फेंक दिया. एकदम अकेले थे इस संसार में, जबकि भाईबहनों का संसार हराभरा था.

रिटायर होने के बाद उन्होंने देखा कि अचानक ही वह उन सभी की गृहस्थी में अवांछित हो गए हैं जिन पर जीवनभर अपनी सारी कमाई लुटाते रहे थे. आखिर आहत हृदय से उन सब से दूर चले जाने का निश्चय कर लिया. किसी परिचित ने इस शहर के इस छोटे से घर को बहुत सस्ते में दिलवा दिया. पेंशन अच्छी ही मिल जाती थी. उन 'प्रियजनों' से दूर चुपचाप निकल आए जिन्होंने उन का सब कुछ छीन लिया था.

जिस दिन यहां आए थे, उसी दिन से यह मोती अपनेआप आ कर काम करने लगा था. वह आदिवासी अनाथ किशोर था, देखने में चोर लगता. उस ने आ कर झटपट बिना कहे ही सफाई करनी आरंभ कर दी. और वह भी तनमन से इतने थके थे कि मना भी नहीं कर पाए. तभी से मोती उन का सेवक, सखा, अभिभावक बना बैठा था.

नरेंद्र देव ने गहरी सांस ली. कुदरत को दोष नहीं दे सकते थे. उस ने तो सब कुछ दिया था. एक अच्छी नौकरी, सुंदर, शिक्षित पत्नी, परंतु वह खुद ही अपने जीवन के सुख को संभाल कर नहीं रख पाए तो दोष किसे दें. उन्होंने मखमल के कवर चढ़े तकिए पर धीरे से हाथ फेरा, मानो सहला रहे हों. बस एक यही स्मृतिभर रह गई थी उस 'अमृत' समान सुख की.

मध्यमवर्गीय परिवार के बड़े बेटे ने उच्चपद पर काम करने का खमियाजा अपने जीवन की सुखशांति की बलि चढ़ा कर भरा. परंतु अब उस की आवश्यकता किसी को नहीं थी. कितने उच्च और शिक्षित परिवार की बेटी उन की पत्नी बन कर आई थी, पर घरवालों ने बड़ा अत्याचार किया था उस पर. वह चुपचाप देखतेसुनते रहे थे सब कुछ.

मां, बहनों के मुंह लगने का साहस उन में नहीं था. पत्नी को सब दिनरात खटाते थे. गालियां देते, मायके से सामान और रुपया लाने के लिए अत्याचार करते और वह चुप रहते. इस के परिणामस्वरूप पत्नी की आंखों का प्रेम, धिक्कार और घृणा में बदलते पा कर भी किसी का विरोध करने का साहस न जुटा पाते.

पत्नी में आत्मसम्मान था, वह कभी सासननदों के मुंह न लगती और पति की स्थिति समझते देर भी नहीं लगी थी. अतः

वह शिकायत करना भी व्यर्थ समझती. चरम सीमा पर बात तब चली गई, जब मांबहनों ने उस पर हाथ भी उठा दिया. तुरंत ही वह जिस हाल में थी, घर से बाहर चली गई. और अपनी कायरता ले कर वह चुप बैठे रहे.

पत्नी को रोकने या उस के साथ जाने का साहस उन में नहीं था. पूरे 6 महीने बाद तलाक का नोटिस आया तो उन्होंने चुपचाप हस्ताक्षर कर के मन ही मन पत्नी के सुख की कामना की, 'जहां भी रहो, सुखी रहो. जो सम्मान मैं तुम को नहीं दिला पाया, उस का सोता तुम्हारे जीवन में फूट पड़े.'

नरेंद्र देव ने जैसे ही कोठी के भीतर कदम रखा, रवि आगे बढ़ आए, "आइए साहब, बड़ी प्रतीक्षा करवाई."

वह संकोच में पड़ गए, "पैदल आया हूं... इसलिए..."

"कोई बात नहीं. रिटायर लोगों को सुबहशाम सैर जरूर करनी चाहिए. काफी या चाय?"

"जो आप को पसंद हो."

"तो फिर चाय... चीनी की परेशानी तो नहीं?"

"कभी जांच तो नहीं करवाई."

नौकर को चाय लाने के लिए कह कर रवि लौट आए.

थोड़ी देर बाद सरोज आई. शीघ्र ही चाय की ट्रे ले कर नौकर भी आ गया था.

"मेरी पत्नी सरोज... और यह हैं नरेंद्र देव."

चौंके दोनों ही, पर यंत्रवत नमस्कार भी किया. परिवर्तन दोनों में हुआ था, पर एकदूसरे को पहचानने में पलभर की देर भी न लगी. नरेंद्र देव पत्थर बन गए पर सरोज तुरंत सहज हो गई. वह चाय बनाने लगी. फिर प्याला उन के आगे कर दिया और बोली, "बिस्कुट लीजिए."

वह प्याले पर झुक गए.

"नरेंद्रजी, मेरी पत्नी के बनाए खाने का जवाब नहीं. वह बहुत अच्छा गाती भी है, खूब बातें करती है... और और..."

सरोज हंसने लगी, "और कुछ नहीं. चलो, चाय पी लो."

फिर कुछ रुक कर बोली, "आप इन की एक भी बात का विश्वास न करें. मेरी तारीफ करना इन की पुरानी आदत है."

नरेंद्र देव ने भी सहज होने का प्रयास किया, "सच ही कहते होंगे."

"एकदम सच, साहब, सरोज जैसी पत्नी बहुत कम लोगों को मिलती है."

"तब तो आप बहुत सुखी और खुशहाल इनसान हैं?"

"हां, यह तो सच है."

सरोज हंस कर बोली, "चाहे कितनी भी तारीफ करो, पर मीट ज्यादा नहीं खाने दूंगी."

नरेंद्र देव ने कभी कामना की थी कि सरोज हमेशा सुखी रहे, पर फिर भी उसे इतना सुखी, सहज देख अच्छा नहीं लगा.

उधर नरेंद्र देव को देख सरोज को दुख ही हुआ. सोचने लगी, 'दुर्बल शरीर, मुरझाया मुख. लगता है फिर विवाह नहीं किया. जाने क्यों भरापूरा परिवार छोड़ यहां एकांतवास करने आए हैं.'

सरोज अपने जीवन से तृप्त थी. फिर भी नरेंद्र देव को देख वैसा ही दुख हो रहा था जैसा कि किसी पुराने मित्र को कष्ट में देख कर होता है.

उस ने नरेंद्र देव का परिचय पति से नहीं छिपाया, और छिपाती भी क्यों, अब वे दो तन एक प्राण हो चुके थे. 2 वर्ष ससुराल में नरक भोगा था उस ने. परिवार के लोग जैसे भी थे पति में यदि थोड़ा सा भी साहस होता, अन्याय और अत्याचार का विरोध करने की हिम्मत जुटा पाते तो वह समझौता कर ही लेती.

पर धीरेधीरे सरोज को पता चला कि उस के पति मां, बहनों के भय से सहमेसहमे, व्यक्तित्वहीन पुरुष हैं. वह पूरी तनख्वाह मां के हाथ सौंप 2-4 रुपयों की भीख मांगते. सरोज अच्छे संस्कारों में पली,

शिक्षित परिवार की बेटी थी. घर तोड़ना या चीख कर लड़ना उस ने सीखा ही नहीं था. फिर भी प्रयास किया था कि पति कम से कम अपने अधिकार और सम्मान के लिए थोड़ी सी आवाज उठाएं. पर उन की रीढ़ की हड्डी पहले ही टूटी हुई थी, खड़े कैसे होते?

ससुराल से आते समय सरोज ने देखा था, पति चुपचाप बरामदे में बैठे हैं. उसे पूरी आशा थी कि वह पीछे से आएंगे और उसे मना कर घर ले जाएंगे, नहीं तो साथ चल कर मायके में छोड़ आएंगे.

पर उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया. पूरे 3 घंटे वह प्लेटफार्म पर बैठी रही. उस के पास एक पैसा भी नहीं था. टिकट कैसे ले, यही सोचसोच कर परेशान थी कि रवि सामने आए. अपनी अटैची रख कर संकोच से कहा, "आप जरा ध्यान रखेंगी... मैं बनारस का टिकट ले कर अभी आया."

वह सजग हुई, "देखिए, मुझे भी बनारस जाना है, पर... मेरे पास... पैसे नहीं हैं."

रवि ने गौर से उस को देखा, "कोई बात नहीं, मैं टिकट ले कर आता हूं. घर पहुंच कर पैसे दे दीजिएगा."

रवि ने सकुशल घर पहुंचाया और तलाक के बाद पत्नी के रूप में स्वीकार भी कर लिया. सरोज के मन में संकोच था कि दोबारा विवाह करना उचित नहीं होगा, परंतु पति की उपेक्षा से आहत हो उसे अपना विचार बदलना पड़ा था.

काफी दिनों बाद धूप निकली थी. दूरदराज की पहाड़ियां भी साफ दिखाई दे रही थीं. रवि भोर में ही बंदूक ले शिकार की खोज में निकल पड़े थे. मौसम साफसुथरा था इसलिए उन को रोकने का कोई बहाना उस को नहीं मिला. अकेली बैठी वह ऊब रही थी.

सरोज अकेली ही मंदिर की ओर चल पड़ी. घर से मंदिर जितना पास लगता था, उतना करीब नहीं था. धीरेधीरे हांफती हुई वह मंदिर के बाहर चबूतरे पर आ कर बैठ गई.



तेरे बगैर

कलियों में शोखी, गुंचों में खुशबू
बस इक तेरे ही दम से है,
तेरे बगैर हमें तो ऐ यार,
भरी बहार भी खिजां सी लगे है.

—नफीस मनसब

सहसा सरोज चौंकी. वहां घाटी की ओर मुंह कर के नरेंद्र देव चुपचाप बैठे थे. सरोज को कोई उलझन नहीं हुई. परिचित या मित्र को देखने से जैसी खुशी होती है, वैसी खुशी हुई.

वह उन के पास आई, "आप... यहां...?"

नरेंद्र देव बड़े थके हुए लग रहे थे. बोले, "आता हूं, कभीकभी..."

"मैं आज पहली बार आई हूं. बड़ा सुंदर मंदिर है."

सरोज का यह सहज, खुला व्यवहार उन को आहत कर रहा था. बोले, "हां, वातावरण भी मनोरम है."

सरोज भी बैठ गई, "कितने फूल हैं, भीड़ भी कम ही है."

"गुरुवार को भीड़ होती है. रवि साहब...?"

"उन को मंदिर में क्या रुचि... शिकार पर गए हैं."

"अच्छा ही है, चुस्तीफुरती बनी हुई है."

सरोज हंसी, "हां... यह तो है. अब लौटेंगे?"

"चलिए."

लाख प्रयास करने पर भी नरेंद्र देव न तो सहज हो पा रहे थे और न आंख ही उठा पा रहे थे.

दोनों साथसाथ नीचे उतरने लगे.

"सावधानी से पैर रखिएगा, ढलान पर लुढ़कने का डर है." सरोज के शब्द पूरे भी न हुए थे कि वह लड़खड़ा गए.

सरोज ने थाम कर गिरने से बचा लिया तो वह संकोच में गड़ गए.

सरोज का मन सहज करुणा से भर उठा, "आप ने यह एकांत शहर क्यों चुना?"

> **उन्माद**
>
> *जो प्रेम असिहष्णु हो, जो दूसरों के मनोभावों का जरा भी विचार न करे, जो मिथ्या कलंक आरोपण में संकोच न करे, वह उन्माद है, प्रेम नहीं.* —प्रेमचंद

"आप ने भी तो चुना है."

"मेरी बात और है. रवि को शिकार का शौक है... इसलिए... पर आप तो प्रकृति प्रेमी, चित्रकार या कवि नहीं थे."

"संसार को देख लिया, सब को अपनाअपना ठिकाना मिल गया, जमा पूंजी दायित्व निभातेनिभाते शून्य हो गई. पेंशन पर निर्भर हो गया तो मेरी किसी को आवश्यकता न रही. बूढ़े परिवार के बोझ होते हैं."

"दुख की कोई बात नहीं... यही संसार का नियम है. अपनेआप को स्वावलंबी बना कर बुढ़ापा काटना चाहिए. आप के बच्चे...?"

"दूसरा विवाह नहीं किया."

"मेरा घर रास्ते में पड़ेगा, चाय पी कर जाइएगा," सरोज ने कहा.

"रवि साहब तो... मैं फिर कभी..."

सरोज हंस पड़ी, "इतना संकोच क्यों? हम क्या नई उम्र के हैं या रवि को मुझ पर विश्वास नहीं?"

"मैं... मैं..."

"मेरे और रवि के बीच कोई लुकाछिपी नहीं... वह आप का परिचय जानते हैं."

"तो क्या... आप ने...?"

"क्यों नहीं. रवि ने तब चैन की सांस ले कर कहा था, चलो, बुढ़ापे में एक ऐसा मित्र मिला, जो अंतिम सांस तक साथ देगा. अब तो कोई परेशानी नहीं?

"सच?"

"हां, सच. अब आप सहज हो जाइए. हम तीनों अच्छे मित्र बन कर रहेंगे. गृहस्थी के सारे दायित्व पूरे कर दिए, अब अपना जीवन अपने ढंग से जीने का हमें पूरापूरा अधिकार है."

"आप ठीक कहती हैं."

"यहां हम तीनों बहुत कुछ कर सकते हैं. बेचारे आदिवासी अभी अंधेरे में जी रहे हैं. उन को..."

तभी जीप से कूद कर रवि बाहर आए, "आज हाथ लगा है शिकार. नरेंद्रजी, आज आप का खाना हमारे घर."

"इन को हमारे घर जाते शर्म आती है," सरोज हंसते हुए बोली.

"सरोज में जरा भी शर्म नहीं और आप पानीपानी हो रहे हैं," रवि भी मुसकराया.

"क्यों परेशान कर रहे हो बेचारे को?" सरोज बोली.

"देखिए, हम तीनों बूढ़े हो गए हैं. एकांतवास में आए हैं. अब मिलजुल कर जीवन का अंतिम भाग हर्ष, उल्लास और लोकहित में काटेंगे. तब आएगा असली मजा. मंजूर?"

वर्षों बाद खुल कर हंसे नरेंद्र देव. मन हलका लगा. बोले, "मंजूर."

"तो झटपट जीप में बैठिए, घर चलते हैं," रवि ने जोरदार ठहाका लगाते हुए कहा. ●

असली कमाई नकली कमाई

व्यंग्य • गोपाल शेखरन

राम कुमार मेरे पुराने मित्र हैं, क्योंकि वह हमारे महल्ले में रहते हैं. पहले वह महल्ले में छपाई की प्रेस चलाते थे. उन की विशेषता यह है कि वह अपनी प्रेस का स्थान हर 2-3 वर्ष बाद बदल लेते हैं.

जब राम कुमार की प्रेस हमारे महल्ले में थी तो मैं छुट्टी के बाद वहां 1-2 घंटे बैठा करता था. जब वह अपनी प्रेस दूरदूर के स्थानों पर ले गए तो मेरा उन से प्रतिदिन मिलना बंद हो गया. फिर भी महीने में 1-2 बार उन से मुलाकात करने अवश्य जाता था.

बड़ी पुरानी बात है. एक बार मैं राम कुमार के पास बैठा था. वहां एक व्यक्ति आया और बोला, "मैं मैगनम कंपनी से आया हूं, उन्होंने एक हजार का बिल मंगवाया है."

मैं ने देखा, राम कुमार ने एक विशेष 'कैशमेमो' उठाया और हजार रुपए की



छपाई का बिल काट दिया. मैगनम कंपनी के आदमी ने बिल ले लिया और सौ का एक नोट राम कुमार को दे दिया.

मैं ने यह देख कर राम कुमार से पूछा, "आप की प्रेस में छपाई में भी उधार चलता है क्या? आप ने कहीं नोट नहीं किया कि 9 सौ शेष रह गए,न ही आप ने कैशमेमो में सौ रुपयों की प्राप्ति दिखाई."

उन्होंने हंसते हुए कहा, "बस, यह बिल तो चुकता ही समझो, यह 9 सौ रुपए कभी नहीं मिलने वाले."

मैं ने पूछा, "इस प्रकार तो आप की प्रेस का दिवाला शीघ्र ही निकल जाएगा. कर चुके आप कमाई. काम हजार का और प्राप्ति सौ की."

राम कुमार ने हंसते हुए कहा, "जितने का काम किया है, उस से अधिक मिल चुका है. हमें और कुछ नहीं चाहिए. वास्तव में इस में ही हम ने कमाई कर ली है."

"भाई साहब, अपनी इस कमाई का भेद मुझे भी समझाओ?"

उन्होंने कहा, "भाई, इसे भेद ही रहने दो तो अच्छा. बस यों समझ लीजिए कि इस परचे के काटने के सौ रुपए मिल गए... हम



सच, मैं तो केवल यही मानता आ रहा था कि व्यक्ति काम कर के जो कमाता है उसे कमाई कहते हैं. लेकिन असली कमाई और नकली कमाई का रहस्यमय भेद तो मुझे राम कुमार ने ही बताया. क्या आप नहीं जानना चाहेंगे?

"भाई साहब, हमारा धंधा तो वही पुराना है. फिर इतनी बड़ी मशीन लगाने के खर्चे ज्यादा ही थे. हमारा अधिकांश काम तो वही बिल काटना है."

मैं आश्चर्य से उन की ओर देखने लगा.

तभी एक आदमी ने आ कर उन को एक चिट दी. उन्होंने चिट पढ़ कर बिल बुक निकाली और 5 सौ कापियों का एक बिल एक रुपया प्रति कापी का काट दिया.

आगंतुक ने 50 रुपए उन को दे दिए और 5 सौ का बिल ले कर चला गया.

मैं ने वही पुराना प्रश्न किया, "यह क्या, आप ने बिल तो 5 सौ का काटा और लिए केवल 50 रुपए. कर चुके कमाई आप, काम 5 सौ का किया और लिए 50 रुपए."

राम कुमार मुसकराते हुए बोले, "भाई, काम किस ने किया है, यह बिल काटने के 50 रुपए मिल गए. बस, अपनी आय का मुख्य साधन तो यही है, शेष कमाई तो बहुत कम है. यहां जितनी बड़ीबड़ी कंपनियां हैं, वे मुझ से बोगस बिल बनवा कर ले जाती हैं और उन बिलों पर मेरी 10 प्रतिशत कमीशन पक्की है. बस, इसी धंधे में 5 सौ रुपए प्रतिदिन कमा कर ले जाता हूं और शेष असली कमाई हो जाती है. आप की सूचनार्थ बता दूं कि असली फोटोकापी करने का रेट 50 पैसे है और नकली बिल का रेट एक रुपया प्रति कापी है."

ने कमाया ही है. हमारी लागत कुछ भी नहीं आई. इस सौदे में हमें शतप्रतिशत लाभ हुआ है."

कुछ महीने पहले मैं जब राम कुमार की दुकान पर गया तो देखा कि उन की प्रेस का बोर्ड उतर गया है. वहां लिखा पाया, 'दिशा प्रेस बंद हो गई है और अब वह 505, नेहरू हाउस में चली गई है.'

मैं भागाभागा नेहरू हाउस पहुंचा. वहां देखा कि राम कुमार ने एक बहुत छोटी सी दुकान ले रखी है जिस के बाहर 'दिशा फोटोस्टेट' का बोर्ड लगा रखा है.

राम कुमार ने दूर से मेरा अभिवादन किया और बोले, "आओ, प्रेस का पुराना कारोबार मुझे अचानक किसी कारणवश बंद करना पड़ा. यह अच्छी जगह है, शोरशराबा और गाड़ियों का धुआं बहुत कम है. यहां का वातावरण कुछ ठीक है."

मैं ने देखा, राम कुमार कुरसी पर बैठे हैं और एक नौकर फोटोस्टेट मशीन पर काम कर रहा है.

उन्होंने चपरासी को तत्काल स्पेशल चाय बनवा कर लाने को कहा और साथ में 2 समोसे भी लाने को बोले.

"यह क्या, प्रेस बंद कर यह छोटी सी मशीन लगा ली, इस में क्या बचत होती होगी?" मैं ने जिज्ञासावश पूछा.

वह बोले, "भाई साहब, प्रेस से अच्छी कमाई हो जाती है. प्रेस में क्या रखा था."

"इस छोटी सी मशीन से इतनी कमाई कहां हो सकती है?"


सबक
अरे, ताला! शायद चाबी पड़ोसी के पास हो.
चाबी तो नहीं है. आप अंदर आ कर बैठ जाइए.
क्या बैठूं? पिछले हफ्ते भी यही हुआ और उस के पहले भी.
ओफ! बर्दाश्त की भी हद होती है. इस तरह बिना कहे...


भाई जी गुस्सा थूक दो श्रीमतीजी अभी आती ही होंगी.
नहीं, कभी नहीं. आने दो, आज मैं उसकी खबर लेकर रहूंगा.
वाह! क्या आराम से चाय का आनंद लिया जा रहा है. अब मैं समझी.
क्या?
आप अच्छी तरह जानते हैं कि बुधवार को किट्टी पार्टी है फिर भी आप इसी दिन दफ्तर से जल्दी क्यों आते हैं?
हाय.

खिलता बसंत

फिर वही मौसम बसंत आया.
पत्तों पर खिलती कलियां
महक फैलाती मधुबनमधुबन.

मेरे जीवन को भी तुम कुछ
खुशबू अपनी उधार दे जाओ,
गालों को गुलाबी रंगत दे कुछ
होंठों में मधु पराग भर जाओ.

किसलय कोमल पत्तियों तुम कुछ
लचक इस तन को दे जाओ,
प्रियतम के आ जाने पर
लजाने की कुछ अदा दे जाओ.

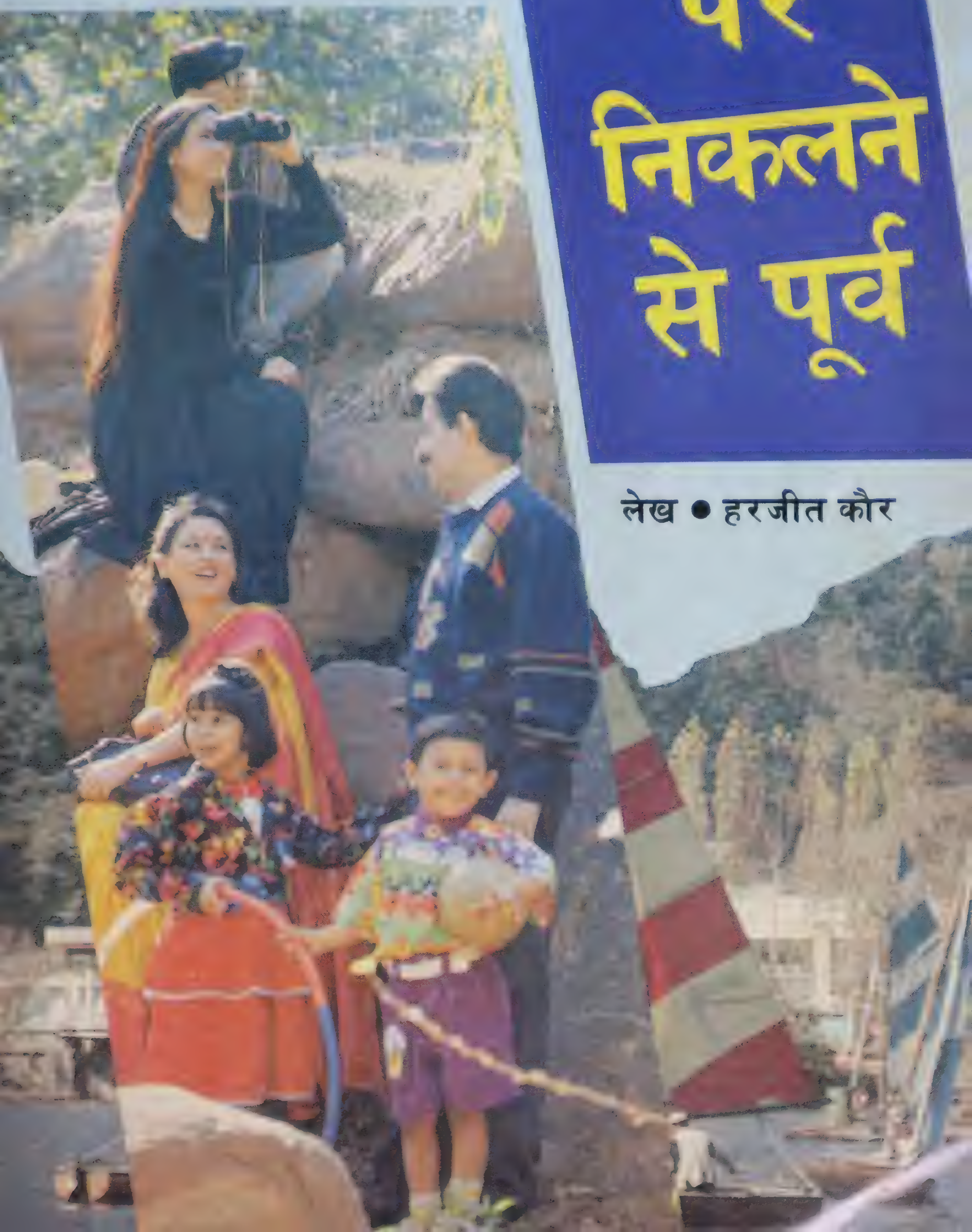
—किरण कश्यप



पर्यटन पर निकलने से पूर्व

लेख • हरजीत कौर

आप रोजाना की व्यस्तता से तंग आ जाते हैं. शारीरिक व मानसिक परेशानियों से तनावग्रस्त हो जाते हैं. एक जैसे काम करतेकरते बोरियत भी महसूस करने लगते हैं. ऐसे में कुछ दिनों का अवकाश ले कर यात्रा पर जाना फायदेमंद रहता है. फिर गरमी की



छुट्टियों में तो कहीं न कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम बन ही जाता है. अगर यह यात्रा चिंतामुक्त हो तो कहना ही क्या. इसे एक योजनाबद्ध तरीके से संभव बनाया जा सकता है. क्या आप जानते हैं?

छुट्टियों में तो कहीं न कहीं बाहर जाने का कार्यक्रम बन ही जाता है. परंतु जहां यात्रा का एहसास सुखद प्रतीत होता है वहीं मन यह सोच कर चिंतित हो उठता है कि यात्रा की तैयारी कैसे करें व घर कैसे अकेला छोड़ कर जाएं. घबराइए नहीं, यदि आप योजनाबद्ध तरीके से यात्रा पर निकलें तो आप को अवश्य आनंद आएगा.

सर्वप्रथम, जहां आप जा रहे हैं वहां की जलवायु, रीतिरिवाज व क्षेत्र का ध्यान रखते हुए सामान की एक सूची बना लें. इस से सारी आवश्यक वस्तुएं रखी जा सकेंगी. सूची के मुताबिक वस्तुएं पैक करते जाएं व निशान लगाते जाएं. वापसी में भी इसी सूची को देख कर सामान बांधें तो कोई सामान वहां छूटेगा नहीं. हां, लिस्ट में अनावश्यक वस्तुएं न रखें. याद रखिए, कम सामान यात्रा को आरामदेह बनाता है.

पुरुषों की कमीजें अधिक व पैंटें कम लें क्योंकि एक ही पेंट या जींस, जो शीघ्र मैली नहीं होती, के साथ कई कमीजें पहनी जा सकती हैं. स्त्रियां भी अपने कपड़े कम किंतु ऐसे रंगों के लें जिन में उचित तालमेल बिठा कर अधिक पोशाकों का काम लिया जा सके. कपड़े सूटकेस में सलीके से रखें ताकि उन की तहें खराब न हों. यात्रा अधिक दिनों की हो तो ऐसे वस्त्र ले जाएं जिन्हें इस्तिरी करने की जरूरत न पड़े या फिर एक हलकी इस्तिरी साथ ले लें. इस से आप के समय व धन दोनों की बचत होगी.

यात्रा से 3-4 दिन पहले ही कपड़े पैक कर लें. कपड़े कहीं से उधड़े या फटे हों या बटन, हुक आदि टूटा हो तो ठीक करें. ड्राइक्लीन करवाने वाले वस्त्र यहीं से साफ करवा कर ले जाएं. सूटकेस को ताला लगाना तो बिलकुल न भूलें.

यदि किसी सदस्य को रक्तचाप, श्वास रोग, मधुमेह जैसा रोग है तो जाने से पूर्व डाक्टर से एक बार जांच करवा लें. इस से रास्ते में होने वाली तकलीफों से बचा जा सकता है.

यात्रा पर निकलते हुए ध्यान घर की ओर लगा रहता है. अतः कुछ बातों का खयाल रखें तो घर की चिंता नहीं सताएगी व आप निश्चिंत भाव से यात्रा कर सकेंगे:

- सभी खिड़कियों, दरवाजों के परदे खींच कर चिटकनियां अंदर से बंद कर दें. यदि कोई हैंडल, ताला या चिटकनी टूटी अथवा खराब है तो उसे पहले से ठीक करवा लें या बदलवा लें. लापरवाही न बरतें अन्यथा पीछे से नुकसान हो सकता है.
- कालीन व कपड़ा लगे सोफों पर फिनायल की गोलियां डाल जाएं ताकि कीड़ेमकोड़ों से रक्षा हो सके.
- फ्रिज को डीफ्रास्ट कर पानी सुखाएं. कूलर में पानी भरा हो तो निकाल दें.
- बिजली के स्विच, मीटर, गीजर, सिलेंडर, नल, फव्वारे आदि सब अच्छी तरह बंद कर के जाएं.
- दूध वाले, अखबार वाले, जमादार, धोबी, दुकानदार आदि को सूचित करें व उन का हिसाब बाकी रहता हो तो निबटा कर जाएं ताकि यात्रा से लौट कर झगड़ा मोल न लेना पड़े.
- घर में यदि कोई पालतू जानवर हो तो उस की देखभाल के लिए या बगीचे में पानी आदि देने के लिए आप पड़ोसी से अनुग्रह कर सकते हैं. और हां, पड़ोसियों से यदि कोई पत्रिका, क्राकरी, इस्तिरी, मिक्सी, कैंची आदि कोई भी चीज

मांग कर लाए हों तो उन्हें वापस कर के जाएं.

● आंगन में धरी सब वस्तुएं अंदर रखें.

● गहने व फालतू रुपएपैसे लाकर या बैंक में रखवा कर जाएं.

● पका भोजन यों ही न पड़ा रहने दें. महरी आदि को दे दें नहीं तो लौटने तक उस में फफूंदी व कीड़े लग चुके होंगे व बरतन भी खराब हो सकते हैं.



यात्रा के लिए कपड़े पैक करने से पहले यह देख लें कि वे कहीं से उधड़े या फटे न हों. ▲

जाने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि यात्रा टिकट, यात्री चेक, आरक्षण की रसीद, होटल में ठहरने के कागज, गंतव्य स्थान तक पहुंचने का पता व अन्य जरूरी कागजात अपनी जेब या पर्स में संभाल कर रख लिए गए हैं. नगदी व जेवर ले जा रहे हों तो इकट्ठा न रखें, अलगअलग नगों व व्यक्तियों में बांट लें व ध्यान से रखें.

यदि आप मित्र या संबंधी के घर जा रहे हों तो इस की पूर्व सूचना उन्हें दे दें. ऐसा न हो कि आप पहुंचें और वे घर न मिलें व होटल का भी इंतजाम न हो तो रहने की समस्या खड़ी हो जाएगी.

छुट्टियों में जा रहे हों तो पहले आरक्षण करवा लें, अन्यथा बच्चों व सामान के साथ सीट लेने के चक्कर में चलती गाड़ी में चढ़ने या हड़बड़ी में सामान रखने से दुर्घटना घट सकती है. गाड़ी चलने से एकाध घंटा पहले ही स्टेशन पर पहुंच जाएं.

सामान तो बांध लिया पर इस की चौकसी रखना भी आप ही का काम है. किसी अपरिचित पर भरोसा कर इधरउधर न जाएं. साथ ही सामान अनधिकृत कुलियों से न उठवाएं. अधिकृत कुली वरदी में और बांह पर पीतल का नंबर लगाए रहते हैं, जिसे नोट कर लें ताकि वह सामान ले कर चंपत न हो सके.

सफर में किसी से न कुछ ले कर खाएं व न ही पैसे दांव पर लगाने वाला कोई खेल खेलें क्योंकि ठगने वाले गिरोह भी गाड़ियों में यात्रा कर रहे होते हैं जो तभी पहचान में आते हैं जब वे माल पर हाथ साफ कर चुके होते हैं. सफर में न सोएं व न ही अटैची खोलें और नगदी तो गिनें ही नहीं.

प्रत्येक नग पर नाम व पता लगी चिट चिपकाएं. इस से यदि यात्रा के दौरान आप का कोई सामान गुम हो जाता है तो स्टेशन, हवाई अड्डे या बस अड्डे के पूछताछ/स्वागत कार्यालय में इस की सूचना दे दें ताकि यदि सामान मिल जाए तो आप जहां ठहरे हों, सामान वहां पहुंचाया जा सके.

अंत में, यदि आप यात्रा वाले स्थान से मित्र, पड़ोसी या संबंधी के लिए उपहारस्वरूप कुछ ले जाएं, चाहे वह लकड़ी या पीतल की बनी राखदानी या चाबी का गुच्छा ही क्यों न हो, उस पर उस का नाम खुदवा दें तो वह बहुत खुश होगा.

आप की यात्रा आनंदप्रद हो. ●



मसूरी का आकर्षक केम्टी प्रपात। बरसात के दिनों में ऊंचाई से गिरती जलधारा की मधुर आवाज वातावरण को संगीतमय बना देती है

देहरादून क्षेत्र



देहरादून

स्वास्थ्यवर्धक जलवायु एवं चित्ताकर्षक प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध देहरादून क्षेत्र शिवालिक पहाड़ियों से घिरा है. सागर तल से लगभग 640 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह रमणीक पर्यटन स्थल 'दून घाटी' के नाम से भी जाना जाता है.

मसूरी, हरिद्वार, ऋषिकेश, बदरीनाथ, जोशीमठ जैसे रमणीय स्थलों का केंद्र भी देहरादून है.

कब जाएं?

अक्तूबर से मध्य मई तक कभी भी देहरादून, मसूरी, हरिद्वार और ऋषिकेश की सैर का कार्यक्रम बनाया जा सकता है. देहरादून, हरिद्वार और ऋषिकेश प्रायः पहाड़ों की तलहटी में बसे हैं और मैदानी क्षेत्रों में ही गिने जाते हैं. इसलिए इन स्थानों पर गरमियों में सूती और जाड़ों में ऊनी कपड़ों से काम चल जाता है. किंतु मसूरी सागर तल से लगभग 2005 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जहां शीतकाल में न्यूनतम तापमान 1^0 सेल्सियस और ग्रीष्मकाल में 7^0 सेल्सियस



तक रहता है. अतः मसूरी के लिए गरमियों में भी हलके ऊनी कपड़ों की जरूरत पड़ सकती है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : देहरादून क्षेत्र केवल दिल्ली से वायु मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. यहां का जौली ग्रांट हवाई अड्डा देहरादून, हरिद्वार और ऋषिकेश के मध्य स्थित है. यहां एक ही विमान पट्टी है. यद्यपि दिल्ली से यहां के लिए प्रतिदिन निजी वायुयान सेवाएं उपलब्ध रहती हैं, किंतु इन उड़ानों का कोई भरोसा नहीं कि कब रद्द कर दी जाएं. इसलिए बेहतर है कि इन स्थलों पर जाने के लिए दिल्ली से रेल अथवा सड़क मार्ग को ही अपनाएं.

रेल मार्ग : देहरादून उत्तर रेलवे का एक मुख्य स्टेशन है. यह देश के कई भागों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा है. मसूरी पहुंचने के लिए भी देहरादून ही निकटतम तथा मुख्य रेलवे स्टेशन है, जबकि हरिद्वार व ऋषिकेश देश के अन्य भागों से रेल मार्ग द्वारा जुड़े हैं.

सड़क मार्ग : राजमार्ग 45 द्वारा देहरादून देश के प्रायः सभी भागों से जुड़ा हुआ है. दिल्ली, आगरा, मथुरा, मेरठ, अमृतसर, चंडीगढ़, शिमला, कुल्लूमनाली, लखनऊ, कानपुर, मुरादाबाद आदि स्थानों से देहरादून के लिए सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. दिल्ली से देहरादून आतेजाते समय मेरठ व मुजफ्फरनगर के बीच खतौली में 'ग्रांड चीतल मोटेल' पर कुछ समय रुक कर थकान मिटाई जा सकती है. यहां उचित दामों पर उत्तम खानपान की तो व्यवस्था है ही, हरेभरे रमणीक उद्यान में कुछ जीवजंतु भी पाले गए हैं, जिन्हें देख कर एक छोटेमोटे पर सुंदर चिड़ियाघर का एहसास होता है.

देहरादून : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी का नाम*	*प्रस्थान*
हावड़ा	हावड़ादेहरादून एक्सप्रेस	20.30
दिल्ली	मसूरी एक्सप्रेस	22.25
वाराणसी	वाराणसीदेहरादून एक्सप्रेस	09.05
बंबई	बंबईदेहरादून एक्सप्रेस	20.20
उज्जैन	उज्जैनी एक्सप्रेस	14.30

सहस्रधारा : गंधकयुक्त जल के झरनों के लिए प्रसिद्ध है.

क्या देखें?

वन अनुसंधानशाला :

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–236 किलोमीटर
आगरा–384 किलोमीटर
शिमला–221 किलोमीटर
नैनीताल–297 किलोमीटर
बंबई–1,592 किलोमीटर
मद्रास–2,341 किलोमीटर
हरिद्वार–54 किलोमीटर
ऋषिकेश–43 किलोमीटर
मसूरी–34 किलोमीटर

नगर से लगभग 5 किलोमीटर दूर चकराता मार्ग पर स्थित वन अनुसंधानशाला प्राकृतिक वन संपदा से परिपूर्ण है. यहां अकसर फिल्मों की शूटिंग भी होती है. यहां का म्यूजियम बहुत सुंदर है. चारों तरफ हरियाली बिखरी पड़ी है.

वाडिया भूगर्भ विज्ञान संस्थान : जनरल महादेव सिंह मार्ग पर नगर से लगभग 5 किलोमीटर दूर स्थित इस संस्थान में भूगर्भ, विशेषतः हिमालय से जुड़े विभिन्न वैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन किया जाता है.

सहस्रधारा : नगर से लगभग 14 किलोमीटर दूर यह एक रमणीक स्थल है, जो प्राकृतिक सौंदर्य व गंधकयुक्त जल के झरनों के लिए जाना जाता है. यहां लोग पिकनिक मनाने आते हैं. त्वचा रोगी यहां पर गंधकयुक्त जल से स्नान कर के रोगमुक्त होते हैं.

गुच्चू पानी : नगर से लगभग 8 किलोमीटर दूर स्थित यह एक मनोहारी पिकनिक स्थल है. इसे 'रोबर्स केव' भी कहते हैं. अभी हाल में पर्यटन स्थल के रूप में इस में विशेष सुधार किए गए हैं.

डाक पत्थर : नगर से लगभग 45 किलोमीटर दूर चकराता मार्ग पर डाक पत्थर हरेभरे मैदानों और मनोहारी उद्यानों से घिरा है. इसे यमुना हाइडल स्कीम के अंतर्गत एक बेहतरीन पिकनिक स्थल के रूप में विकसित किया गया है.

चकराता : नगर से लगभग 95 किलोमीटर दूर स्थित यह एक शांत, रमणीक और प्रदूषण रहित सैरगाह है. स्वास्थ्य की दृष्टि से यहां की जलवायु अच्छी है.

लच्छीवाला : देहरादून से 17 किलोमीटर दूर लच्छीवाला बहुत सुंदर पिकनिक स्थल है. यहां पर नहर किनारे बच्चों के लिए पार्क व झूले लगाए गए हैं. बड़ेबूढ़े, बच्चों के लिए यह रमणीक सैरगाह है.

टपकेश्वर : यह देहरादून से 5 किलोमीटर दूर है और यहां का सब से पुराना आकर्षक स्थल है. यहां पहाड़ की गुफा में सुंदर शिव मंदिर है. दूर से शिवालिक पहाड़ियां मनोरम दिखती हैं. यह एक मनोरम स्थल है जहां शिव दुर्गा मंदिर के अलावा प्राकृतिक संपदा बिखरी पड़ी है.

बीजापुर कैनाल : टपकेश्वर मंदिर गढ़ी कैंट में है, वहीं से करीब 3 किलोमीटर की दूरी पर है बीजापुर कैनाल. यहां पर डैम है जो अब एक रमणीक पिकनिक स्थल बना दिया गया है. गर्मियों में शनिवार और रविवार को यहां बहुत भीड़ होती है.

मालसी डियर पार्क : देहरादून से 4 किलोमीटर दूर मसूरी रोड पर स्थित मालसी डियर पार्क बच्चों के लिए झूलों, हिंडोले के अलावा हिरन, बंदर और चिड़ियों आदि के लिए भी दर्शनीय है. यह भी रमणीक स्थल है.

देहरादून

कहां ठहरें?

होटल

होटल मधुबन, 97 राजपुर रोड, फोन : 24094-97. [उ.]
मोटेल क्वालिटी, 19 राजपुर रोड, फोन : 27001, 27002. [स.]
प्रेसीडेंट होटल, 6 आसले हाल, राजपुर रोड, फोन : 27386, 27082, 28883. [उ.]
होटल रिलैक्स, 7 कोर्ट रोड, फोन : 27776. [म.]
होटल प्रिंस, 1 हरिद्वार रोड, फोन : 7070, 6678. [स.]
होटल अजंता कांटीनेंटल, राजपुर रोड, फोन : 29595. [उ.]
होटल एकता, 113/1-2, राजपुर रोड, फोन : 26608. [उ.]
होटल मीडोस ग्रांड, 28 राजपुर रोड, फोन : 27171. [म.]
होटल निधि प्रा. लि., 74–सी, राजपुर रोड, फोन : 24611, 25086. [म.]
होटल शहंशाह, राजपुर रोड. [उ.]
होटल इंद्रलोक, राजपुर रोड. [उ.]
दीपशिखा, राजपुर रोड. [म.]
होटल निवेश, चकराता रोड. [म.]
ह्वाइट हाउस, लिट्टन रोड, फोन : 23694. [स.]
होटल द्रोण, गांधी रोड, फोन : 24371. [स.]

धर्मशालाएं

जैन धर्मशाला, गांधी रोड.
अग्रवाल धर्मशाला, गांधी रोड.
शिवाजी धर्मशाला, गांधी रोड.

अन्य आवासीय सुविधाएं

रेलवे विश्रामगृह, रेलवे स्टेशन.
वाई.डब्ल्यू.सी.ए., गेस्ट हाउस.

उ. = उत्तम, म. = मध्यम, स. = साधारण

मसूरी

मसूरी देहरादून क्षेत्र का विशिष्ट पर्यटन स्थल है. देहरादून में रेलवे स्टेशन के बाहर, गांधी रोड और राजपुर रोड से मसूरी के लिए हर समय टैक्सियां उपलब्ध रहती हैं. टैक्सी स्टैंडों पर किराए की दरें लिखी रहती हैं. वैसे देहरादून से

मसूरी के लिए बसों की भी अच्छी सुविधा है. देहरादून के अलावा दिल्ली, शिमला, टेहरी, चंबा आदि स्थानों से भी मसूरी तक सीधी बसें चलती हैं

क्या देखें?

मसूरी की ऊंचीनीची पहाड़ियां, नागिन सी बल खाती सड़कें, दूरदूर तक फैले वृक्षों के झुरमुटों में छिटके हुए रंगबिरंगे कलात्मक भवन तथा रमणीक प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है. अपनी इस विशेषता के कारण ही मसूरी को 'पर्वतों की रानी' कहा जाता है.

मसूरी में पर्यटकों को और अधिक आकर्षित करने के लिए प्रतिवर्ष सितंबरअक्तूबर में एक 'शरदोत्सव' का आयोजन किया जाता है. इस अवसर पर लोकनृत्य, लोकगीत, कवि सम्मेलन, मुशायरा, कवि दरबार, फोटो प्रदर्शनी आदि रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं. इतना ही नहीं, मसूरी को दुलहन की तरह सजाया भी जाता है.

मसूरी के कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं :

गनहिल : गनहिल मसूरी की सब से मनोहारी और ऊंची पहाड़ी है. यहां से बदरीनाथ, केदारनाथ, नंदादेवी आदि की हिमाच्छादित चोटियां सहज ही देखी जा सकती हैं. यहां रज्जुमार्ग (रोप वे) द्वारा भी पहुंचा जा सकता है. इस पर चलने वाली केबल कार का किराया 9 रुपए प्रति व्यक्ति है. गनहिल पर पानी का एक ढका हुआ टैंक है. हाल ही में यहां खुली दुकानों ने इस का सौंदर्य कुछ कम कर दिया है.



रोप वे : द्वारा मसूरी की सब से ऊंची चोटी गनहिल तक पहुंचा जा सकता है ▲



मसूरी की यह खूबसूरत छवि पर्यटकों को बांध लेती है. ▶

म्यूनिसिपल गार्डन : नगर से लगभग 4 किलोमीटर दूर स्थित इस खूबसूरत उद्यान में एक छोटा सा कृत्रिम सरोवर है जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. इस सरोवर में पर्यटक नौका विहार का आनंद ले सकते हैं. अगर आप मुख्य बाजार में ठहरे हैं तो इस उद्यान तक पैदल ही जाएं. रास्ता लंबा है, पर समतल और छायादार है. रास्ते में लाल बहादुर प्रशिक्षण संस्थान भी पड़ता है. उसे देखते हुए आप आगे बढ़ सकते हैं.

केमल्स बैक : कुलरी बाजार व लाइब्रेरी के मध्य स्थित यह लगभग 3 किलोमीटर लंबा, कच्चा रास्ता शांत और रिहायशी इलाकों में से है. मौसम अच्छा होने पर यहां से मसूरी के उत्तरी हिस्से तथा दूर हिमाच्छादित चोटियों के मनोरम दृश्य भी देखे जा सकते हैं. इस के निकट ही वह चट्टान भी है जिस की आकृति ऊंट की पीठ के समान है.



मसूरी

कहां ठहरें?

होटल

सेवाय होटल, द माल, लाइब्रेरी, फोन : 2010, 2620. [उ.]

होटल सालीटेयर प्लाजा, पिक्चर पैलेस, किकरैग रोड, फोन : 2164. [उ.]

हकमैंस ग्रांड होटल, द माल, फोन : 2559, 2959, 2639. [उ.]

फिलिग्री, कैमल्स ब्लैक मार्ग, फोन : 2380. [म.]

होटल शिवा कांटीनेंटल, द माल, फोन : 2980. [म.]

डंसबिर्क कोर्ट, बड़ौदा एस्टेट, फोन : 2680. [म.]

कार्लटंस प्लैसेंस होटल, हैप्पी वैली रोड, फोन : 2800. [म.]

होटल वाइल्ड फ्लावर हाउस, कैंप्टी रोड, फोन : 2841. [उ.]

वैली व्यू होटल, द माल, फोन : 2324. [उ.]

शाइनिंग स्टार, द माल, फोन : 2500. [म.]

होटल शिल्टन, लाइब्रेरी बाजार, फोन : 2842. [उ.]

रोजलिन एस्टेट होटल, द माल, 2201. [उ.]

होटल रौनक, कुलरी, फोन : 2215. [म.]

नभ रिसोर्ट अलफा, बार्लोगंज रोड, फोन : 2525. [उ.]

होटल मसूरी इंटरनेशनल, कुलरी, फोन : 2943. [उ.]

होटल मिड टाउन मसूरी, द माल, फोन : 2856.

होटल हावर्ड इंटरनेशनल, द माल, फोन : 2105. [म.]

कनाट कासल, द माल, फोन : 2538. [म.]

होटल क्लासिक हाइट्स, लाइब्रेरी चौक, फोन: 2514. [म.]

सरकारी आवास

टूरिस्ट कांप्लैक्स, द माल, फोन : 2984.

वाई.डब्ल्यू.सी.ए. हालीडे होम, द माल, फोन : 2513.

धर्मशालाएं

जैन धर्मशाला

मुसाफिरखाना

सनातन धर्म मंदिर

नोट : 1. उपर्युक्त आवासों के अलावा मसूरी में व्यक्तिगत मकानों में पेइंगगेस्ट के रूप में ठहरने की सुविधा भी है, जो आमतौर पर एस्टेट एजेंटों द्वारा ही संभव है.

2. मसूरी में सीजन के दौरान होटलों आदि के किराए काफी बढ़ जाते हैं.

चाइल्डर्स लाज : नगर से लगभग 5 किलोमीटर दूर स्थित चाइल्डर्स लाज से उत्तरी पर्वत श्रेणियों का सौंदर्य निहारा जा सकता है. इस के लिए यहां एक दूरबीन की भी व्यवस्था है.

कैंप्टी प्रपात : नगर से लगभग 15 किलोमीटर दूर यह बड़ा आकर्षक प्रपात है. बरसात के दिनों में जलधारा एक सुंदर सी घाटी के मध्य से बहती हुई एक ऊंचे कगार से गिरती है, जिस से नीचे की चट्टानों पर सुंदर और विचित्र आकृतियां सी बन जाती हैं. निर्झर की मधुर आवाज से आसपास का वातावरण भी संगीतमय हो उठता है. झरने के नीचे नहाने का अपना अलग ही आनंद है. परंतु इस के लिए आप को तलहटी में पहुंचने के लिए सीढ़ियों के रास्ते काफी नीचे उतरना पड़ेगा. वापसी में ऊपर चढ़ने के लिए मोटे व्यक्तियों को दिक्कत हो सकती है, उन की सांस फूल सकती है. दुकानों, जलपानगृहों आदि के

कारण अब यहां का प्राकृतिक सौंदर्य प्रभावित होने लगा है.

धनोल्टी : मसूरी से लगभग 25 किलोमीटर दूर, 2,400 मीटर की ऊंचाई पर स्थित धनोल्टी छुट्टियां बिताने के लिए एक अच्छा स्थान है. चीड़ व देवदार के वृक्षों की लंबीलंबी कतारें मन को मोह लेती हैं.

वैसे देखा जाए तो मसूरी का मुख्य आकर्षण तो यहां के बाजार ही हैं. शाम को भीड़ अधिक होने पर कुछ अखरता है. फिर भी मसूरी में शहर और पहाड़ दोनों का आनंद लिया जा सकता है.

मसूरी जाएं तो कम से कम 3 दिन रहें. इस से कम समय के लिए जाने पर मायूसी होगी, क्योंकि यहां की जलवायु व वातावरण दर्शनीय स्थलों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है.

हरिद्वार

देहरादून क्षेत्र में हरिद्वार यों तो एक धार्मिक स्थल है, जहां 'मोक्ष' की कामना से हजारों लोग रोजाना आते रहते हैं. फिर भी यह पर्यटन की दृष्टि से बहुत बुरा नहीं है. देहरादून से हरिद्वार के लिए नियमित बसें और टैक्सियां मिलती हैं. इस के अतिरिक्त जौली ग्रांट हवाई अड्डे से भी हरिद्वार के लिए कोच और टैक्सियों की अच्छी व सीधी सुविधा है. यह उत्तर रेलवे के मुख्य स्टेशनों में से है. अतः रेल मार्ग से आने वाले पर्यटक सीधे देहरादून न जा कर हरिद्वार में भी उतर सकते हैं.

क्या देखें?

हरिद्वार पर्यटन का मुख्य आकर्षण 'हर की पैड़ी' है, जहां अकसर भीड़ बनी रहती है. हरिद्वार के इसी प्रमुख स्नान घाट पर कुंभ और अर्धकुंभ के मेले लगते हैं. इस घाट पर पगपग पर पोंगापंथियों के दर्शन होते हैं. पंडों की कतारें और अंधविश्वासपूर्ण विविध क्रियाकलाप बड़े रोचक लगते हैं. अन्य धार्मिक स्थलों के समान यहां भी गंदगी का राज दिखाई देता है.

हरिद्वार से 14 किलोमीटर



हरिद्वार : पर्यटन का मुख्य आकर्षण हर की पैड़ी.

हरिद्वार

कहां ठहरें?

होटल

आर्य निवास, निकट मोदी भवन, फोन : 272. [उ.]

होटल आरती, रेलवे रोड, फोन : 456. [म.]

होटल कैलाश, रेलवे स्टेशन के निकट, फोन : 101. [म.]

होटल पनामा, जसराम रोड, फोन : 1506.

होटल अशोक, जसराम रोड, फोन : 788.

होटल मानसरोवर, जसराम रोड, फोन : 1487.

सरकारी आवास

पर्यटक आवासगृह, बेलवाला, फोन : 6379.

रेलवे विश्राम कक्ष, रेलवे स्टेशन निरीक्षण भवन.

धर्मशालाएं

महाराज कपूरथला धर्मशाला.
पंचायती धर्मशाला.
सिंधी धर्मशाला.
वृंदावन धर्मशाला.
कर्नाटक धर्मशाला.

दूर स्थित है चीला, जिसे आप छोटा वन्याभरण भी कह सकते हैं. यहां हाथी विचरते नजर आएंगे. यहां एक जलकुंड, आरामगृह और कैंटीन भी है.

हरिद्वार से 6 किलोमीटर दूर ही कनखल है. यह पौराणिक स्थान है. यहां जलकुंड और शिव मंदिर है. यह एक रमणीक स्थान है.

इन के अतिरिक्त भीमगोडा तालाब; गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, ब्यूटी पाइंट, मनसा देवी मंदिर आदि उल्लेखनीय हैं, जिन्हें देखा जा सकता है.

हरिद्वार में आश्रमों की लंबीलंबी कतारें भी हैं, जहां महंत, पंडित, मठाधीश आदि अपनीअपनी दुकानें लगाए बैठे हैं. इन में से कुछ में पर्यटन की दृष्टि से हो आना बुरा नहीं.

ऋषिकेश

कहां ठहरें?

होटल

इंद्रलोक होटल, रेलवे रोड, फोन : 555, 556, 599. [म.]

होटल मंदाकिनी, 63, हरिद्वार रोड, फोन : 781, 1081. [उ.]

होटल गंगा किनारे, 16, वीरभद्र रोड, फोन : 566. [उ.]

होटल बसेरा, 1, घाट रोड, फोन : 567, 720. [म.]

सरकारी आवास

टूरिस्ट कांप्लेक्स ऋषिलोक, मुनि की रेती, फोन : 378.

टिप्पणी : हरिद्वार के समान ऋषिकेश में भी आश्रमों में ठहरने की समुचित व्यवस्था है, लेकिन इन में वे ही यात्री ठहर सकते हैं, जो आश्रम से किसी न किसी रूप में जुड़े हों.



ऋषिकेश

गंगा तथा चंद्रभागा नदियों के संगम पर बसा ऋषिकेश देहरादून क्षेत्र का एक साधारण पर्यटन स्थल है, जहां देहरादून से बस या टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है. हरिद्वार से भी ऋषिकेश के लिए नियमित बसें मिलती हैं. हरिद्वार और ऋषिकेश के बीच मात्र 24 किलोमीटर की दूरी है.

हरिद्वार की तरह ऋषिकेश भी धार्मिक स्थल अधिक है और पर्यटन स्थल कम. लेकिन यहां हरिद्वार की अपेक्षा प्राकृतिक रमणीयता अधिक है जो पर्यटकों को बांधे रहती है. एक ओर तो ऋषिकेश की पृष्ठभूमि में स्थित तराई के घने वृक्षों से घिरी पहाड़ियां पर्यटकों को मोहती हैं, दूसरी ओर यहां का शांत व गंभीर वातावरण मन को शांति देता है.

क्या देखें?

लक्ष्मण झूला : गंगा नदी की सामान्य जलधारा से लगभग 150 मीटर की ऊंचाई पर बना यह झूला वास्तव में एक पुल है, जो लोहे के मोटेमोटे तारों को बुन कर तैयार किया गया है. इस पुल पर से भीड़ के गुजरने पर यह हिचकोले खाने लगता है. इसीलिए इसे 'झूला' कहा जाता है. यहां से आसपास की हरियाली देख कर आंखों को



ऋषिकेश मंदिरों व आ[illegible] का शहर है. यहां [illegible] लोग आत्मि[illegible] इन मंदिरों में [illegible]

ठंडक मिलती है.

गीता भवन : लक्ष्मण झूला पार करते ही गीता भवन दिखाई देने लगता है. यह आधुनिक शिल्पकला का एक अच्छा नमूना है.

इन के अतिरिक्त ऋषिकेश में त्रिवेणी घाट, भारत माता मंदिर आदि देखे जा सकते हैं.

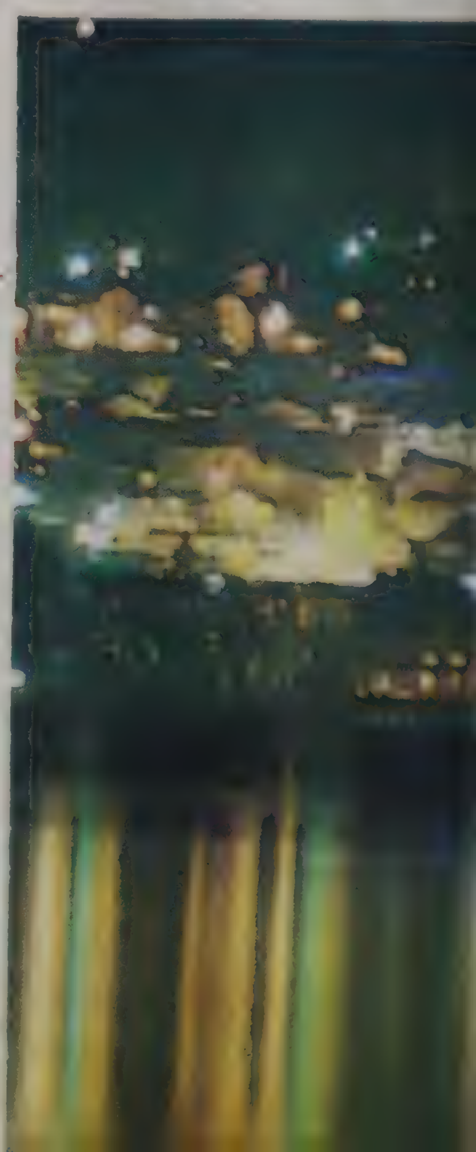
नैनीताल क्षेत्र

नैनीताल

कुमाऊं अंचल में स्थित नैनीताल उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है. इस का 'नैनीताल' नाम इस झील के एक किनारे पर स्थित नैना देवी के कारण पड़ा है. समुद्र सतह से 1,938 मीटर की ऊंचाई पर बसे नैनीताल शहर का मुख्य आकर्षण नैनी झील है. नैनीताल के उत्तर में चीना श्रेणी, पश्चिम में देवपथ तथा दक्षिण में अंयार-पाटा पर्वत श्रेणियां हैं.

इसे पर्यटन स्थल बनाने का श्रेय अंगरेजों को जाता है. पीटर बैरन नामक अंगरेज पहली बार 1841 में नैनीताल पहुंचा था. वहां उस ने सरोवर के निकट 'पिलग्रिम' नामक मकान बनवाया जो आज भी मौजूद है. अंगरेजों को गरमियां व्यतीत करने के लिए यही स्थान रमणीय लगता था.

नैनीताल को केंद्रबिंदु बना कर इस क्षेत्र के पर्यटन के दौरान लगभग 2 दिन के अतिरिक्त



समय में अलमोड़ा, रानीखेत एवं कौसानी का कार्यक्रम भी बनाया जा सकता है.

कब जाएं?

नैनीताल में पर्यटन का उचित समय मध्य सितंबर से अक्तूबर अंत तक एवं मार्च से जून तक का है. सर्दियों में यहां का तापमान 2.8° सेंटीग्रेड तक गिर जाता है. अतः स्नोफाल का आनंद लेने के लिए 25 दिसंबर के बाद का समय उत्तम रहता है. सर्दियों में भारी ऊनी कपड़े और गरमियों में हलके ऊनी वस्त्र साथ ले जाना ठीक रहता है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : यद्यपि नैनीताल का निकटतम हवाई अड्डा पंत नगर है, लेकिन यहां के लिए उड़ानें प्रायः बंद कर दी गई हैं. इसलिए रेल मार्ग से काठगोदाम तक जाना अधिक उचित है.

रेलमार्ग : नैनीताल, अलमोड़ा, रानीखेत व कौसानी का निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम है. काठगोदाम मीटरगेज द्वारा आगरा, बरेली और लखनऊ से जुड़ा है. शीघ्र ही यह बड़ी लाइन से कई बड़े शहरों से जुड़ जाएगा. काठगोदाम से नैनीताल आदि इन चारों स्थलों तक पहुंचने के लिए बसों और टैक्सियों की सुविधाएं उपलब्ध हैं.

सड़क मार्ग : नैनीताल में 2 बस अड्डे हैं. एक तल्लीताल में है जहां लोकल बसें आतीजाती हैं. दूसरा बस अड्डा सुखताल में है. लखनऊ, रानीखेत, अलमोड़ा, देहरादून, बरेली, दिल्ली आदि नगरों से नैनीताल के लिए बस सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं.

रात की रंगीनियों में नैनी झील में उतरी नैनीताल की अद्भुत छटा देखते ही बनती है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–322 किलोमीटर
बरेली–141 किलोमीटर
लखनऊ–401 किलोमीटर
अलमोड़ा–66 किलोमीटर
रानीखेत–60 किलोमीटर
कौसानी–120 किलोमीटर

कुमाऊं मोटर आनर्स यूनियन एवं प्राइवेट बसों द्वारा नैनीताल से अलमोड़ा, रानीखेत एवं कौसानी पहुंचा जा सकता है.

क्या देखें?

रोपवे : गरमियों में सवेरे 9 बजे से शाम को 6 बजे तक 'रोपवे' खुलता है. जाड़ों में इस का समय 10 बजे से शाम [illegible] बजे तक का है. मल्लीताल से स्नो व्यू तक आप 'रोपवे' का आनंद ले सकते हैं. यह नैनीताल का एक प्रमुख आकर्षण है.

नैना पीक : यह 'चाइना





पीक' के नाम से भी जाना जाता है. नैनापीक नगर से लगभग 6 किलोमीटर दूर है. यह नैनीताल की सब से ऊंची चोटी है. समुद्र सतह से 8,568 फुट ऊंची इस चोटी से साफ मौसम में हिमालय की अनुपम सुंदरता निहारी जा सकती है. यों तो यहां पहुंचने के लिए टट्टू की सुविधा उपलब्ध रहती है, अन्यथा आप पैदल भी सहजता से पहुंच सकते हैं.

वेधशाला : टेलीस्कोप द्वारा चंद्रमा, तारे, भू उपग्रहों एवं अन्य नक्षत्रों को दिखाने की व्यवस्था नैनीताल के दर्शनीय स्थल मनोरा पीक स्थित 'वेधशाला' में समुचित रूप से की गई है. हनुमानगढ़ी से लगभग एक किलोमीटर आगे यह स्थल स्थित है. यहां टैक्सियों द्वारा पहुंचा जा सकता है. लेकिन अंतरिक्ष संसार की जानकारी सप्ताह में कुछ तय दिनों में ही प्राप्त की जा सकती है. क्योंकि यह वेधशाला पूरे सप्ताह नहीं खुलती.

स्नो व्यू : 7,450 फुट की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान पर नैनीताल से उत्तर की ओर ढाई किलोमीटर चढ़ाई के बाद पहुंचा जा सकता है. यहां से रानीखेत और हिमालय का सुंदर दृश्य देखा जा सकता है. बर्फ से ढकी चोटियों की खूबसूरती देखने का यह सर्वोत्तम रमणीक स्थान है.

राजभवन : अंगरेज गवर्नरों के लिए बनाया गया 113 कमरों वाला यह दोमंजिला भवन कई एकड़ भूभाग पर फैला हुआ है. विलायती बांज के वृक्षों से घिरे इस स्थान के घने जंगलों का आकर्षण देखते ही बनता है. प्रकृति प्रेमी जहां जंगलों की खामोश सुंदरता का रसास्वादन करने आते हैं, वहीं खेल प्रेमियों के लिए भी आसपास गोल्फ के कई मैदान हैं.

इन के अतिरिक्त हनुमान गढ़ी गुफा महादेव जो तल्लीताल से लगभग ढाईतीन किलोमीटर दूरी पर स्थित है, दर्शनीय स्थल हैं. नैनीताल से लगभग 9-10 किलोमीटर दूरी पर स्थित खुरपाताल में मछली पकड़ने के शौकीन पर्यटक अपना शौक पूरा कर सकते हैं.

डोरोथी सीट : प्रकृति की गोद में आकाश की ऊंचाइयों को छूने का एहसास.

आसपास के दर्शनीय स्थल

भीमताल : नैनीताल से 22 किलोमीटर दूर एवं समुद्र की सतह से 4,450 फुट ऊंचाई पर स्थित इस दर्शनीय स्थल का मौसम बेहद सुहावना होता है. इस झील के मध्य बना टापू सैलानियों को विशेष आकर्षित करता है. थिरकती जल लहरियों पर नौका विहार का अपना ही आनंद है. यहां पहुंचने के लिए नैनीताल से टैक्सियों, बसों की अच्छी व्यवस्था है. ठहरने के लिए कुमाऊं मंडल विकास निगम का आवासगृह, जिला परिषद का डाक बंगला एवं अन्य कुछ छोटे आवासगृह भी हैं. भीमताल को 'औद्योगिक घाटी' के रूप में भी जाना जाता है.

नौकुचियाताल : 9 कोने

वाली 9 मीटर गहरी नैनीताल की यह विशिष्ट झील है. यह झील भीमताल से लगभग 5 किलोमीटर दूर है. यह कमल के फूलों के कारण प्रसिद्ध तो है ही, लेकिन इस की सुंदरता को निखारने में झील से जुड़े वृक्ष भी कम महत्त्व नहीं रखते. नौकायन के अतिरिक्त पैडल बोट भी पर्यटकों को आकर्षित करती है. यहां पर पहुंचने के लिए टैक्सियों, बसों की सुविधा है. कुमाऊं मंडल विकास निगम ने झील के समीप पर्यटक आवास-गृह भी बनाया है.

सातताल : यह झील नैनीताल से 20 किलोमीटर दूर है. 7 झीलों के इस समूह में अब प्राकृतिक कारणों से 3-4 झीलें ही हैं, तथापि इस की रमणीयता में कोई कमी नहीं आई. झीलें वृक्षों से घिरी यों प्रतीत होती हैं, जैसे उन के जल पर हरा कालीन बिछा हो. पानी का नीलानीला रंग, वृक्षों के हरेपन की झलक का सम्मिश्रण और थिरकते पानी पर नौकाओं तथा पैडल बोटों के आनंद में मन डूबडूब सा जाता है. यहां पर पहुंचने के लिए टैक्सियों, बसों की सुविधाएं उपलब्ध हैं. यहां पर्यटकों के ठहरने के लिए कुमाऊं मंडल का एक छोटा आवासगृह है.

कार्बेट नेशनल पार्क : कार्बेट नेशनल पार्क नैनीताल से 118 किलोमीटर दूर है. 525.8 वर्ग किलोमीटर में फैला यह पार्क सांभर, हाथी, तेंदुआ, चीते, भालू, विशालकाय अजगर एवं कई आवासी एवं प्रवासी पक्षियों के कारण पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्रबिंदु है. प्रसिद्ध प्रकृति विज्ञानी जिम कार्बेट के नाम पर यह पार्क बनाया गया है. इस में अपनी क्रीडाओं में व्यस्त जानवरों एवं पक्षियों को देखने की अवधि तय होती है. मध्य जून से मध्य नवंबर तक यह पार्क पर्यटकों के लिए बंद रहता है. पार्क में प्रवेश के लिए पास बनवाना अनिवार्य है.

राम नगर : नैनीताल से 66 किलोमीटर दूर कोसी नदी के किनारे राम नगर स्थित है. यह कार्बेट नेशनल पार्क का मुख्यालय है. राम नगर के नजदीक ही कोसी नदी की धारा के बीचोबीच एक शिलाखंड पर प्रसिद्ध गर्जिया देवी का मंदिर भी देखने योग्य है.

पर्यटकों के सम्मान में आयोजित एक विशेष शरद मेले के कारण नैनीताल की प्राकृतिक सुंदरता में एक अन्य पृष्ठ जुड़ जाता है, जो इस के आकर्षण को और भी मुखर बनाने में सहायक सिद्ध होता है. पर्यटक दिन भर नैनीताल में कहीं भी घूमें पर शाम को फ्लैट (नैनी झील के किनारे) में अवश्य जाएं एवं मालरोड पर अवश्य घूमें. रात्रि में झील में उतरे नैनीताल शहर के सौंदर्य को अवश्य निहारें.

क्या खरीदें?

प्रकृति के विविध मनमोहक रूपों की भांति यहां की प्रत्येक वस्तु में अपनी ही अनोखी छाप लिए है. यहां की अनूठी शिल्प कला का उदाहरण लकड़ी की बेहद सुंदर कलाकृतियां हैं. लकड़ी का सामान, घर की सजावट की चीजें माल रोड से खरीदी जा सकती हैं. यहां की शाल, स्वेटर, पुलोवर अपनी दस्तकारी एवं गुणवत्ता के कारण सर्वत्र सराहे जाते हैं लेकिन आजकल ज्यादा ऊनी माल लुधियाना का ही बना मिलता है. ऊनी कपड़ों को मल्लीताल के बड़े बाजार एवं तल्लीताल से भी खरीदा जा सकता है. झील के पास बने भाटिया बाजार से भी मनपसंद की चीजों को उचित दामों पर खरीदा जा सकता है.

नैनीताल

कहां ठहरें?

होटल

ग्रांड होटल, द माल, फोन : 2406.
स्विस होटल, मल्लीताल, फोन : 2603.
शेरवानी हिलटाप इन, शेरवानी लाज, मल्लीताल, फोन : 2128.
होटल एवरेस्ट, द माल, फोन : 2453.
रायल होटल, मल्लीताल, फोन : 2007.
होटल सिलवरटन, शेर का डांडा, फोन : 2249.
वाटिका नैनी रिट्रीट, अंयारपाटा स्लोप्स, फोन : 2105, 2108.

धर्मशालाएं

आर्य समाज मंदिर.
लाला शिवलाल सेवा समिति धर्मशाला.
अंजुमन ए इसलामिया मुसाफिरखाना.

अन्य आवासीय सुविधाएं

टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर, सुखाताल, फोन : 2374, 2400.
यूथ हास्टल (केवल शयनशाला), द माल, फोन : 2353.

अलमोड़ा

शहरी कोलाहल से मुक्त अलमोड़ा का प्राकृतिक वातावरण नितांत शांत है.



नैनीताल से अलमोड़ा पहुंचने के लिए बसों एवं टैक्सियों की व्यवस्था है.

5 किलोमीटर लंबी अश्वाकार पहाड़ी पर बसा अलमोड़ा, पिथौरागढ़, नैनीताल, पौड़ी तथा चमोली जनपदों से घिरा हुआ है. इस के दोनों ओर कौशिका (कुशी) तथा शाल्मली नदियां बहती हैं.

अंगरेजों के आने से पहले अलमोड़ा चंद्रवंशीय राजाओं की राजधानी रहा है. 1563 में राजा कल्याण चंद्र ने अलमोड़ा की नींव डाली थी. सांस्कृतिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक गतिविधियों का केंद्र अलमोड़ा कुमाऊं की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है.

अलमोड़ा केवल प्राकृतिक धरोहर का ही धनी नहीं है बल्कि मेलों, त्योहारों एवं धार्मिक उत्सवों का यहां वर्षभर सिलसिला चलता रहता है.

अलमोड़ा

कहां ठहरें?

होटल

होटल अशोक, फोन : 66.

नीलकंठ होटल, पलटन बाजार, फोन : 32.

अलका होटल, बस अड्डे के पास, फोन : 163.

एंबेसडर होटल, बस अड्डे के पास, फोन : 118.

धर्मशालाएं :

हरिप्रसाद टमटा धर्मशाला.

क्या देखें?

ब्राइट एंड कार्नर : यह अलमोड़ा से 2 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां सूर्योदय तथा सूर्यास्त के मुग्ध करने वाले दृश्य देखे जा सकते हैं. सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्यों में अपने नाम 'ब्राइट एंड कार्नर' को चरितार्थ करता हुआ अलमोड़ा का यह मनमोहक दर्शनीय स्थल पर्यटकों को मोहित कर देता है.

जागेश्वर : अलमोड़ा से 34 किलोमीटर दूर देवदार वृक्षों से घिरा जागेश्वर का बेहद प्राचीन मंदिर है. विभिन्न कलात्मक मूर्तियों के अलावा 12 प्रसिद्ध शिवलिंगों में एक शिवलिंग यहां स्थापित है. यहां पर पुरातत्त्वीय महत्त्व के लगभग



बिनसर : यहां से हिमालय की अनुपम छटा का आनंद लिया जा सकता है.



प्रसिद्ध चित्तई मंदिर जिस का मुख्य आकर्षण हैं लाखों की संख्या में बंधी घंटियां.

164 मंदिर एक साथ स्थित हैं. इन मंदिरों की नक्काशीदार सजावट व अनूठी शिल्पकारी देखते ही बनती है. यहां के लिए अलमोड़ा से नियमित बस सेवा है. टैक्सी द्वारा भी यात्रा की जा सकती है.

कालीमट : अलमोड़ा से 5 किलोमीटर की दूरी पर कालीमट है. अलमोड़ा शहर को उस की पूरी सुंदरता के साथ यहां से देखा जा सकता है. चारों ओर फैली पहाड़ियों के सौंदर्य को निहारने का यह एक उत्तम स्थान है.

चित्तई मंदिर : इस मंदिर के वर्णन के बिना अलमोड़ा की सुंदरता अपूर्ण ही रहेगी. यह अलमोड़ा शहर से 8 किलोमीटर दूर है. ग्वेल देवता इस मंदिर के प्रमुख देवता हैं. वह चंद्र राजाओं के वीर सेनापति थे. बाद में उन की पूजा की जाने लगी. यहां से हिमालय की बर्फीली चोटियों का मनोरम दृश्य भी देखने को मिलता है.

हिरन पार्क : अलमोड़ा से 3 किलोमीटर दूर हिरन पार्क घूमने के लिए उत्तम स्थान है.

मल्ला किला : मल्ला किला या मल्ला महल शहर के ठीक मध्य में है. वर्तमान समय में इस महल में कचहरी तथा सरकारी खजाना है.

बिनसर चोटी : समुद्र तल से 2,412 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थल अलमोड़ा से 30 किलोमीटर दूर है. यहां से दिखने वाले हिमश्रेणियां अनुपम दृश्य व्यक्ति को बांध सा लेते हैं. यहां ठहरने के लिए पर्यटक आवासगृह है.

क्या खरीदें?

कपड़े एवं साजसज्जा के सामान हेतु अलमोड़ा एक उत्तम स्थल है. तांबे, मिट्टी तथा पीतल के बरतन अपनी सजावट एवं गुणवत्ता के कारण प्रसिद्ध हैं. ऊनी कपड़ों तथा अंगोरा ऊन के लिए अलमोड़ा प्रसिद्ध स्थान है. खरीदारी करने के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान लाल बाजार तथा चौक बाजार हैं. अलमोड़ा की बाल मिठाई एवं सिंगोड़ी खरीदना न भूलें.

रानीखेत

रानीखेत समुद्र तल से 1,830 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. नैनीताल या अलमोड़ा से बस, टैक्सी द्वारा यहां पहुंचना बेहद सरल है. बस द्वारा मात्र ढाई या 3 घंटे में आप

रानीखेत
कहां ठहरें?

होटल

होटल मून, सदर बाजार, फोनः 2382, 2258.
होटल मेघदूत, फोन : 2275.
वेस्ट व्यू होटल, महात्मा गांधी रोड, फोन : 61.
जलनिगम रेस्ट हाउस.
होटल प्रशांत, फोन : 2297.
होटल राजदीप, रेस्टोरेंट राजदीप, सदर बाजार, रानीखेत, फोन : 2287, 2447.

धर्मशाला

शिवमंदिर धर्मशाला.

नैनीताल से रानीखेत पहुंच सकते हैं.

एक समय यहां के सौंदर्य से मोहित हो कर किसी रानी ने अपना निवास स्थान यहां बना लिया था. वर्तमान रानीखेत क्लब के पास के इस निवास स्थान से ही इस का नाम 'रानीखेत' पड़ा. हिमाच्छादित पर्वतों, चीड़ एवं देवदार के वृक्षों से घिरी इस की वादियां, चांदी के रंग सा आभास देती बर्फ से ढकी इस नगरी के अनुपम सौंदर्य को सुन कर पर्यटक इसे देखने खिंचे चले आते हैं. अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विलियम ओ. डगलस का कथन गलत नहीं है, 'रानीखेत विश्व का सब से उत्तम पर्यटन स्थल है.'

नीदरलैंड के राजदूत वान पैलेंट का कथन शतप्रतिशत सत्य है, 'जिस ने रानीखेत को नहीं देखा, उस ने भारत को नहीं देखा.'

क्या देखें?

रामजी हरबेरियम (वनस्पति संग्रहालय) : यह संग्रहालय प्रसिद्ध वनस्पति-शास्त्री रामजी लाल शाह ने स्थापित किया था. यहां के वनों में वनस्पतियों एवं जड़ीबूटियों के भंडार हैं. उत्तराखंड की वनस्पतियों पर रामजी लाल द्वारा ही 3 खंडों में तैयार अप्रकाशित पुस्तक 'फ्लोरा आफ रानीखेत येनसिस' की पांडुलिपि भी यहां रखी हुई है.

चौबटिया : एशिया का सब से बड़ा सेबों का यह बाग रानीखेत से 10 किलोमीटर दूर है. इस स्थान पर कुमाऊं मंडल की प्रसिद्ध राजकीय फल अनुसंधानशाला भी है. यहां फलों के बाग देख कर पर्यटकों का मन प्रफुल्लित हो उठता है. चौबटिया के पास 3 जलस्रोत अपना अलग ही प्रभाव छोड़ते हैं.

खड़ा बाजार : ढाल पर बसे रानीखेत के इस बाजार का यह नाम संभवतः इसलिए पड़ा है कि यह एक प्रकार से खड़ा अर्थात काफी उठा हुआ है. पहले इस स्थान को अंगरेजों द्वारा 'मेयोस्ट्रीट' कहा जाता था.

भालू डैम : यह चौबटिया से 3.2 किलोमीटर की दूरी पर है. इस शहर के लिए यह पानी का मुख्य स्रोत है. पिकनिक के लिए यह एक आकर्षक स्थान है.

रानीखेत का गोल्फ मैदान : यहां का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को मोह लेता है.



द्योलीखेत : हिमालय का विहंगम दृश्य द्योलीखेत नामक पर्वत चोटी से देखा जा सकता है. यह चोटी अलमोड़ा मार्ग पर ही सड़क के किनारे है. तीनों ओर पर्वतों से घिरे इस मैदान की सुंदरता को देवदार और चीड़ के वृक्ष और भी बढ़ा देते हैं.

गोल्फ मैदान : रानीखेत से 6 किलोमीटर दूर एशिया के गोल्फ मैदान की खूबसूरती पर्यटकों को ही आकर्षित नहीं करती, वरन इस के प्राकृतिक दृश्यों को फिल्म में उतारने का मोह कैमरामैन भी संवरण नहीं कर पाते. गोल्फ मैदान के एक भाग में खिलाड़ियों के लिए विश्रामगृह भी है.

द्वाराहाट : रानीखेत से 38 किलोमीटर दूर द्वाराहाट कत्यूरी राजवंश का मुख्य केंद्रबिंदु है. इसलिए इस स्थान का महत्त्व प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक दोनों ही दृष्टियों से पर्यटकों के लिए अर्थपूर्ण है. यहां 55 मंदिर हैं. वे सब कत्यूरी एवं गुजरात की सम्मिश्रित शैलियों के कारण दर्शनीय हैं.

दूनागिरि : द्वाराहाट से लगभग 9-10 किलोमीटर की दूरी पर दूनागिरि का प्रसिद्ध और भव्य मंदिर भी दर्शनीय स्थल है. यहां पर द्वाराहाट से बस या टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है. मंदिर के पास ही रात में ठहरने के लिए धर्मशाला भी है. मंदिर के नजदीक ही सेबों का बहुत बड़ा बगीचा पहाड़ के सीढ़ीदार खेतों में फैला हुआ है जिसे पर्यटक सड़क पर से निहार सकते हैं.

सुरई खेत : द्वाराहाट से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर सुरई खेत नामक प्रसिद्ध स्थल है. यहां पर पहाड़ की चोटी पर बहुत बड़ा मैदान है जहां से द्वाराहाट, दूनागिरि पांडुखोली, त्रिशूल आदि स्थल देखे जा सकते हैं. इसी के उत्तर में आधा किलोमीटर की दूरी पर हरिजी का महान शक्तिपीठ स्थित है जहां से चौखंबा, नंदा देवी आदि पर्वत श्रेणियों को देखा जा सकता है.

क्या खरीदें?

रानीखेत में जा कर कुमाऊं की लाजवाब कलाकृतियां निसंदेह आप को आकर्षित करेंगी. यहां के सदर बाजार, काहरी बाजार एवं जरूरी बाजार से खरीदारी की जा सकती है. यहां के फलों को खाना भी न भूलिए क्योंकि उन का अपना ही एक अलग स्वाद है.

कौसानी

मानवता, दयालुता एवं सौंदर्य को परखने जैसे उत्कृष्ट गुण कुमाऊंवासियों को अद्वितीयता प्रदान करते हैं. नैनीताल का सफर कुमाऊं अंचल के एक अन्य क्षेत्र कौसानी के पर्यटन के बिना अधूरा है. नैनीताल से अथवा अलमोड़ा, रानीखेत यहां तक कि दिल्ली से भी कौसानी यात्रा के लिए बसें



प्राचीन बैजनाथ मंदिर कौसानी का एक प्रमुख आकर्षण

उपलब्ध रहती हैं. नैनीताल एवं उस के अन्य क्षेत्रों से टैक्सी द्वारा भी आप यह दूरी तय कर सकते हैं.

कौसानी लगभग 6 वर्ग किलोमीटर में फैला समुद्र तल से लगभग 1,950 मीटर ऊंचा एक गांव है. कौसानी, कत्यूर और एशिया की सब से उर्वर और हरीभरी सोमेश्वर घाटी के मध्य (×) गुणा का चिह्न बनाती हुई 2 पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है. ब्रिटिश शासन काल में चाय के बागानों के कारण प्रसिद्ध यह गांव पिछले 20 वर्षों से रमणीक पर्यटन



कौसानी

कहां ठहरें?

होटल

होटल पाइन व्यू.

होटल सागर.

होटल शक्ति.

होटल जीतू.

होटल न्यू पाइन व्यू.

अन्य आवासीय सुविधाएं :

फारेस्ट रेस्ट हाउस

टूरिस्ट बंगला.

डाक बंगला.

स्थल के रूप में जाना जाने लगा है.

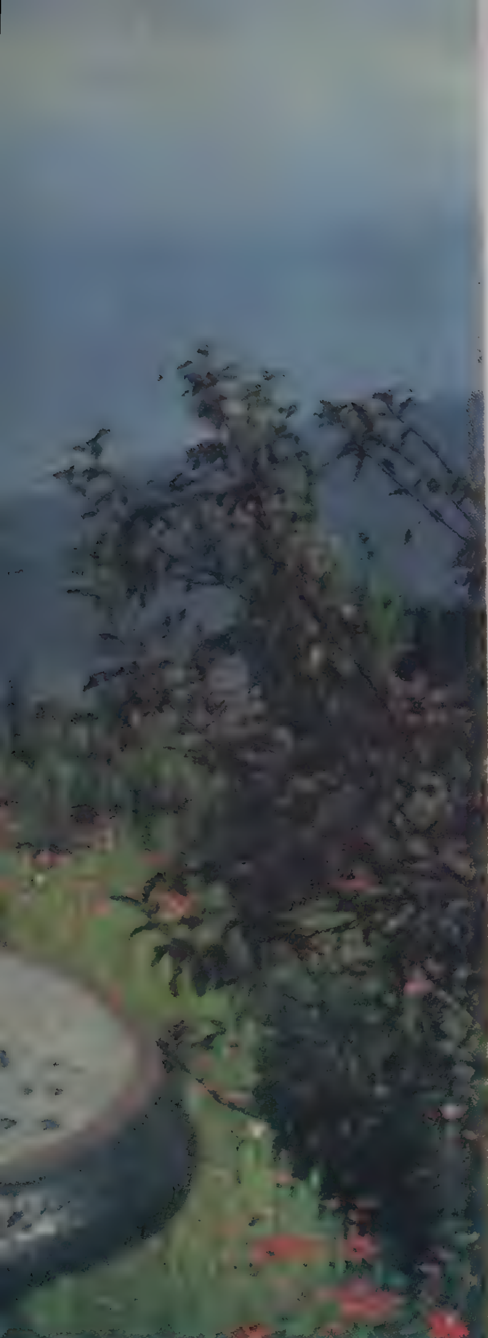
भारत के इस 'स्विटजरलैंड' से हिमालय की हिमाच्छादित पर्वतश्रेणियों को देखा जा सकता है. सूर्योदय, सूर्यास्त के दृश्य एवं बर्फीली चोटियां, जिन्हें 'त्रिशूल' कहते हैं, का सौंदर्य अपनेआप में महत्त्वपूर्ण अर्थ रखता है. सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय सूर्य की बहुरंगी किरणें बर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ती हैं तो इन दृश्यों की सुंदरता को [illegible] [illegible] के समय [illegible] भी सकते हैं.

कौसानी : यहां से हिमाच्छादित पर्वत श्रेणियों की निकटता का आनंद लिया जा सकता है.

क्या देखें?

_बैजनाथ_ : कौसानी से लगभग 19 किलोमीटर की दूरी पर आकर्षक गरुड़ घाटी में गोमती नदी के किनारे स्थित बैजनाथ अपने ऐतिहासिक कलात्मक मंदिरों एवं मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है. 8वीं और 11वीं शताब्दी के बीच निर्मित इन मंदिरों में अब कुछ ही बचे हैं.

_पिंडारी ग्लेशियर_ : यह स्थान कौसानी से 58 किलोमीटर



दूर है. यहां के प्राकृतिक दृश्यों की छटा देखते ही बनती है. पिंडारी ग्लेशियर का स्वयं का सौंदर्य भी कोई कम मायने नहीं रखता.

बागेश्वर मंदिर : यह मंदिर कौसानी से 39 किलोमीटर दूर है.

बागेश्वर घाटी में स्थित बागेश्वर मंदिर सरयू और गोमती नदियों के संगम पर स्थित है. 14 जनवरी को कुमाऊं मंडल का प्रसिद्ध उत्तरायणी मेला इस पर्यटन स्थान के आकर्षण की वृद्धि में और भी सहायक है.

लखनऊ क्षेत्र

लखनऊ

"यह रोम नहीं है, न ही एथेंस है और न ही कांस्टैंटिनोपल. कोई भी शहर इतना सुंदर और आकर्षक नहीं हो सकता. मैं जितना ही इसे देखता हूं इस की खूबसूरती मुझे और भी सम्मोहित करती जाती है."

लखनऊ की रमणीयता के संदर्भ में यह कथन है प्रसिद्ध साहित्यकार विलियम एच. रसेल का जो 1875 में लखनऊ पर्यटन के लिए आए थे. गोमती नदी के दोनों तटों पर बसा लखनऊ आज इतना रमणीय तो नहीं रहा फिर भी आकर्षक शहर अवश्य है.

यों तो लखनऊ एक पुराना नगर है. अवध के नवाबों के शासन काल में यह संस्कृति और शिष्टाचार, इतिहास और स्थापत्य कला एवं संगीत और नृत्य कला का विशिष्ट केंद्र बन गया था. नवाबों के द्वारा यहां बनवाई गई अनेक रमणीक इमारतें आज भी भारतीय तथा विदेशी विशेषतः पश्चिमी एशिया और यूरोप की स्थापत्य कला का मुकाबला करती हैं.

एक ओर जहां लखनऊ की प्रसिद्ध नई व पुरानी इमारतों से पारंपरिक दरबारी झलक मिलती है, वहीं यहां के ऐतिहासिक स्मारक विविध रंगीनियों और रोमांचकारी घटनाओं की कहानी कहते हैं.

वैसे आज का लखनऊ देश के किसी भी शहर की तरह रिकशों, तांगों, टैंपुओं, ट्रकों से अस्तव्यस्त शहर बन कर रह गया है. पटरियों पर लगी दुकानें, दुकानों के बाहर बेतरतीब सामान व गंदगी अन्य शहरों की तरह यहां भी है. इस के कुछ इलाके ही थोड़े साफ़सुथरे नजर आएंगे. बीचबीच में कुछ जानेअनजाने भव्य भवन वास्तुकला के प्रेमियों का मन मोह लेंगे क्योंकि इतने छोटे क्षेत्र में इतने नक्काशीदार भवन आप को और कहीं कम ही मिलेंगे.

लखनऊ का छोटा इमामबाड़ा: नवाबी तहजीब का अद्भुत नमूना.



कब जाएं?

लखनऊ तथा उस के आसपास के क्षेत्रों में सामान्यत मई से सितंबर तक भारी गरमी पड़ती है और वर्षा भी होती है. अतः इन महीनों में यहां पर्यटन करना उचित नहीं है. पर्यटन की दृष्टि से अक्तूबर से मार्च तक का समय उपयुक्त है. दिसंबर से फरवरी तक यहां सर्दी काफी पड़ती है, इसलिए ऊनी वस्त्र लाना न भूलें. अन्य महीनों में सूती कपड़ों से काम चल सकता है.



कैसे जाएं?

वायु मार्ग : लखनऊ उत्तर प्रदेश की राजधानी होने के कारण देश के अन्य राज्यों से हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा है. यहां का हवाई अड्डा (अमौसी)नगर से लगभग 14 किलोमीटर दूर है.

सड़क मार्ग : लखनऊ राष्ट्रीय राज मार्ग 24 तथा 28 के संगम पर स्थित है. इस रूप में यह देश के अन्य नगरों से भी सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. दिल्ली, मथुरा, आगरा, देहरादून, झांसी, गोरखपुर, वाराणसी आदि नगरों से लखनऊ के लिए सीधी बस सेवाएं उपलब्ध हैं. यहां का मुख्य बस अड्डा चारबाग में है, जो चारबाग रेलवे स्टेशन के सामने ही है.

रेल मार्ग : लखनऊ उत्तरी तथा उत्तरपूर्वी रेल लाइनों पर एक महत्त्वपूर्ण स्टेशन है, अतः देश के प्रायः सभी भागों से यहां के लिए रेलगाड़ियों की सुविधा उपलब्ध है.

लखनऊ : प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान समय	किराया (साधारण)
दिल्ली	1, 3, 5	आईसी 409	17.30	1,226/-
	2, 4, 6, 7	आईसी 837	18.35	
	दैनिक	आईसी 435	08.15	
बंबई	1, 2, 4, 6	आईसी 695	11.30	3,629/-
कलकत्ता	1, 3, 5	आईसी 410	15.30	2,226/-
पटना	1, 3 5	आईसी 410	16.55	1,301/-

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–497 किलोमीटर
आगरा–369 किलोमीटर
इलाहाबाद–237 किलोमीटर
वाराणसी–286 किलोमीटर
खजुराहो–320 किलोमीटर
कानपुर– 79 किलोमीटर

क्या देखें?

लखनऊ का प्रमुख बाजार हजरतगंज है. वीरांगना बेगम हजरत महल के नाम पर बने हजरतगंज में शाम बिताने का एक अलग ही आनंद है. मख्य डाकघर व विधानसभा भवन मे गोमती के निकट हजरतगंज



रूमी दरवाजा : स्थापत्य कला में बेजोड़. ▲

पार्क तक फैले इस बाजार में 'शाम-ए-अवध' का दीदार किए बिना आप की यात्रा अधूरी है. अन्य ऐतिहासिक स्थल निम्नलिखित हैं :

रूमी दरवाजा : रूमी दरवाजा लखनऊ के इमामबाड़ों का प्रवेशद्वार है. 1784 में नवाब आसफउद्दौला द्वारा बनवाया गया यह दरवाजा 'टर्किश गेट वे' भी कहलाता है. यह कांस्टैंटिनोपल (पश्चिमोत्तर तुर्की का एक प्रसिद्ध बंदरगाह जिसे आजकल इस्तानबूल कहते हैं) के एक गेट की प्रतिकृति प्रतीत होता है. लगभग 60 फुट ऊंचे इस दरवाजे की स्थापत्य कला पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है.

बड़ा इमामबाड़ा : आसफी इमामबाड़े के नाम से भी प्रसिद्ध यह इमामबाड़ा 1784 में नवाब आसफउद्दौला ने बनवाया था. इस में इजरत इमाम हुसैन की स्मृति में प्रतिवर्ष शोक समारोह आयोजित किया जाता है. इमामबाड़े के परिसर में एक बड़ी मसजिद तथा एक विशाल बावली है. इस भव्य इमारत के कुछ विशिष्ट दर्शनीय भाग हैं, बिना किसी भी कड़ी के सहारे बने बड़ेबड़े हाल, भूलभुलैया, ऊपरी मंजिल में सुंदर झरोखे तथा बरामदे आदि.

छोटा इमामबाड़ा : इसे हुसैनाबादी इमामबाड़ा भी कहते हैं. यह इमामबाड़ा नवाब मुहम्मद अली शाह ने 1832 में बनवाया था. इस इमामबाड़े में बेल्जियम कांच के कीमती झाड़फानूस, कंदीलें एवं आकर्षक शमादान हैं.

जामा मसजिद : छोटे इमामबाड़े के पश्चिम में जामा मसजिद है जो लखनऊ की सब से बड़ी मसजिद है. यद्यपि नवाब मुहम्मद अली शाह ने इस मसजिद का निर्माण आरंभ करवाया था, किंतु इसे पूरा करवाने का श्रेय मल्काजहां को दिया जाता है. यह अरबी स्थापत्य कला का अच्छा नमूना है. इमारत की दीवारों पर चित्रकारी देखते ही बनती है.

घड़ी मीनार : एक तरह से इसे एक घंटाघर कहा जा सकता है. लाल ईंटों से बना यह घंटाघर गोमती नदी के किनारे है. 100 वर्षों से भी अधिक पुराने इस आलीशान घंटाघर के कलपुरजे तथा चक्र गनमेटल के बने हुए हैं. यह घंटाघर 221 फुट ऊंचा है. इसे 1887 में नवाब नसीरुद्दीन हैदर ने बनवाया था. घंटाघर के चारों ओर लगी घंटियों के डायल 12 पंखड़ियों वाले खिले हुए फूल से लगते हैं.

रेजीडेंसी : हो सकता है कि रेजीडेंसी के वर्तमान खंडहर पहली नजर में देखने पर पर्यटकों को प्रभावित न करें. मगर इन का ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है. इसे नवाब आसफउद्दौला ने 1780 में बनवाना शुरू किया था और नवाब सआदत अली खां ने 1800 में पूरा करवाया था. प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दौरान 1857 में यह अंगरेजों का निवास स्थान था. उस समय इस पर हुई गोलीबारी के निशान



आज भी दीवारों पर देखे जा सकते हैं. पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां रात्रि में फ्लड लाइट की व्यवस्था की जाती है, जिस का एक अलग ही आनंद है.

शहीद स्मारक : रेजीडेंसी के निकट ही गोमती नदी के किनारे आकर्षक शहीद स्मारक बना है. सफेद संगमरमर से बना यह स्मारक स्वाधीनता संग्राम में शहीद हुए सेनानियों की याद दिलाता है.

रमणीक पार्क : लखनऊ कभी बागों का शहर कहलाता था. वैसे बाग तो नहीं रहे लेकिन अभी भी यहां पार्कों की एक लंबी श्रृंखला है. गोमती के किनारे बुद्ध पार्क, हाथी पार्क तथा इमामबाड़े के नजदीक नीबू पार्क जैसे कई रमणीक पार्क हैं जहां कुछ समय बैठ कर थकान मिटाई जा सकती है. इस के अलावा सआदत अली खां और मुशीरजादी के मकबरों के इर्दगिर्द बने बाग भी दर्शनीय हैं.

प्रिंस आफ वेल्स जू : यह चिड़ियाघर बनारसी बाग में स्थित है. इस में विभिन्न पशुपक्षियों के अलावा एक संग्रहालय भी है, जिस में गुप्त व कुषाण कालीन वस्तुओं का अच्छा संग्रह है. इस में हजारों वर्ष पुरानी मिस्र देश की 'ममी' (सुरक्षित रूप से रखा हुआ शव) भी है.

कुकरैल फारेस्ट : यहां मगरमच्छ पाले जाते हैं. तरहतरह के मगरमच्छों को देख कर पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं.

चिनहट : चिनहट लखनऊ का एक रमणीक पिकनिक स्थल

गोमती के किनारे स्थित आकर्षक बुद्ध पार्क.

लखनऊ : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी का नाम*	*प्रस्थान*
दिल्ली	शताब्दी एक्सप्रेस	06.20
	अवधअसम एक्सप्रेस	08.50
	वैशाली एक्सप्रेस	19.30
जबलपुर	चित्रकूट एक्सप्रेस	18.40
काठगोदाम	नैनीताल एक्सप्रेस	19.40
अहमदाबाद	अहमदाबादगोरखपुर एक्स.	05.55
बंबई	पुष्पक एक्सप्रेस	06.10
	कुशीनगर एक्सप्रेस	21.20
जम्मू	जम्मूतवीसियालदह एक्सप्रेस	18.30
	जम्मूतवीहावड़ा हिमगिरि एक्सप्रेस	20.20
कलकत्ता	हावड़ाजम्मूतवी हिमगिरि एक्सप्रेस	23.00
	सियालदहजम्मूतवी एक्सप्रेस	11.45
	हावड़ाअमृतसर मेल	19.20
	हावड़ादेहरादून एक्सप्रेस	20.30
मद्रास	मद्रासलखनऊ एक्सप्रेस	01.30

लखनऊ

कहां ठहरें?

होटल

क्लार्क्स अवध, 8 महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज, फोन : 236500, 240131. [उ.]

कार्ल्टन, शाहनजफ रोड, फोन : 244021, 244022. [उ.]

कपूर होटल, हजरतगंज, फोन : 243958, 247262. [उ.]

एलोरा, 3, लालबाग, फोन : 231307. [म.]

अवध लाज, तिलोई हाउस, 1, राममोहन राय मार्ग, फोन : 243821. [म.]

मोहन होटल, चारबाग रेलवे स्टेशन के निकट, फोन : 54216. [म.]

गुलमर्ग, अमीनुद्दौला पार्क, फोन : 231227. [म.]

दीप होटल, हुसैनगंज चौराहा, फोन : 35696. [म.]

अंबर, नाका हिंडोला, फोन : 247011. [म.]

पुष्पा अकबर कांटीनेंटल, गोमतीनगर, फोन : 392274, 392275. [उ.]

बंगाली होटल, चारबाग, फोन : 52892. [स.]

होटल टूरिस्ट, बी.एन. रोड, निकट जयहिंद सिनेमा, फोन : 245313. [स.]

सेंट्रल होटल, झंडेवाला पार्क, अमीनाबाद, फोन : 242525.[म.]

यात्रिक होटल, विजय नगर, फोन : 49803. [म.]

होटल चरन इंटरनेशनल, 16, विधान सभा मार्ग, फोन : 232516, 232518. [उ.]

दर्पण होटल, 19 हीवेट रोड, फोन : 44216. [म.]

होटल वैशाली, श्रीराम रोड, अमीनाबाद, फोन : 244382. [म.]

होटल राज, हुसैनगंज, फोन : 244232. [म.]

विष्णु गोपाल होटल, 19 हीवेट रोड, फोन : 240670. [स.]

कौशल होटल, अमीनाबाद, फोन : 43241. [म.]

होटल कोहिनूर, स्टेशन रोड, फोन : 232716, 237693.[उ.]

होटल रामकृष्ण, सिकंदर बाग, फोन : 232653. [म.]

सरकारी आवास

होटल गोमती, 6, सप्रू मार्ग, फोन : 232662, 240624.

वाई.एम.सी.ए., राणा प्रताप मार्ग, फोन : 247227.

रेलवे विश्रामगृह, उत्तर रेलवे, चारबाग.

रेलवे विश्रामगृह, पूर्वोत्तर रेलवे, चारबाग.

धर्मशालाएं

मुसलिम मुसाफिरखाना, चारबाग.

गंगाप्रसाद धर्मशाला, चौक.

छेदीलाल धर्मशाला, अमीनाबाद.

शीतल धर्मशाला, नाका हिंडोला.

विनायक धर्मशाला, नाका हिंडोला.

है. यहां प्रतिदिन अनेक लोग सैरसपाटे के लिए पहुंचते हैं.

क्या खरीदें

लखनऊ मुख्यतः कपड़ों पर कशीदाकारी और चिकन के काम के लिए प्रसिद्ध है. अतः पर्यटक यहां से चिकन के कुरते, साड़ियां, सूट, बच्चों के कपड़े आदि खरीद सकते हैं. इन के मुख्य बिक्री केंद्र हैं हजरतगंज, अमीनाबाद तथा चौक.

अयोध्या

लखनऊ से लगभग 142 किलोमीटर पूरब में अयोध्या भी अब एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल बन गया है. विगत वर्षों में राम जन्मभूमि मंदिर और बाबरी मसजिद विवाद के कारण यह स्थान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय रहा है.

वैसे देखा जाए तो अयोध्या एक कसबाई नगर है, जहां प्राकृतिक सौंदर्य या नगरीय चहलपहल का प्रायः अभाव है, मगर पर्यटन की दृष्टि से यहां के प्राचीन मंदिरों का कलात्मक

राम की पैड़ी : अयोध्या का एक प्रसिद्ध घाट



सौंदर्य निहारा जा सकता है. हनुमान गढ़ी, कनक भवन, मणि पर्वत, जानकी महल, नागेश्वर मंदिर, तुलसी चौरा, तुलसी उद्यान, तुलसी स्मारक भवन, राम की पैड़ी, रामकथा संग्रहालय, वाल्मीकि रामायण भवन आदि यहां की उल्लेखनीय इमारतें हैं.

अयोध्या में अन्य धार्मिक स्थलों की तरह पंडेपुजारियों और साधुसंतों की बहुतायत है, जो राम के नाम पर पर्यटकों को ठगने से नहीं चूकते. अतः ऐसे ढोंगियों से बच कर रहें.

यहां के रामजन्मभूमि मंदिर के तथाकथित रामलला के दर्शन करने रोजाना हजारों लोग आते हैं. यह स्थल और यहां पड़े विवादित ढांचे के ध्वंसावशेष धार्मिक उन्माद के परिचायक हैं.

लखनऊ से अयोध्या तक बसों और टैक्सियों की अच्छी सुविधा है. सुबह अयोध्या जा कर रात तक लखनऊ लौटा जा सकता है.



कानपुर का जे.के. मंदिर : उत्कृष्ट कला का नमूना.

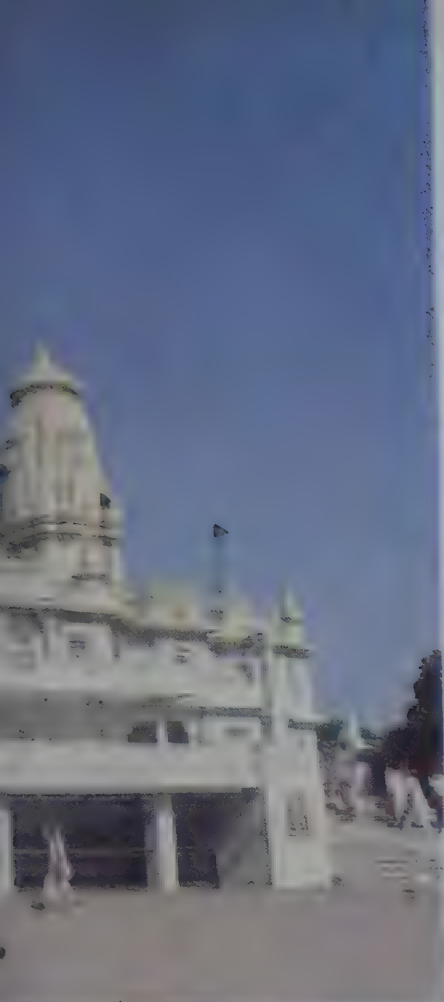
कानपुर

लखनऊ के निकटवर्ती पर्यटन स्थलों में कानपुर एवं उन्नाव भी उल्लेखनीय हैं. लखनऊ से कानपुर की दूरी मात्र 79 किलोमीटर है तथा रेल एवं सड़क मार्गों से दोनों स्थानों के बीच यातायात की अच्छी सुविधा है. फिर भी लखनऊ से पर्यटन का भरपूर आनंद अपने वाहन या टैक्सी द्वारा ही उठाया जा सकता है, क्योंकि उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम की खटारा बसों में यात्रा असुविधाजनक रहती है और रेलगाड़ियां सीमित हैं तथा प्रायः विलंब से ही चलती हैं.

अपनी सवारी होने पर बिना अधिक समय नष्ट किए अधिकाधिक पर्यटन स्थलों की सैर की जा सकती है. इस दशा में पर्यटक लखनऊकानपुर मार्ग पर लखनऊ से लगभग 40 किलोमीटर दूर नवाबगंज पक्षी विहार देख सकते हैं. यह अजगहा नाम की एक सुरम्य विशाल झील है, जहां विभिन्न प्रजातियों के पक्षी विहार करते हैं. शरद ऋतु में यहां कुछ दुर्लभ पक्षी भी दूरदूर से आ जाते हैं. यहां पर्यटकों के लिए खानपान की भी व्यवस्था है.

इस के बाद लखनऊ-कानपुर मार्ग पर लगभग 20 किलोमीटर और चलने पर उन्नाव एक अच्छा स्थान है, जिस के आसपास नेवल, संचानकोट, परिसर, परसंदन, डोंडियाखेड़ा, सूर्यकुंड, सरवन झील, बांगरमऊ, तकिया मुहब्बत शाह आदि दर्शनीय स्थल हैं. पास ही बदरका नामक स्थान भी है जिसे शहीद चंद्रशेखर आजाद की जन्मस्थली माना जाता है. यदि अधिक समय हो तो इन स्थानों को देखें वरना सीधे कानपुर पहुंचें.

यों तो कानपुर ब्रिटिश काल से ही एक औद्योगिक नगर रहा है, मगर यहां कुछ उद्यानों, मंदिरों तथा अन्य इमारतों को आधुनिक पर्यटन की दृष्टि से भी विकसित किया गया है. इन में तपेश्वरी मंदिर, वनखंडेश्वर मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, हनुमान मंदिर, नारायण आनंदेश्वर मंदिर आदि उत्कृष्ट कला की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं. इन सब से अधिक आकर्षक है जे.के. ग्लास मंदिर. यहां मोती झील,



तुलसी उपवन, बाल उद्यान, कमला रिट्रीट, जुलोजिकल गार्डन, नानाराव पार्क, गणेश उद्यान आदि की सैर भी की जा सकती है. मनोरंजन की दृष्टि से अब कानपुर में 'मिक्की हाउस' भी है जहां विभिन्न प्रकार के झूले हैं.

कानपुर में ठहरने की भी अच्छी व्यवस्था है. आप यहां रात को विश्राम भी कर सकते हैं. औद्योगिक नगरी होने के नाते यहां गंदगी कुछ अधिक ही है.

आसपास के दर्शनीय स्थल

बिठूर : कानपुर के आस-पास के दर्शनीय स्थानों में दो ऐतिहासिक महत्त्व के स्थल हैं, बिठूर और कन्नौज. प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम में बिठूर ने विशेष भूमिका निभाई थी. यहां नाना साहब पेशवा के किले के भग्नावशेषों के अतिरिक्त नाना साहब उद्यान, पेशवाघाट, लवकुश तीर मंदिर, सीता रसोई आदि देखने योग्य हैं. यह कानपुर से लगभग 22 किलोमीटर दूर है.

कन्नौज : इसी प्रकार कन्नौज कानपुर से लगभग 80 किलोमीटर दूर एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. किसी समय यह नगर सम्राट हर्षवर्धन की राजधानी था. यहां प्राचीन किले तथा मंदिरों के कुछ अवशेष विद्यमान हैं, जो कन्नौज के ऐतिहासिक गौरव की कहानी कहते हैं. यहां राजा अजयपाल का बनवाया हुआ एक प्राचीन मंदिर भी है, जो अब प्रायः जीर्णशीर्ण अवस्था में है.

यद्यपि कन्नौज की ऊबड़-खाबड़ सड़कें और गंदगी देख कर मन खिन्न हो उठता है, तथापि यहां की गलियों से उड़ती सुगंध से मनोमस्तिष्क में प्रसन्नता की एक लहर भी उठती है, क्योंकि यह एक सुगंध नगरी है, जहां से सारे संसार में इत्र आदि सुगंधित पदार्थ पहुंचते हैं. कानपुर से सुबह कन्नौज जा कर शाम को वापस लौटा जा सकता है.

कानपुर

कहां ठहरें?

होटल

मेघदूत, माल रोड. [उ.]
लैंडमार्क, नवीन मार्केट. [उ.]
गौरव, फूलबाग. [उ.]
कंचन होटल, बादशाही नाका. [म.]
ब्लिस होटल, गुमटी नं. 5.[म.]
होटल सारिका, काहू कोठी. [म.]
होटल मीरा इन,माल रोड [म.]
होटल वैभव, स्टेशन रोड, मूलगंज. [म.]
अतिथि होटल, फूलबाग. [म.]
कानपुर होटल, बिरहाना रोड. [स.]
होटल यात्रिक,रेल बाजार.[स.]

धर्मशालाएं

बेनी माधव धर्मशाला, मनीराम बगिया.
सेंट्रल धर्मशाला, सेंट्रल स्टेशन.
आर्यनगर धर्मशाला, आर्यनगर.

वाराणसी क्षेत्र

वाराणसी

पूर्वी उत्तर प्रदेश में ही नहीं, संपूर्ण भारत में वाराणसी को प्राचीन काल से ही शिक्षा, संस्कृति, इतिहास, धर्म और कला का महत्त्वपूर्ण केंद्र माना जाता रहा है. इसीलिए इस नगरी ने देश के जनजीवन को, विशेषतः हिंदू जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया है. प्रायः प्रतिवर्ष यहां लाखों लोग सैर करने आते हैं, लेकिन उन का यह सैरसपाटा धार्मिक दृष्टिकोण से अधिक होता है, विशुद्ध पर्यटन का कम, क्योंकि पर्यटन की दृष्टि से छुट्टियां मनाने के लिए यहां कुछ भी नहीं है.



यह एक आम धारणा है कि वाराणसी में प्राण त्यागने से मोक्ष मिलता है. संभवतः इसी धारणा ने अच्छीभली नगरी के रमणीय सौंदर्य को उजाड़ने का काम किया है. इस तथाकथित मोक्ष को पाने के लिए हर समय यहां लोगों का 'जमघट' रहा है, जिस से नगर में धर्मांधता बढ़ी, गंगा का पवित्र जल अपवित्र व प्रदूषित हुआ. नगर पर अधिकार की भावना से किए गए विभिन्न आक्रमणों में नगर की तमाम कलात्मक और महत्त्वपूर्ण इमारतों को क्षति पहुंची. उन के प्रतीक नष्ट हुए और उन का सारा सौंदर्य जाता रहा.

आज भी यहां कदमकदम पर धर्म के धंधेबाज अपना जाल फैलाए रहते हैं. मंदिरों में पुजारी और घाटों पर पंडों से पीछा छुड़ाना लगभग मुशकिल हो जाता है. वाराणसी पहुंचने के पहले से ही यात्रियों को किसी न किसी प्रकार फुसला कर, लुभावनी बातों से अपने जाल में फसाने की वे चेष्टा करने लगते हैं. पुण्य और मोक्ष के लालच में बहुत से यात्री वाराणसी पहुंचने से पहले ही मूंड़ लिए जाते हैं. ऐसे लोगों से बच कर रहने में ही अक्लमंदी है.

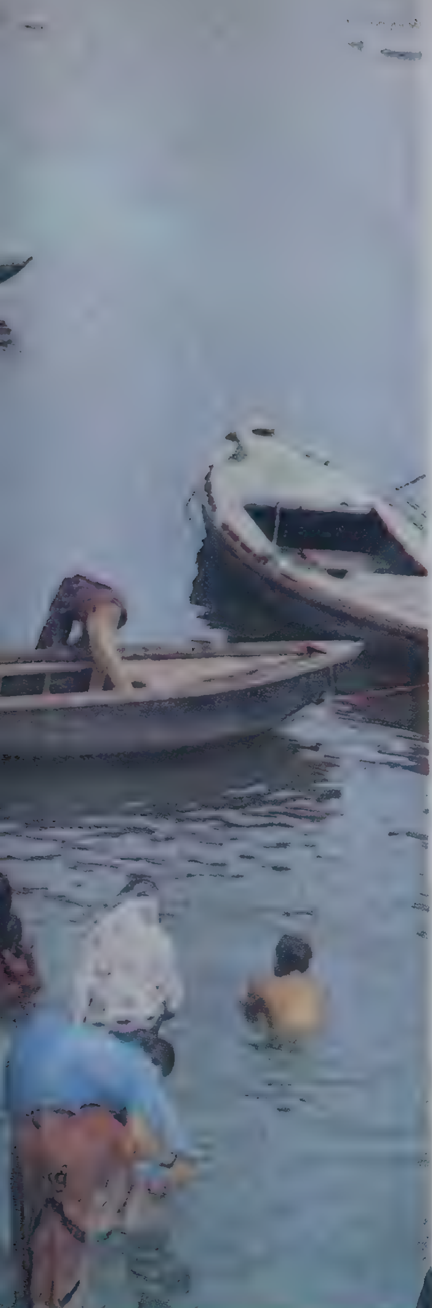
वाराणसी : तथाकथित मोक्ष पाने के लिए यहां हर वक्त लोगों का जमघट लगा रहता है. ▲

कब जाएं?

वाराणसी में पर्यटन के लिए उपयुक्त समय अक्तूबर से अप्रैल तक रहता है. दिसंबर व जनवरी में यहां पर्यटन पर आते समय ऊनी वस्त्र साथ लाएं. यहां गरमी का मौसम पर्यटन के लिए उपयुक्त नहीं है.

कैसे जाएं

वायु मार्ग : वाराणसी का



हवाई अड्डा वाराणसी छावनी में बाबतपुर के नाम से जाना जाता है, जो नगर से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर है. यहां के लिए दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, खजुराहो, पटना, लखनऊ, बंबई, भुवनेश्वर, कलकत्ता आदि नगरों से इंडियन एअरलाइंस की नियमित उड़ानें उपलब्ध हैं. काठमांडू और वाराणसी के बीच भी इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें संचालित होती हैं.

बाबतपुर हवाई अड्डे से वाराणसी नगर तक सिटी कोच और टैक्सियों की सुविधा है.

रेल मार्ग : वाराणसी उत्तर तथा उत्तरपूर्वी रेलवे नेटवर्क का विशिष्ट केंद्र है. अतः यह रेलमार्ग द्वारा देश के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से सीधे जुड़ा है.

सड़क मार्ग : वाराणसी सड़क मार्ग द्वारा देश के प्रायः सभी नगरों से जुड़ा हुआ है, क्योंकि यहां राष्ट्रीय मार्ग 2,7 और 29 का संगम होता है. आसपास के सभी नगरों से यहां

वाराणसी : प्रमुख उड़ानें

कहां से	*दिन*	*उड़ान संख्या*	*प्रस्थान*	*किराया (साधारण)*
आगरा	दैनिक	आईसी 407	10.35	1,427/-
	2,4,6	आईसी 499	15.10	
दिल्ली	दैनिक	आईसी 407	09.25	1,789/-
	2,4,6	आईसी 499	14.00	
	1,3,5,7	आईसी 497	10.40	
खजुराहो	दैनिक	आईसी 407	11.50	1,007/-
	2,4,6	आईसी 499	16.25	
काठमांडू	दैनिक	आईसी 251	15.05	1,411/- (नेपाली रुपया)
बंबई	1,2,4,6	आईसी 695	11.30	3,497/-

वाराणसी

कहा ठहरें?

होटल

ताज गंगेज, नदेसर पैलेस ग्राउंड्स छावनी, फोन: 42485, 42495. [उ.]

क्लार्क्स वाराणसी, द माल, छावनी, फोन : 42401. [उ.]

वाराणसी अशोक, द माल, छावनी, फोन : 42551. [उ.]

डायमंड, भेलूपुर, फोन : 56561. [म.]

पल्लवी इंटरनेशनल, हथवा मार्केट, चेतगंज, फोन : 54894, 56939. [म.]

डी पेरिस, द माल, छावनी, फोन : 43582. [उ.]

हिंदुस्तान इंटरनेशनल, मलदहिया, फोन : 57080. [म.]

होटल बंबई इंटरनेशनल, सोनारपुरा, फोन : 310631. [म.]

होटल बारहदरी, मैदागिन, फोन : 52206. [स.]

गौतम होटल, राम कटोरा, फोन : 44015. [स.]

होटल अमर, निकट रेलवे स्टेशन, फोन : 64044. [स.]

होटल मालती, निकट रेलवे स्टेशन, फोन : 56844. [स.]

गार्डन व्यू होटल, विद्यापीठ रोड, फोन : 63026. [स.]

होटल इंडिया, 59 पटेल नगर, फोन : 42161. [स.]

सरकारी आवास

पर्यटक बंगला, परेड कोठी, छावनी रेलवे स्टेशन के सामने, फोन : 43413. [स.]

रेलवे विश्राम कक्ष, छावनी रेलवे स्टेशन, पहली मंजिल. [म]

धर्मशालाएं

रेवाबाई धर्मशाला.

जैन धर्मशाला, मैदागिन.

जयपुरिया अतिथि भवन, गोदौलिया.

सुंदरी धर्मशाला.

वाराणसी : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
पुरी	नीलांचल एक्सप्रेस	06.35
दिल्ली	सरयूयमुना एक्सप्रेस	21.05
	काशीविश्वनाथ एक्सप्रेस	13.30
	ए.सी. एक्सप्रेस	16.30
अहमदाबाद	साबरमती एक्सप्रेस	20.15
बंबई	दादर एक्सप्रेस	06.40
	महानगरी एक्सप्रेस	23.55
	बंबईवाराणसी रत्नागिरि एक्सप्रेस	05.05
मद्रास	मद्रासवाराणसी एक्सप्रेस (1,6)	17.30
कलकत्ता	हिमगिरि एक्सप्रेस (2,5,6)	23.00
जम्मू	सियालदह एक्सप्रेस	18.30

के लिए बसों की समुचित व्यवस्था है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–565 किलोमीटर
लखनऊ–286 किलोमीटर
पटना–246 किलोमीटर
भोपाल–791 किलोमीटर
कलकत्ता–681 किलोमीटर
दिल्ली–710 किलोमीटर
खजुराहो–406 किलोमीटर
इलाहाबाद–122 किलोमीटर

क्या देखें

विश्वनाथ मंदिर : हिंदू समाज में इस की महत्ता का मूल कारण यह है कि इसी मंदिर में तथाकथित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक प्रतिष्ठित है. प्रथम दृष्टि में यह मंदिर बेहद निराश करता है. इस के लिए संकरी और गंदी गलियों से हो कर जाना पड़ता है. मंदिर न तो कलात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट है और न ही विशालता की दृष्टि से. मंदिर के भीतर स्वच्छता का प्रायः अभाव दिखाई देता है. एक छोटे से कमरे में तथाकथित शिव (ज्योति) लिंग पर रुपए चढ़ाइए और अपना रास्ता नापिए, जिस का हिसाबकिताब रखने के लिए 'सरकारी' व्यवस्था है.

बताया जाता है कि विश्वनाथ का प्राचीन मंदिर सदियों पूर्व राजा शिवोदास ने बनवाया था, जिसे मुगल सम्राट औरंगजेब ने तुड़वा कर ज्ञानवापी मसजिद बनवाई थी. यह मसजिद आज भी मौजूद है. मसजिद की बनावट से स्पष्ट है कि मंदिर को ही मसजिद का रूप दिया गया था. विश्वनाथ का वर्तमान मंदिर इसी मसजिद से सटा हुआ



विश्वनाथ मंदिर : यह मंदिर पास में बनी मसजिद के कारण आजकल विवाद का विषय बना हुआ है.



वाराणसी के निकट स्थित सारनाथ मंदिर : बौद्धों का प्रमुख तीर्थस्थल. ▲

है, जिसे 1776 में रानी अहिल्याबाई ने बनवाया था. बाद में महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के गुंबदों पर 22 मन सोने का पत्तर चढ़वा दिया. शायद इसी कारण यह स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है.

घाट : वाराणसी में गंगा के किनारे लगभग 4 मील के दायरे में घाटों की प्रातःकालीन छटा दर्शनीय है. प्रातः यहां के घाटों पर श्रद्धालुओं का अपार जनसमूह घाटों के आसपास की लगभग 80 तंग गलियों से निकल कर स्नान के लिए पहुंचता है. कुछ घाटों पर स्नान का 'कर' भी देना पड़ता है. यहां एक ओर तो मल्लाह पर्यटकों को नौका में बैठा कर घाटों की सैर के लिए आकर्षित करते हैं तो दूसरी ओर पंडे भी उन पर बाज की तरह झपटते हैं. पंडों से बच कर रहना श्रेयस्कर है. मल्लाहों से किराया आदि पहले ही तय कर लें. तथा यह भी तय कर लें कि उस में क्याक्या शामिल है. यदि पूरी नाव का किराया तय करें तो यह भी अच्छी तरह समझ लें कि उस में अधिक से अधिक कितने लोग जा सकते हैं. बच्चों के किराए के संबंध में भी पहले से तय कर लें क्योंकि सामान्यतः बच्चों का आधा किराया लगता है. परंतु नौका विहार से लौटने पर मल्लाह पूरा किराया वसूल करते हैं. बाद में ये लोग काफी हुज्जत करते हैं.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय : पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय एशिया के बड़े आवासीय विश्वविद्यालयों में गिना जाता है. यह लगभग 2,000 एकड़ में फैला है. इस विश्वविद्यालय में भी एक विश्वनाथ मंदिर है जिसे भारत के प्रमुख उद्योगपति बिड़ला ने बनवाया था.

भारत माता मंदिर : भारत माता को समर्पित इस आधुनिक मंदिर में भारत का आकर्षक मानचित्र बना है. इस मानचित्र की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह संगमरमर से नक्काशी कर के बनाया गया है. काशी विद्यापीठ के प्रांगण में स्थित यह मंदिर रेलवे स्टेशन के बिलकुल पास है.

तुलसीदास का जन्म

स्थान : अस्सी घाट के पास ही तुलसी घाट है, जहां तुलसीदास का जन्म स्थान है. यहां पर तुलसीदास की कुछ वस्तुएं सुरक्षित रखी हुई हैं.

भारत कला भवन : प्रसिद्ध कलाविद रामकृष्ण दास का कला संग्रह अब 'भारत कला भवन' नाम से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में है. यहां पुरातत्त्व संबंधी बहुमूल्य सामग्री संगृहीत है.

क्या खरीदें?

वाराणसी की बनारसी साड़ियां विश्वप्रसिद्ध हैं, जिन्हें खरीदा जा सकता है. इसी प्रकार यहां से लकड़ी के खिलौने, कांसेपीतल के बरतन, सोनेचांदी के बारीक काम वाले आभूषण आदि भी खरीदे जा सकते हैं. वांछित वस्तुएं सरकारी इंपोरियमों से ही खरीदें. बाजारों, घाटों आदि पर बनारसी साड़ियों के तमाम दलाल घूमते रहते हैं, उन के चक्कर में न पड़ें, अन्यथा दोगुने, तीनगुने दाम देने पड़ सकते हैं.

सारनाथ

सारनाथ वाराणसी का एक महत्त्वपूर्ण उपपर्यटन स्थल है. इसलिए सारनाथ की सैर का अलग से कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता नहीं है. वाराणसी पर्यटन के साथ ही सारनाथ के पर्यटन का कार्यक्रम बनाया जा सकता है, क्योंकि वाराणसी में ठहर कर कुछ घंटों में सारनाथ की सैर की जा सकती है.

वाराणसी से सारनाथ के लिए यातायात की अच्छी सुविधा है. दोनों स्थानों के मध्य 10 किलोमीटर की दूरी है, जिसे तय करने में अधिक समय भी नहीं लगता. बसें, टैंपो आदि वाराणसी बस अड्डे तथा रेलवे स्टेशन के पास से मिल जाते हैं. यदि ट्रेन से जाना चाहें तो सारनाथ स्टेशन पर उतरना चाहिए.

सारनाथ एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. बौद्ध लोग इसे परम पवित्र स्थान मानते हैं. कहा जाता है कि बोधगया में बोध (ज्ञान) प्राप्त कर के गौतम बुद्ध ने अपना पहला धार्मिक उपदेश सारनाथ में ही दे कर अपना धर्म चक्र प्रवर्तन किया. बौद्ध ग्रंथों में इस स्थान का नाम ऋषिपत्तन और मृगदान आता है. यहां सारे विश्व से बौद्ध तीर्थयात्री दर्शनार्थ आते हैं.

क्या देखें?

अशोक स्तंभ : यह ऐतिहासिक स्तंभ किसी समय सम्राट अशोक ने बनवाया था. लगभग 20 मीटर ऊंचे इस स्तंभ का ऊपरी भाग अलग कर दिया गया है, जिसे स्थानीय पुरातात्त्विक संग्रहालय में पर्यटकों के अवलोकनार्थ सुरक्षित रखा गया है. इस स्तंभ में 4 सिंहों की एक संयुक्त प्रतिमा है. चारों सिंहों की पीठें परस्पर जुड़ी हुई हैं. ये सिंह भारत के राजचिह्न माने गए हैं. इन सिंहों के नीचे मध्य भाग में एक चक्र बना है. इस चक्र को भारत के राष्ट्रीय झंडे के मध्य स्थान दिया गया है.

स्तूप : सारनाथ में अनेक बौद्ध स्तूप हैं, जिन का निर्माण कुषाण तथा गुप्त काल में हुआ माना जाता है. इन स्तूपों का प्रमुख आकर्षण है, इन की स्थापत्य कला. कई स्तूपों के तो अब खंडहर ही बचे हैं.

संग्रहालय : इस संग्रहालय में अनेक प्राचीन एवं पुरातात्त्विक महत्त्व की वस्तुओं का अच्छा संग्रह है. इस में संगृहीत अनेक चीजें सारनाथ में ही पाई गई हैं. यह संग्रहालय शुक्रवार को बंद रहता है. अन्य दिनों में यह सुबह 10 से शाम 5 बजे तक खुला रहता है.

सारनाथ मंदिर में पर्यटकों की भीड़. ▼

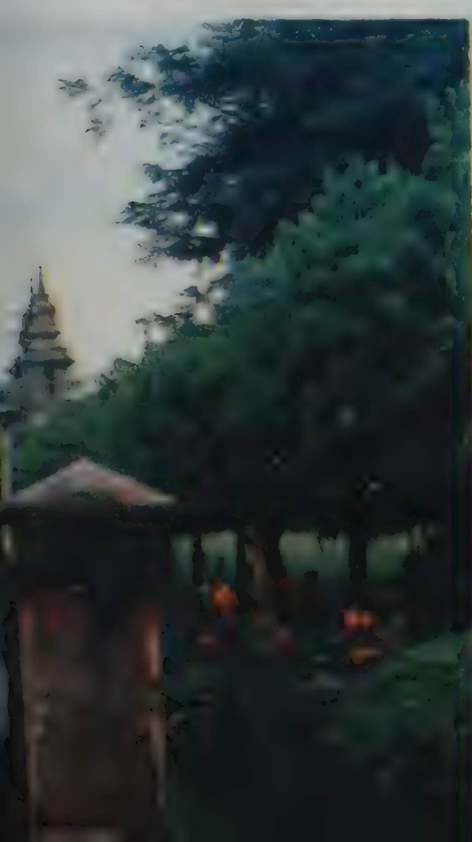


जबलपुर

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से 329 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जबलपुर एक अनुपम पर्यटन स्थल है. यहां का प्राकृतिक सौंदर्य तो बरबस ही मन मोह लेता है. इस शहर के अनेक स्मारक भी यहां की सुंदरता को दोगुना कर देते हैं. ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस स्थान का महत्त्व कम नहीं है. 12वीं शताब्दी तक गोंड राजाओं की राजधानी रहने के पश्चात कल्चूरी राजाओं ने इसे अपने अधिकार में ले लिया, तदुपरांत ब्रिटिश शासकों ने 1817 में इसे अपने आधिपत्य में ले लिया.

जबलपुर का पुराना नाम जाबालिपुर है. जाबालि ऋषि के नाम पर इस शहर को जबलपुर कहा जाने लगा.

जबलपुर पर्यटन स्थल की रमणीयता का आनंद आप वर्ष भर ले सकते हैं. यहां की जलवायु के अनुसार पर्यटकों के लिए गरमियों में सूती वस्त्र और सर्दियों में हलके ऊनी वस्त्र उपयुक्त रहते हैं.



कैसे जाएं?

वायु मार्ग : जबलपुर के लिए दिल्ली, भोपाल, रायपुर, ग्वालियर, इंदौर एवं बंबई से इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : बंबई, नई दिल्ली, इलाहाबाद एवं कलकत्ता की मुख्य रेल लाइनों से जबलपुर जुड़ा हुआ है.

सड़क मार्ग : इलाहाबाद, खजुराहो, वाराणसी, भोपाल, नागपुर से जबलपुर के लिए बसें उपलब्ध हैं. यदि आप बस से यात्रा के लिए इच्छुक हैं तो प्राइवेट सुविधाजनक बसों के विषय में पहले से जानकारी प्राप्त कर लेना उत्तम रहता है.

जबलपुर : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
वाराणसी	वाराणसीतिरुपति एक्स.(2.5)	06.55
	वाराणसीकोचीन एक्स.(6)	06.55
	वाराणसीमद्रास एक्स.(1,3)	17.45
पटना	पटनामद्रास एक्स.(6)	15.35
गोंडा	सतपुरा एक्स.	14.00
इंदौर	नर्मदा एक्स.	15.30
लखनऊ	चित्रकूट एक्स.	16.30
बीना	विंध्याचल एक्स.	22.00
ह.निजामुद्दीन	महाकौशल एक्स.	16.20

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–602 किलोमीटर
बरेली–817 किलोमीटर
भोपाल–329 किलोमीटर
भुवनेश्वर–1,097 किलोमीटर
बंबई–1,128 किलोमीटर
दिल्ली–802 किलोमीटर
कलकत्ता–1,127 किलोमीटर

क्या देखें?

मदन महल : जबलपुर शहर की रमणीयता और उस के आकर्षण को 'मदन महल' से देखा जा सकता है. इस स्थान से केवल जबलपुर की ही सुंदरता नहीं बल्कि इस महल की वास्तुकला एवं शिल्पकला दोनों ही देखते बनती हैं. 2 विशालकाय चट्टानों पर स्थित इस 2 मंजिला इमारत का निर्माण 1116 में गोंड शासक राजा मदन शाह ने करवाया था. इस स्थान की सुंदरता का वर्णन सुन कर पर्यटक इसे देखने खिंचे चले आते हैं.

रानी दुर्गावती स्मारक एवं संग्रहालय : रानी दुर्गावती की याद में यह स्मारक बनाया गया है. लेकिन स्मारक होने के साथसाथ यह संग्रहालय भी है. इस संग्रहालय में मूर्तियां, प्रागैतिहासिक अवशेष एवं शिलालेखों का अनुपम संग्रह है. इन से पर्यटक इस काल की जानकारी बिना कठिनाई के प्राप्त कर सकते हैं.

भेड़ाघाट : जबलपुर से मात्र 23 किलोमीटर की दूरी

पर स्थित भेड़ाघाट को देखे बिना आप की जबलपुर की यात्रा अधूरी ही रहेगी. भेड़ाघाट संगमरमर की चट्टानों के कारण बेहद सुंदर दिखाई देता है. नर्मदा नदी के किनारे यह प्राकृतिक छटा के कारण इतना रमणीय है कि इस की सुंदरता देखतेदेखते मन यहीं का हो कर रह जाता है. नर्मदा के थिरकते जल पर नौकायन करना बेहद आनंददायक प्रतीत होता है. नीली व गुलाबी संगमरमरी चट्टानों के बीच से उछलती, बलखाती और उमड़ती नर्मदा नदी पर्यटकों को मुग्ध कर लेती है.

केवल संगमरमर की चट्टानों एवं नर्मदा नदी के कारण ही इस स्थान का आकर्षण नहीं है, बल्कि 64 योगिनियों की मूर्तियों के कारण भी यह स्थान अपनी रमणीयता में पीछे नहीं है.

धुआंधार प्रपात : भेड़ाघाट के अतिरिक्त धुआंधार जल प्रपात भी एक खूबसूरत स्थान है. धुआंधार में नर्मदा नदी का जल काफी ऊंचाई से गिर कर चारों तरफ धुआं जैसा बिखर जाता है इसलिए इसे धुआंधार कहते हैं.

छिंदवाड़ा : जबलपुर को ठहरने का केंद्र बना कर नजदीकी हिल स्टेशन छिंदवाड़ा देखा जा सकता है. छिंदवाड़ा जबलपुर से कोई 150 किलोमीटर दूर है. यहां तामिया पातालकोट, सल्फर झरना रमणीय स्थल हैं व पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भी. छिंदवाड़ा की सुरम्य हरियाली व ऊंचेऊंचे पहाडों के बीच अनुपम प्राकृतिक दृश्यों का आनंद मिलता है. जबलपुर से सुबह जा कर रात को वापस आने की व्यवस्था है. परिवहन





धुआंधार प्रपात : नर्मदा की चट्टानों के बीच से निकला झरना दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर लेता है

जबलपुर

कहां ठहरें?

होटल

जैक्सन होटल, सिविल लाइन, फोन : 21320. [म.]
होटल एंबेसडर, रुसल क्रासिंग, फोन : 21771, 21772. [म.]
अशोक होटल, राइट टाउन, फोन : 22167. [उ.]
होटल आनंद, ज्योति सिनेमा के सामने, फोन : 23118, 23136. [स.]
होटल समदड़िया [म.]
होटल रिषीराज रीजेंसी [उ.]
होटल कनिष्क [म.]

धर्मशालाएं

राजा गोकुलदास की धर्मशाला, स्टेशन से 2 फर्लांग पर.
भूरामल की धर्मशाला, गंजीपुरा (शहर में).
मारवाड़ी धर्मशाला (बाई का बाग).
दिगंबर जैन धर्मशाला, जैन मंदिर के पास.
राजाराम बारेलाल अग्रवाल की धर्मशाला, कोतवाली बाजार.
खुत्तन लाल अग्रवाल की धर्मशाला, तमर हाई बाजार.

के साधनों में पर्यटन विकास निगम की टैक्सी व प्राइवेट कारें किराए पर मिलती हैं.

कान्हा : कान्हा के वन सौंदर्य व स्वतंत्र विचरते शेर देखना भी अपनेआप में शानदार अनुभव है. जबलपुर में ठहर कर कान्हा किसली वन का भ्रमण किया जा सकता है.

जबलपुर से प्राइवेट टैक्सी, पर्यटन विकास निगम की कारें व वीडियो कोच कान्हा जाने के लिए उपलब्ध हैं. कान्हा वनों तक जबलपुर से सड़क द्वारा ही सर्वोत्तम तरीके से यात्रा की जा सकती है. कान्हा किसली जबलपुर से 200 किलोमीटर पर स्थित है.

खजुराहो

यों तो खजुराहो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले का एक प्राचीन एवं ऐतिहासिक स्थान है, मगर यह अपने कलात्मक मंदिरों में उत्कीर्ण मूर्तियों के कारण ही विश्वविख्यात है. यहां विश्व के कोनेकोने से पर्यटक आते हैं.

लगभग 1,000 वर्ष पूर्व चंदेल राजाओं के शासन काल में निर्मित खजुराहो के इन मंदिरों के संदर्भ में बताया जाता है कि इन की संख्या 80 थी, लेकिन आज इन में से केवल 25 मंदिर ही दिखाई देते हैं. इन में से आरंभिक मंदिरों में ग्रेनाइट और बलुए पत्थर का मिश्रित प्रयोग हुआ है. इस के विपरीत बाद में केवल उच्च कोटि के बलुए पत्थर से इन मंदिरों को बनाया गया था.

खजुराहो के इन मंदिरों में परंपरागत धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि ले कर पर्यटन करने वालों के हाथ कुछ नहीं लगेगा. यहां पर्यटन का असली आनंद खुले मनोमस्तिष्क द्वारा ही लिया जा सकता है. बेहतर होगा कि खजुराहो भ्रमण के दौरान बच्चों को साथ न ले जाएं. नहीं तो आप यहां पत्थरों पर उकेरी कामकला का आनंद नहीं ले पाएंगे.

खजुराहो के भव्य मंदिर शिल्पकला की दृष्टि से बेजोड़ हैं. ▶

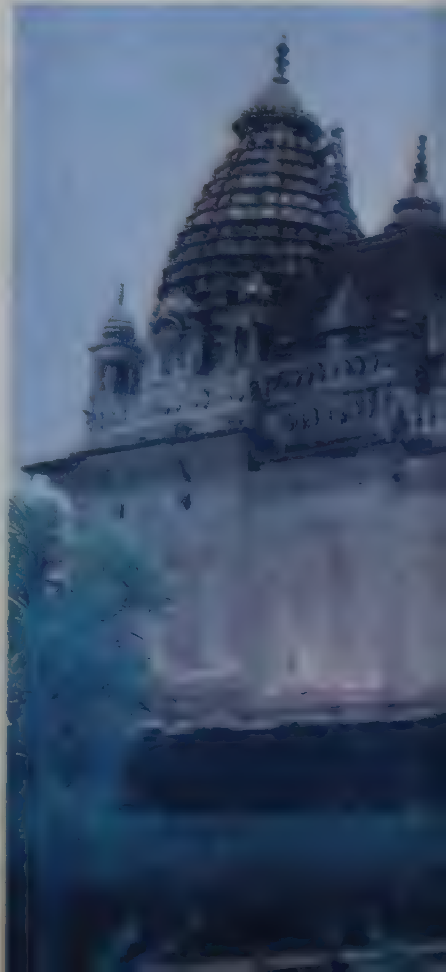
कब जाएं?

खजुराहो में सैरसपाटे के लिए सामान्यतः अक्तूबर से मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है. वैसे अप्रैल और मई में भी यहां घूमा जा सकता है, मगर इन महीनों में यहां गरमी अधिक पड़ने लगती है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : खजुराहो का अपना हवाई अड्डा है, जहां के लिए दिल्ली, आगरा और वाराणसी से नियमित उड़ानें उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : खजुराहो का कोई निजी रेलवे स्टेशन नहीं है. यहां का निकटतम रेलवे स्टेशन महोबा 63 किलोमीटर दूर है. लेकिन दिल्ली और मद्रास की ओर से आने वाले पर्यटकों के लिए झांसी और कलकत्ता, वाराणसी तथा बंबई की ओर से आने वाले पर्यटकों के लिए सतना में उतरना ठीक रहेगा. झांसी और खजुराहो तथा



सतना और खजुराहो के बीच क्रमशः 172 किलोमीटर एवं 117 किलोमीटर की दूरी टैक्सी या बस द्वारा तय की जा सकती है.

सड़क मार्ग : सतना, झांसी, हरपालपुर, महोबा, वाराणसी, ग्वालियर, आगरा, भोपाल, जबलपुर आदि स्थानों से खजुराहो सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है. इन स्थानों से खजुराहो के लिए नियमित बसें उपलब्ध हैं.

क्या देखें?

पर्यटन की दृष्टि से खजुराहो के मंदिरों को तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–414 किलोमीटर
ग्वालियर–293 किलोमीटर
वाराणसी–365 किलोमीटर
दिल्ली–616 किलोमीटर
बंबई–1,267 किलोमीटर
भोपाल–372 किलोमीटर
इलाहाबाद–243 किलोमीटर

पश्चिमी मंदिर समूह : खजुराहो पर्यटन के लिए सुबह और शाम के समय निकलें, क्योंकि सुबह और शाम के समय इन मंदिरों पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें मंदिरों के सौंदर्य को द्विगुणित कर देती हैं. सैर की शुरुआत चौंसठ योगिनी मंदिर से करें.

चौंसठ योगिनी मंदिर : यह खजुराहो के मंदिरों में सब से पुराना मंदिर है. शिवसागर झील के दक्षिणीपश्चिमी किनारे पर बने इस मंदिर में केवल ग्रेनाइट पत्थर का प्रयोग किया गया है. इस में काली देवी की प्रतिमा थी जो अब प्रायः खंडित हो चुकी है.

कंदारिया महादेव : चौंसठ योगिनी मंदिर के दक्षिण में स्थित यह शिव मंदिर खजुराहो के श्रेष्ठतम मंदिरों में गिना जाता है. लगभग 31 मीटर ऊंचे इस मंदिर की प्रायः सभी मूर्तियां आकर्षक हैं. मंदिर की दीवारों, छतों, स्तंभों आदि पर विभिन्न देवीदेवताओं आदि की 872 मूर्तियां उत्कीर्ण हैं.

चित्रगुप्त मंदिर : पूरब की ओर मुंह किए यह विशाल मंदिर सूर्य को समर्पित है. इस में सूर्य देव को घोड़ों के रथ पर आरूढ़ दिखाया गया है. इस मंदिर में विष्णु की 11 सिर वाली एक विशाल मूर्ति भी है.

विश्वनाथ मंदिर : इस मंदिर में मुख्य रूप से ब्रह्मा की मूर्ति प्रतिष्ठित है. इस कलात्मक मूर्ति की सब से बड़ी विशेषता यह है कि मूर्ति बड़ी ही आकर्षक है. मूर्ति के उत्तर में सिंहों तथा दक्षिण में हाथियों की मूर्तियां हैं. मंदिर में नंदी की भी एक भव्य प्रतिमा है.

लक्ष्मण मंदिर : इस मंदिर में पत्थरों को तराशतराश कर ब्रह्मा, विष्णु और शिव की

खजुराहो

कहां ठहरें?

होटल

होटल चंदेला, फोन : 2054, 2101 से 2110. [उ.]
खजुराहो अशोक, फोन : 2024. [उ.]
होटल राहिल, फोन : 2062. [स.]
होटल पायल, फोन : 2076. [स.]
टूरिस्ट विलेज, फोन : 2128. [म.]
टूरिस्ट बंगला, फोन : 2064. [म.]
जास ओबेराय, फोन : 2085 से 2088. [उ.]
होटल झनकार, फोन : 2063. [स.]
होटल टैंपल, फोन : 2049. [स.]
जैन लाज, फोन : 2052. [स.]



सुंदरसुंदर प्रतिमाएं गढ़ी गई हैं. उन के साथ लक्ष्मी की प्रतिमा भी है.

मातंगेश्वर : पश्चिमी मंदिर समूह में बाहर की ओर स्थित इस मंदिर में 8 फुट ऊंचा एक आकर्षक शिवलिंग है. खजुराहो का संभवतः यही एक दर्शनीय मंदिर ऐसा है जहां अब भी पूजा होती है.

पूरबी मंदिर समूह : इस मंदिर समूह में ब्रह्मा, वामन, घंताई, पार्श्वनाथ आदि मंदिर कलात्मक दृष्टि से देखने लायक हैं. इन में पार्श्वनाथ का मंदिर सर्वोत्तम है. यह विशाल मंदिर जैनियों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है. शिल्पकला की दृष्टि से ये सभी मंदिर उत्कृष्ट हैं.

दक्षिणी मंदिर समूह : खजुराहो का दक्षिणी मंदिर समूह नगर से लगभग 5 किलोमीटर दूर है. इस में मुख्यतः दो मंदिर आते हैं, दूलहदेव मंदिर और चतुर्भुज मंदिर. दूलहदेव मंदिर में शिव की, चतुर्भुज मंदिर में विष्णु की भव्य प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं. चतुर्भुज मंदिर में सिंहवाहिनी की भी बेहतरीन मूर्ति है.

खजुराहो के इन सभी मंदिरों में भव्य कलात्मक प्रतिमाओं से भी अधिक दर्शनीय और आकर्षक हैं इन की बाहरी दीवारों आदि पर तराशी गई मिथुन मूर्तियां, जिन के लिए खजुराहो प्रसिद्ध हो चुका है. ये मूर्तियां तात्कालिक शिल्प कला की परिचायक हैं. इन की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इन में पुरुष कुछ उदासीन और नारी अपेक्षाकृत उग्र प्रणय निवेदन करती प्रतीत होती हैं.

मैथुन के अतिरिक्त, इन मूर्तियों में शृंगार, प्रेम और वियोग की विभिन्न स्थितियां अभिव्यक्त की गई हैं, जिन में पर्यटक उलझ कर रह जाते हैं.

कुछ मूर्तियों में समसामयिक सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों का भी यथार्थ चित्रण दिखाई देता है.

पुरातात्त्विक संग्रहालय : पुरातत्त्व में रुचि रखने वाले पर्यटक इस संग्रहालय को भी देखें. इस में मंदिरों के कुछ ध्वंसावशेष संगृहीत हैं. यह संग्रहालय प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक खुलता है.

पचमढ़ी

लगभग 1,067 मीटर की ऊंचाई पर स्थित पचमढ़ी मध्य प्रदेश की खूबसूरत सैरगाह है. सतपुड़ा पर्वतश्रेणियों पर स्थित घने जंगलों से घिरा यह पर्यटन स्थल मध्य प्रदेश का पर्वतीय पर्यटन स्थल है. पचमढ़ी में मंदिर, गुफाएं, झरने सब इस क्षेत्र की रमणीयता की वृद्धि करने में सहायक हैं. इस स्थान के पर्यटन का आनंद अक्तूबर से जून तक लिया जा सकता है.

पचमढ़ी मध्य प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी है. पचमढ़ी की ऊंची पहाड़ी पर मुक्त प्राकृतिक रमणीक दृश्यावलियों के कारण इस को मध्य प्रदेश का स्वर्ग भी कहते हैं. अंगरेज शिकारी कर्नल हांडी ने इस पहाड़ी को खोजा था.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : पचमढ़ी के निकटतर हवाई अड्डे भोपाल एवं नागपुर हैं. यहां के लिए इंडियन एअरलाइंस की दिल्ली, बंबई, इंदौर से नियमित उड़ानें हैं.

रेल मार्ग : लगभग 53 किलोमीटर दूर पिपरिया पचमढ़ी का निकटतम रेलवे स्टेशन है. इलाहाबाद, बंबई, भोपाल, जबलपुर, हावड़ा व नागपुर से यहां के लिए रेल सेवाएं उपलब्ध हैं.

सड़क मार्ग : पचमढ़ी नियमित बस सेवा द्वारा भोपाल, होशंगाबाद, नागपुर, पिपरिया, छिंदवाड़ा एवं जबलपुर शहरों से जुड़ा हुआ है.



पांडव गुफा : यहां से पचमढ़ी की खूबसूरत दृश्यावली देखी जा सकती है.



चौड़ागढ़ के रास्ते पर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते पर्यटक.

प्रमुख नगरों से दूरी

भोपाल–210 किलोमीटर
नागपुर–258 किलोमीटर
पिपरिया–53 किलोमीटर
इलाहाबाद–596 किलोमीटर
इंदौर–356 किलोमीटर
उज्जैन–411 किलोमीटर
जबलपुर–120 किलोमीटर

क्या देखें

पांडव गुफा : पचमढ़ी से मात्र 4 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पांडव गुफा क्षेत्र से पचमढ़ी की खूबसूरती के दृश्य देखे जा सकते हैं. इन्हीं गुफाओं में पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय बिताया था. इन्हीं प्रसिद्ध गुफाओं पर इस स्थान का नाम पचमढ़ी पड़ा.

धूपगढ़ : पचमढ़ी से 10 किलोमीटर दूर धूपगढ़ 1,345 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यह सतपुड़ा पर्वतश्रेणियों की सब से ऊंची चोटी है. इस पर्वतश्रेणी से आसपास की अन्य पहाड़ियां भी बेहद सुंदर लगती हैं.

चौड़ागढ़ : पचमढ़ी से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित चौड़ागढ़ धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण स्थान है. इस के शिखर पर काफी पुराने समय के अनेक त्रिशूल गड़े हुए हैं. लेकिन धार्मिकता के साथसाथ इस स्थान के प्राकृतिक सौंदर्य का कोई जवाब ही नहीं है.

महादेव : पचमढ़ी से 12 किलोमीटर दूर इस मंदिर में प्रवेश के लिए गुफा से हो कर जाना पड़ता है. शिवरात्रि के अवसर पर यहां वार्षिक मेला लगता है. इस दिन यहां थंब लोग आ कर त्रिशूल चढ़ाते हैं.

अप्सरा विहार : यह स्थान पचमढ़ी से 5 किलोमीटर दूर है. जैसा कि नाम से ही विदित है, यह पर्यटन स्थल वास्तव में 'परीलोक' की ही सुंदरता का आभास कराता है. इस स्थान की संपूर्ण रमणीयता यहां बहते एक झरने में समा सी गई है. जब ऊंचाई से वह झरना गिरता है तो यों लगता है, सफेद सीपियों, मोतियों की लड़ियां आकाश से लगातार नीचे गिर रही हों. तैराकी के साथसाथ यह एक सर्वश्रेष्ठ पिकनिक स्थल भी है.

लिटिल फाल, बिग फाल : इस नाम के ये दोनों जलप्रपात पचमढ़ी का महत्त्वपूर्ण आकर्षण हैं. इन में स्नान करने पर काफी ऊपर से गिरते बरफ जैसे पानी से थकान एक दम दूर हो जाती है.

पचमढ़ी

कहां ठहरें?

पंचवटी काटेज एंड हट्स. [म.]
एम.पी. टूरिज्म, फोन : 96. [उ.]
हालिडे होम, निकट बस स्टैंड, फोन : 99. [म.]
पंचवटी हालिडे होम, तहसील के पास. [स.]
सतपुड़ा फारेस्ट लाज,
पी. डब्ल्यू. डी. रेस्ट हाउस, फोन: 97. [स.]
गिरी श्रृंगार भवन [म.]

हांडी खो : अंगरेज कर्नल हांडी, जिस ने पचमढ़ी के महत्त्वपूर्ण स्थलों को खोजा था, के नाम पर हांडी खो एक गहरी खाई है. इस के संबंध में किंवदंती है कि शेषनाग ने यहां अपनी पूंछ फटकारी थी इसलिए यह गहरी काली खाई हो गई.

छोटे महादेव : यहां एक गुफा में शिवलिंग बने हैं. इस गुफा में बारह महीने पानी झरता रहता है.

जटाशंकर : यह एक गुफा है. प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर इस गुफा के संबंध में कहा जाता है कि भस्मासुर के भय से शिवजी अपनी जटाएं छोड़ कर चले गए थे. वैसे प्राकृतिक दृश्यों की बहुतायत जटाशंकर के आसपास है.

राजेंद्र गिरि : पचमढ़ी से 2 किलोमीटर दूर इस पहाड़ी पर पर्यटक मुग्धभाव से बैठे रहते हैं. लगता है सतपुड़ा पहाड़ियों का पूरा सौंदर्य राजेंद्र गिरि में आ कर सिमट गया हो.

काला कुंड : पचमढ़ी से 4 किलोमीटर दूर काला पानी का कुंड है. इस कुंड के शीतल जल से त्वचा के रोग ठीक होते हैं. ऐसा कहा जाता है कि इस कुंड के पानी में गंधक होने के कारण इस प्रकार की धारणा बनी हैं.

नेपाल



नेपाल हिमालय के सुरम्य आंचल में बसा यह देश विश्व पर्यटन का प्रमुख आकर्षण है. नेपाल हिंदू तथा बौद्ध धर्म का मुख्य केंद्र है. भारतीय भी यहां काफी संख्या में रहते हैं. भारत की तरह यहां भी अनेक भाषाओं और जातियों के लोग रहते हैं.

कब जाएं?

नेपाल पर्यटन के लिए अक्तूबर से अप्रैल तक का समय उपयुक्त है. मई से सितंबर तक यहां बरसाती मौसम रहता है अतः इस दौरान नेपाल पर्यटन का कार्यक्रम बनाना उचित नहीं है.

कैसे जाएं?

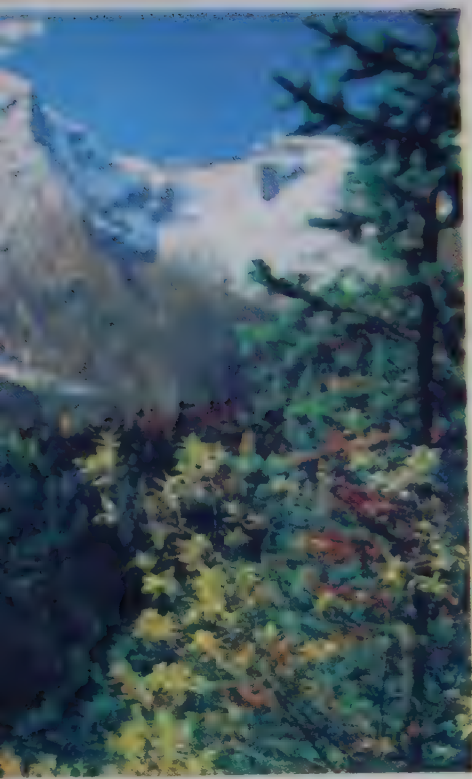
वायु मार्ग : नेपाल कई देशों से सीधी हवाई सेवा द्वारा जुड़ा है. वाराणसी, कलकत्ता तथा दिल्ली से यहां के लिए सीधी हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं.

रेलमार्ग : विभिन्न शहरों से गोरखपुर तक रेल द्वारा पहुंचा जा सकता है, वहां से सुनौली तक बसों की अच्छी सुविधा है. दिल्ली तथा बनारस से यहां के लिए सीधी बस सेवा है.

गोरखपुर से सुनौली तक का सफर 3 घंटे में पूरा हो जाता है. उस से आगे नेपाल की बसें तथा

नेपाल : प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उडान संख्या	प्रस्थान	किराया (साधारण)
कलकत्ता	1,3,5	आईसी 747	11.45	1595/-
दिल्ली	प्रतिदिन	आईसी 813	13.30	2020/-
वाराणसी	प्रतिदिन	आईसी 252	13.15	985/-



हिमालय के अंचल में बसा नेपाल विश्व पर्यटन का प्रमुख केंद्र है.



काठमांडू: नेपाल की खूबसूरत राजधानी.

टैक्सियां उपलब्ध हो जाती हैं.

सड़क मार्ग : भारतीय बस सेवाएं सनौली तक ही आप को पहुंचाएंगी. आगे नेपाल की बसों से यात्रा करनी पड़ती है.

क्या देखें?

पशुपतिनाथ का मंदिर : यह काठमांडू से 5 किलोमीटर दूर उत्तरपूर्व में स्थित है. यह शिव का एक विशालकाय मंदिर है. शिव के अनेकानेक नामों में से पशुपतिनाथ एक है. यह मंदिर बागमती नदी के किनारे स्थित है. इस मंदिर के चारों तरफ इसी के समान अनेक छोटेछोटे मंदिर हैं. इस के चारों तरफ प्राकृतिक रूप से उगी दूब इतनी मुलायम है कि स्पर्श करते ही मन खुश हो जाता है.

पोखरा : यह नेपाल की एक बहुत ही खूबसूरत तथा आकर्षक जगह है. यह काठमांडू से 200 किलोमीटर दूर है. पोखरा एक बहुत ही सुंदर घाटी है. यहां ही साफसुथरी झीलें तथा झरनें पर्यटकों का मन मोह लेते हैं.

गुहेश्वरी मंदिर : यह मंदिर पशुपतिनाथ मंदिर के पास ही बागमती नदी के बाईं ओर स्थित है. यह 1654 में राजा प्रताप माल द्वारा बनाया गया था. यह बहुत ही आकर्षक तथा शानदार मंदिर है. कहा जाता है कि जब यह बनाया गया था तो उस समय इस के दरवाजे तथा खिड़कियां सोने की थीं तथा दीवारें तथा खंभे चांदी के थे. यहां की प्रसिद्ध रथ यात्रा देखते ही बनती है.

भुवनेश्वरी मंदिर : यह एक प्राचीन मंदिर है, जो कि लिच्छवि राजा द्वारा बनाया गया था. मंदिर पूरा लकड़ी का बना हुआ है, जिस की हस्तकला बहुत ही सुंदर है.

गोरखनाथ मंदिर : यह पशुपतिनाथ मंदिर के पश्चिम में स्थित है. यह 1382-1395 के आसपास बनाया गया था. यहां

पर गोरखनाथ की अनेक छोटीबड़ी मूर्तियां हैं.

दक्षिणकाली: यह स्थान शहर से 25 किलोमीटर बाहर दक्षिणपूर्व में स्थित है. यहां पर उस समय के पत्थर तथा पुरानी चीजों को देखा जा सकता है.

नेपाल
कहां ठहरें?

होटल

होटल अन्नपूर्णा, दरबार मार्ग, फोन : 221711.

होटल एवरेस्ट इंटरनेशनल, बनेश्वर, फोन : 220567.

होटल सोअल्टी, तहचल, फोन : 272550.

होटल याक एंड येती, लाल दरबार, फोन : 413999.

होटल माला, लेनचौट, फोन : 222683.

होटल नारायणी, पुलचौक, फोन : 521442.

होटल शंकर, लाजिमपत, फोन : 211973.

होटल ब्ल्यू स्टार, त्रिपुरेश्वर, फोन : 211470.

होटल क्रिस्टल, न्यू रोड, फोन : 223611.

होटल एंबेसडर, लाजिमपत, फोन : 414432.

होटल ब्लू डायमंड, ज्याता, फोन : 226392.

होटल गौतम, ज्याता, फोन : 215016.

होटल हिमालय न्यू क्रांतिपथ, फोन : 214890.

होटल के.टी., इंद्र चौक, फोन : 214417.

होटल वैली व्यू, टेकू, फोन : 213681.

होटल कोसी, न्यू रोड, फोन : 220440.

होटल काठमांडू, महाराजगंज, फोन : 41786.



यहां पर उस समय काली को दिए गए बलि के चिह्न तथा उस से संबंधित कई तरह की चीजें अभी तक सुरक्षित रखी गई हैं.

चानग नारायण : यह काठमांडू से 10 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है. यह पहाड़ की चोटी पर बना हुआ है.

भक्तपुर दरबार: यह काठमांडू में 16 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित है. यह बहुत ही पुराना दरबार है. यहां पर एक प्राचीन सनहरा दरवाजा है जो कि भक्तपुर दरबार की शोभा को बढ़ा रहा है. इस में 55 खिड़कियां हैं.

नागरोट: यह समुद्रतट से 2,175 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. यहां से हिमालय की चोटियां बड़ी स्पष्ट तथा सुंदर दिखाई देती हैं.

चारों तरफ से छोटेछोटे मंदिरों से घिरा हुआ शिव का विशाल मंदिर-पशुपतिनाथ मंदिर.

क्या खरीदें?

नेपाल से लौटते समय पर्यटक प्रायः विदेशी वस्तुएं ही खरीदना चाहते हैं क्योंकि वे काफी सस्ती होती हैं. लेकिन अधिकतर व्यापारी भारतीय वस्तुओं पर ही अन्य देशों की मुहरें लगा कर बेच देते हैं. वैसे नेपाल में बनी प्रमुख चीजों में लकड़ी पर की गई नक्काशी की कलाकृतियां और ऊनी शालें आदि काफी प्रसिद्ध हैं.

गया क्षेत्र

गया

गया पटना से लगभग 100 किलोमीटर दूर दक्षिण में फल्गु नदी के किनारे स्थित है

5 पहाड़ियों वाला यह शहर पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है. अपनी धार्मिक पृष्ठभूमि के कारण यह हिंदुओं



का प्रिय तीर्थ स्थल है. यहां के नष्ट होते टीलों में भी मधुर आकर्षण है.

चारों ओर छोटीछोटी पहाड़ियां, छोटेबड़े मंदिर, जिन की वास्तुकला बेजोड़ है एवं चारों ओर फैला प्राकृतिक सौंदर्य गया को आकर्षक रूप प्रदान करता है.

कब जाएं?

यहां घूमने के लिए सर्वाधिक उचित समय अक्तूबर से अप्रैल तक का है. चूंकि अप्रैल मास के बाद ग्रीष्म ऋतु के प्रचंड प्रकोप के कारण इस स्थल के पर्यटन की पर्यटकों में कोई मधुर अनुभूति शेष रह नहीं जाती.

कैसे जाएं?

कभी इस स्थान पर जाना अवश्य कठिन था लेकिन अब ऐसी कोई असुविधा नहीं है. रेल मार्ग एवं सड़क मार्ग.दोनों ही साधनों द्वारा आप सुगमतापूर्वक यहां पहुंच सकते हैं.

रेल मार्ग : गया शहर रेल मार्ग द्वारा कई मुख्य शहरों से जुड़ा हुआ है.

सड़क मार्ग : यह देश के अनेक मुख्य शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है. पटना शहर से यहां तक पहुंचने के लिए सरकारी एवं निजी बसें उपलब्ध रहती हैं. पटना के अतिरिक्त बोधगया, मुगलसराय आदि शहरों से यहां के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–811 किलोमीटर
दिल्ली–1,011 किलोमीटर
बंगलौर–1,997 किलोमीटर
भोपाल–1,025 किलोमीटर
बंबई–1,824 किलोमीटर
कलकत्ता–495 किलोमीटर
चंडीगढ़–1,260 किलोमीटर

गया के दर्शनीय स्थानों के परिभ्रमण के लिए वहां पर बसें, टैक्सियां एवं रिकशे उपलब्ध रहते हैं.

गया

कहां ठहरें?

होटल
सम्राट होटल, स्वराजपुरी रोड, फोन : 776.
होटल बुद्ध, स्टेशन रोड.
श्री कैलाश रेस्ट हाउस, फोन : 383.
होटल सिद्धार्थ इंटरनेशनल, स्टेशन रोड.
होटल अजातशत्रु, स्टेशन रोड, फोन : 1514.

धर्मशालाएं :
सेठ शिवप्रसाद झुंझनू वाले की धर्मशाला, स्टेशन पर.
सेठ शिवप्रसाद झुंझनू वाले की धर्मशाला, चांद चौरे के पास.
गुलराम रामविलास की धर्मशाला, चौक.

गया : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी का नाम*	*प्रस्थान*
नई दिल्ली	राजधानी एक्सप्रेस (1,2,3,5,6)	17.15
दिल्ली	कालकाहावड़ा मेल	06.30
नई दिल्ली	नई दिल्लीहावड़ा पूर्वा एक्स प्रेस (2,4,6)	16.30
हावड़ा	राजधानी एक्सप्रेस (1,2,4,5,7)	16.30
	हावड़ाकालका मेल	19.15
	नई दिल्लीपूर्वा एक्सप्रेस (1,3,5,7)	10.15
	अमृतसर एक्सप्रेस	13.20
	शिप्रा एक्सप्रेस	00.11
	देहरादून एक्सप्रेस	20.30
	बांबे मेल	20.35
	ग्वालियरचंबल एक्सप्रेस (6,7)	15.25
	आगराचंबल एक्सप्रेस (4)	15.25
	इंदौरशिप्रा एक्सप्रेस (2,3)	15.25
सियालदह	जम्मूतवी एक्सप्रेस	11.45
पटना	पलामू एक्सप्रेस	20.45

क्या देखें?

यहां का मुख्य आकर्षण मंदिर हैं जिन की बनावट और कला पर्यटकों को मोहित कर देती है. इस के अतिरिक्त ब्रह्मयोनि पर्वत भी दर्शनीय स्थल है.

ब्रह्मयोनि पर्वत : यह पहाड़ी गया से 1 किलोमीटर दूर दक्षिणपश्चिम में स्थित है. यहां से गया की रमणीयता देखते ही बनती है. गया के पास ही प्रेतशिला पहाड़ी इस के आकर्षण में और भी वृद्धि करने में सहायक हैं.

बाराबर गुफाएं : गया शहर से लगभग 50 किलोमीटर दूर बाराबर गुफाएं चट्टानों को काट कर बनाई गई हैं. इन बौद्ध गुफाओं में लगे पत्थरों को जिस विधि से तराशा या घिसा गया है, उस से पत्थरों में एक नई चमक सी आ गई है. इस से ईसापूर्व की तीसरी शताब्दी के भारतीय राजगीरों के मंजे हुए कलाकौशल का परिचय मिलता है.

सासाराम : यह पर्यटन स्थल गया से 123 किलोमीटर दूर है. फुहारों से घिरे बगीचे में एक झील के बीचोबीच शेरशाह सूरी, उन के पिता और पुत्र के मकबरे हैं.

विष्णुपद मंदिर : फल्गु नदी के किनारे स्थित विष्णुपद मंदिर का निर्माण इंदौर की महारानी अहिल्याबाई ने 1787 ईसवी में करवाया था. यह श्री विष्णु के चरणचिह्नों पर बना हुआ है. 30 मीटर ऊंची अष्टभुज मीनार ने मंदिर को आच्छादित किया हुआ है.

श्रद्धालुओं का यह विश्वास है कि यहां आ कर ही पितरों का तर्पण समाप्त होता है.

क्या खरीदें?

गया का तिलकुट मशहूर है. यह तिल से बनी एक विशेष प्रकार की मिठाई है, जो अधिक महंगी भी नहीं है.

बोधगया

छोटा और शांत बोधगया, गया से मात्र 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह दूरी आप बस या टैक्सी से सुगमता से तय कर सकते हैं.

ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस स्थान का महत्त्व कम नहीं है. 2,500 वर्ष पूर्व एक पीपल वृक्ष के नीचे कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ ने गंभीर चिंतन हेतु समाधि लगाई. चिंतनमनन के फलस्वरूप उन में ज्ञानोदय की ज्योति प्रज्वलित हुई. तभी से सिद्धार्थ 'गौतम बुद्ध' के नाम से विख्यात हो गए और वह वृक्ष बोधिवृक्ष के नाम से. प्रबोधन के पश्चात गौतम बुद्ध ने निरंजना नदी में (जो अब फल्गु नदी के नाम से जानी जाती है) स्नान किया.

क्या देखें?

महाबोधि मंदिर : इस प्राचीन मंदिर में गौतम बुद्ध ने



बोधगया का विश्वप्रसिद्ध महाबोधि मंदिर : भव्य शिल्पकला देखते ही बनती है.

ज्ञान प्राप्त किया था. मंदिर के आंगन में ही वह पीपल वृक्ष भी है, जिस के नीचे बुद्ध ने जीवन का सार जाना था. सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए इस

बोधगया

कहां ठहरें?

यों तो एक दिन में ही यहां के पर्यटन स्थलों को घूम कर आप वापस गया भी लौट सकते हैं अन्यथा यहां के होटलों, अतिथिगृहों और धर्मशालाओं में भी रहा जा सकता है.

होटल

सिद्धार्थ विहार, बिहार सरकार टूरिस्ट रेस्ट हाउस-I.

बिहार सरकार टूरिस्ट रेस्ट हाउस-II.

होटल बोधगया अशोक, फोन : 22708-५.

धर्मशालाएं :

बिड़ला धर्मशाला.

महाबोधि सोसाइटी की धर्मशाला.

अन्य

चाइनीज मानेस्ट्री

थाई मानेस्ट्री

इंटरनेशनल बुद्धिस्ट हाउस एंड जेपेनीज टेंपल.



मंदिर की भव्य शिल्पकला देखते ही बनती है.

संग्रहालय : भारत के पुरातात्त्विक सर्वेक्षण की ओर से संग्रहालय की देखरेख का भी समुचित प्रबंध किया गया है. इस संग्रहालय में इस क्षेत्र की पत्थर की मूर्तियां और अन्य कलाओं को जीवित रखा गया है.

राजगीर

गया से लगभग 90 किलोमीटर दूर हरीभरी रमणीक पहाड़ियों से घिरा राजगीर भी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है. गया से राजगीर के लिए बसों और टैक्सियों की समुचित सुविधा है.

ऐतिहासिक ग्रंथों में राजगीर अनेक नामों से मशहूर है. जैसे, वसुमति वृहद्रपुर, गिरिव्रज और राजगृह आदि. राजगीर में ढेरों ऐसे स्थल हैं, जो पर्यटकों को बरबस अपनी ओर खींचते हैं. महावीर चरण चौरा, सप्तपर्णी गुफा, महादेव मंदिर, मनियार मठ, सोन भंडार गुफाएं, बिंबिसार की जेल, गृधकूट पर्वत और वहां बने विश्व शांति स्तूप, एरियल रोप वे, संस्कार भूमि, गरम जल के झरने, अजातशत्रु का कोर्ट

राजगीर का विश्व शांति स्तूप : स्तूप के चारों ओर बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएं हैं.





आदि स्थान भ्रमण के लिए उपयुक्त हैं.

राजगीर 5 पहाड़ियों से घिरा वर्षों तक मगध साम्राज्य की राजधानी रहा.

क्या देखें?

वेणुवन : राजगीर का 'वेणुवन' दर्शकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र है. गौतम बुद्ध के समय यह बांसों का वन था. आज भी यह बांसों का वन है. राजा बिंबिसार ने इसे बुद्ध को समर्पित कर दिया था. अपने निकट के शिष्य सारिपुत्र और महाभोग्दलायन को बुद्ध ने यहीं दीक्षा दी थी. बिहार सरकार द्वारा यह वन संरक्षित है. यहीं एक तालाब भी है जिस के पश्चिम में बुद्ध की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो कुछ वर्ष पहले तालाब से ही प्राप्त हुई थी.

वेणुवन के मध्य में अवस्थित इस तालाब को 'करंद निवास' भी कहा जाता है. सारिपुत्र एवं महाभोग्दलायन के अस्थिअवशेष यहां पाए गए हैं. बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बुद्ध इसी तालाब में स्नान करते थे.

जरासंध भवन : वैभार पहाड़ी के उत्तरपूर्वी कोने के ढलान और गरम स्रोतों के 'सातधारा' नामक समूह से ऊपर एक पत्थर का भवन है, जिसे 'जरासंध की बैठक' कहा जाता है. कुछ पालि ग्रंथों में इसे 'महाकश्यप का निवास स्थान' भी बताया गया है. महाकश्यप प्रथम बौद्ध सम्मेलन के प्रधान थे. यहीं पर सप्तपर्णी गुफा भी है. बुद्ध की मृत्यु के बाद यहां उस के 500 शिष्यों का एक सम्मेलन हुआ था.

बिंबिसार का जेलखाना: मुख्य सड़क पर मनियार मठ से लगभग एक किलोमीटर दूर बिंबिसार की जेल है. यह स्थान पत्थर की दीवारों से घिरा है. यह लगभग 200 फुट लंबा और इतना ही चौड़ा भी है. ऐतिहासिक प्रमाण बताते हैं कि अजातशत्रु ने बिंबिसार को यहीं बंदी बना कर रखा था. यद्यपि इस स्थान की कोई विशेष खुदाई नहीं हुई है, तथापि इसे साफसुथरा करने के क्रम में यहां कुछ पत्थर की कोठरियां मिली हैं, जिन में से एक में एक लोहे का कड़ा मिला, जिस के एक ओर एक फंदा था. संभवत: इस से कैदियों को बांध कर रखा जाता था.

शांति स्तूप तक पहुंचने के लिए बनाया गया एरियल रोप वे अपनेआप में अनूठा है. ▲

गृधकूट पर्वत : राजगीर जिन 5 पहाड़ियों से घिरा है, उन में एक गृधकूट पर्वत है. इस की चोटी सब से ऊंची है. यहां खुदाई से रौगनी मिट्टी की कई

परतें मिली थीं, जिन पर 7 भूतपूर्व बौद्धों के तथा आगामी बुद्ध मैत्रेय की मूर्तियां 2 कतारों में बनी मिली थीं. प्रत्येक मूर्ति के नीचे बौद्ध आस्था सूत्र लिखा हुआ था: गृधकूट पर्वत की चोटी के पास ही कई गुफाएं हैं जिन में बौद्ध भिक्षुक निवास करते थे.

विश्व शांति स्तूप : राजगीर में विश्व शांति स्तूप सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र है, जिस की योजना जापान बौद्ध संघ के अध्यक्ष भिक्षु निचिदात्सु फूजी ने बनाई थी. 25 लाख की लागत से बनाए गए विश्व शांति स्तूप की ऊंचाई 120 फुट है तथा इस के सिरे पर 10 फुट ऊंचा कमल कलश है. स्तूप का व्यास 103 फुट है. स्तूप के चारों ओर बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित हैं. शांति स्तूप तक जाने के लिए रज्जू मार्ग (एरियल रोप वे) का निर्माण किया गया है. इस की लंबाई 2,200 फुट है तथा इस में 114 कुरसियां लगाई गई हैं. यह झूला भारत में एक अनूठा प्रयोग है. नीचे से शांति स्तूप तक जाने के लिए साढ़े 7 मिनट का समय लगता है. प्रत्येक गुरुवार को झूला बंद रहता है. झूले की टिकट दर 7 रुपए है.

गरम पानी का झरना : राजगीर का एक और आकर्षण का केंद्र है, गरम पानी का झरना. इसे 'कुंड' के नाम से भी जाना जाता है. पालि साहित्य में इस का नाम तपोदाराम महाविहार बताया गया है. कुंड के ऊपर अनेक मंदिर बने हुए हैं. कुंड के पानी में पहले 3-4 मिनट तक धीरेधीरे शरीर को गरम पानी सहने लायक बनाना पड़ता है. जब शरीर एक बार गरम पानी को सहने की स्थिति में आ जाता है तब बड़ा मजा आता है. जाड़े के दिनों में यहां स्नान करने का एक अलग ही आनंद है. वैज्ञानिक परीक्षणों से पता चला है कि इस गरम पानी के झरने से रोगियों को फायदा पहुंचता है. विशेषकर गठिया रोग के मरीजों को फायदा होता है.

अजातशत्रु का कोर्ट : बस अड्डे और डाक बंगले के बीच अजातशत्रु का कोर्ट पाया गया है. पत्थरों को काट कर उन से चारों ओर दीवारें बनाई गई थीं. दीवारें 15 से 18 फुट तक मोटी हैं. इस स्थान के बारे में कोई एकमत राय नहीं है.

दार्जिलिंग क्षेत्र

दार्जिलिंग

यदि उत्तर प्रदेश में मसूरी को 'पर्वतों की रानी' कहा जाता है तो पश्चिम बंगाल में प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर दार्जिलिंग को भी 'पहाड़ों की रानी' कहा जाता है. 2,134 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कंचनजंघा पर्वत श्रेणियों से घिरा दार्जिलिंग पर्यटकों को अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण मंत्रमुग्ध सा कर देता है. दार्जिलिंग 'सूर्योदय की स्वर्णिम घाटी' के रूप में भी प्रसिद्ध है.

दार्जिलिंग के शांत जीवन को पिछले कुछ वर्षों से गोरखा आंदोलन ने कुछ हद तक प्रभावित अवश्य किया है, जिस से पर्यटकों की संख्या में कमी आई है. परंतु अब पर्यटन पूर्ववत जारी है. कुछ आकर्षणों के कारण पर्यटक यहां आने का लोभ संवरण नहीं कर पाते. इस स्थल की रमणीयता को देख कर यों आभास होता है कि प्रकृति ने अपना सारा सौंदर्य यहीं बिखेर दिया है.

हिमालय पर्वत का प्राकृतिक सौंदर्य, शंकुधारी वृक्षों से घिरे पर्वतीय वन, पक्षियों का मधुर कलरव, फूलदार वृक्षों एवं पुष्प रहित पौधों के भंडार और जंगली जीवजंतुओं के स्वच्छंद विचरण को देख कर पर्यटक इस शहर के जादू में बंध सा जाता है. लेकिन यहां के रंगबिरंगे बाजार, दस्तकारी, दुकानें भी उसे कम आकर्षित नहीं करतीं. चाय बागान देख कर आप जान सकते हैं कि चाय की पैदावार किस भांति होती है.

पक्षी जगत में रुचि रखने वाले पक्षी प्रेमी दुर्लभ पक्षी, जैसे हिमालय के ब्लूबर्ड, लंबी टांग वाले काले फेनकनेट मिनवेट, शाही कबूतर यहां की पहाड़ियों में देख सकते हैं.

कब जाएं?

दार्जिलिंग घूमने का सर्वश्रेष्ठ समय अप्रैल से मध्य जून तक एवं सितंबर से नवंबर तक का है.

कैसे जाएं?

दार्जिलिंग यात्रा करते समय सिक्किम की राजधानी गंगटोक जाने का भी कार्यक्रम बनाया जा सकता है.

वायु मार्ग : दार्जिलिंग एवं गंगटोक का निकटतम हवाई अड्डा बागडोगरा है. बागडोगरा से दार्जिलिंग की दूरी मात्र 90 किलोमीटर है एवं गंगटोक की 124 किलोमीटर. इंडियन एअरलाइंस की नियमित सेवाएं बागडोगरा के लिए कलकत्ता, दिल्ली व उत्तरपूर्व के हवाई अड्डों से उपलब्ध हैं. बागडोगरा से दार्जिलिंग तक 3 घंटे का एवं गंगटोक तक करीब 5 घंटे का समय लगता है. बागडोगरा से दार्जिलिंग एवं गंगटोक की दूरी को बस, टैक्सी आदि से भी तय किया जा सकता है.

रेल मार्ग : दार्जिलिंग एवं गंगटोक के 2 निकटतर रेलवे स्टेशन सिलीगुड़ी व न्यू जलपाईगुड़ी हैं. दोनों स्थानों के लिए कलकत्ता, गुवाहाटी, लखनऊ, वाराणसी व भारत के अन्य महत्त्वपूर्ण शहरों से नियमित रेल सेवाएं हैं. सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग एवं गंगटोक के लिए बसों एवं टैक्सियों की सुविधाएं उपलब्ध हैं. इन साधनों के अतिरिक्त सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग तक की दूरी छोटी लाइन की रेलगाड़ी द्वारा भी तय की जा सकती है. लेकिन सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग तक का सफर हसीन बनाना चाहते हैं तो छोटी लाइन की रेल 'ब्लूटोय' को ही साधन बनाएं तो श्रेष्ठ है. इस प्रकार गाड़ी में बैठेबैठे ही दार्जिलिंग का प्राकृतिक सौंदर्य एवं चाय के बागानों के दृश्यों का आनंद ले सकते हैं.

सड़क मार्ग : इस राज्य के अन्य भागों से व पड़ोसी राज्यों से सिलीगुड़ी तक सीधी बस सेवाएं हैं. सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग के लिए नियमित बस सेवाएं हैं गंगटोक के लिए दार्जिलिंग, कलिंपोंग या सिलीगुड़ी से बस या टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है.

दार्जिलिंग

कहां ठहरें?

दार्जिलिंग में ठहरने के लिए लगभग 450 होटलों की व्यवस्था है. यहां सस्ते व महंगे दोनों प्रकार के होटल हैं. अपनी सुविधानुसार किसी भी होटल में अपने ठहरने की व्यवस्था कर सकते हैं. अधिकतर होटल रेलवे स्टेशन और बस अड्डे के निकट हैं.

होटल

रेलवे स्टेशन के निकटस्थ होटलों में प्रमुख कादंबरी व निर्माण हैं. होटल अशोक, अनामिका, एवरग्रीन, फ्लोरा में आप को भारतीय परंपरा का ही परिचय होगा.

होटल प्रधान, 57, गांधी रोड, फोन : 2103, 2610.

दार्जिलिंग टूरिस्ट लाज, भानु सरणि, फोन : 2611-13.

दार्जिलिंग यूथ होस्टल, डा. जाकिर हुसैन रोड, फोन : 2290.

होटल सिक्लेयर्स दार्जिलिंग, 18/1, गांधी रोड, फोन : 3431.

वेलीव्यू होटल, द माल, फोन : 2129, 2221.

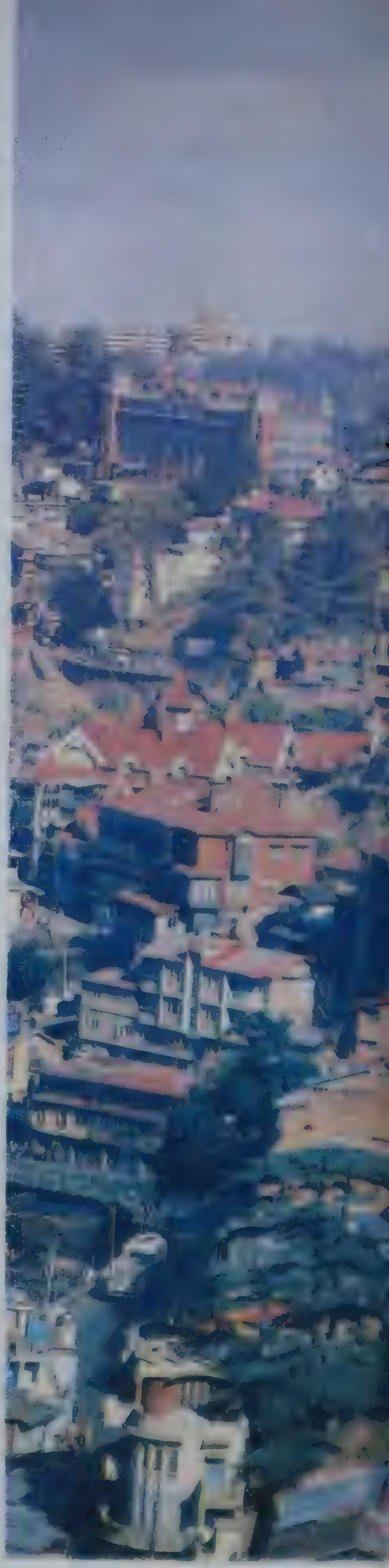
सेंट्रल होटल, राबर्टसन रोड, फोन : 2033, 2746.

धर्मशाला

मोहनलाल शिवलाल की धर्मशाला, स्टेशन से 2 फर्लांग पर.

क्या देखें?

अन्य प्रमुख पर्वतीय स्थलों की तरह दार्जिलिंग का असली आनंद तो उस के बाजारों में घूम कर उठाया जा सकता है. दार्जिलिंग के माल व चौरास्ता बाजारों में टहलिए, पटरी पर बैठे दुकानदारों से कुछ खरीदिए और दूर कंचनजंघा की बर्फ





प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर दार्जिलिंग शहर पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देता है.

ढकी पहाड़ियों के दर्शन करिए. अन्य स्थानों पर भी जाइए क्योंकि वे बदलाव भी प्रस्तुत करते हैं और प्रकृति का नया आनंद देते हैं.

टाइगर हिल : यह शहर से 11 किलोमीटर दूर है. इस पहाड़ी से एवरेस्ट की दूरी 160

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली – 2,095 किलोमीटर (हावड़ा हो कर)
बंबई – 2,827 किलोमीटर
मद्रास – 2,317 किलोमीटर
कलकत्ता – 654 किलोमीटर

किलोमीटर है. सूर्योदय एवं सूर्यास्त दोनों समय के दृश्य पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य की रश्मियां जब एवरेस्ट और कंचनजंघा की बर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ती हैं तो पर्यटक बिन बरखा के ही इंद्रधनुष के दर्शन कर लेते हैं. काफी ऊंचाई पर होने के कारण यहां से कंचनजंघा, एवरेस्ट आदि अन्य पर्वतश्रेणियों को भी देखा जा सकता है.

लायड वानस्पतिक उद्यान: शहर के पास इस उद्यान का नाम विलियम लायड के नाम पर पड़ा. दार्जिलिंग के इस उद्यान में हिमालय पर्वत पर प्राप्त दुर्लभ पुष्पों, पौधों का संग्रह है.

पर्वतारोहण संस्थान : दार्जिलिंग से करीब 2 किलोमीटर दूर पश्चिमी जवाहर मार्ग पर हिमालय पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान है. अपनी तरह के इस अनूठे संस्थान में पर्वतारोहियों को प्रशिक्षित किया जाता है. 1954 में नेहरूजी द्वारा स्थापित इस संस्थान में प्रशिक्षण के अतिरिक्त संग्रहालय भी है. संग्रहालय में पर्वतारोहण संबंधी उपकरणों का संग्रह है.

चाय उद्यान : चाय उत्पादन में दार्जिलिंग एक प्रमुख नगर है. पर्यटक यहां न केवल चाय के बागान देख सकते हैं, वरन नगर से 2 किलोमीटर दूर हैपीवैली टी एस्टेट में आसानी से चाय बनने की प्रक्रिया भी देख सकते हैं.

मिरिक : मिरिक एक नया पर्यटन स्थल है. यह स्थल दार्जिलिंग से 49 किलोमीटर दूर है. झरनों से युक्त यह स्थान पिकनिक के लिए तो उत्तम है ही, साथ में नौका विहार का आनंद भी उठाया जा सकता है.

संदाकफू : दार्जिलिंग से मात्र 58 किलोमीटर दूर संदाकफू स्थान पर मानो प्रकृति ने अपनी संपूर्ण रमणीयता ही बिखेर दी है. इस स्थान से हिमालय के शिखर का भव्य स्वरूप देख कर आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे. इस पर्यटन स्थल की एक विशेषता यह भी है कि रास्ते में विश्राम करने के लिए जगहजगह 'हट्स' बनाए गए हैं. अप्रैलमई में इस क्षेत्र की खूबसूरती और भी बढ़ जाती है, जब रंगबिरंगे फूलों के आवरण से संपूर्ण क्षेत्र ढक जाता है.

क्या खरीदें?

चाय उत्पादन के लिए तो दार्जिलिंग महत्त्वपूर्ण है ही, परंतु यहां की एक अन्य विशेषता दस्तकारी है. आप पहाड़ी दस्तकारी से निर्मित चूड़ियां, भूटानी चित्र, धातु तथा पत्थर की मूर्तियां खरीद सकते हैं. घर को सजाने के साथसाथ ये वस्तुएं अच्छा उपहार भी हो सकती हैं. हस्तशिल्प की वस्तुओं को आप तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र, बंगाल मंजूषा इंपोरियम क्युरियो शाप, चौरास्ता, नेहरू मार्ग, कार्ट मार्ग आदि से उचित दामों में खरीद सकते हैं.

गंगटोक

दार्जिलिंग से गंगटोक की दूरी सड़क मार्ग से मात्र 100 किलोमीटर है. दार्जिलिंग यात्रा के साथसाथ पर्यटक गंगटोक पर्यटन का कार्यक्रम भी बना सकते हैं.

सिक्किम की राजधानी गंगटोक (ऊंचा पहाड़) अपने नाम को ही सार्थक करती प्रतीत होती है. वर्षभर खिलने वाले भांतिभांति के रंगबिरंगे फूलों को देख कर पर्यटकों का हृदय प्रफुल्लित हो उठता है. दूरदूर तक फैले पर्वत, तीव्र आवेग में बहती नदियां, शांत वादियों में पेड़पौधों का बहता मद्धिम संगीत और हरियाली पर्यटकों



को बांध सा लेती है.

विश्व की तीसरी ऊंची पर्वत चोटी कंचनजंघा की तलहटी में समुद्रतल से 1,600 मीटर की ऊंचाई पर गंगटोक स्थित है. इस शहर की केवल प्राकृतिक सुंदरता ही आप को यहां आने का आमंत्रण नहीं देती, वरन कला के अद्भुत नमूनों की चर्चा सुन पर्यटक यहां

खिचे चले आते हैं.

क्या देखें

डियर पार्क : यहां केवल मृगों को ही नहीं, बल्कि प्रकृति के अन्य रंगों को भी देखा जा सकता है. चौकड़ी भरते हुए कस्तूरी मृग तथा अन्य दुर्लभ जातियों के मृग, लालपांडा को आप यहां देख सकते हैं. प्रकृति प्रेमियों के लिए एक अन्य आकर्षण है, भांतिभांति के फूल. फूलों के बीच स्वर्ण जड़ित बुद्ध की प्रतिमा है.

ताशी व्यू पाइंट : गंगटोक से मात्र 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ताशी व्यू पाइंट एक ऐसा पर्यटन स्थल है, जहां की खूबसूरती को आप अपलक निगाहों से देखते ही रह जाएंगे. यहां से कंचनजंघा पर्वत श्रेणी के रमणीक दृश्य दिखाई देते हैं.



सिक्किम की राजधानी गंगटोक वर्षभर खिलने वाले फूलों व पेड़पौधों की हरियाली के कारण प्रसिद्ध है.

तिब्बती रिसर्च इंस्टीट्यूट : तिब्बती बौद्ध साहित्य के लिए यह संस्थान विश्वभर में प्रसिद्ध है. इस संस्थान में कई चित्र, पूजा में प्रयोग की जाने वाली कला की अनुपम वस्तुएं, मूर्तियां, प्राचीन पांडुलिपियों का भारी संग्रह है. देशविदेश से आने वाले शोधार्थियों के लिए यह शोध केंद्र का भी कार्य करता है. यह संस्थान सोमवार से शनिवार तक प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक खुलता है. सभी सरकारी छुट्टियों में यह संस्थान बंद रहता है.

आर्किड सैंक्च्युअरी : तिब्बती अनुसंधान संस्थान के प्रांगण के ठीक नीचे आर्किड सैंक्च्युअरी में अमूल्य पौधों, वृक्षों व आर्किड की बहुत सी जातियां देखी जा सकती हैं. ये पौधे सिक्किम से बाहर प्रायः नहीं देखे जाते. यहां घूमने का श्रेष्ठ समय अप्रैल से मई, जुलाई से अगस्त एवं अक्तूबर से नवंबर तक का है.

प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता – 724 किलोमीटर
दिल्ली – 1,607 किलोमीटर
इंफाल – 1,094 किलोमीटर
कोहिमा – 971 किलोमीटर
मद्रास – 2,402 किलोमीटर
पटना – 596 किलोमीटर
शिलांग – 725 किलोमीटर
सिलीगुड़ी – 118 किलोमीटर

गंगटोक

कहां ठहरें?

होटल :

होटल शेरेपंजाब, 31-ए, नेशनल हाईवे, फोन : 2823.
द ग्रीन होटल, महात्मा गांधी मार्ग, फोन : 3354.
होटल कंचन व्यू, 31-ए, नेशनल हाईवे, फोन : 2086.
होटल मयूर, पलजोर स्टेडियम रोड, फोन : 2825.
होटल स्वागत, लाल बाजार, फोन : 2991, 2038.
होटल नौरखिल, पलजोर स्टेडियम रोड, फोन : 3186.
होटल ताशी डेलेक, महात्मा गांधी मार्ग, फोन : 03592-2991, 2038, 3178.
होटल तिब्बत, पलजोर स्टेडियम रोड, फोन : 2523, 3468.

कुटीर उद्योग संस्थान : सिक्किम सरकार द्वारा संचालित इस कुटीर उद्योग में अनेक प्रकार की विशेष वस्तुएं हैं. इस संस्थान की वस्तुओं में हाथ से बने हुए ऊनी कालीनों का तो जवाब ही नहीं. हाथ से ही बुने हुए कंबल, शाल, पहाड़ी लोगों के पारंपरिक वस्त्र और नक्काशीदार लकड़ी की मेजें भी बनाई व बेची जाती हैं. सरकारी छुट्टियों एवं रविवार के अतिरिक्त सोमवार से शनिवार 9.30 बजे प्रातः से 12.30 मध्याह्न व 1.30 मध्याह्न से 3.30 सायंकाल तक खुला रहता है.

टसुक ला खात्र : यह चोग्याल राजाओं का पूजा स्थल है. यहां के स्तंभ, दीवारों की चित्रकारी, पच्चीकारी एवं नक्काशी देखते ही बनती हैं. मंदिर का भीतरी भाग तो सुंदर है ही, इस के बाहरी भाग से दूरदूर तक फैले हुए पहाड़ भी देख सकते हैं.

विदेशियों के लिए: गंगटोक में प्रवेश हेतु विदेशियों को इजाजत लेनी होती है. इजाजत के लिए प्रार्थनापत्र अवर सचिव, मिनिस्टरी आफ होम अफेयर्स, फारनर्स सेक्शन (विदेशी विभाग), लोकनायक भवन, खान मार्केट, न्यू दिल्ली-110003 में विचारार्थ जमा करवाए जा सकते हैं. पर्यटन हेतु अनुमति मिलने में लगभग 6 सप्ताह तक का समय लग सकता है. यहां पर्यटन के लिए लगभग 15 दिन लग जाते हैं, जिस में 7 दिन यात्रा एवं शेष दिन ट्रैकिंग के लिए.

इस के अतिरिक्त आज्ञा डिप्टी कमिश्नर, दार्जिलिंग या सिक्किम टूरिस्ट आफिस, हिल कार्ट रोड, सिलीगुड़ी से भी ली जा सकती है.

क्या खरीदें?

यहां से अनेक मनमोहक वस्तुएं खरीद कर आप यात्रा को अविस्मरणीय बना सकते हैं. ऊनी कालीन, वाल हैंगिंग्स, चांदी के आभूषण, बहुरंगी मेजें खरीदी जा सकती हैं. गवर्नमेंट इंस्टीट्यूट आफ काटेज इंडस्ट्रीज एवं कई प्राइवेट दुकानों से भी खरीदारी कर सकते हैं.

गुवाहाटी क्षेत्र

गुवाहाटी

ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे बसा गुवाहाटी नगर पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश द्वार है. 7 राज्यों में बंटा यह पूर्वोत्तर भारत पहले असम प्रांत था. असम प्रांत की राजधानी गुवाहाटी है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है. इस के उत्तर में भूटान और अरुणाचल प्रदेश, पूरब में नागालैंड और मणिपुर, दक्षिण में मिजोरम, त्रिपुरा, बंगलादेश और मेघालय तथा पश्चिम में पश्चिम बंगाल है.

गुवाहाटी में मंदिर, चिड़ियाघर, झील, म्यूजियम, टीवी टावर, पार्क आदि देखने योग्य हैं. यहां कामाख्या मंदिर भी है.

यह स्थान 'कामरूप कामाख्या' के नाम से प्रसिद्ध है. कामरूप अति प्राचीन और विचित्र देश है. इस के विषय में पौराणिक कहानियां आज भी भारत के कोनेकोने में प्रचलित हैं. जनसाधारण की यह धारणा है कि यहां 'देवता' और 'असुरों' का राज्य था तथा यहां के निवासी तंत्रमंत्र, जादू, वशीकरण विद्या द्वारा लोगों को अनायास ही भेड़, बकरी वगैरह बना कर रखते थे. पत्थरों से बने हुए मार्ग, घाट, मंदिर तथा नाना प्रकार की कलात्मक मूर्तियों को देख कर यात्री मुग्ध हुए



बिना नहीं रहते.

यों देखा जाए तो अकेला गुवाहाटी नगर ही नहीं, उस के निकट स्थित काजीरंगा और शिलांग भी अत्यंत रमणीय स्थान हैं. गुवाहाटी का कार्यक्रम बनाते समय काजीरंगा और शिलांग की सैर के लिए 2-3 दिनों का अतिरिक्त कार्यक्रम बना लें. एक ओर काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क में जंगली जीवों को उन के प्राकृतिक वातावरण में देख कर आप रोमांचित हो उठेंगे, दूसरी ओर मेघालय की राजधानी शिलांग में आप का मन इतना रम जाएगा कि आप वहां बारबार जाना चाहेंगे.

ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर बसा गुवाहाटी अपनी खूबसूरती के अलावा चाय बागानों के लिए भी विश्वभर में प्रसिद्ध है. ▼

कब जाएं?

गुवाहाटी जाने के लिए मई, जून, जुलाई और अगस्त महीनों को छोड़ कर किसी भी महीने आप जा सकते हैं. किंतु 14 अप्रैल को यहां 'रंगीली बिहु' का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है और इस माह में न तो अधिक सर्दी होती है और न वर्षा. इसलिए यह समय पर्यटकों के लिए उपयुक्त होगा. नव से फरवरी माह के बीच अग जाएं तो ऊनी कपड़े अवश्य साथ ले जाएं.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : कलकत्ता, बागडोगरा, डिब्रूगढ़, इंफाल, अगरतला इत्यादि स्थानों से इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें गुवाहाटी को जोड़ती हैं.

रेल मार्ग : गुवाहाटी उत्तरपूर्व रेलवे का मुख्य केंद्र है. यह शहर दिल्ली, लखनऊ, डिब्रूगढ़ तथा अन्य बड़े शहरों से भी जुड़ा है. गुवाहाटी शिलांग का निकटतम रेलव



गुवाहाटी : प्रमुख उड़ानें

कहा से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
बागडोगरा	1,3,5,7	आईसी 879	15.05	835/-
कलकत्ता	दैनिक	आईसी 229	13.10	1157/-
	1,3,5,6,	आईसी 711	07.00	
	2,4,	आईसी 257	11.20	
दिल्ली	2,4,6	आईसी 889	12.00	3549/-
	1,3,5,7	आईसी 879	12.25	
दीमापुर	2,4	आईसी 258	14.05	766/-
इंफाल	3,5	आईसी 210	10.40	829/-



स्टेशन है. गुवाहाटी से शिलांग तक का सफर बस या टैक्सी द्वारा भी तय किया जा सकता है.

सड़क मार्ग : उत्तरपूर्व क्षेत्र के विभिन्न शहरों से यहां के लिए बसें चलाई जाती हैं. प्राइवेट बसें तथा डीलक्स वीडियो कोच द्वारा भी गुवाहाटी पहुंचा जा सकता है. गुवाहाटी और शिलांग के बीच मेघालय पर्यटन विकास निगम की नियमित बसें चलती हैं. शिलांग से गुवाहाटी की दूरी मात्र 3½ घंटे में ही तय की जा सकती है.

गुवाहाटी : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
नई दिल्ली	नार्थईस्ट एक्सप्रेस	06.25
पुरानी दिल्ली	ब्रह्मपुत्र मेल	18.45
	अवधअसम एक्सप्रेस	08.50
हावड़ा	कामरूप एक्सप्रेस	17.35
त्रिवेंद्रम	त्रिवेंद्रमगुवाहाटी एक्स.(4)	12.50
कोचीन	कोचीनगुवाहाटी एक्स.(2)	16.40
बंगलौर	बंगलौरगुवाहाटी एक्स.(6)	23.30

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–2,034 किलोमीटर
कलकत्ता–1,151 किलोमीटर
बंबई–2,847 किलोमीटर
हैदराबाद–2,454 किलोमीटर
इंफाल–469 किलोमीटर
जयपुर–2,064 किलोमीटर
मद्रास–2, 829 किलोमीटर
पटना–1,023 किलोमीटर
उज्जैन–2,237 किलोमीटर
आगरा–1,834 किलोमीटर
भोपाल–2,048 किलोमीटर
गंगटोक–625 किलोमीटर

क्या देखें?

मंदिर : गुवाहाटी में देखने योग्य कई मंदिर हैं. कामाख्या, भुवनेश्वरी, भैरवी, उमानंद आदि मंदिरों के ऐतिहासिक भवनों को देख कर आप चकित रह जाएंगे. कामाख्या मंदिर गुवाहाटी रेलवे स्टेशन से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर नीलांचल पर्वत पर स्थित है. यहां रेलवे स्टेशन से बस या टैक्सी द्वारा जा सकते हैं. बस का भाड़ा 2 रुपए तथा टैक्सी का भाड़ा 25 रुपए है.

मंदिर के प्रवेश द्वार पर पंडेपुजारियों की भीड़ लगी रहती है, जो अपनी अदाकारी दिखा कर लोगों को ठगते हैं. पूजा कराने तथा बलि देने के नाम पर सैकड़ों रुपए वसूल लेते हैं. आप को अगर दर्शन करने हो तो किसी भी पंडे को भाड़ा दिए बिना ही दर्शन करें, वरना मंदिर में घुसने के लिए घूस की रकम तिगुनीचौगुनी हो सकती है.

वसिष्ठ आश्रम : कामाख्या पहाड़ से लगभग 15 किलोमीटर दूर गुवाहाटी शिलांग मार्ग से 7 किलोमीटर भीतर निर्जन स्थान में यह आश्रम है. वसिष्ठ आश्रम से कुछ दूर पश्चिम की ओर



रंगबिरंगे फूलों व पौधों से सजा गुवाहाटी का एक खूबसूरत पार्क. ▲

वसिष्ठ मुनि की पत्नी अरुंधती देवी का शिलाचिह्न भी है.

जलप्रपात (वसिष्ठ गंगा) : इसी स्थान पर वसिष्ठ गंगा नामक एक अत्यंत मनमोहक जलप्रपात है जहां पर बड़े वेग से जल प्रवाहित होता है, जिसे देख कर पर्यटक प्रभावित हुए बिना नहीं रहते.

चिड़ियाघर : रेलवे स्टेशन से लगभग 5 किलोमीटर दूर गणेशगुड़ी नामक स्थान के निकट असम चिड़ियाघर एवं जैविक उद्यान है. इस में विभिन्न प्रकार के पक्षियों का कलरव यात्रियों को सहज ही आकर्षित करता है. पूरा चिड़ियाघर देखने के लिए दिनभर का समय चाहिए. सांपघर में कई नस्लों के सांप रखे गए हैं. चिड़ियाघर के भीतर एक यात्री टावर बनाया गया है, जिस से आप पूरा गुवाहाटी शहर देख सकते हैं.

असम राज्य संग्रहालय : गुवाहाटी रेलवे स्टेशन के निकट जिला पुस्तकालय की बगल में असम राज्य संग्रहालय है. प्रवेश शुल्क मात्र 50 पैसे है. सामने एक सरोवर (दिघली पुखरी) और पार्क है.

नेहरू पार्क : जज फील्ड के पास नेहरू पार्क है. शाम के समय इस पार्क में काफी भीड़ होती है. रंगबिरंगे फूलों से भरे इस पार्क के भीतर एक झील है, जिस में मछलियों को तैरता देख कर मन प्रफुल्लित हो उठता है.

हाजो : गुवाहाटी से लगभग 24 किलोमीटर दूर हाजो (पोवा मक्का) नामक एक स्थान है. यहां हिंदू, मुसलिम और बौद्ध संप्रदाय के महत्त्वपूर्ण स्थल हैं.

टीवी टावर : यह पूर्वोत्तर भारत का सब से ऊंचा टीवी टावर है. यहां से आप गुवाहाटी शहर का अवलोकन कर सकते हैं.

गुवाहाटी से आप शिलांग, काजीरंगा और मानस की यात्रा भी कर सके हैं. गुवाहाटी आते समय बीच रास्ते, यानी जलपाईगुड़ी से आप दार्जिलिंग और गंगटोक की भी यात्रा कर सकते हैं.

क्या खरीदें?

यहां मूंगा और रेशम के वस्त्र आप खरीद सकते हैं. बांस और बेंत की बनी वस्तुएं भी आप उपयोग और सजावट के लिए खरीद सकते हैं.

—अकेला भाई

गुवाहाटी

कहां ठहरें?

होटल

होटल बैले व्यू, एम.जी.रोड, फोन : 28291, 28639.
होटल उर्वशी, एअरपोर्ट के निकट, फोन : 29291.
होटल एंपायर, हेमबरुआ रोड, फोन : 31670.
होटल कुबेर इंटरनेशनल, हेमबरुआ रोड, फोन : 32601.
होटल ऋतुराज, केदार रोड, फोन : 25054.
होटल चीलाराम रीजेंसी, एच.पी. ब्रह्मचारी रोड, फोन : 26877, 27416.
होटल सिद्धार्थ, हेमबरुआ रोड, फोन : 31614, 27405.
होटल सम्राट, ए.टी. रोड, शांतिपुर, फोन : 34542, 26402.
होटल नंदन, जी.एस. रोड, फोन : 32621.

धर्मशाला

मारवाड़ियों की धर्मशाला, स्टेशन के नजदीक.

काजीरंगा

काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क गुवाहाटी से 217 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 37 पर स्थित है. ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित यह पार्क एक सींग वाले गैंड़ों के लिए प्रसिद्ध है. मार्को पोलो ने इस स्थान पर एक सींग वाले गैंड़े को देख कर उसे 'पौराणिक पशु' नाम दिया.

काजीरंगा प्रकृति व पशु-पक्षियों में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए विशेषरूप से आनंददायक एवं उत्साहवर्द्धक है.

क्या देखें?

430 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस राष्ट्रीय पार्क को 1926 में पशु विहार में परिवर्तित कर दिया गया. एक



सींग वाले गैंड़ों के लिए यह उद्यान प्रसिद्ध है. यद्यपि 1904 में ऐसी जाति वाले गैंड़े लुप्त ही हो गए थे. लेकिन 1966 में इन गैंड़ों की संख्या 400 तक पहुंच गई. लेकिन अब इस दुर्लभ जाति की संख्या में प्रशंसनीय वृद्धि हुई है. अब इन की संख्या का अनुमान संभवतः 1,000 से भी अधिक तक का लगाया जाता है. 1974 में इसे राष्ट्रीय पार्क बना दिया गया.

एक सींग वाले गैंड़ों के अतिरिक्त यहां खास तरह के बंदर, अजगर, जंगली हाथी, पानी वाले भैंसों आदि की स्वच्छंद क्रीडाएं देख कर पर्यटक निसंदेह रोमांचित हो उठते हैं.

यह केवल भारतीय पशु-पक्षियों का ही निवास स्थान नहीं है बल्कि बाहर से आने वाले पक्षियों का भी यह स्थान स्वागत करता है. यहां का एक अन्य आकर्षण है, पेलिकन पक्षियों की नस्लों का तैयार किया जाना.

पार्क के पर्यटन हेतु पर्यटकों को तमाम सुविधाएं प्रदान की गई हैं. किराए पर विभाग की ओर से जीप, कार एवं हाथी भी मिल सकते हैं. लेकिन हाथी पर सवारी कर उस स्थान को देखना अपना अलग ही अर्थ रखता है.

इस पार्क की खूबसूरती को निहारने के साथसाथ हिमालय के रमणीक दृश्यों को भी देखा जा सकता है. इस खूबसूरती को पार्क के समीप अतिथिगृहों से देखना सरल है.

काजीरंगा

कहां ठहरें?

काजीरंगा फारेस्ट लाज, फोन : 29.
काजीरंगा टूरिस्ट लाज, फोन : 23.
सोयल कंजरवेशन इंस्पेक्शन बंग्लो.
पी. डब्लू. डी. इंस्पेक्शन बंग्लो.

काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क : यहां एक सींग वाले गैंड़े देख कर पर्यटक रोमांचित हो उठते हैं. ▲

इस के अतिरिक्त यहां देखे जाने योग्य अन्य स्थानों में मिकिर जनजाति का गांव एवं मिकिर पहाड़ियां हैं. कार्पी एंगलौंग एवं कार्बी गांव दोनों स्थानों को भी देखा एवं सराहा जाना चाहिए. कार्पी एंगलौंग में जहां काफी व रबड़ के घने बागान देखने को मिलेंगे, वहीं कार्बी गांव की खूबसूरती और वहां के निवासियों के सरल स्वभाव से आप गदगद हो जाएंगे.

शिलांग

मेघालय की राजधानी शिलांग में गए सैलानी यहां बारबार आना चाहते हैं. प्रकृति की

मनोरमता को देख कर कुछ कहते ही नहीं बनता.

यह रम्य पर्वतीय स्थान 1,500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. शिलांग चोटी से नगर तथा आसपास का प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनमोहक दिखाई देता है. शिलांग को 'पूर्व का स्काटलैंड' गलत नहीं कहा जाता. रमणीयता बिखेरती झीलों, झरनों, बर्फ से ढकी पहाड़ियों को देख कर पर्यटक का हृदय यहीं का हो कर रह जाता है. यहां की शिक्षा संस्थाओं में दूरदूर से लोग ज्ञान प्राप्त करने के लिए आते हैं.

क्या देखें?

चेरापूंजी : यह शिलांग से 56 किलोमीटर दूर है. यहां संसार भर से सब से अधिक वर्षा होती है. रिमझिम बरसात में पर्यटकों का भीगा मन झरनों को देख कर आनंदित हो उठता है. पत्थरों के अंदर बनी गुफाएं इस स्थान का एक और आकर्षण हैं.

शिलांग पीक : शिलांग चोटी की ऊंचाई 1,951 मीटर है. यह शिलांग से 12 किलोमीटर दूर है. इसी चोटी से शिलांग शहर भव्य और आकर्षक दिखाई देता है. इस शहर की रमणीयता की तुलना स्काटलैंड में एडिनबरो दुर्ग से दिखाई देने वाले दृश्य से की जाती है.

धावकी : धावकी एक अन्य दर्शनीय एवं पिकनिक स्थल है. यह शिलांग से 96 किलोमीटर दूर है. झरनों का यहां खासा आकर्षण है. झरनों का गहरा पानी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है. धीरेधीरे बहते पानी को देख कर यों आभास होता है, जैसे चांदी झरझर बही जा रही हो.

वार्ड्स लेक : शिलांग नगर की सुंदरता का प्रतिबिंब.

प्रमुख नगरों से दूरी

बंबई–2,947 किलोमीटर
कलकत्ता–1,251 किलोमीटर
दिल्ली–2,134 किलोमीटर
गुवाहाटी–100 किलोमीटर
इंफाल–520 किलोमीटर
जयपुर–2,164 किलोमीटर
मद्रास–2,929 किलोमीटर
शिमला–2,502 किलोमीटर

शिलांग

कहां ठहरें?

होटल

होटल एंबेसडर, उमसोहटन रोड, फोन : 6074.
गाडविन होटल, जी.एस. रोड, फोन : 26516.
शिलांग क्लब, फोन : 6938.
शिलांग टूरिस्ट होटल, पोलो रोड, फोन : 24933.
गार्डन होटल, क्विटन रोड, फोन: 6775.
ब्राडवे, जी.एस.रोड, फोन : 26996.
होटल पाइनवुड, फोन : 23116, 23765.
होटल अल्पाइन कांटीनेंटल, क्विटन रोड, फोन : 25361.



वाड्र्स लेक : यदि यह कहा जाए कि शिलांग शहर की पूर्ण सुंदरता का प्रतिबिंब वाड्र्स लेक है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. इस स्थान पर पुलिस बाजार से पैदल ही पहुंचा जा सकता है. इस झील में नौकायन का भी अलग ही आनंद है.

स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी बिल्डिंग : मेघालय के प्राचीन समय की कला तथा संस्कृति विषयक जानकारी प्राप्त करने के लिए स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी बिल्डिंग एक सर्वश्रेष्ठ स्थान है. रीतिरिवाजों संबंधी सामग्री, जवाहरात एवं हथियारों का यहां संग्रह है.

18 होल गोल्फ कोर्स : गोल्फ खेलने वालों के लिए यह स्थान अद्भुत आकर्षण रखता है. इसे एशिया का सर्वाधिक श्रेष्ठ गोल्फ मैदान माना जाता है. जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यहां गोल्फ खेलने के लिए 18 होल (सूराख) हैं.

अन्य दर्शनीय स्थलों में एलीफेंट का क्राइनोलाइन जलप्रपात, स्वीट, बिशप झरने, लेडी हैदरी पार्क वगैरह की छटा देखते ही बनती है.



रंगबिरंगे फूलों व पेड़पौधों से सुसज्जित शिलांग का मोहक लेडी हैदरी पार्क बेहद आकर्षक है.

कलकत्ता क्षेत्र

कलकत्ता

वास्तुकला, पुरावशेष, शिक्षा, संस्कृति, शिल्प कला एवं संगीत आदि विशेषताओं के शहर 'कलकत्ता' को 'पूर्वी भारत का द्वार' कहना संगत ही है.

कलकत्ता एक अद्भुत शहर है. प्राकृतिक, भौगोलिक एवं व्यापारिक प्रत्येक दृष्टि से यह शहर देखने योग्य है. विभिन्न प्रकार के पकवानों के शौकीन कलकत्ता निवासियों की खाना बनाने की विभिन्न शैलियां भी ग्रहण करने योग्य हैं. वहीं दूसरी ओर नौका में व्यतीत एक शांत संध्या को आप जीवनभर भुला नहीं सकते. रोशनियों से झिलमिलाती कलकत्ता की हसीन रातों को भूलना भी असंभव है.

तटवर्ती शहर कलकत्ता अब पश्चिम बंगाल की राजधानी है, जबकि यह 1912 तक ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी रहा. सन 1690 में एक अंगरेज व्यापारी जाब

चारनाक ने यहां ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्यालय बनाया था. तदुपरांत अब तक कलकत्ता राजनीति की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है. इतिहास और आधुनिकता को समेटे अपने अनुपम दर्शनीय स्थलों के कारण कलकत्ता पर्यटकों के लिए अवश्य ही अनोखे आकर्षण का केंद्र है.

कब जाएं?

कलकत्ता जाने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय सितंबर के अंत अथवा अक्तूबर के प्रारंभ का है, क्योंकि तब इन महीनों में मनाए जाने वाले विभिन्न त्योहारों का भी आनंद लिया जा सकता है. इन विशेष अवसरों पर कलकत्तावासियों का उत्साह देखते ही बनता है. शीतकाल का समय भी पर्यटन के अनुकूल है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : इंडियन एअरलाइंस की नियमित उड़ान सेवाएं कलकत्ता के लिए उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : देश के प्रमुख नगरों से कलकत्ता रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. हावड़ा व सियालदह रेलवे स्टेशनों तक ये रेलगाड़ियां पहुंचती हैं.

सड़क मार्ग : देश के कई मुख्य नगरों से कलकत्ता सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. कलकत्ता राज्य यातायात निगम (कलकत्ता स्टेट ट्रांसपोर्ट, कारपोरेशन) की बसें कई प्रमुख नगरों को जाती हैं.

क्या देखें?

डलहौजी स्क्वायर : कलकत्ता पर्यटन का प्रमुख केंद्र डलहौजी स्क्वायर है. लेकिन अब इस का बंगाल के 3 शहीदों बिनय, बादल, दिनेश के नामों पर नया नामकरण किया गया है. इस स्क्वायर के चारों ओर कलकत्ता की अनेक ऐतिहासिक इमारतें हैं. डलहौजी स्क्वायर के

कलकत्ता के प्रमुख स्थान



कलकत्ता : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
नई दिल्ली	राजधानी एक्सप्रेस	17.15
	नई दिल्लीसियालदहपूर्वा एक्सप्रेस	16.30
	दिल्लीहावड़ा जनता एक्सप्रेस	15.50
	दिल्लीसियालदह एक्सप्रेस	22.10
बंबई	गीतांजलि एक्सप्रेस	06.05
	बंबईहावड़ा मेल	20.15
मद्रास	हावड़ा मेल	22.30
जम्मू	जम्मूतवीसियालदह एक्सप्रेस	18.30
गुवाहाटी	कंचनजंघा एक्सप्रेस	22.00
	कामरूप एक्सप्रेस	07.50
अहमदाबाद	हावड़ाअहमदाबाद एक्सप्रेस	09.15
त्रिवेंद्रम	त्रिवेंद्रमगुवाहाटी एक्सप्रेस	12.50

पूर्व में कलकत्ता का व्यापारिक केंद्र है. पश्चिम में बंगाल सरकार का पर्यटन कार्यालय है. दक्षिण में राजभवन यानी राज्यपाल निवास है. इस के पीछे है राज्य विधानसभा भवन

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली–1,442 किलोमीटर
गुवाहाटी–1,151 किलोमीटर
भुवनेश्वर–480 किलोमीटर
बंबई–2,081 किलोमीटर
लखनऊ–963 किलोमीटर
मद्रास–1,678 किलोमीटर
पटना–598 किलोमीटर
वाराणसी–677 किलोमीटर



तथा उच्च न्यायालय एवं पश्चिम में जी.पी.ओ. की शानदार इमारत है. डलहौजी स्क्वायर के मध्य में 'लाल दीघी ताल' देखने योग्य है.

हावड़ा पुल : 1943 में बना हावड़ा पुल अपनी बनावट के लिए संसारभर में प्रसिद्ध है. यह सड़क की सतह से 270 फुट ऊंचा है. हुगली नदी पर बना यह अपनी किस्म का विश्व का सब से बड़ा पुल है. यह डलहौजी स्क्वायर से 5 किलोमीटर दूर है. इस पुल की व्यस्तता देखते बनती है.

विद्या सागर सेतु : हुगली नदी के तट पर हावड़ा पुल की अत्यधिक भीड़भाड़ को कम करने के लिए हाल ही में 'विद्या सागर सेतु' का निर्माण किया गया है. यह कलकत्ता का एक नया आकर्षण है. इस पुल ने कलकत्ता को हावड़ा के साथ तो जोड़ा ही है, लेकिन कलकत्ता शहर तथा अन्य राज्यों को सड़क मार्ग से जोड़ने में भी इस पुल की मुख्य भूमिका है.

यह पुल 152 स्टील की तारों से बंधा हुआ है. इन तारों का भार लगभग 1,400 [illegible] पुल का ढांचा स्टील एवं क[illegible] का बना हुआ है. पुल निर्माण के समय इस की योजना इस भांति बनाई गई है कि एक दिन में लगभग 85,000 वाहन यहां से गुजर सकें.

बिड़ला तारामंडल : यह डलहौजी स्क्वायर से 3 किलोमीटर दूर है. दक्षिण पूर्व एशिया का यह सब से बड़ा तारामंडल है. इस गुंबदनुमा गुलाबी भवन में 500 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है. यहां प्रत्येक दिन 3 शो होते हैं. धरती पर रह कर ही केवल कुछ मिनटों में ग्रह, नक्षत्रों की

हावड़ा से कलकत्ता पहुंचने के लिए छोटे स्टीमरों का प्रयोग यात्रा को और भी रोमांचक बना देता है. ▼



कलकत्ता : प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया (साधारण)
अगरतला	दैनिक	आई सी 742	08.50	892/-
	1,2,3,4,6,7	आई सी 744	14.40	
बागडोगरा	2,4,6,7	आई सी 722	11.00	1,226/-
बंगलौर	दैनिक	आई सी 772	09.35	3,773/-
भुवनेश्वर	3,5,7	आई सी 770	20.25	1,163/-
	2,4	आई सी 543	09.10	
बंबई	दैनिक	आई सी 175	06.00	3,721/-
	दैनिक	आई सी 274	16.30	
दिल्ली	दैनिक	आई सी 401	10.10	3,135/-
	दैनिक	आई सी 264	20.10	
	दैनिक	आई सी 809	10.15	
	1,3,5	आई सी 409	17.30	
	2,4,6,7	आई सी 262	07.15	
डिब्रूगढ़	2,4,6,7	आई सी 702	15.10	1,789/-
दीमापुर	2,4	आई सी 258	14.05	1,692/-
गुवाहाटी	दैनिक	आई सी 230	15.10	1,157/-
	1,3,6	आई सी 712	09.00	
	5	आई सी 712	09.00	
इंफाल	2,4,6,7	आई सी 256	13.00	1,456/-
	3,5	आई सी 260	13.20	
हैदराबाद	2,4,6	आई सी 778	19.10	3,187/-
	3,5,7	आई सी 770	16.30	
लखनऊ	1,3,5	आई सी 409	18.55	2,226/-
मद्रास	दैनिक	आई सी 766	20.00	3,273/-
	2,4	आई सी 543	07.00	
	1,3,5,6	आई सी 541	07.00	

जानकारी प्राप्त की जा सकती है. सोमवार एवं सार्वजनिक छुट्टियों में यह बंद रहता है.

भारतीय संग्रहालय : सन 1875 में इटेलियन शैली में बनी यह इमारत कलकत्ता का अन्य आकर्षण है. 'जादूघर' के नाम से प्रसिद्ध यह पर्यटन स्थल डलहौजी स्क्वायर से 2 किलोमीटर दूर स्थित है. प्राकृतिक विज्ञान, भूविज्ञान, प्राणी विज्ञान और मानव विज्ञान से प्राप्त अवशेष देखते ही बनते हैं. यहां शिवालिक पहाड़ियों से प्राप्त अवशेष भी हैं. अन्य कई पुरातात्त्विक वस्तुओं का भी यहां संग्रह है.

चिड़ियाघर : यह सन 1876 में वेल्स के राजकुमार द्वारा खोला गया था. डलहौजी स्क्वायर से इस की दूरी 4 किलोमीटर है. आप दुनियाभर के विभिन्न पशुपक्षियों को 16 हेक्टेयर में फैले इस चिड़ियाघर में अपनी क्रीडाएं करते हुए देख सकते हैं.

भूमिगत रेलवे : केवल कलकत्ता में ही होने के कारण 'भूमिगत रेलवे' भी पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर खींचता है. भारत में इस प्रकार की अकेली रेल होने के कारण इस की व्यवस्था देखने में पर्यटकों की विशेष जिज्ञासा रहती है. इस पर सैर करने का अपना ही एक अनोखा आनंद है.

राष्ट्रीय पुस्तकालय : यदि आप पुस्तक प्रेमी नहीं भी हैं तो भी कलकत्ता जा कर राष्ट्रीय पुस्तकालय को देखना न भूलें. भारत का यह सब से बड़ा पुस्तकालय है. यहां 80 लाख से भी अधिक पुस्तकें हैं. पुस्तकों के पुराने संग्रहों में कई पुस्तकें ऐसी भी हैं, जो आज मिलनी सहज नहीं.

चौरंगी : कालीघाट स्थित चौरंगी कलकत्ता का एक शानदार बाजार है. डलहौजी स्क्वायर से इस की दूरी मात्र एक किलोमीटर है. इस बाजार के मुख्य आकर्षण बड़ीबड़ी दुकानें, 5 सितारा होटल, सिनेमाघर एवं अन्य इमारतें हैं. इन इमारतों की एक अन्य विशेषता यह भी है कि इन्हें इटली के वास्तुविदों द्वारा

चौरंगी का आकर्षण बड़ीबडी इमारतें, दुकानें व पांच सितारा होटल हैं.



बनाया गया है. 1841 में बनवाई गई 48 मीटर ऊंची 'शहीद मीनार' इस बाजार के आकर्षण को बढ़ाने में सहायक है.

चौरंगी का धर्मतल्ला का इलाका रात में घूमने लायक है. यहां की रोशनी, रंगबिरंगी दुकानें और भीड़भाड़ का अपना ही आनंद है. इस इलाके में आप रात को विक्टोरिया में भी सैर करना न भूलें.

निक्को पार्क : कलकत्ता के रमणीक पार्कों में सर्वाधिक आकर्षक है 'निक्को पार्क.' यहां पर्यटक बच्चों के साथ जा कर मनोरंजन कर सकते हैं. पार्क में मनोरंजन के तमाम उपकरण विद्यमान हैं. जैसे, टाय ट्रेन, केबल कार, लेजी रिवर, क्रेजी साइकिल, स्ट्राईकिंग कार, वाटर एम.जी.आर., शूटिंग गैलरी, चिल्ड्रन फल्यूम, पैडल बोट, रोज गार्डन, टी हिल, नेस्ले हट, जापानी गार्डन एवं मून रेकर आदि.

यह पार्क प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से रात्रि 9 बजे तक खुला रहता है. लेकिन 8.30 बजे से इस में प्रवेश नहीं मिलता.

स्कूली विद्यार्थियों को इस पार्क में विशेष सुविधा प्रदान की



कलकत्ता

कहां ठहरें?

होटल

होटल एअरपोर्ट अशोक, कलकत्ता एअरपोर्ट, फोन : 5529111 से 5529129 तक.

पार्क होटल, 17, पार्क स्ट्रीट, फोन : 297336, 29[illegible]941.

द केनिल वर्थ, 1-2 लिटल रसेल स्ट्रीट, फोन : 2423403.

ताज बंगाल, 34 बी, बेल्वेडेयर रोड, फोन : 2483939.

द ओबेराय ग्रैंड, 15, जवाहरलाल नेहरू रोड, फोन: 292323/0181.

होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल, 235/1, ए.जे.सी. बोस रोड, फोन : 2472616/17.

होटल रत्तदीन, 21-बी, लाउडन स्ट्रीट, फोन : 2475240, 402389.

फेयरलान होटल, 13/ए, सदर स्ट्रीट, फोन : 2451510.

लिट्टन होटल, 14, सदर स्ट्रीट, फोन : 2491875, 2491879.

होटल शालीमार, 3, एस.एन. बैनर्जी रोड, फोन : 2485036 2485016, 2484904, 2480616.

ग्रेट ईस्टर्न होटल, 1, 2-3 ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, फोन : 2482311, 2482331.

आकाशगंगा, 1, ओरिएंट रो (पार्क सर्कस मैदान के निकट), फोन :473341, 403771, 473640.

एशिया होटल, 11 ए-बी, जमीर लेन, फोन : 4406682.

होटल ब्लिस, 5, जतिन दास रोड, फोन :423253, 424695-97, 424831 से 424833 तक.

कैपिटल गेस्ट हाउस, 11-बी, चौरंगी लेन, फोन : 245225, 249833.

होटल हीरा इंटरनेशनल, 115, रिपन स्ट्रीट, फोन : 293940, 295954.

एस्टोरिया होटल, 6/2, 6/3, सदर स्ट्रीट, फोन : 241359, 242753, 249361, 242615.

होटल सर्कुलर, 177/ए, आचार्य जगदीश चंद्र बोस रोड, फोन : 2474011, 2471533.

होटल हिमालय, 134/1, महात्मा गांधी रोड, फोन : 2381961, 2383550, 2384530.

होटल मिनर्वा, 11 गणेश चंद्र एवेन्यू, फोन : 264505, 263365.

नार्थ स्टार होटल, 66/1, दमदम रोड, फोन : 5514171, 5514339.

न्यू सेंट्रल होटल, 90, चित्तरंजन एवेन्यू, फोन : 272360.

होटल मून गेस्ट हाउस, 17, जकारिया स्ट्रीट, फोन : 254358, 258720.

धर्मशालाएं

फूलचंद मुकीम जैन की धर्मशाला, कलाकार स्ट्रीट, नेहरू पार्क के सामने, बड़ा बाजार.

राय बहादुर सूरजमल की धर्मशाला, 6, मलिक स्ट्रीट.

बाबू लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला, बांसतल्ला.

जमुनादास टींवड़ेवाले की धर्मशाला, 164 सी, चित्तरंजन एवेन्यू.

बब्बूलाल अग्रवाल की धर्मशाला, 169 हरिसन रोड.

धनसुखदास जेठमल की जैन धर्मशाला, 44 बद्रीदास टैंपल स्ट्रीट, मानिकतल्ला.

10 बड़ी संगत सिख मंदिर, 79 क्रास स्ट्रीट सूतापट्टी.

सेठ वासुदेव जेठा भाई मूलचंद की धर्मशाला, 7 अमरतल्ला स्ट्रीट.

विनायक मिश्रा की धर्मशाला, 226 हरिसन रोड.

श्यामदेव भूतिका की धर्मशाला, 150 हरिसन रोड.

राजा शिवबख्श बागला की धर्मशाला, हावड़ा स्टेशन पर.

गई है. विद्यार्थी यदि 50 के समूह में अथवा अधिक हैं तो प्रवेश एवं सवारी हेतु 50% की छूट प्रदान की गई है.

वैसे इस पार्क में प्रवेश के टिकटों की दरें यों हैं : 3 साल से कम उम्र वाले बच्चों का निशुल्क प्रवेश है. शनिवार, रविवार एवं अवकाश के दिनों में शुल्क दर 5 रुपए है, जबकि सप्ताह के अन्य दिनों में 3 रुपए.

शनिवार, रविवार तथा अवकाश के दिनों में पर्यटक बस एस-22 बेहाला से, एस-23 एवं एल-14 ब्री एस प्लेनेड एवं एस-18 हावड़ा से ले सकते हैं. करुणामयी एवं इएम बाई पास क्रासिंग से निक्को पार्क के लिए शटल एस बस की भी सेवा उपलब्ध है.

यों तो पार्क के भीतर ही खाने की अनेक वस्तुएं उपलब्ध हैं, लेकिन शिशु के लिए पानी, फल एवं भोजन आप पार्क के भीतर ले जा सकते हैं.

कलकत्ता पर्यटन के समय साल्ट लेक सेक्टर-4, कलकत्ता में स्थित निक्को पार्क को देखना न भूलें.

इन के अतिरिक्त यहां जैन एवं काली मंदिर, रवींद्र भारती म्यूजियम, नेहरू चिल्ड्रन म्यूजियम, ऐकेडमी आफ फाइन आर्ट, विक्टोरिया मेमोरियल, बेलूर मठ एवं दक्षिणेश्वर काली मंदिर भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं.

कलकत्ता की एक खासियत यहां के हाथ रिकशे हैं, जो अब आप को अन्य शहरों में देखने को नहीं मिलेंगे. बड़े पहियों पर चलने वाले ये रिकशे भीड़भाड़ वाले इलाकों में सब से लोकप्रिय हैं. हो सकता है, आप को इन्हें चलाने वालों पर दया भी आए. ये रिकशे वाले आमतौर पर विश्वसनीय नहीं हैं. न तो आप बिना भाड़ा तय किए इन पर चढ़ें, न इन के शहर दिखाने के झांसे में आएं.



वनस्पति उद्यान में विशालकाय वट वृक्ष की शोभा देखने लायक है. ▲

क्या खरीदें?

कलकत्ता का न्यू मार्केट (जो अब वास्तव में बहुत पुराना हो गया है) खरीदारी का मुख्य केंद्र है. यहां छोटीबड़ी जरूरत की सभी वस्तुएं खरीद भी सकते हैं और बेच भी. कलकत्ता के चौरंगी बाजार से बांकुरा के घोड़े, हाथ से बनी चीजें, डोगरा शिल्प कला से बनी मूर्तियां, कांचा शिल्प से बने कपड़े व बैग एवं सजावट का अन्य सामान भी खरीद सकते हैं.

शांति निकेतन

हावड़ा से 146 किलोमीटर दूर शांति निकेतन अपने नाम के ही अनुरूप रमणीय स्थल है. कलकत्ता जा कर पर्यटक इस शांत स्थली को अवश्य ही देखना चाहेंगे.

नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने 1901 में बोलपुर के नजदीक इस शिक्षण संस्थान की स्थापना की. लेकिन बाद में यह विश्व भारती विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध हुआ. लेकिन 'शांति निकेतन' नाम को अधिक प्रसिद्धि मिली.

इस विश्वविद्यालय को अपनी अलग शैली के कारण अधिक ख्याति मिली. कक्ष की घुटन एवं दीवारों को लांघ कर उन्मुक्त प्राकृतिक वातावरण में ही यहां शिक्षा दी जाती है. खुले आसमान तले, वृक्षों के नीचे, धरती के बिछावन पर पढ़ाते शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य मित्रवत भाव पर्यटकों को भी आकर्षित करता है.

शांति निकेतन के आसपास और भी दर्शनीय स्थल हैं. मेसनजोर, तारापीठ, नलहाटी बक्रेश्वर, कंकालीताल एवं त्रिनिकेतन देखे बिना आप की कलकत्ता यात्रा अधूरी ही



रहेगी.

शांति निकेतन से मात्र 78 किलोमीटर की दूरी पर मयूराक्षी नदी पर बने बांध के लिए मेसनजोर प्रसिद्ध है. शांति निकेतन के पास ही में मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित त्रिनिकेतन भी रमणीक स्थल है. यहां घूमने के साथसाथ आप चमड़े का सामान, बुने हुए तथा बाटिक छपाई वाले वस्त्रों एवं मिट्टी की बनी हुई चीजों को खरीद सकते हैं.

शांतिनिकेतन
कहां ठहरें?

जिला परिषद का डाक बंगला.
रेल विभाग का विश्रामगृह.
शांति निकेतन पर्यटक लाज.
अंतर्राष्ट्रीय अतिथिशाला.
विश्वविद्यालय की अतिथिशाला.
लोक निर्माण विभाग का निरीक्षण भवन.
वन विभाग का विश्रामगृह.

दीघा

कलकत्ता के दक्षिणपूर्व में 185 किलोमीटर की दूरी पर बंगाल की खाड़ी के पास उड़ीसा की सीमा के नजदीक दीघा एक रमणीक समुद्रतट है. सूर्य की सतरंगी किरणें जब यहां के समुद्र की लहरों पर पड़ती हैं तो पर्यटक इस मनमोहक दृश्य को बस देखते ही रह जाते हैं.

सूर्य का उज्ज्वल मुख एवं बालू का महल देख कर आप प्रफुल्लित हो उठेंगे.

वारेन हेस्टिंग्स ने बीरकूल परगना के 'हेल्थ सेनिटोरियम' के विषय में लिखा था, जो आज 'दीघा' के नाम से जाना जाता है. यहां तटों पर घूमतेघूमते साफ, स्वच्छ एवं ताजी समुद्री हवा में जब आप सांस लेते हैं तो वह 'शरीर को ही नहीं, वरन मन को' भी स्वस्थ करती है.

यहां के खूबसूरत दृश्यों को निहारने के साथसाथ यहां तैराकी के शौकीन पर्यटक अपना तैरने का शौक भी पूरा कर सकते हैं. समुद्र की उठतीगिरती लहरें तैरने के लिए मौन आमंत्रण देती सी प्रतीत होती हैं.

सी.एस.टी.सी. द्वारा प्रतिदिन कलकत्ता एवं दीघा के बीच बसें चलाई जाती हैं. केवल 6 घंटे की दूरी तय कर आप यहां पहुंच सकते हैं.

इस स्थान के साथसाथ केवल कुछ ही दूरी पर स्थित अन्य पर्यटन स्थलों को भी देख सकते हैं. चंदनेश्वर शिव मंदिर दीघा से मात्र 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. संकरपुर, कपालकुंडला मंदिर, अमरावती झील इत्यादि देखने योग्य स्थल हैं.

हुगली नदी की पूर्व दिशा में कलकत्ता से 132 किलोमीटर की दूरी पर एक और समुद्र तट बक्काली है. यह करासरगंज के नाम से भी जाना जाता है. यहां से जंबूद्वीप घूमने के लिए आप नावें ले सकते हैं.

दीघा
कहां ठहरें?

टूरिस्ट लाज, फोन : 54/5.
टूरिस्ट काटेज.
यूथ होस्टल.

इस के अतिरिक्त दीघा में बोर्डिंग हाउस भी हैं.

भुवनेश्वर क्षेत्र

भुवनेश्वर

उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर को पूर्व भारत का रत्नजड़ित आभूषण कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. भारत में भुवनेश्वर 'मंदिरों का शहर' नाम से विख्यात है. कई सदियों पहले यहां 1,000 से भी अधिक मंदिर थे, लेकिन अब इन की संख्या में कमी आई है. तथापि नागर शैली में निर्मित इन मंदिरों की शिल्पकला बेजोड़ है. मंदिरों के अतिरिक्त तालाब

और झील भी इस शहर के सौंदर्य की वृद्धि में सहायक हैं.

अपनी ऐतिहासिकता, वास्तुकला एवं आध्यात्मिकता के कारण भुवनेश्वर अवश्य ही देखने और सराहे जाने योग्य शहर है.

कब जाएं?

अक्तूबर से मार्च तक का समय भुवनेश्वर पर्यटन के लिए अति उत्तम है. गरमियों के लिए तो हलके सूती वस्त्र एवं सर्दियों के लिए ऊनी वस्त्र ले जाना उपयुक्त रहता है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : दिल्ली, कलकत्ता, हैदराबाद, नागपुर एवं मद्रास जैसे मुख्य नगरों से इंडियन एअरलाइंस की उड़ानें उपलब्ध हैं.

रेल मार्ग : दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, सिकंदराबाद, तिरुपति जैसे प्रमुख नगरों से भुवनेश्वर रेल मार्ग द्वारा भी जुड़ा है. भुवनेश्वर यात्रा के दौरान ही आप कोणार्क की यात्रा का कार्यक्रम भी बना सकते हैं. कोणार्क का निकटतम रेलवे स्टेशन भुवनेश्वर है.

सड़क मार्ग : प्राइवेट ट्रेवल एजेंसियों की ओर से एवं उड़ीसा राज्य सड़क यात्रा निगम की ओर से भुवनेश्वर के लिए बसें उपलब्ध हैं.

क्या देखें?

लिंगराज मंदिर : 11वीं सदी में निर्मित यह मंदिर त्रिभुवनेश्वर या अन्य शब्दों में तीनों संसार के 'ईश्वर' को समर्पित है. इस मंदिर की शिल्पकला की प्रशंसा तो अवर्णनीय है. मंदिर में ग्रेनाइट पत्थर का बना 44.8 मीटर लंबा विशाल शिवलिंग आकर्षण का मुख्य केंद्रबिंदु है. मंदिर में अप्रैल मास में हर वर्ष रथ त्योहार का मनाया जाना इस मंदिर के आकर्षण में और भी वृद्धि करता है.

मुक्तेश्वर, राजारानी, ब्रह्मेश्वर, केदारगौरी, अनंत वासुदेव आदि मंदिरों को भी देखा जा सकता है.

नंदन कानन पार्क : भुवनेश्वर से मात्र 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित भारत का अति उत्तम नंदन कानन पार्क है. इस को अधिक प्रसिद्धि सफेद एवं शाही बंगाली बाघों के कारण मिली. यहां बाघों को स्वच्छंद वातावरण में अपने प्राकृतिक रूप में विचरण करते हुए देखा जा सकता है. यह क्षेत्र सफेद बाघों एवं जानवरों की नस्लें तैयार करने के लिए भी प्रसिद्ध है. यहां पर रंगबिरंगे दुर्लभ तोतों की प्रजातियां भी देखी जा सकती हैं. आवाजें निकालता बंदर, करतब दिखाता गिब्बन, चिंपांजी, सफेद शेर, भालू, भारतीय अजगर एवं नाग आकर्षण के केंद्र हैं.

प्रमुख शहरों से दूरी

कलकत्ता – 480 किलोमीटर
दिल्ली – 1,745 किलोमीटर
दुर्गापुर – 656 किलोमीटर
लखनऊ – 1,266 किलोमीटर
मद्रास – 1,225 किलोमीटर
त्रिवेंद्रम – 2,015 किलोमीटर
रायपुर – 553 किलोमीटर
रांची – 583 किलोमीटर
विशाखापट्नम – 426 किलोमीटर
बंबई – 1,691 किलोमीटर
बंगलौर – 1,430 किलोमीटर
अहमदाबाद – 1,829 किलोमीटर

भुवनेश्वर : प्रमुख उड़ानें

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया
दिल्ली	2,4,6	आईसी 477	12.10	3,060/-
	1,3,5,7	आईसी 497	10.40	
कलकत्ता	3,5,7	आईसी 769	16.00	1,163/-
	2,4	आईसी 544	10.45	
हैदराबाद	3,5,7	आईसी 770	16.30.	2,295/-
नागपुर	3,5,7	आईसी 770	18.20	1,789/-

भुवनेश्वर : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
कलकत्ता	कोरोमंडल एक्सप्रेस	14.25
	मद्रास मेल	04.25
	हावड़ातिरुपति एक्सप्रेस	23.20
	हावड़ाभुवनेश्वर धौली एक्सप्रेस	06.10
मद्रास	हावड़ा मेल	22.30
हैदराबाद	कोणार्क एक्सप्रेस	13.40
	ईस्टकोस्ट एक्सप्रेस	06.45
ह. निजामुद्दीन	कलिंगउत्कल एक्सप्रेस	12.50
नई दिल्ली	नीलांचल एक्सप्रेस	06.35

बिंदुसागर झील : पुराने भुवनेश्वर में स्थित बिंदुसागर सब से बड़ी झील है. यह लिंगराज मंदिर के उत्तर में स्थित है. 1,300 फुट लंबी व 700 फुट चौड़ी इस झील के चारों ओर पत्थर लगे हुए हैं. इस झील की खूबसूरती तो लाजवाब है.

शांति स्तूप : भुवनेश्वर से मात्र 8 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिणपूर्व दिशा में स्थित, धौली पहाड़ी पर शांति स्तूप बना है. इस के चारों ओर महात्मा बुद्ध की मूर्तियां लगी हैं. ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस स्थान का महत्त्व है. चूंकि इस पहाड़ी के पास ही वह युद्ध हुआ था, जिस के बाद सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ. धौली शांति स्तूप आधुनिक वास्तुकला, बौद्ध परंपरा तथा आदर्शवाद का सम्मिश्रण है. धौलगिरि के शिखर से सारा शहर दिखाई पड़ता है.

गुफाएं : भुवनेश्वर से 5 किलोमीटर दूर पश्चिमोत्तर भाग में 2 पहाड़ियां हैं, खंडगिरि, जिस की ऊंचाई 133 फुट है और उदयगिरि, जिस की



प्राचीन लिंगराज मंदिर : यहां ग्रेनाइट पत्थर का बना विशाल शिवलिंग आकर्षण का मुख्य केंद्र है.

भुवनेश्वर

कहां ठहरें :

होटल

होटल सफारी इंटरनेशनल, 721, रसूलगढ़, फोन : 53443, 54240.

अनारकली प्राइवेट लिमिटेड, 110, खारवेल नगर यूनिट III, फोन : 54031.

राजपति, 77, बुद्ध नगर, फोन : 51893.

होटल कलिंग अशोक, गौतम नगर, फोन : 53318.

होटल स्वस्ति प्राइवेट लिमिटेड, 103, जनपथ, फोन : 404178.

होटल नूपुर, फोन : 54254.

होटल दि ओबेराय, नयापल्ली, फोन : 56116.

द केनिल वर्थ (कोणार्क), 86/ए-1, गौतम नगर, फोन : 54330, 56543.

अन्य

पंथ निवास, फोन : 54514.

सर्किट हाउस, फोन : 402288.

धर्मशालाएं

हरगोविंद राय मथुरादास डालमिया भिवानी वाले की धर्मशाला, बिंदु सरोवर के पास.

रायबहादुर हजारीमल दुदवा वाले की धर्मशाला, बिंदु सरोवर के पास.

ऊंचाई 118 फुट है. इन गुफाओं तक पहुंचने के लिए ढलवां रास्ता है, लेकिन सीढ़ियों के माध्यम से भी पहुंचा जा सकता है. यहां स्थित जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की विशेषता यह है कि वे केवल एक ही पत्थर को काट कर बनाई गई हैं.

क्या खरीदें :

रेशमी और सूती हैंडलूम साड़ियां पहन कर जब आप घूमने जाएंगी तो निसंदेह अन्य व्यक्तियों की आंखें आप की मूक तारीफ करती महसूस होंगी.

इस के अतिरिक्त साज-सज्जा हेतु पाषाण शिल्प की नक्काशी वाली वस्तुएं, पीतल से बना साजसज्जा का सामान, वहां की संस्कृति पर आधारित कलापूर्ण पेंटिंग्स भी खरीद कर अपनी यात्रा को यादगार बना सकते हैं. कैपिटल मार्केट भुवनेश्वर का मुख्य शापिंग सेंटर है. इस के अतिरिक्त इंपोरियम उत्कलिका (उड़ीसा सरकार का इंपोरियम) से भी आप खरीदारी कर सकते हैं.

कोणार्क

भुवनेश्वर से मात्र 64 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कोणार्क सूर्य मंदिर के कारण प्रसिद्ध है. कोणार्क के रेतीले समुद्री तट की खामोशी भी अपना सौंदर्य विभिन्न कोणों से प्रकट करती प्रतीत होती है. तैराकी प्रेमी पर्यटकों को यहां के समुद्र में तैर कर असीम आनंद प्राप्त होता है.



पत्थरों को काट कर बनाई गई उदयगिरि की दर्शनीय गुफाएं. ▲

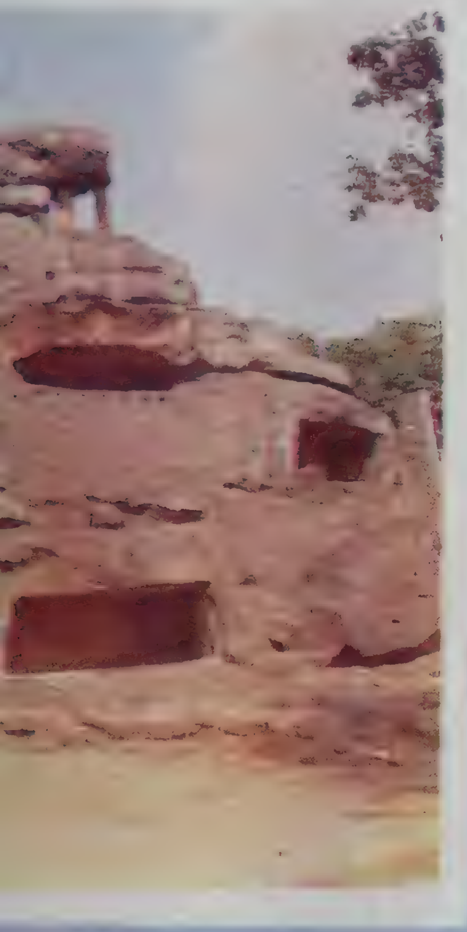
कोणार्क, भुवनेश्वर एवं पुरी से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है. कोणार्क के निकटतम रेलवे स्टेशन भुवनेश्वर और पुरी हैं. इसलिए पर्यटकों को कोणार्क पहुंचने के लिए पहले भुवनेश्वर या पुरी पहुंचना होगा.

[illegible]

सूर्य मंदिर : 'आईने अकबरी' के अनुसार, सूर्य मंदिर

9वीं सदी में केसरी वंश के किसी राजा ने बनवाया था. बाद में गंगवंशीय राजा नरेशसिंह 'देव' (प्रथम) ने (1238-64) अपने विजय स्मारक के रूप में इस का जीर्णोद्धार कराया था.

इस मंदिर का निर्माण सूर्य के काल्पनिक रथ के रूप में किया गया है. इस के 24 अलंकृत पहिए भारतीय 12 महीनों के पखवाड़ों की ओर संकेत करते हैं. इन पहियों में लगी 8-8 तीलियां दिन के 8 पहरों को दर्शाती हैं. जगती के अग्रभाग में बने 7 घोड़ों को सप्ताह के 7 दिवसों का प्रतीक माना जाता है.



इस सुंदर रचना को 12,000 कुशल कारीगरों ने 12 वर्षों के परिश्रम से बनाया था. तत्कालीन उड़ीसा राज्य के इन 12 वर्षों की समग्र आय इस मंदिर के निर्माण में व्यय हो गई थी. एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि विशालकाय मंदिर का निर्माण पत्थरों से कैसे हुआ, जबकि कोणार्क में तो क्या, वहां दूरदूर तक कोई पर्वत नहीं दिखाई पड़ता है.

चौकोर परकोटे से घिरे हुए इस मंदिर के 3 ओर ऊंचेऊंचे प्रवेश द्वार हैं. मुख्य द्वार पूर्व दिशा में था, जिस के ठीक सामने समुद्र से सूर्योदय होता है.

संपूर्ण सूर्य मंदिर मुख्यतः 3 भागों में विभाजित है. नाट

कोणार्क
कहां ठहरें?

यों तो आप पुरी या भुवनेश्वर में रह कर भी कोणार्क देखने जा सकते हैं. तथापि आप के ठहरने की यहां समुचित व्यवस्था है. पर्यटन विभाग के ट्रैवलर्स लाज, टूरिस्ट बंगला एवं निरीक्षण भवन में ठहरा जा सकता है. लेकिन इन में ठहरने के लिए पहले आरक्षण करा लेना चाहिए. इस के अतिरिक्त पंथनिवास टूरिस्ट बंगला (फोन : 21) एवं लावण्य लाज इत्यादि में भी ठहरने की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध हैं.

मंडप, जगमोहन मंडप और देऊल (गर्भगृह).

जगती के नीचे विभिन्न मुद्राओं में हाथियों की आकृतियां बनी हैं. ऊपरी भाग में देव, किन्नर, गंधर्व, अप्सराओं आदि की अलंकृत कलाकृतियों के साथ नरनारी की कामासक्त

कोणार्क का भव्य सूर्य मंदिर शिल्पकला में अद्वितीय है. ▼



मुद्राएं भी अंकित हैं. मूर्तियों की शिल्पकला अनूठी है. इस मंदिर में विभिन्न मुद्राओं में नरनारी की मूर्तियां अनायास ही खजुराहो की याद दिला जाती हैं.

समुद्र तट : सूर्य मंदिर से मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित समुद्र तट विश्व का सुंदरतम समुद्र तट है. समुद्र की उठतीगिरती लहरों को देख कर असीम आनंद की प्राप्ति होती है. साफ रेत पर एकदूसरे को पकड़ने की होड़ में भागते पर्यटकों को अपने बचपन के मधुर दिनों का स्मरण हो आता है. घूमने के साथसाथ यह एक पिकनिक स्थल भी है.

संग्रहालय : सूर्य मंदिर के पास ही में स्थित संग्रहालय भी देखने का स्थान है. कोणार्क की कुछ दुर्लभ कलाकृतियों का यह संग्रह देखने के पश्चात अवश्य ही सराहा जाएगा.

क्या खरीदें

साजसज्जा की वस्तुएं कोणार्क से खरीद कर आप इस यात्रा को सदैव के लिए स्मरणीय बना सकते हैं.

पुरी

भुवनेश्वर पर्यटन के दौरान आप पुरी जाने का कार्यक्रम भी बना सकते हैं. बंगाल की खाड़ी के तट पर बसा पुरी भुवनेश्वर से मात्र 60 किलोमीटर की दूरी पर है.

पुरी भारत के 4 प्रसिद्ध धामों में एक है. मंदिरों की वास्तुकला को तो पर्यटक एकटक निहारता ही रहता है. जगन्नाथ मंदिर के कारण यह स्थान 'जगन्नाथ पुरी' के नाम से भी जाना जाता है. यहां की प्राकृतिक सुंदरता का भी जवाब नहीं. समुद्री तट पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करता है.

क्या देखें

जगन्नाथ मंदिर : पुरी का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर काफी बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है. 214 फुट ऊंचे इस मंदिर का निर्माण मेटामार्फिक खोंडोलाइट नामक काले पत्थरों को तराश कर किया गया है.

विश्वप्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर जिसे खोंडोलाइट नामक काले पत्थर को खूबसूरती से तराश कर बनाया गया है.





पुरी समुद्र तट : यहां सूर्योदय के समय जल में अठखेलियां करती किरणों का इंद्रधनुषी सौंदर्य पर्यटकों को रोमांचित कर देता है.

देशविदेश में प्रसिद्ध इस मंदिर की शिल्पकला देख कर शिल्पकारों के परिश्रम की प्रशंसा करनी ही पड़ती है.

मंदिर में स्थापित जगन्नाथ, बलभद्र एवं सुभद्रा की मूर्तियां चंदन की हैं.

हर रोज एक हजार से भी अधिक व्यक्तियों का भोजन जिस रसोईघर में बनाया जाता है, उस के लिए संभवतः ऐसा कहा जाता है कि यह भारत का सब से बड़ा रसोईघर है. भोजन को 'महाप्रसाद' समझ कर ग्रहण किया जाता है.

श्री जगन्नाथ के सम्मान में आयोजित 'रथयात्रा' की तो अपनी ही शैली है. 'कारपर्व' के नाम से भी जाना जाता यह पर्व जगन्नाथ की एक शोभा यात्रा है. इस खूबसूरत मंदिर के आकार के रथ को शानदार और भव्य तरीके से सजाया जाता है, जिस में जगन्नाथ, भाई बलभद्र तथा बहन सुभद्रा की विभिन्न मूर्तियां प्रतिष्ठित रहती हैं.

मंदिर के पर्यटन के साथ-साथ नजदीक ही स्थित दरिया महावीर, टोटा गोपीनाथ, लोकनाथ आदि अन्य स्थानों का भी आप भ्रमण कर सकते हैं.

लेकिन मंदिर भ्रमण के दौरान कुछ बातों का अवश्य ध्यान रखें. यहां के पंडों आदि से विशेषतौर पर सावधान रहें. आप के मना करने के बाद भी आप के गले में वे फूलों की माला डाल सकते हैं और उस से भी अधिक उस माला की कीमत वसूल करने के भरपूर प्रयत्न कर सकते हैं.

लेकिन दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ देख कर अवश्य ही उन की निष्ठा को सराहा जाना चाहिए. लेकिन भगवान जगन्नाथ के दर्शनों के लिए भीड़ के समूह को यदि 'अंधभक्तों' की संज्ञा दी जाए तो गलत नहीं होगा. जब 5 टन वजनी पत्थर गुंडिचा मंदिर की छत से फिसलने से 'भगवान' जगन्नाथ अपने मणियुक्त सिंहासन की रक्षा नहीं कर पाए तो तथाकथित अपने भक्तों की क्या रक्षा करेंगे?

समुद्रतट : पुरी का समुद्र तट स्वयं में प्रकृति का अनुपम सौंदर्य समेटे है. सूर्योदय के समय झिलमिलाती किरणें जब पानी पर पड़ती हैं तो पर्यटकों को बिना बरखा के ही इंद्रधनुष का

पुरी

कहां ठहरें?

होटल

होटल सोनाली, सी बीच, फोन : 2567, 2877.

सागरिका होटल, बीच रोड, फोन : 2169.

होटल होलिडे रिसार्ट, सैंडी विलेज, चक्रतीर्थ रोड, फोन : 2440, 2430.

तोशाली सैंड्स, कोणार्क मैरीन ड्राइव, फोन : 2888.

होटल प्राची, स्वर्ग द्वार, फोन : 2638.

पुरी होटल, बीच रोड, फोन : 2169.

होटल नीलांचल अशोक, राजभवन के निकट, वी.आई.पी. रोड, फोन : 2968—80.

धर्मशालाएं

धनजी मूलजी की धर्मशाला, दलवेदी कोला.

कन्हैयालाल बांगला.

देवी प्रसाद दुदवा वाले की धर्मशाला.

बीकानेर वालों की धर्मशाला, दलवेदी कोना.

तनसुखराय गनपतराय खेमका चूरू वाले की धर्मशाला.

डोल मंडपसाही, कचहरी रोड.

रामचंद्र गोयनका की धर्मशाला, बड़ा रास्ता.

आभास होता है. यहां के नमकीन पानी में अपने पैर डुबो कर जब आप बैठेंगे तो आप की थकन को भी हर लेगा. गरमी के दिनों में हवा के मीठेमीठे झोंकों एवं सर्दियों में गुनगुनी धूप का आनंद उठाया जा सकता है.

चिलका झील : इस झील में 160 प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं. नौका विहार की सुविधा के साथसाथ यहां मछलियां पकड़ने की भी सुविधा है. यह पुरी के दक्षिणपश्चिम में स्थित है.

बाली घाट : पुरी से 7 किलोमीटर की दूरी पर बाली घाट पिकनिक स्थल भी है. इस समुद्रतट पर हिरनों और रंग-बिरंगे पक्षियों को देखना भी बड़ा सुखद लगता है.

क्या खरीदें?

उड़ीसा के विशेष चांदी तार के आभूषण, सूती, रेशमी कपड़े यहां की प्रसिद्ध वस्तुएं हैं. साजसज्जा हेतु काठ के रंगीन खिलौने, सीपियों से बनी वस्तुएं, सीप स्टोन को काट कर बनाई गई मूर्तियां भी अपना अलग आकर्षण रखती हैं. यहां की विशेष दस्तकारी का परिचय देती हुई तिनकों की चटाइयां, टोकरियां आदि भी आप खरीद सकते हैं.

ये वस्तुएं हस्तशिल्प इंपोरियम तथा मुख्य बाजार से खरीदी जा सकती हैं.

कटक

कटक, भुवनेश्वर से मात्र 29 किलोमीटर की दूरी पर उड़ीसा के पूर्वी समुद्री तट पर स्थित है. बस, टैक्सी द्वारा आप आसानी से यहां पहुंच सकते हैं.

स्मारकों एवं उत्कृष्ट हस्तकला के कारण कटक शहर ने पर्यटकों में अपनी खासी पहचान कायम की है.

तांबे का कार्य, टाई एंड डाई, पत्थर की मूर्तियां एवं नक्काशी के कारण कटक की अपनी ही विशिष्टता है. चांदी की जरदोजी जैसे अनुपम सृजन के कारण कटक संपूर्ण संसार में प्रसिद्ध है.

विभिन्न धार्मिक मतों के प्राचीन स्मारकों को सुरक्षित रख कटक अपने भव्य अतीत की यादों को आज भी जीवित रखे हुए है.

केवल ऐतिहासिकता या हस्तकला के कारण ही यह विख्यात नहीं है, बल्कि प्रकृति की असीम अनुकंपा के कारण भी यह शहर दर्शनीय है.

उड़ीसा की मुख्य नदियां– महानदी, वैतरणी, ब्राह्मनी एवं उन की सहायक नदियां इस क्षेत्र को सींच कर उपजाऊ बनाती आगे बढ़ती जाती हैं. प्रकृति की तबाही या प्रकोप के बावजूद भी फसल को काफी मात्रा में पैदा करना मानो उन की मुख्य शर्त हो.

इसलिए कोई आश्चर्य नहीं, यदि इस क्षेत्र को उड़ीसा का उपजाऊ प्रदेश या अन्नागार कहा जाए.

घने वृक्षों की ठंडी छांव में पर्यटक राहत अनुभव करता है. धान के खेतों की हरियाली आंखों को बेहद प्रिय लगती है.

कटक शहर में कटक टाउन, बाराबत्ती किला, कदम-ए-रसूल, परमाहंस दर्शनीय स्थल हैं. यों तो आप भुवनेश्वर रह कर भी कटक एवं वहां के अन्य पर्यटन स्थल देख सकते हैं, यद्यपि यहां आप के ठहरने के लिए विभिन्न स्थान हैं.

कटक
कहां ठहरें?

होटल

होटल अंबिका, कालिज स्क्वायर, फोन : 21437.
होटल वीना, फोन : 24326.
होटल मोनालिसा, फोन : 25109.
होटल सागर, फोन : 22838.
होटल अकबरी, फोन : 25242/25284.
बांबे होटल, फोन : 20494.
होटल आदर्शा, फोन : 25498.
होटल राम्सी, फोन : 25622.

अन्य

निरीक्षण बंगला.
सर्किट हाउस.
रेलवे रिटायरिंग रूम.

क्या खरीदें?

उड़ीसा में कटक खरीदारी का श्रेष्ठ केंद्र है. ऊनी, सिल्क एवं सूती वस्त्रों, जरदोजी, चांदी का उम्दा काम, तांबे की बनी साजसज्जा की वस्तुओं के लिए यह शहर प्रसिद्ध है. यहां की यादें सदैव तरोताजा रहें या अकसर आप को यहां की याद आती रहे, इस उद्देश्य हेतु कटक शहर से इन्हें लाना भूलें नहीं.

हैदराबाद

निजाम की राजधानी हैदराबाद अब आंध्र प्रदेश की राजधानी है. हैदराबाद की मुख्य पहचान 'चार मीनारों वाला शहर' से है.

इतिहास, संस्कृति, मनोरंजन एवं उत्कृष्ट कला का शहर है हैदराबाद. इस शहर को उत्तरी व दक्षिणी भारत का

'गेट वे' कहा जाता है. देश का यह 5वां सब से बड़ा शहर है.

वास्तुकला के बेजोड़ नमूनों को दर्शाती यहां की इमारतें मध्य कालीन भारतीय, पारसी और मुगल कालीन स्थापत्य कला के संगम का सौंदर्य प्रस्तुत करती हैं. इस शहर की स्थापना 16वीं शताब्दी के अंत में कुतुबशाही साम्राज्य के मुहम्मदअली कुतुबशाह ने 'भागमती' नामक एक नर्तकी के प्रति अपने 'प्रेम स्मारक' के रूप में की थी. लेकिन इस नाम का परिवर्तन 'हैदर महल' में तब हुआ, जब नर्तकी महारानी बन कर राजभवन में आ गई. लेकिन नाम परिवर्तन का दौर अभी थमा नहीं था, क्योंकि कुतुबशाह के द्वारा यह नाम भी बदल कर 'हैदराबाद' हो गया.

व्यापार, उद्योग, अद्भुत शिल्पकला एवं बाजारों की चहलपहल की विशेषताओं वाला यह शहर मात्र एक शहर नहीं है, जीवन को जिंदादिली से जीने वाले संकल्पों का शहर है, सोच, व्यक्तित्व को अर्थपूर्ण दृष्टि प्रदान करने वाला शहर है.

कब जाएं?

जुलाई से मार्च तक पर्यटन के अनुकूल मौसम रहता है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, बंगलौर, तिरुपति एवं विशाखापट्टनम से हैदराबाद के लिए इंडियन एअरलाइंस के वायुयान प्रतिदिन आतेजाते हैं. बेगमपेट हवाई अड्डे से शहर के विभिन्न भागों के पर्यटन हेतु आटोरिकशा एवं टूरिस्ट टैक्सियां उपलब्ध हैं.

वैसे ये विमान सेवाएं समय पर अपना शेड्यूल बदल सकती हैं. इस के लिए स्थानीय समाचार पत्रों व पर्यटक विकास निगम से पूछताछ की जा सकती है.

रेल मार्ग : हैदराबाद का मुख्य रेलवे स्टेशन सिकंदराबाद है. रेल द्वारा भी हैदराबाद भारत के प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है. स्टेशन से टैक्सी, बसें एवं आटोरिकशा शहर के अन्य भागों के पर्यटन हेतु सुलभ हैं. दो अन्य स्टेशन हैं, नामपल्ली व काचीगुड़ा, ये पुराने हैदराबाद शहर में स्थित हैं.

सड़क मार्ग : आसपास



मेडिकल कालिज की आकर्षक इमारत : हैदराबादी स्थापत्य कला का आधुनिक रूप.

प्रमुख नगरों से दूरी

आगरा–1,253 किलोमीटर
बंगलौर–566 किलोमीटर
भुवनेश्वर–1,063 किलोमीटर
बंबई–739 किलोमीटर
कलकत्ता–1,516 किलोमीटर
दिल्ली–1,453 किलोमीटर
मद्रास–704 किलोमीटर
पांडिचेरी–866 किलोमीटर
तिरुपति–651 किलोमीटर
वाराणसी–1,197 किलोमीटर
विजयवाड़ा–271 किलोमीटर
विशाखापट्टनम–637 कि.मी.

के नगरों एवं राज्यों से यहां नियमित बसें आतीजाती रहती हैं

क्या देखें?

चारमीनार : हैदराबाद का मुख्य आकर्षण है, चारमीनार. जिस प्रकार आगरा में शहंशाह ने अपनी बेगम मुमताज की याद में ताजमहल बनवा कर सारी दुनिया को अपनी मुहब्बत की निशानी दी, ठीक उसी प्रकार 'चारमीनार' को 1591 में मुहम्मद कुतुबशाह ने अपनी हिंदू पत्नी भागमती के सम्मान में बनवाया था. इस प्रकार यह स्मारक हिंदूमुसलिम सौहार्द के रूप में भी याद किया जाता है. लेकिन कुछ लोगों के अनुसार 1591 में चारमीनार को प्लेग की महामारी शहर के अंदर फैलने से रोकने पर विजय स्मारक के रूप में निर्मित कराया गया था. कोई भी धारणा हो, चारमीनार हैदराबाद का मुख्य पर्यटन स्थल है, इस शहर की धड़कन है.

एक रक्षक की भांति यह नगर के बीचोबीच स्थित है. 4 मीनारों वाली यह इमारत 53 मीटर ऊंची है. व्यस्त बाजारों से घिरी इस मीनार से पहले हैदराबाद शहर को देखना संभव था लेकिन अब मीनार पर चढ़ना मना है.

ताजिया पद्धति पर बनी यह अनूठी इमारत विभिन्न प्रकार के कमानीदार दरवाजों तथा 180 फुट ऊंची 4 मीनारों से सुसज्जित है. इस की दूसरी मंजिल में छोटी सी मसजिद भी है.

बिड़ला तारामंडल : यह नौबत पहाड़ी पर स्थित है. यह भारत के अत्यधिक उन्नत तकनीक से सुसज्जित आधुनिक तारामंडलों में से है. आकाश के ग्रहनक्षत्रों की जानकारी यहां पर उपलब्ध विशेष यंत्र के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है. सौरमंडल एवं अंतरिक्ष के विषय में संपूर्ण जानकारी धरा पर बैठेबैठे ही आधुनिक मशीनों द्वारा सहजता से ही मिल सकती है.

गोलकुंडा का दुर्ग : हैदराबाद का एक अन्य प्रमुख आकर्षण है, गोलकुंडा का दुर्ग. गोलकुंडा में कभी विश्वप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा जगमगाया करता

हैदराबाद : प्रमुख उड़ानें

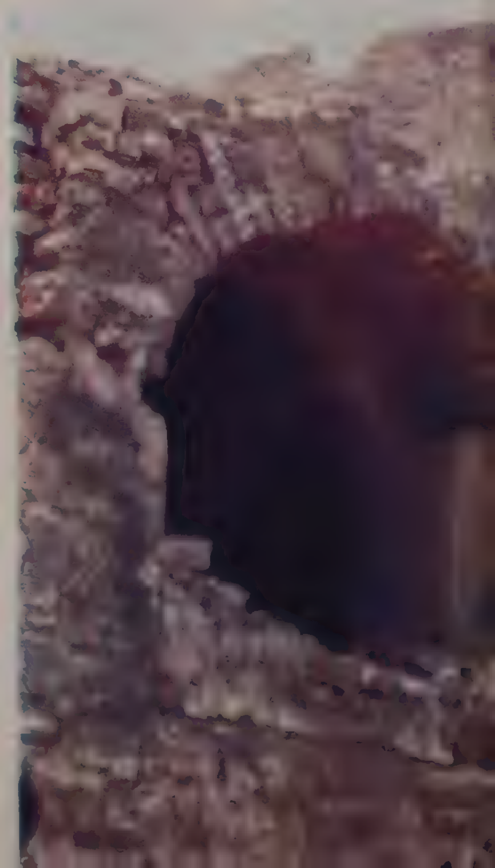
इंडियन एअरलाइंस

कहां से	*उड़ान संख्या*	*प्रस्थान*	*किराया (साधारण)*
बंगलौर	आईसी 915	08.30	1,404/-
	आईसी 515	18.30	
दिल्ली	आईसी 940	09.40	2,974/-
	आईसी 839	16.45	
बंबई	आईसी 920	06.15	1,789/-
	आईसी 928	13.25	
	आईसी 617	18.30	
कलकत्ता	आईसी 777	16.20	3,187/-
	आईसी 769	16.00	
मद्रास	आईसी 945	08.45	1,427/-
	आईसी 947	19.00	
नागपुर	आईसी 769	19.50	1,370/-
विशाखा-पट्टनम	आईसी 562	15.00	1,462/-

मोदी लुफ्त

बंगलौर	एम 9 505	15.55	–
दिल्ली	एम 9 521	06.00	–
मद्रास	एम 9 522	10.05	–

गोलकुंडा दुर्ग के खंडहर जहां कभी विश्वप्रसिद्ध कोहिनूर हीरा जगमगाता था.



हैदराबाद : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
जयपुर	7569 एक्सप्रेस	15.05
तिरुपति	वेंकटाद्रि एक्सप्रेस	14.40
बंबई	मीनार एक्सप्रेस	21.55
	बंबईहैदराबाद एक्सप्रेस	12.35
बंगलौर	बंगलौरहैदराबाद एक्सप्रेस	17.05
भुवनेश्वर	कोणार्क एक्सप्रेस	18.40
विशाखा-पट्टनम	गोदावरी एक्सप्रेस	16.00
	कृष्णा एक्सप्रेस	08.15
	विशाखा एक्सप्रेस	19.00
दिल्ली	आंध्र एक्सप्रेस	17.50
	ह. निजामुद्दीनहैदराबाद एक्सप्रेस	20.30
मद्रास	मद्रासहैदराबाद एक्सप्रेस	16.00

था. इस किले की विशेषता यह है कि यहां के मुख्य प्रवेश द्वार पर गुबंद के नीचे खड़े हो कर ताली बजाने से उस की आवाज को किले की लगभग 120 मीटर की ऊंचाई पर सुना जा सकता है. दुर्ग को चारों ओर से घेरने वाली दीवार में 8 द्वार हैं. देशी पद्धति से मिट्टी के बने पाइपों तथा फारसी पहियों की सहायता से पानी महलों के अंदर ऊंचाई पर पहुंचता था. छत पर बने बागबगीचों की सिंचाई का प्रबंध भी इसी भांति किया जाता था. किले के अंदर वाला हिसार फाटक, बारूद-खाना, हरम, दाद महल, तारा-मती मसजिद में घूमा जा सकता है.

मक्का मसजिद : चार-



हैदराबाद

कहां ठहरें?

होटल

होटल द्वारका, लकड़ी का पुल, राजभवन रोड, फोन : 237921. [स.]

होटल डेकन कांटीनेंटल, सर रोनाल्ड रौस रोड, फोन : 840981. [म.]

ताजमहल होटल, आबिद रोड, फोन : 237988. [स.]

होटल बसेरा, 9-1—167/168, एस.डी.रोड, फोन : 823200. [म.]

होटल जय इंटरनेशनल, पो. बाक्स नं. 264, आबिड्स, फोन : 232929. [म.]

राजधानी होटल्स प्रा.लि., 15-1—503, सिद्दी अंबर बाजार, फोन : 557571. [स.]

होटल गोलकुंडा, 10-1—124, मसब टैंक, फोन : 225123. [उ.]

होटल क्वालिटी इन, ग्रीन पार्क, 7-1—26 अमीर पेट, फोन : 291919. [उ.]

होटल वाइसराय, टैंक बंद रोड, फोन : 618383. [उ.]

होटल काकातिया, 5-4—435, स्टेशन रोड, नामपल्ली, फोन : 40106. [म.]

होटल अन्नपूर्णा, नामपल्ली स्टेशन रोड, फोन : 557931. [म.]

होटल कामथ, 4-7—146, ए.सी. गार्ड्स, फोन : 232225. [स.]

होटल अशोक, लकड़ी का पुल, 6-1—70, फोन : 230105. [म.]

होटल भास्कर पैलेस, 6-3—248/2, रोड नं. 1, बंजारा हिल्स, फोन : 226040. [उ.]

होटल नागार्जुन, 3-6—356/358, बशीरबाग, फोन : 237201. [म.]

दि कृष्णा ओबेराय, रोड नं. 1, बनजारा हिल्स, फोन : 222121. [उ.]
गेटवे होटल आफ बनजारा हिल, रोड नं. 1, बनजारा हिल्स, फोन : 222222. [उ.]
होटल एमराल्ड प्रा.लि., चिराग अली लेन, फोन : 237835. [म.]
होटल संपूर्ण इंटरनेशनल, मुकरम जाही रोड, फोन : 40165. [म.]
होटल एंबेसडर, 1-7—27, एस.डी.रोड, फोन : 843763. [स.]
होटल राजमाता प्रा.लि. 5-8—230, नामपल्ली, फोन : 243222. [स.]
होटल असरानी इंटरनेशनल, 1-7—179, एम.जी. रोड, सिकंदराबाद, फोन : 842267. [म.]
क्लब व्यू होटल, पी.एल.—30 वैलिंगटन रोड, पिकिट, सिकंदराबाद, फोन : 845965. [म.]
अन्य
रेलवे रिटायरिंग रूम.
वाई एम.सी.ए. के कमरे मध्य श्रेणी में अच्छे हैं.

मीनार के पश्चिम में थोड़ी ही दूरी पर यह बनी है. दक्षिण भारत की यह सब से बड़ी मसजिद है. इस का निर्माण शुरू तो कुतुबशाही सुलतानों ने करवाया था. लेकिन पूर्ण निर्माण 1694 में बादशाह औरंगजेब ने करवाया. कहा जाता है कि इस मसजिद का नाम मक्का से लाई हुई उस ईंट पर पड़ा, जो अब भी वहां ज्यों की त्यों मौजूद है. पूर्वी और इसलामी स्थापत्य कला और संस्कृति की गवाही देती हुई मक्का मसजिद एक खूबसूरत रंगीन मसजिद है. 15 कमानियों पर टिका इस का हाल 67 मीटर लंबा और 54 मीटर ऊंचा है.

संग्रहालय : मूसी नदी के एक किनारे पर चारमीनार के पास ही संसार भर में प्रसिद्ध सालारजंग संग्रहालय है. यह मीर यूसुफ अली खां ऊर्फ नवाब सालारजंग (तृतीय) का निजी संग्रह है. संगमरमर पत्थर में बनी रबैका की प्रसिद्ध मूर्ति, लघुचित्र, चमकीली हस्तलिखित पांडुलिपियां, हाथीदांत के रत्नजड़ित हथियार, औरंगजेब की हीरे से मढ़ी तलवार, कीमती हरे पत्थर की वस्तुएं, नवाबी शानशौकत को दर्शाती नवाबी पोशाकों का यहां संग्रह है. इस के अतिरिक्त मुख्य आकर्षण है, 'म्युजिकल क्लाक' यानी संगीत घड़ी. घंटा पूरा होने पर एक जोकर घड़ी के भीतर का दरवाजा खोल कर बाहर आता है और समयानुसार घंटा बजा कर भीतर वापस घुस जाता है.

कुतुबशाही मकबरे : कुतुबशाही वंश के सभी बादशाहों के मकबरे यहां स्थित हैं. ये गोलकुंड किले से लगभग 1-2 किलोमीटर की दूरी पर हैं. यहां सुंदर बगीचों के बीच ये मकबरे पुरानी बादशाहत की भावभीनी स्मृतियां जगाते हैं. अधिकतर हिंदी व तेलुगू फिल्मों की शूटिंग यहीं की जाती है.

नागार्जुन सागर बांध : यह बांध एक सुंदर एवं प्राकृतिक पर्यटन स्थल है. हैदराबाद से 149 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह बांध प्रमुख बुद्ध चिंतक नागार्जुन के नाम पर बनाया गया संसार के मुख्य बांधों में से एक है. हैदराबाद शहर से पर्यटक विकास निगम की बसों से जाने की सुविधा के अतिरिक्त प्राइवेट टैक्सियों द्वारा भी जाया जा सकता है.

प्राणी उद्यान : मीर आलम टैंक पर स्थित यह उद्यान अपने खुले प्राकृतिक वातावरण के कारण पर्यटकों का मन मोह लेता है. यहां विश्व

पुरानी बादशाहत की भावभीनी स्मृतियां जगाता कुतुबशाही वंश का एक मकबरा.



के विभिन्न स्थानों के जानवर एक साथ देखे जा सकते हैं. जैसे बंदर की एक विशेष जाति ओरांग गोटान यहां देखी जा सकती है.

हुसैन सागर झील : इस झील का निर्माण 1562 में किया गया था. हैदराबाद एवं सिकंदराबाद को जोड़ती इस झील की खूबसूरती देखते ही बनती है. यदि आप नौकायन के इच्छुक हैं तो आप का शौक यहां पूरा हो सकता है.

इस के अतिरिक्त काले ग्रेनाइट पत्थर का बना रेमंड का मकबरा, माडर्न आर्ट गैलरी, वेलेश्वरम संग्रहालय भी देखे जा सकते हैं. बाग-ए-आम दर्शनीय उद्यान है.

भारतीय पर्यटक विकास निगम एवं आंध्र प्रदेश पर्यटक विकास निगम के द्वारा बस सेवा प्रातः साढ़े सात के लगभग, यात्री निवास, सिकंदराबाद से उपलब्ध की जा सकती है. पूरे दिन में शहर के लगभग सभी मुख्य पर्यटन स्थलों पर ये बस घुमा देती हैं. कुछ बस सेवाएं हैदराबाद के आसपास भी ले जाती हैं जैसे, नागार्जुन सागर, एथिपोथला जल प्रपात, मेंडक चर्च आदि.

क्या खरीदें?

हैदराबाद पर्यटन के दौरान वहां की कुछ खास चीजें आप का मन मोह लेंगी. इन की खरीदारी यहां पर बिताए हसीन दिनों की याद आप को बरबस ही दिलाती रहेगी. हैदराबादी मोती, लाख के कड़े, चूड़ियां यहां के मुख्य आकर्षण हैं. हाथ से बनी वस्तुओं की कला तो देखते ही बनती है. क्रोशिए की चीजें, गलीचे, हाथीदांत और लकड़ी की चीजें, सूती साड़ियां, खिलौने आदि खरीदे जा सकते हैं. आप खरीदारी चारमीनार के बाजारों से सुलतान बाजार, बशीर बाग से कर सकते हैं. सिकंदराबाद में एम.जी. रोड व राष्ट्रपति रोड इंपोरियम से भी खरीदारी कर सकते हैं.

यहां की एक विशेष कलाकारी का उदाहरण निर्मल पेंटिंग में मिलता है. इसे निम्न स्थान से प्राप्त किया जा सकता है –निर्मल इंडस्ट्रीज, खैरताबाद और लेपाक्षी इंपोरियम, आबिद रोड.

मोती की खरीदारी एवं हैदराबाद में बनी अन्य वस्तुओं जैसे चूड़ियां, हैदराबादी विशेष काली धातु से बने लैंपस, मूर्तियों, घड़ियों के केस जैसी बेहद सुंदर व आकर्षक कलाकारी की वस्तुएं लाड़ बाजार, पत्थर गट्टी, (चारमीनार के निकट) खरीदी जा सकती हैं.

यहां का मुख्य भोजन भी दो प्रकार का है. पहला हैदराबादी, विशेषकर मुसलिम भोजन है जिस में बघारा बैंगन व कच्ची बिरयानी, जो सामिष व निरामिष दोनों प्रकार का होता है, किसी भी होटल में उपलब्ध हो जाएगा. दूसरे प्रकार का भोजन जो आंध्रा भोजन कहा जाता है, जिस का मुख्य आकर्षण आंध्र प्रदेश थाली है. यह भोजन लगभग सभी होटलों में उपलब्ध रहता है.

मद्रास क्षेत्र

मद्रास

नृत्य, संगीत, कला एवं समकालीन समस्याओं पर फिल्म निर्माण जैसी अनन्य विशेषताओं का केंद्रबिंदु मद्रास दक्षिण भारत का मुख्य द्वार है. सुंदरता एवं लालित्य को बरकरार रखने की सक्रिय परंपरा के कारण निसंदेह तमिलनाडु की राजधानी मद्रास एवं महाबलीपुरम अद्भुत एवं दर्शनीय पर्यटन स्थल हैं.

भारत के चौथे बड़े नगर मद्रास ने भारत की महान परंपराओं को अपने में समेट रखा है. बंगाल के तट पर दूरदूर तक फैले इस शहर की नींव 1639 में ईस्ट इंडिया कंपनी के फ्रांसिस डे ने डाली थी.

इस आधुनिक नगर में अनेक कलाओं, संस्कृतियों एवं जातियों का सुंदर संगम देखा जा सकता है.

कब जाएं?

वैसे तो मद्रास पर्यटन का कार्यक्रम वर्ष में किसी भी महीने में बनाया जा सकता है. लेकिन अधिक अनुकूल समय अक्तूबर से मार्च तक का है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : मद्रास में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है. यहां सिंगापुर, कोलंबो आदि विदेशी नगरों से नियमित हवाई सुविधाएं

उपलब्ध रहती हैं. देश के प्रमुख नगरों से मद्रास इंडियन एअरलाइंस की उड़ानों से जुड़ा है. यहां का हवाई अड्डा तिरुसुलम लगभग 17 किलोमीटर दूर है, जहां 2 टर्मिनल हैं– राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय.

रेलमार्ग : मद्रास भारत के सभी प्रमुख शहरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा है. यहां 2 प्रमुख रेलवे स्टेशन हैं, मद्रास सेंट्रल एवं मद्रास इगमोर. मद्रास सेंट्रल बड़ी लाइन की गाड़ियों के लिए है, जहां हैदराबाद, बंबई, दिल्ली, कलकत्ता, बंगलौर, कोचीन, कोयंबटूर एवं त्रिवेंद्रम से रेलगाड़ियां आतीजाती हैं. मीटर लाइन की गाड़ियों के लिए है मद्रास इगमोर, जहां तमिलनाडु के विभिन्न शहरों रामेश्वरम, तंजौर, तिरुचिरापल्ली आदि से आने वाली गाड़ियां आती हैं.

मद्रास : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	*गाड़ी का नाम*	*प्रस्थान*
अहमदाबाद	नवजीवन एक्सप्रेस	06.35
लखनऊ	लखनऊमद्रास एक्सप्रेस	16.00
वाराणसी	वाराणसीमद्रास एक्सप्रेस (1,3)	17.45
पटना	पटनामद्रास एक्सप्रेस (6)	15.35
बंगलौर	बंगलौरमद्रास एक्सप्रेस	06.30
	बंगलौरमद्रास मेल	22.10
बंबई	दादरमद्रास चैनल एक्सप्रेस	19.50
	दादरमद्रास एक्सप्रेस	14.25
	बंबईमद्रास मेल	23.15
त्रिवेंद्रम	त्रिवेंद्रममद्रास मेल	13.30
दिल्ली	तमिलनाडु एक्सप्रेस	22.30
	जीटी एक्सप्रेस	18.40
कलकत्ता	कोरोमंडल एक्सप्रेस	14.25
	मद्रास मेल	20.45
हैदराबाद	चारमीनार एक्सप्रेस	18.40
	हैदराबादमद्रास एक्सप्रेस	15.45

सड़क मार्ग : मद्रास में तमिलनाडु स्टेट ट्रांसपोर्ट तथा तिरुवल्लुवर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन की बसों की अच्छी व्यवस्था है. बंगलौर, मदुरै, बेलूर, रामेश्वरम, तंजौर, पांडिचेरी, नागपट्टनम आदि नगरों से मद्रास के लिए नियमित



मद्रास का गोल्डन बीच सौंदर्य की दृष्टि से अनुपम है.



मद्रास के कुछ प्रमुख स्थान. ▲



सेवाएं उपलब्ध रहती हैं.

प्रमुख नगरों से दूरी
बंगलौर–334 किलोमीटर
बंबई–1,367 किलोमीटर
कलकत्ता–1,678 किलोमीटर
दिल्ली–2,157 किलोमीटर
कन्याकुमारी–703 किलोमीटर
रामेश्वरम–583 किलोमीटर

मरीना बीच एवं अन्ना स्क्वायर : मद्रास का मरीना बीच विश्व का दूसरा सब से बड़ा समुद्रतट है.

तैराकी का शौक रखने वाले पर्यटकों हेतु यहां अलग से स्वीमिंग पूल बना है क्योंकि मरीना तट पर शार्क मछलियों की अधिकता होने के कारण यहां तैरना खतरनाक है.

मरीना बीच के उत्तरी छोर पर अन्ना स्क्वायर एक खूबसूरत बगीचे के बीच में स्थित है. प्रवेश द्वार की आकृति मन मोह लेती है. 2 विशाल हाथी दांतों के रूप में बनाया गया प्रवेशद्वार 'नएपन' का एहसास कराता है. इस में एक विशाल स्मारक स्तंभ है और

मद्रास : प्रमुख उड़ानें

(इंडियन एअरलाइंस)

कहां से	दिन	उड़ान संख्या	प्रस्थान	किराया (साधारण)
अहमदाबाद	1,3,5,7	आईसी 952	16.20	3,399/-
बंगलौर	दैनिक	आईसी 912	09.45	950/-
	1,2,4,6	आईसी 560	10.45	
	1,2,4,5,6	आईसी 930	16.05	
	2,4,6,7	आईसी 934	15.50	
	2,4,6	आईसी 924	17.35	
भुवनेश्वर	2,4	आईसी 544	12.10	2,801/-
बंबई	दैनिक	आईसी 972	08.45	2,617/-
	दैनिक	आईसी 171	14.35	
	3,7	आईसी 594	17.40	
	1,2,4,5,6	आईसी 173	17.40	
कलकत्ता	दैनिक	आईसी 765	17.00	3273/-
	2,4	आईसी 544	10.45	
	1,3,5,6	आईसी 542	10.45	
दिल्ली	दैनिक	आईसी 439	06.00	3,882/-
	दैनिक	आईसी 540	19.50	
गोआ	2,4,6	आईसी 924	15.05	1,939/-
हैदराबाद	दैनिक	आईसी 946	06.45	1,427/-
	1,2,4,6	आईसी 948	18.30	
	3,5	आईसी 948	18.30	
पोर्टब्लेयर	3,5,7	आईसी 550	09.25	3,221/-
त्रिवेंद्रम	1,2,4,5,6	आईसी 930	14.10	1,611/-
	3,7	आईसी 932	15.20	
ईस्टवेस्ट एअरलाइंस				
दिल्ली	—	4 एस 800	17.40	—
बंबई	—	4 एस 757	19.00	—
जेट एअरवेज				
बंबई	—	9 डब्ल्यू 463	06.45	—
	—	9 डब्ल्यू 461	17.15	—
मोदीलुफ्त				
दिल्ली	1,2,3,4,5,6	एम 9-521	06.00	—
हैदराबाद	1,2,3,4,5,6	एम 9-521	08.30	—
जम्मू	1,3,4,5	एम 9-106	15.50	—
	2,4,5,6	एम 9-521	06.00	—

एक मशाल निरंतर जलती रहती है. एम.जी.आर. की समाधि भी इसी के साथ निर्मित है. वह भी भवन कला का सुंदर नमूना है.

मरीना स्वीमिंग पूल के दक्षिण में एक मछलीघर है. मछलीघर के पास ही पुराना आइस हाउस है.

नेशनल आर्ट गैलरी : यह गैलरी विक्टोरियन काल के गोथिक भवन में पैर्नाथियन रोड पर स्थित है. द्रविड़ शासन की कांसे तथा पीतल की मूर्तियां एवं इन की वास्तुकला के नमूने यहां सुरक्षित हैं. 16वीं से 18वीं शताब्दी तक की राजस्थानी, मुगल कलाकृतियां, 17वीं शताब्दी की देसानी पेंटिंग्स एवं 11वीं तथा 12वीं शताब्दी की भारतीय हस्तकला के नमूने यहां सुरक्षित हैं. शुक्रवार एवं सार्वजनिक अवकाश में यह पर्यटन स्थल बंद रहता है.

स्नेक पार्क : (सांप उद्यान) : मद्रास का स्नेक पार्क गुइनडी डीयर पार्क में बना हुआ है. अमेरिकी रोमुलस ह्वाटेकर ने इसे स्थापित किया था. जीव जगत में रुचि रखने वाले पर्यटकों को यह वास्तव में जानकारी देने वाला स्थल है. भारतीय सांपों की 500 से अधिक किस्में, रेंगने वाले अन्य जानवरों में दैत्याकार छिपकली, गिरगिट, मगरमच्छ, घड़ियाल वगैरह को आप यहां देख सकते हैं.

सेंट जार्ज फोर्ट : यह सन 1640 में ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बनवाया गया था. अब यहां राज्य विधानमंडल तथा सचिवालय है. इसी किले के अंदर 1680 में निर्मित सेंट मेरी

(शेष पृष्ठ 211 पर)

रूप की रस माधुरी

रूप की रस माधुरी
देखो प्रिये कहीं खो न देना.

रात भूली पथ तुम्हारे
कुंतलों की छांव में,
मन मेरा भटका रहा
मृदु बाहुओं के गांव में.
लाज की रस माधुरी
देखो प्रिय कहीं खो न देना.

चांदनी उतरी तुम्हारे
हास में परिहास में
मरमरी हाथों का जादू
जागता एहसास में.
प्रीत की रस माधुरी
देखो प्रिय कहीं खो न देना.

सावनी अठखेलियां
आंचल तुम्हारा खींचतीं,
जुगनुओं सी आरजुएं
दीप बनबन डोलतीं.
अभिसार की रस माधुरी
देखो प्रिय कहीं खो न देना.

—सुभाष राहुल





मरने के बाद

वि चित्र देश है हमारा, जहां मरने के बाद आदमी की कीमत बढ़ जाती है. जिंदा रहने पर जो आदमी साधारण रहता है वही मरने पर विशिष्ट बन जाता





व्यंग्य • डा. दादूराम शर्मा

है, जो तुच्छ रहता है वह महान बन जाता है. उपेक्षणीय अभिनंदनीय हो जाता है और निंदनीय वंदनीय बन जाता है.

रेडियो और दूरदर्शन पर हम आएदिन किसी न किसी नेता के मरने की खबर सुनते हैं. प्रायः सभी के लिए एक जैसी प्रशंसाभरी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है. मसलन, 'हम ने एक महान देशभक्त खो दिया. वह एक कर्तव्यनिष्ठ और चरित्रवान व्यक्ति थे. उन के निधन से राष्ट्र को अपूरणीय क्षति हुई है.' आदि. उन के नाम से भी नफरत करने वाले और सामना हो जाने पर नाकभौं सिकोड़ने वाले विरोधी नेता भी सारे वैरविरोध भूल कर उन के लिए शोकसभाएं आयोजित करते हैं. इन्हीं शब्दों में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, भले ही उन की मौत से उन्होंने राहत की सांस ली हो.

किंतु कोई भी माई का लाल यह

हम भारतीयों का किसी व्यक्ति को मरने के बाद सम्मान व प्रसिद्धि देना अपने आप में एक मिसाल है. मरने वाला शायद इतनी ख्याति व प्रेम विश्व में और कहीं नहीं पाता जितनी यहां. सच भारत में मरने का एक अलग ही मजा होता है.

नहीं कहता, 'अच्छा हुआ जो हमारे बीच से एक निकृष्ट देशद्रोही चला गया. वह अव्वल दर्जे का कामचोर, स्वार्थी और भ्रष्टाचारी था. उस की मौत से देश और समाज को राहत मिली है.'

शोकसभा का आयोजन कामचोर जमाने की एक स्वस्थ परंपरा है, क्योंकि दो मिनट के मौन के बाद हमें काम से छुट्टी मिल जाती है. उस दो मिनट के मौन में भी हम मृतक की 'आत्मा' के लिए शांति की कामना करने से रहे.

मरे हुए व्यक्ति को तो मर कर शांति मिल ही जाती है, वह दुनियाभर की झंझटों से मुक्त जो हो जाता है. पर उस बीच हम तो यही कामना करते रहते हैं कि ऐसे 'शुभ दिन' बारबार आएं और हमें छुट्टी मिलती रहे.

प्रत्येक कर्मठ भारतीय कर्मचारी आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित होने वाली मरने की खबरें बड़े ध्यान से सुनता है. पता नहीं कब, किस की मौत पर सार्वजनिक अवकाश की घोषणा कर दी जाए और वह उसे सुनने के सुख से वंचित रह जाए. परस्पर भेंट होने पर सब से पहले मौत के विषय में अर्जित अपने सामान्य ज्ञान को हम एकदूसरे पर उछालते हैं. इस क्षेत्र में कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता.

हर व्यक्ति कहता है कि अमुक हस्ती की मौत की खबर पहले उसी ने सुनी है. उस 'खुशखबरी' को परस्पर उछालने की धुन में किसी को ध्यान ही नहीं रहता कि आकाशवाणी और दूरदर्शन की खबरें सब के ट्रांजिस्टरों और टीवियों पर एक साथ ही प्रसारित होती हैं, आगेपीछे नहीं.

यदि छुट्टी उस मृत्यु समाचार से जुड़ी हो तो अफसर अपने शयनकक्ष से ही परस्पर फोन कर के, कर्मचारी अपने बच्चों को पड़ोसी सहकर्मियों के घर दौड़ा कर और दूरदूर रह रहे हों तो अपनेअपने वाहनों से एकदूसरे के घर जाजा कर चाय की चुसकियों के साथ यह खुशखबरी सुनाते हैं.

यदि कोई खास व्यक्ति मरा और छुट्टी नहीं हुई तो दफ्तरों का पहला घंटा और कभीकभी तो भोजन तक का समय कर्मचारियों की आक्रोशभरी प्रतिक्रियाओं के आदानप्रदान में ही बीत जाता है. सारे महत्त्वपूर्ण कागजात 'लंबित' में डाल कर हृदयहीन शासन के साथ अंशकालीन असहयोग आंदोलन छेड़ दिया जाता है? अतः सरकार को भी इस नाजुक मुद्दे पर काफी सतर्क और उदार रहना पड़ता है. वह जानती है कि सारे देश के कर्मचारी शोकसंतप्त हैं. रुंधे गलों और डबडबाई आंखों से कैसे काम किया जा सकता है? जब काम होना ही नहीं है तो छुट्टी ही क्यों न घोषित कर दी जाए?

देश के नेताओं और विश्व के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की मौत पर किसी भी देश में इतनी छुट्टियां नहीं होतीं. इस के दो कारण हैं, पहला तो यह कि हम सारी दुनिया को ही अपना कुटुंब मानते हैं. फिर हमारे देश के किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मौत तो हमारे ही परिवार के सदस्य की मौत है. तब उस के शोक में हम बैठ कर रोएं या दफ्तरों में कलम घिसते रहें, फाइलों में मगज मारते बैठें या छात्रों के सामने वही पुराना वर्षों से दिया जाने वाला, घिसापिटा और बोर लेक्चर देते रहें?

देश के भावी कर्णधारों में मानवीय

संवेदना का विकास भी तो हमें ही करना है. वैसे 'वसुधैव कुटुंबकम्' के आदर्श को अभी हम पूरी तरह अपने सामाजिक जीवन में उतार नहीं पाए हैं. किसी भी विदेशी राष्ट्रप्रमुख की मृत्यु होने पर उस की अंत्येष्टि में शामिल होने के बहाने हमारे नेताओं को तो विश्वभ्रमण का अवसर मिल जाता है, किंतु हमें एक दिन की छुट्टी भी नहीं दी जाती. कुछ वर्ष पूर्व रूसी राष्ट्रपति आंद्रपोव की मौत पर यहां 3 दिनों का राष्ट्रीय शोक तो मनाया गया था परंतु छुट्टी नहीं हुई थी. सीमांत गांधी की मृत्यु पर भी सार्वजनिक अवकाश नहीं दिया गया था.

राष्ट्रीय ध्वज झुका देना शोक मनाना नहीं है. शोक मनाने का सच्चा सुबूत तो तभी मिलता है, जब भारत भर के दफ्तर और स्कूलकालिज बंद कर दिए जाते हैं. भारतीय कर्मचारियों के संगठनों को अपनी मांगों में इस मांग को प्रमुख स्थान देना चाहिए. इस से दुनिया की नजरों में अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण हम ऊंचे ही नहीं उठ पाएंगे, बल्कि अपनी अन्य मांगें शासन से मनवाने में हमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी मिलेगा.

मौत के उपलक्ष्य में छुट्टी का दूसरा कारण यह है कि मानवीय संवेदना और करुणा हम में अन्य देशों के नागरिकों से कहीं अधिक है. हम ने इसे विरासत में पाया है. हम उस वाल्मीकि ऋषि के देश के रहने वाले हैं, जिस के मुंह से क्रौंच पक्षी की मौत को देख कर और चिरवियुक्ता क्रौंची के करुण क्रंदन को सुन कर करुण रस की ऐसी कविता फूटी थी जिस ने 'रामायण' जैसे विश्व महाकाव्य को जन्म दिया था. अब 'छुट्टी का नवीन महाकाव्य' रच कर हम अपनी ऋषि परंपरा का युगानुरूप विकास क्यों न करें?

यहां महान बनने और दूसरों की सहानुभूति पाने के लिए मरना जरूरी है. हम जिंदगी से नफरत करते हैं और मुर्दगी से प्यार. विभीषण की सलाह से ही राम ने रावण को मारा था. रावण जब तक जिंदा रहा, विभीषण उस के खून का प्यासा बना रहा. किंतु जब वह मर गया तो उस का भ्रातृप्रेम उमड़ पड़ा. वह अपनी भाभी मंदोदरी के स्वर में स्वर मिला कर रोना चाह रहा था किंतु संकोच के कारण रूमाल से आंखें ढके हुए था.

राम ने ताड़ लिया और उसे समझाया, ''भाई, हमारी दुश्मनी तो जिंदा रावण से थी. वह मर गया तो कैसा वैरविरोध? हमारा काम हो गया. अब तुम दिल खोल कर रो सकते हो.'

तब तो रावण की वीरता का बखान करकर के विभीषण दिल खोल कर रोया. उस की रावण के प्रति सहानुभूति सचमुच ही उमड़ पड़ी थी, इस में हमें संदेह है. किंतु वह झूठा भ्रातृप्रेम दर्शा कर मंदोदरी की सहानुभूति अवश्य पाना चाहता था. रावण के शव के समीप लोटपोट हो कर विलाप करने वाली मंदोदरी के अस्तव्यस्त वस्त्रों से झांकता यौवन उसे ललचा जो रहा था.

जब पुरुष वीरता से स्त्री के हृदय को नहीं जीत पाता तो रो कर यानी अपने हृदय की कोमलता का प्रदर्शन कर के उसे अपनी ओर आकर्षित करता है. बाली के मरने के बाद सुग्रीव ने भी यही सब किया था, तारा को अपना बनाने के लिए. सचमुच मनुष्य का जीवन कितना तुच्छ है जो अपनों को भी पराया बना देता है. और मौत कितनी महान है जो पराए बने अपनों में फिर से अपनत्व जगा देती है.

हमारा देश वीरों का देश है. यहां जिंदा दुश्मन की छाती पर चढ़ा जाता है. उस के सिर पर लात से ठोकरें लगाई जाती हैं पर मुरदों पर हम मर्दानगी नहीं दिखाते. कृष्ण जिंदा कंस की छाती पर चढ़ बैठे थे, बलराम ने उस के सिर पर ठोकरें लगाई थीं. किंतु जब वह मर गया तो लोगों ने ताज्जुब से देखा कि दोनों भाई उस के शव को अपनी गोद में रख कर बेतहाशा बिलख रहे थे. स्नेह से उस के बालों में उंगलियां फेर रहे थे



तलाश

तेरी तलाश में हम
भटके कहांकहां,
पर मिला तू कहीं
दिल के करीब यूं ही.
—अनिता दयाल

और पैरों को सहला रहे थे.

बाद में अपने भाई कंस की मौत का बदला लेने के लिए आए 8 उपकंसों को भी उन्होंने मौत के घाट उतार दिया. फिर प्रारंभ हुआ राजकीय शवयात्रा का दृश्य. कृष्ण और बलराम ने अपने सभी मामाओं की अरथियों को बारीबारी से कंधे दिए. श्मशान में उन की चिताओं को आग भी दोनों भाइयों ने ही लगाई थी, क्योंकि उन के बेटे तो मारे डर के कहीं भाग गए थे.

हाल ही में प्राप्त 'अक्रूरवार्त्ता' में तो यहां तक लिखा है कि उन्होंने प्रयाग जा कर 'त्रिवेणी के संगम' में सभी मामाओं का अस्थिविसर्जन ही नहीं किया, लगे हाथों पिंडदान करने गयाजी भी चले गए, जहां से लौटते समय कंस के ससुर मगध के राजा जरासंध ने उन्हें घेर लिया था. किसी तरह वे चकमा दे कर बच निकले तो बेचारे को उन का पीछा करतेकरते मथुरा तक आना पड़ा था.

इस तरह इस 'पवित्र धरती' पर मरने के बाद पहला लाभ तो यह मिलता है कि पराए अपने बन जाते हैं, अपनों से दुश्मनी खत्म हो जाती है और अधिक अपनत्व आ जाता है. दूसरा लाभ यह होता है कि मरने वाला 'स्वर्गवासी' हो जाता है या 'स्वर्गीय' बन जाता है. भले ही उस का जीवन 'नारकीय' रहा हो या मरने पर उसे 'नरक' में भी जगह न मिले. जिंदा रहने पर जिस से सभी नफरत करते हैं, वह भी मरने के बाद 'भगवान या अल्लाह' को प्यारा हो जाता है.

वस्तुतः जीवित व्यक्ति के प्रति हमारी कर्तव्यभावना प्रायः सोई रहती है, किंतु उस के मरने पर वह तूफान की तरह तेजी से सक्रिय हो जाती है. जिस की दवादारू में हम सौपचास का भी जुगाड़ नहीं कर पाते, उस के मरणोत्तर संस्कार के लिए आननफानन में हजारों रुपए जुटा लेते हैं. जिंदा रहने पर जिसे सूखी रोटियां भी मुशकिल से मिलती थी उसी के मृत्युभोज में हम मालपूए और तरहतरह की मिठाइयों से भव्य आयोजन करते हैं.

हमारा विश्वास है कि जितने ज्यादा लोग खाएंगे, मृत व्यक्ति की 'आत्मा' को उतनी ही अधिक तृप्ति मिलेगी. हम आत्मवादी हैं, इसलिए जड़ शरीर को नफरत की नजरों से देखते हैं, किंतु केवल जीवित मनुष्य के जड़ शरीर को. मरे हुए व्यक्ति का जड़ शरीर तो सम्मान और संस्कार का अधिकारी हो जाता है. जिंदगी में जिसे मुशकिल से फटेपुराने और जगहजगह पैबंद लगे कपड़े मिलते रहे हों किंतु मरने पर तो उस के लिए नए कफन की व्यवस्था हो ही जाती है.

शीत लहर से ठिठुर कर मरने वालों की मृत देह को सेंकने के लिए क्विंटलों लकड़ियां आ जाती हैं. जो मक्खीचूस जिंदा आदमी को 'पंजी' भी नहीं देते, वही उस के मरने पर दानवीर बन जाते हैं. 'जिंदा का तिरस्कार और मुरदे का संस्कार' हमारी महनीय परंपरा है.

मेरी माताजी बहुत बूढ़ी और कमजोर हो गई थीं. मैं ने उन्हें कभी प्रसन्नता से कौन कहे, रोधो कर भी नहीं नहलाया. किंतु जब वह मरीं तो मैं ने भी

औरों की तरह उन की अस्थियों को हमेशा नहाती रहने के लिए संगम में विसर्जित कर अपने सपूत होने का परिचय दिया.

चाहे कोई भूखों मर जाए, हमें इस बात की कोई परवाह नहीं. किंतु मरने के बाद उस की आत्मा भूखी न रहे, इस बात का हम पूरापूरा खयाल रखते हैं, क्योंकि जिंदा आदमी का काम बिना खाएपिए चल सकता है, मरे का नहीं. मृत आत्मा की भूख जिंदा आदमी की भूख से कई गुना बढ़ जाती है. तभी तो उस की तृप्ति के लिए जातिभोज किए जाते हैं.

यदि दुनिया के किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को गौरवमयी मौत मरना हो तो उसे मरने के कुछ दिन पूर्व भारतीय नागरिकता ग्रहण कर लेनी चाहिए. एक अरब 78 करोड़ आंखों के आंसुओं की श्रद्धांजलि का 'सौभाग्य' उसे अपने देश में, चाहे वह वहां के सर्वोच्च पद पर ही क्यों न आसीन हो, नहीं मिल सकता.

चीन का प्रधान भी इतनी भारी श्रद्धांजलि नहीं पा सकता क्योंकि वहां उस के विरोधी आधे नहीं तो एकतिहाई अवश्य ही होंगे. जबकि हमारे यहां विरोधी ही मरने वाले के लिए सब से पहले आंसू बहाते हैं. तब शतप्रतिशत श्रद्धांजलि का अवसर तो उसे यहीं मिल सकता है. अतः विश्व के चोटी के नेताओं से अनुरोध है कि वे हमारे परामर्श पर ध्यान दें ताकि उन्हें मरने के बाद पछताना न पड़े. ●

ये पत्नियां

मेरे एक मित्र को बातबात पर अपनी पत्नी को छेड़ने में आनंद आता था.

एक दिन जब वह बाल कटवा कर आया तो पत्नी से बोला, "देखो जी, बाल कटवाने के बाद मेरी उम्र तुम से भी 10 वर्ष कम लग रही है."

इस पर पत्नी तुरंत बोली, "ऐसा है तो सारे बाल कटवा आओ, बिलकुल दूध पीते बच्चे लगोगे."

—संजय कुमार लालवानी

*

दफ्तर से लौट कर मेरा दोस्त हमेशा अपनी पत्नी से कहता, "तुम्हें देख कर ही मेरा पेट भर जाता है. फिर खाना खाने की क्या जरूरत है?"

एक बार अचानक मैं उन के घर खाने के समय पहुंच गया. मित्र की पत्नी ने मेरे सामने खाना रखा. फिर अपने पति से बोली, "आज चूंकि खाना समाप्त हो गया है इसलिए आप मुझे देख कर ही अपना पेट भर लीजिए."

—सत्येंद्र कुमार पारीक

*

हमारे पड़ोस में रहने वाले एक दंपती हमेशा बेझिझक सब के सामने लड़ते रहते थे.

एक बार पति ने गुस्से में चीखते हुए कहा, "तुम से तो बात करना ही बेकार है. तुम्हारे दिमाग में तो गोबर भरा है."

पत्नी ने अपनी आवाज में मिठास लाते हुए कहा, "प्रिये, तभी तो तुम मेरे दिमाग को घंटों चाटा करते हो."

—रितु केशरी

*

मेरी चाची ने चाचाजी के लिए खाना परोसा. पहले ही कौर में कंकड़ पा कर चाचाजी गुस्से से बोले, "2 आंखें हैं, कंकड़ भी नहीं बीन सकती?"

चाची भी तेज थीं, बोली, "आप के 32 दांत हैं, कंकड़ भी नहीं चबा सकते."

वहां उपस्थित सभी लोग हंस पड़े. और चाचा बुरी तरह झेंप गए.

—अमित कुमार

*

मेरे भैया अकसर मुझे अधिक पढ़ने पर चिढ़ाते थे. एक दिन बोले, "अन्नो तो इतनी पढ़ाई करती है, जितनी मैं ने बी.एससी. में भी नहीं की थी."

इस पर पास बैठी मेरी भाभी ने कहा, "तभी तो आप 2 बार फेल हुए थे."

भाभी का इतना कहना था कि हम सभी हंस पड़े, पर भैया का चेहरा देखने लायक था.

—अनिता सोनी

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लौट जाओ अमला

कहानी ● दिग्विजय सिंह

सुपर फास्ट नीलांचल एक्सप्रेस से मैं दिल्ली जा रहा था. लखनऊ एक सरकारी काम से आया था. वैसे तो मैं उत्तर प्रदेश सरकार का नौकर हूं लेकिन रहता दिल्ली में हूं तथा उत्तर प्रदेश राज्य अतिथिगृह में विशेष कार्याधिकारी के पद पर कार्य करता हूं.

इस यात्रा के दौरान मेरे साथ कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुईं जिन्हें अप्रत्याशित कहा जा सकता है. मसलन, लखनऊ में मुझे जिन अधिकारी से मिलना था उन की पत्नी को जानलेवा दिल का दौरा पड़ गया. बेचारी पूरे तीन दिनों तक जीवन और मृत्यु के बीच हिचकोले खाती हुई किसी तरह जिंदा परिवार वालों के बीच लौट सकी थीं. यह अधिकारी भद्र पुरुष थे. पत्नी की बीमारी से फारिग होते ही इन्होंने पूरे 10 घंटे लगातार परिश्रम कर के मेरी उस योजना को अंतिम रूप प्रदान कर दिया जिस के लिए मैं लखनऊ आया था.

वापसी हेतु ऐन दशहरे के दिन ही मैं ट्रेन पकड़ सका. गाड़ी अपने निर्धारित समय पर ठीक 1 बजे लखनऊ से छूटी, लेकिन उन्नाव से पहले सोनिक स्टेशन पर वह अंगद के पांव की तरह अड़ गई. पता चला कि कंप्यूटर द्वारा संचालित सिगनल व्यवस्था फेल हो गई है.





प्रथम श्रेणी के कूपे में मैं नितांत अकेला था. कानपुर पहुंचने से पहले ही मैं ने अपने थर्मस को नीबूपानी से भर दिया था.

लगता था कि आज के दिन मुझे कोई सहयात्री नहीं मिलेगा. एक बार अच्छी तरह पढ़ी हुई पत्रिका को पुनः पढ़ते हुए दिल्ली तक की यात्रा पूरी करनी पड़ेगी. वैसे मुझे पूरी उम्मीद थी कि मेरा बेटा कार ले कर मुझे लेने स्टेशन आएगा. मैं ने लखनऊ से ही उसे फोन कर दिया था कि मैं नीलांचल एक्सप्रेस से दिल्ली पहुंच रहा हूं.

खैर, सिगनल पर हरी बत्ती जल चुकी थी तथा ट्रेन ने बहुत हौले से रेंगना प्रारंभ किया ही था कि एक यात्री मेरे कूपे का दरवाजा खटखटाने लगा. मैं ने उठ कर शटर खोला. सामने एक छोटा सी अटैची थामे एक लड़की खड़ी हुई थी. गेहुआं रंग, लंबे, छरहरे बदन तथा सामान्य से कुछ अच्छे नाकनक्श वाली इस लड़की को देख कर मुझे बड़ी निराशा हुई. सोचा, कोई आदमी होता तो उस के साथ बतियाते हुए दिल्ली तक का सफर आराम के साथ कट सकता था.

लड़की ने सामने दो नंबर की बर्थ पर अटैची रखते हुए मुझ से पूछा, "चाचाजी, अगर इजाजत हो तो मैं कूपे का दरवाजा बंद कर दूं?"

अब चौंकने की बारी मेरी थी. ट्रेन अब तक प्लेटफार्म छोड़ कर काफी आगे निकल चुकी थी.

मुझ में और इस लड़की की आयु में अच्छाखासा अंतर था. लगभग इसी आयु की मेरी बेटी संध्या का विवाह हो चुका था. फिर भी आदमी आदमी ही होता है और औरत औरत. उन के आदिम और मूल रिश्तों पर बिरलों का ही बस चलता है. इस रिश्ते के बाद के अन्य सभी रिश्ते आदमी ने बनाए हैं, लेकिन वह भी...

''यदि आप असुरक्षा न महसूस करें तो कूपे का दरवाजा बंद कर सकती हैं,'' मैं ने उत्तर दिया.

लड़की धीरे से बुदबुदाई, ''सुरक्षा, असुरक्षा वगैरह मैं बहुत पीछे अपने घर छोड़ आई हूं.''

फिर उस ने कूपे का दरवाजा बंद कर दिया तथा अपनी सीट से लगी खिड़की के बाहर झांकने लगी. लड़की मुझे कुछ परेशान, घबराई हुई सी लग रही थी. इस मौसम में कोई पसीना आने जैसी बात न थी, फिर भी वह रूमाल से माथे पर बारबार उभर रही पसीने की बूंदों को पोंछ रही थी.

गोविंदपुरी और पनकी स्टेशन निकल गए. लड़की ने अपना मुख मेरी ओर घुमाया. अब तक उस का पसीना काफी कुछ सूख चुका था.

''चाचाजी, क्या मैं आप के थर्मस से थोड़ा सा पानी ले सकती हूं?''

मैं ने उत्तर दिया, ''उस में पानी नहीं है...''

''प्यास के मारे मेरा गला सूख रहा है.''

''बेटी, इस में सिर्फ नीबू पानी है.''

''अच्छा, थोड़ा सा दे दीजिए.''

वह नीबूपानी का एक गिलास गटागट पी गई. 10 मिनट के उपरांत उस ने फिर थर्मस की ओर देखा. मैं ने उसे एक गिलास भर कर और दिया, जिसे वह धीरेधीरे पीती रही. अब वह अपेक्षाकृत सामान्य दिखाई देने लगी थी.

''दिल्ली में किस जगह पर जाना है तुम्हें?'' मैं ने बात करने की गरज से पूछा.

''आप ने कैसे जाना कि मैं दिल्ली जा रही हूं?''

''बड़ी आसानी से,'' मैं ने सहजता के साथ उत्तर दिया, ''यह ट्रेन कानपुर से चल कर दिल्ली ही रुकती है.''

''ओह...''

''लेकिन तुम ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया, बेटी?''

अब उस की झिझक मिटने लगी थी. उस ने उत्तर दिया, ''नहीं मालूम कि मुझे कहां, किस जगह जाना है.''

प्रेम और अपनापन तलाशती अमला अनजाने ही उस राह पर निकल पड़ी थी जिस की कोई मंजिल नहीं होती. ऐसे में एक अजनबी ने उस के जीवन का रुख ही बदल दिया वरना क्या हश्र होता उस का?

''और तुम अकेली सफर कर रही हो.''

''हां. दिल्ली मैं अपने जीवन में पहली बार जा रही हूं.''

मुझे लगा कि कहीं कोई न कोई गड़बड़ जरूर है. यह लड़की शायद अपनेआप को किसी बड़े संकट में डालने जा रही है.

''बेटी,'' मैं ने स्पष्टवादिता से काम लेते हुए पूछा, ''पहले बात को ठीक तरह से समझो, फिर जवाब दो. मैं कह रहा था कि यह ट्रेन रात को करीब डेढ़ बजे दिल्ली पहुंचेगी और तुम्हें यह तक पता नहीं कि कहां जाओगी... किस के साथ रहोगी.''

''नई दिल्ली स्टेशन पर राकेश मुझे लेने आएगा.''

''कौन राकेश...?''

"राकेश मेरा प्रेम... मेरी जिंदगी... मेरा सब कुछ है."

"तो तुम अपने घर से भाग कर आ रही हो?"

फिल्मी संवाद की शैली में उस ने उत्तर दिया, "आप जो भी, जैसा भी चाहें निष्कर्ष निकाल सकते हैं. लेकिन मैं भाग कर नहीं जा रही हूं. मैं एक नया घर बनाने... एक नई जिंदगी शुरू करने जा रही हूं."

"दिल्ली में नया घर... नई जिंदगी..." कुछ रुक कर मैं ने अगला सवाल किया, "तुम्हारी उम्र क्या है?"

"18 वर्ष और कुछ दिन. हाई स्कूल का प्रमाणपत्र है मेरे पास."

"इस का मतलब यह हुआ कि तुम कानूनी कीलकांटे से पूरी तरह से लैस हो कर अपने घर से निकली हो. फिलहाल इस बात को जाने दो. यह बताओ, तुम पढ़ी कहां तक हो?"

"इंटरमीडिएट... प्रथम श्रेणी... मुझे तीन विषयों में विशेष योग्यता मिली है."

"अरे, तुम्हारे सामने चिकनी सड़क जैसा उज्ज्वल भविष्य फैला हुआ है. फिर तुम यह सब क्या करने जा रही हो?"

"चाचाजी, मुझे कोई प्यार नहीं करता... न पिताजी और न ही मां. दोनों की अपनी अलग दुनिया है... किटी, पपलू, ब्रिज, क्लब, देर रात तक चलने वाली काकटेल पार्टियां... मेरे अलावा दोनों को सब कुछ अच्छा लगता है. इन दोनों... इन की एकएक बात मैं अच्छी तरह से जानती-समझती हूं. लेकिन घटिया बातें अपने मुंह से आप के सामने कहना क्या आसान होगा.

"चाचाजी, घर के नौकरों के साथ मैं ने अपना बचपन बिताया है. मेरे मातापिता या तो घर में होते ही नहीं हैं और यदि होते भी



अगले दिन राकेश के दोस्तों के धमकीभरे फोन आने के बाद अमला को पूरी तरह एहसास हुआ कि वह अजगरों के मुंह में जाने से बालबाल बची है.

हैं तो अपनेअपने शयनकक्ष में सोए पड़े होते हैं. अब मैं कैसे कहूं कि मुझे बचपन में ही खराब...बहुत खराब हो जाना चाहिए था. यह करिश्मा ही है कि मैं आज तक ठीकठाक हूं."

अकस्मात मुझे लगा कि चारों तरफ फैलती जा रही शून्यता के बीच मेरी प्यारी बेटी संध्या मुझ से बातें कर रही है.

"बेटी, तुम्हारा नाम जान सकता हूं?"

"अमला नाम है मेरा..."

"राकेश को कैसे जानती हो?"

"मेरे महल्ले का लड़का है. कालिज में मुझ से काफी आगे था. एम.ए. कर चुका है."

"वह करता क्या है?"

"कुछ नहीं."

"तो फिर दिल्ली में तुम दोनों खाओगे क्या... रहोगे कहां? मैं तो समझा था कि राकेश दिल्ली में कोई नौकरी करता होगा. उस के पास रहने का अपना कोई ठिकाना होगा."

"दिल्ली में हम सिलेसिलाए कपड़ों का व्यवसाय करेंगे. सुना है कि दिल्ली में यदि अच्छे संपर्कसूत्र बन जाएं तो विदेशों को तैयार वस्त्र निर्यात कर के लाखों के वारेन्यारे किए जा सकते हैं."

"ठीक सुना है तुम ने बेटी," मेरा मन भीग चला था, "जरूर लाखों के वारेन्यारे किए जा सकते हैं, यदि संपर्कसूत्र अच्छा हो जाए तो. लेकिन संपर्कसूत्र का अर्थ जानती हो तुम?"

"हां, क्यों नहीं... संपर्कसूत्र बढ़ने का अर्थ है लोगों से जानपहचान हो जाना."

"नहीं," मैं ने कठोरता से कहा, "कभीकभी इस शब्द के अर्थ बदल भी जाते हैं... यानी शून्य अर्जित करने के लिए अपनेआप को अकारण मिटा डालना. एक ऐसी नदी बन जाना जिस का उदगम तो होता है किंतु कोई सम्मानजनक अंत नहीं होता."

गाजियाबाद स्टेशन निकल चुका था. हम दिल्ली के निकट पहुंच रहे थे. मैं बहुत असमंजस की स्थिति में था. मैं अमला से कुछ कहना चाहता था, लेकिन क्या कहना चाहता था, क्यों कहना चाहता था इस की कोई साफ तसवीर उभर कर मेरे मस्तिष्क में नहीं आ रही थी.

"लेकिन बेटी, व्यापार के लिए धन चाहिए. कितना रुपया होगा तुम लोगों के पास?"

"राकेश के पास क्या है... एक तरह से कुछ भी नहीं," अमला ने उत्तर दिया, "वह कह रहा था कि मैं अपनी मां के कुछ जेवर तथा पिताजी की सेफ से व्यापार लायक कुछ रुपए ले चलूं. आखिर बाद में वह सब कुछ मेरा और बड़े भैया का ही तो होगा. कल मिलने वाली चीज को आज ले लेने में क्या हर्ज है."

मुझे कुछ और पूछने का अवसर दिए बगैर वह कहती गई, "लेकिन मैं उन सब से घृणा करती हूं. उन का रुपया, पैसा... जेवर... मैं अपने भावी जीवन में कोई भी ऐसी चीज रखना नहीं चाहती जिस से मातापिता की स्मृति जुड़ती हो. मैं अपने साथ जेबखर्च से बचाए हुए सौ रुपयों के अलावा और कुछ ले कर नहीं आई. मैं ने राकेश से साफसाफ कह दिया था कि हम अपना आने वाला जीवन अपने हाथों अपने साधनों से बनाएंगे."

"तुम्हारी यह बात क्या राकेश को अच्छी लगी थी," मैं ने पूछा.

"शायद नहीं," उस ने कुछ सोचा. थोड़ा झिझकी, फिर बोली, "बल्कि वह जेवर तथा रुपया न लाने की बात पर काफी नाराज भी हुआ था."

"फिर..."

"फिर क्या... वह दोनों आंखें मूंदे सोचता रहा. फिर मुझ से बोला, 'अमला, जब तुम साथ हो तो सब कुछ अपनेआप ठीक हो जाएगा.' मैं भी..."

"कैसे ठीक हो जाएगा... तुम ने उस से साफसाफ पूछा नहीं. कहानी, उपन्यासों

तथा फिल्मों में सब कुछ अपनेआप ठीक हो जाता है, लेकिन वास्तविक जीवन में आदमी को अपने विवेक तथा अपने श्रम से सब कुछ ठीक करना पड़ता है."

"आप समझते क्यों नहीं," बोली, "मुझे उस पर पूरा विश्वास है.

"फिर भी बेटी, मैं ने आज तक 'अविश्वासघात' होते नहीं देखा. जब भी घात हुआ विश्वास के साथ ही हुआ है."

ट्रेन यमुना के पुल में घुस रही थी. हमारे पास समय बहुत कम बच रहा था. रात के 1 बज कर 35 मिनट हो चुके थे.

मैं ने हिम्मत बटोर कर अमला से पूछा, "बेटी, मुझ पर तुम एक कृपा कर सकोगी?"

"हांहां कहिए?"

"आज रात तुम मेरे घर चलो... तुम्हारे राकेश को भी हम अपने साथ ले चलेंगे."

"मगर..."

"अगरमगर मत करो, हां कह दो. आगे बढ़ कर हम लौट नहीं सकते परंतु तुम जहां हो, वहीं रुक जाओ. वहां तुम अपनी चाची के साथ सोना..."

न जाने किस प्रेरणा से अमला मेरी बेटी संध्या की तरह मेरे प्रति आज्ञाकारिणी हो गई. बोली, "ठीक है, जब आप इतनी जिद कर रहे हैं तो आप की बात ही मान लेती हूं."

नई दिल्ली स्टेशन के निकास द्वार पर राकेश अपने दोस्तों के साथ खड़ा था. लंबेतगड़े छोटीछोटी खसखसी दाढ़ी तथा बारीक तराशे बालों वाले राकेश के दोस्त मुझे अजीब लगे. राकेश ने मुझे अनदेखा करते हुए कहा, "अमला, चलो टैक्सी में बैठो. हम होटल चलते हैं. पहले ही काफी देर हो चुकी है."

राकेश को अपना परिचयपत्र थमाते हुए मैं ने कहा, "अमला मेरे साथ जा रही है. कल तुम मेरे घर आना...बाकी की बातें वहीं करेंगे."



स्पंदन

सवेरे का सूरज निहारा था केवल
पलक झपकते शाम हो गई,
स्पंदन पर हस्ताक्षर थे ही तुम्हारे
यह उम्र तुम्हारे नाम हो गई.

—मीना जैन

तीनों दाढ़ी वाले सफेदपोश मेरा रास्ता रोक कर लाललाल आंखों से मुझे घूर रहे थे. इसी बीच मेरा बेटा आ पहुंचा था. उन तीनों में से एक मुझ से बोला, "यह लड़की लखनऊ से दिल्ली आप के मकान में सोने के लिए नहीं आई है."

उन तीनों को देख कर अमला के होश उड़ते दिखाई दे रहे थे. वह दृढ़तापूर्वक बोली, "राकेश, मैं चाचाजी के घर ही रहूंगी. तुम कल मुझ से इन के यहां ही मिलना."

मुझे लगा कि कुछ दंगाफसाद होने वाला है और मेरा बेटा इस सब के लिए अपनेआप को तैयार कर रहा है. इसी बीच भागते हुए दो सिपाही हमारे पास आए. मुझे कुछ कहने का अवसर दिए बिना अमला ने उन सिपाहियों से कहा, "कृपया हमें हमारे घर पहुंचने में मदद कीजिए. मैं नहीं जानती कि ये लोग कौन हैं और क्यों मेरा रास्ता रोक रहे हैं."

मैं ने भी उन्हें अपना परिचय दिया. वे हमें हमारी कार तक पहुंचा गए. न जाने क्यों राकेश इस दौरान मौन रहा.

अगले दिन राकेश के दोस्तों के धमकीभरे फोन आने के बाद अमला को पूरी तरह

एहसास हुआ कि वह अजगरों के मुंह में जाने से बालबाल बची है.

बाकी का काम मेरी पत्नी ने किया. उस ने अमला से कहा, "मेरी मुन्नी, आदमी का दुख दीपक की तरह होता है. वह खुद अपनेआप को पलपल जला कर दूसरों को प्रकाश देता रहता है. लौट जाओ अपने घर. स्वयं जल कर अपने घर को अपनी ज्योति से आलोकित कर दो."

"लेकिन चाचीजी, मैं कैसे... किस मुंह से वापस जाऊं."

"तुम्हारी वापसी... यानी कि पूरे मानसम्मान के साथ वापसी, हमारा काम है. जैसे भी हो, इसे हम करेंगे," मेरी पत्नी उस की चोट सहलाते हुए बोली, "जीना, जीते रहना जिंदगी की शर्त है. जब साथ चलने वाला कोई न मिले तो वीरानगी को अपना हमसफर बना लो. मेरी बेटी, तुम मंजिल तक जरूर पहुंच जाओगी."

अमला को मैं 4 दिनों बाद उस के घर वापस पहुंचा आया. उस के मातापिता को मैं ने टेलीफोन से पहले ही सब कुछ समझा दिया था.

पिछले 5 सालों से उस के पत्र मेरे तथा मेरी पत्नी के नाम आते रहते हैं. अभी कल ही उस का पत्र मेरी पत्नी के पास आया है, 'चाचीजी, मैं केंद्रीय सचिवालय की सेवाओं हेतु चुन ली गई हूं. जब तक कोई दूसरी व्यवस्था नहीं हो जाती मैं आप लोगों के साथ ही रहूंगी.'

मेरी पत्नी मुसकरा कर मुझ से कहती है, "अब तक एक थी. अब हुक्म बजाने वाली एक और हो गई. चलूं, कमरा ठीक करूं. आखिर हुक्म तो हुक्म ही है." ●

बिंब प्रतिबिंब

* श्रीदेवी से लोग भागने लगे *

सफलता व असफलता एक ही सिक्के के 2 पहलू हैं. इस के बावजूद इस तथ्य को लोग नजरअंदाज कर के जरा सी सफलता मिलते ही दूसरों को परेशान करने लगते हैं. 2 साल पहले श्रीदेवी के नाम की तूती बोल रही थी. श्रीदेवी फिल्म निर्माताओं से मनमाना पारिश्रमिक मांग रही थी.



श्रीदेवी की सफलता के दौर में बोनी कपूर उस के खास हमदर्द बने हुए थे. बोनी कपूर ने फिल्म 'मि. इंडिया' में अपने भाई अनिल कपूर के मुकाबले श्रीदेवी की भूमिका को बढ़ाया था और जब श्रीदेवी ने होटल छोड़ा था, तब भी बोनी कपूर ने ही श्रीदेवी को अपने घर में शरण दी थी. लेकिन 'हीर रांझा,' 'चंद्रमुखी,' 'लमहे,' 'गुरुदेव' तथा 'रूप की रानी चोरों का राजा' जैसी श्रीदेवी की तमाम फिल्मों की असफलता के बाद अब बोनी कपूर ने अपना रास्ता बदल लिया है और उन्होंने श्रीदेवी से अपना दामन झटक लिया है. बोनी कपूर ने अपनी नई फिल्म की नायिका के रूप में श्रीदेवी के स्थान पर जूही चावला को अनुबंधित कर लिया है.

बोनी कपूर ही क्यों, शेखर कपूर ने भी श्रीदेवी के बजाय जूही चावला को अनुबंधित किया है. और तो और, फिल्म 'सपनों का सौदागर' के निर्माता नंदू तोलानी भी अपनी इस फिल्म से श्रीदेवी को निकाल कर किसी अन्य अभिनेत्री को लेना चाहते हैं. इसी कारण उन्होंने अभी तक इस फिल्म की शूटिंग शुरू ही नहीं की है. यदि यही हाल रहा तो फिर कल को श्रीदेवी क्या करेगी?



* डा. राही मासूम रजा की अंतिम कृति - 'नीम का पेड़' *

प्रसिद्ध साहित्यकार व फिल्म लेखक डा. राही मासूम रजा के अंतिम लेखन कार्य पर आधारित है धारावाहिक 'नीम का पेड़.'

3 फरवरी से दूरदर्शन के प्राइम टाइम में प्रसारित होने वाले सीरियल 'नीम का पेड़' की कहानी 1942 से 1979 तक की है. इस की कहानी उस दौर से शुरू होती है जब लोगों का ध्यान महज अपनी छोटी सी जमीन के टुकड़े पर ही केंद्रित था. उन्हें उस वक्त देश के बंटवारे की कोई चिंता नहीं थी.

'नीम का पेड़' के पहले 13 एपीसोड बने थे और यह सिर्फ लखनऊ दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था. इस की लोकप्रियता के कारण मंडी हाउस ने इसे 44 एपीसोड का विस्तार देने के साथसाथ दूरदर्शन के प्राइम टाइम में प्रसारित करने का आदेश भी दे दिया.

तब निर्माता नवमान मलिक और निर्देशक गुरबीर एस. ग्रेवाल ने इसे नए सिरे से उत्तर प्रदेश के लखनऊ, अमेठी, सुलतानपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद, बनारस शहरों तथा दिल्ली में फिल्माया.

'नीम का पेड़' की कहानी, पटकथा, संवाद और कविताएं डा. राही मासूम रजा अपनी मौत (15 मार्च 1992) से पहले लिख कर गए थे. इस धारावाहिक के कलाकार हैं, पंकज कपूर, एस.एम. जहीर, अरुण बाली, वहीद जमाल, शाहीन सुल्ताना, भानुमती सिंह, आशा सिंह, शैली जोशी, प्रीति खरे तथा अन्य.

* छुटपुट *

- हिना की नायिका जेबा बख्तियार ने एक पाकिस्तानी नागरिक अदनान से ब्याह रचा कर फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया.
- एक पत्रिका के मुखपृष्ठ पर अंग प्रदर्शक तसवीर छपवाने वाली अभिनेत्री ममता कुलकर्णी को अपने किए पर कोई





पछतावा नहीं है. पिछले दिनों वह बंबई के अंधेरी कोर्ट में जज के सामने हाजिर तो हुई पर माफी मांगने से इनकार कर दिया. उस के वकील के अनुसार ममता के खिलाफ अपराध का कोई मामला नहीं बनता. ममता कुलकर्णी का कहना है, "सिर्फ मैं ही एक अभिनेत्री नहीं हूं जिस ने इस तरह की तसवीर खिंचवाई है, बल्कि कई अन्य अभिनेत्रियों ने भी इस तरह की तसवीरें खिंचवाई हैं."

● पिछले दिनों निर्देशक अजय कश्यप की फिल्म 'पथरीला रास्ता' का क्लाइमेक्स बड़े पैमाने पर फिल्माया गया. इस सीन के लिए आधा दर्जन कारों, 2 इंपाला, 2 जीप और 2 अंबेसडर को तहसनहस कर दिया गया.

● 'रंग' जैसी फिल्म के निर्देशक तलत जानी बहुत अच्छे नर्तक हैं. उन की नृत्य की प्रतिभा का दर्शन अशोक रंगलानी की फिल्म 'जय किशन' में होगा. यह 4 मिनट का नृत्य है, जो कि फिल्म के शीर्षक के दौरान दिखाई देगा.

● इन दिनों कई फिल्म निर्माता निर्देशकों के बेटे फिल्मों में आ रहे हैं. यश चोपड़ा के बाद निर्माता के.डी. शोरी का बेटा लोकेश भी बतौर हीरो 2 फिल्मों में अपने कैरियर की शुरुआत कर रहा है और इन दोनों फिल्मों के निर्देशक होंगे महेश भट्ट.

● फिल्म 'खुदा गवाह' के बाद फिल्मी दुनिया से संन्यास ले लेने वाले अमिताभ बच्चन को मनाने के लिए लोगों ने काफी कोशिश की. पर उन्होंने फिल्में साइन नहीं कीं. बहरहाल, 5 जनवरी 1994 को अमिताभ ने वापस फिल्म की शूटिंग की. जी हां, उन्होंने अपने मेकअप मैन दीपक सावंत की मराठी फिल्म 'अक्का' के लिए अपनी पत्नी जया के साथ पूरे दिन शूटिंग की. इस फिल्म में अमिताभ बच्चन मेहमान कलाकार हैं.

● पूजा भट्ट के दिन खराब चल रहे हैं. 'त्रिमूर्ति' के बाद अब 'राजा हिंदुस्तानी' से भी पूजा भट्ट को निकाल कर करिश्मा कपूर को शामिल किया गया है. ●

मौत का निवाला
पानमसाला

लेख • विनय शर्मा



बात है बारां (कोटा, राजस्थान)शहर की. कैंसर परीक्षण शिविर में मैं अपना भाषण समाप्त कर के बाहर निकल रहा था. मेरी उस सभा का मुख्य उद्देश्य था इस भयानक बीमारी के आरंभिक लक्षणों तथा कारणों पर जानकारी देना तथा आम जनता को इस लाइलाज रोग के प्रति जागरूक बनाना.

अभी बाहर आया ही था कि सामने ही पान की दुकान पर

एक सज्जन को पानमसाले का पाउच (पुड़िया) खरीदते देखा. मुझे यह देख कर निराशा हुई कि चेतावनी मिलने के बावजूद ये लोग अपनी तलब अथवा व्यसन को नियंत्रित नहीं कर पाते. अपने भाषण में मैं ने लोगों को यही बताया था कि मुख के कैंसर का प्रमुख कारण पानमसाला, जरदा एवं तंबाकू ही हैं.

बात यहीं तक सीमित रहती तो भी शायद मुझे अधिक आश्चर्य नहीं होता लेकिन मुझे यह देख कर तो झटका सा लगा कि उन्हीं सज्जन का छोटा सा बच्चा, उन का हाथ पकड़ कर मचलने लगा था, "पापा, मुझे भी गुटका दो." यह बच्चा, जिस की आयु कठिनाई से अभी 5-6 वर्ष की रही होगी, गुटका ले कर ही शांत हुआ. मैं सोच में पड़ गया. क्या भविष्य होगा इन बच्चों का, जिन्हें पता भी नहीं है कि ये [illegible] भयानक तथा जानलेवा दुश्चक्र का शिकार हो रहे हैं.



ये शब्द हैं उदयपुर के डा. आर.के. अग्रवाल के, जो पिछले 20 वर्षों से कैंसर के रोगियों के इलाज से जुड़े हैं तथा इस रोग के निरंतर अध्ययन से वह इस क्षेत्र में विशेषज्ञ माने जाते हैं. वह 1978 में बनी 'उदयपुर कैंसर सोसाइटी' के संस्थापक हैं तथा उन्हीं के प्रयत्नों से यहां के बड़े अस्पताल में 1985 में रेडियोथेरेपी यूनिट चालू हुई थी.

आज से 10-15 वर्ष पूर्व तक पानमसाले का अधिक प्रचलन नहीं था. खाने वाले तंबाकू के रूप में मैनपुरी तंबाकू तथा जरदे का प्रयोग होता था लेकिन इन का उपयोग करने वाले व्यक्तियों की संख्या नगण्य थी. उस समय भी एक अध्ययन द्वारा यह प्रमाणित किया गया था कि मैनपुरी जिले (उत्तर प्रदेश) में मैनपुरी तंबाकू के अत्यधिक सेवन के कारण वहां की आबादी में मुंह के कैंसर का प्रतिशत, समस्त भारत के औसत से बहुत अधिक था. वहां के कुछ समाजसेवियों ने अपने क्षेत्र के निवासियों की इस लत को छुड़ाने के लिए प्रयास भी किए थे.

पानमसाले का प्रयोग लोगों ने सिगरेट या अत्यधिक पान खाने की आदत को छोड़ने अथवा सीमित करने के उपाय के रूप में आरंभ किया था. आज स्थिति पूर्णतः विपरीत हो चुकी है. हालत यह है कि इलाज ही बीमारी में परिवर्तित हो गया है.

खाने के रूप में तंबाकू और जरदे का प्रयोग तो भारत में सदियों से हो रहा था लेकिन पहले यह आदत जनसंख्या के मामूली प्रतिशत तक ही सीमित थी. आज



आज पानमसाला, तंबाकू और जरदा खाने वालों की संख्या बढ़ी है. इन में युवक और बच्चे अधिक हैं. इस के विक्रेता भी लोगों को आकर्षित करने में जीजान से लगे हुए हैं. परंतु क्या आप जानते हैं कि इस छोटी सी पुड़िया में आप की मौत का पूरा सामान मौजूद है?

जितने लोग पानमसाला खाने के दुर्व्यसन के शिकार हो रहे हैं, वे इसे पान और सुपारी की तरह खाने की चीज समझते हैं तथा सोचते हैं कि पानमसाले का प्रयोग किसी भी दृष्टि से नुकसानदेह नहीं है. वे भूल जाते हैं कि सुपारी और तंबाकू भी दिनरात खाने की दशा में स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक हानिकारक हैं.

आज स्थिति यह है कि रातोरात करोड़पति बनने की होड़ में नित नए पानमसालों के ब्रांड बाजार में पेश किए जा रहे हैं तथा स्वाद, सुगंध एवं ताजगी के भ्रामक विज्ञापनों से जनता, विशेषकर बच्चों व युवकों, को आकर्षित कर के, भारत के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है. लुभावनी व रंगबिरंगी पैकिंग से ध्यान आकृष्ट करने के प्रयास किए जाते हैं.



पिछले 10-12 वर्षों में इस दुश्चक्र ने हजारों नौजवानों को असमय ही काल के गाल में ढकेल दिया और लाखों युवक रोजाना इस व्यसन के नए शिकार बन रहे हैं. विषाद का कारण यह भी है कि ये मासूम नवयुवक इस लत के भयंकर परिणामों से अनभिज्ञ हैं.

गंभीर प्रयासों की आवश्यकता

वृद्धों की बिगड़ी हुई आदत को बदल पाना तो बहुत मुशकिल है लेकिन देश की युवा पीढ़ी को तो नशे के इस अंधे कुएं से बचाया जा सकता है. इस दिशा में गंभीर प्रयासों की आवश्यकता है. शीघ्र ही अगर इस दिशा में जनता को जागरूक करने हेतु कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाएगी तथा देश का वही हाल होगा जो अफीम की लत के कारण 19वीं शताब्दी में चीन का हुआ था.

साधक के लिए साध्य ही नहीं, साधन भी पवित्र होने चाहिए. पैसा कमाना ही अगर किसी का लक्ष्य है तो वह कोई बुरा ध्येय नहीं है लेकिन हमारे देश के येनकेनप्रकारेण पैसा कमाने वाले कुछ उद्योगपतियों ने मौत का सौदागर बन कर लोगों की लाशों पर अपने उद्यम की नींव रखी है. ये लोग विज्ञापनों की बाढ़ द्वारा देश की युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट कर रहे हैं. ये लोग देश के भविष्य इन युवाओं को ऐसी अंधेरी गुफा में धकेल रहे हैं जहां से बाहर निकलने की राह केवल मौत की राह है.

◄ सड़े हुए दांत : जरदे के सेवन का [illegible]



तंबाकू, जरदे और अब पानमसाले खाने के फैशन ने मुंह, होंठ, जीभ के कैंसर को बढ़ाया है. ▲

जहां विदेशों में कैंसर के मामलों में मुंह, होंठ, जीभ, गाल व गले का कैंसर 6 प्रतिशत है वहीं भारत में ऐसे मामलों का प्रतिशत 30 से भी अधिक है. यह चिंता का विषय है तथा इन्हीं आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत में तंबाकू, जरदे तथा अब पानमसाले के नए फैशन से देश के नवयुवक किस प्रकार अपने स्वास्थ्य ही नहीं, जीवन के साथ भी खिलवाड़ कर रहे हैं. इस के बावजूद संवैधानिक रूप से इन के पैकिटों पर लिखा जाता है, 'पानमसाले का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है.' जबकि यह निश्चित रूप से जानलेवा है.

भारत में पानमसाले, गुटके, जरदा और मीठे पानमसाले/सुपारी की कुल खपत आज 1,500 से 2,000 करोड़ रुपए के बीच है. इस में ब्रांड वाले तथा अन्य साधारण ब्रांडहीन सभी पानमसाले सम्मिलित हैं. कुछ ही वर्षों में इतनी तेजी से इन का प्रचलन बढ़ने के पीछे प्रमुख कारण रहा पानमसाला निर्माताओं द्वारा कम मूल्य के छोटे पाउचों का उत्पादन तथा बाजार को अपने माल से पाट देने की तकनीक. पहले बाजार में केवल 100 ग्राम का टिन ही बिकता था, जिस का मूल्य वर्ष 1980 में 10-12 रुपए होता था. इस कीमत पर यह आम आदमी की पहुंच से बाहर था. आरंभ में यह शौक केवल उच्च वर्ग तथा कुछ सीमा तक मध्य आय वर्ग के दायरे में ही रहा.

पैसा कमाने की अंधी दौड़

वर्ष 1984 में कानपुर के कोठारी प्रोडक्ट्स ने एक रुपए का पाउच निकाला जिस में 5 ग्राम पानमसाला भरा गया था. बस यहीं से शुरुआत हुई उस अंधी दौड़ की, जिस में पैसा कमाने की हवस ने अच्छेबुरे की समझ को ही कुंठित कर दिया. 'पानपराग' की बिक्री, कम मूल्य के पाउच उपलब्ध कराते ही, पहले वर्ष में 74 लाख से [illegible] हो गई थी.

कोठारी प्राडक्ट्स की इस सफलता को देख कर अन्य निर्माता एवं पानमसाला उत्पादक भी शीघ्र ही कम मूल्य के पाउच बनाने लगे और देखते ही देखते ऐसे अनेक ब्रांड बाजार में आ गए. इन में पानपराग के अतिरिक्त रजनीगंधा, प्रिंस, तुलसी, जे.पी., बाबा, गोपाल और चुटकी आदि ब्रांड प्रमुख हैं.

अब आप को ऐसी कोई पान की दुकान नजर नहीं आएगी जहां पानमसाले की रंगबिरंगी अनेक लड़ियां न लटक रही हों. 'कम मूल्य पर अधिक बिक्री' के सिद्धांत को

'तंबाकू मुख कैंसर का प्रमुख कारण है'

—डा. आर. के. अग्रवाल

कैंसर विशेषज्ञ डा. आर.के. अग्रवाल एम.एस, एफ.ए.सी.एस., एफ.आई.सी.एस. के साथ हुई बातचीत के कुछ अंश :

क्या यह निश्चिततौर से कहा जा सकता है कि तंबाकू व पानमसाले, मुख कैंसर का प्रमुख कारण हैं?

जी हां, यह बिलकुल पक्की तौर पर कहा जा सकता है. कैंसर होने का एक ज्ञात कारण है गंदगी और अनवरत घर्षण से गाल एवं जीभ का गल जाना. कई मामलों में तो दांत टेढ़ेमेढ़े व नुकीले होने से ही जीभ से लगातार रगड़ के कारण भी कैंसर होता देखा गया है.



क्या आप के पास कोई ऐसा रोगी आया जिसे तंबाकू के कारण मुख का कैंसर हुआ हो?

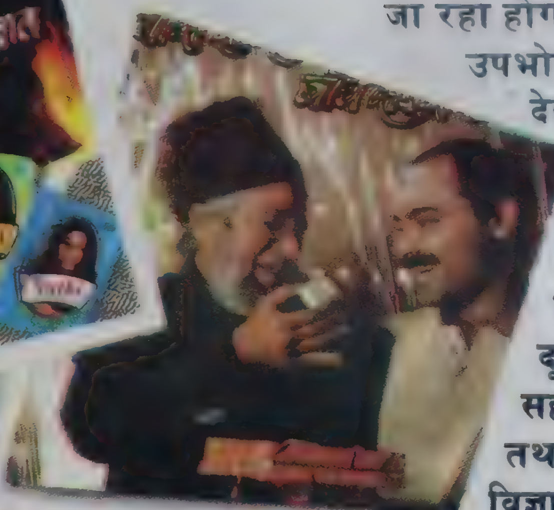
हां, 32 वर्षीय जगदीश मुंह न खुलने की शिकायत ले कर मेरे पास आया था. वह सिगरेट व तंबाकू बेचता था और स्वयं भी इन का प्रयोग करता था. कैंसर बहुत बढ़ चुका था. मैं ने आपरेशन से उस का गाल बदला भी लेकिन पूरे इलाज के बावजूद उसे बचा नहीं सका.

हमारे पाठकों को कुछ संदेश देना चाहेंगे?

देखिए, मैं तो डाक्टर हूं. मेरे पास दिनरात ऐसे केस आते ही रहते हैं लेकिन अपनी उम्र से बहुत छोटे लोगों को जानलेवा बीमारियों से ग्रस्त होते देख कर कष्ट होता है. मेरी सभी लोगों से यही अपील है कि सिगरेट, शराब व तंबाकू का सेवन छोड़ें तथा स्वस्थ रहें.

कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति अजयपत सिंघानिया की इसी वजह से मृत्यु होने पर जे.के. ग्रुप के वर्तमान चेयरमैन ने निदेश जारी किया है कि भारत स्थित उन के समस्त उद्योगों में एवं व्यवसाय परिसर में न कोई पानमसाला खाएगा न खिलाएगा. अन्य संस्थान उन से सबक ले कर ऐसे कदम उठाएं.











ध्यान में रखते हुए कुछ निर्माताओं ने तो 50 पैसे के पैकिट तक निकाल दिए हैं. आप स्वयं सोच सकते हैं कि इतनी सस्ती कीमत पर आप को कैसा सस्ता व घटिया माल बेचा जा रहा होगा.

उपभोक्ता बाजार की विशालता को देखते हुए स्वाभाविक है कि सभी कंपनियों द्वारा इन के विज्ञापन पर भी प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं. यह तो भला हो दूरदर्शन का, जिसे देर से ही सही लेकिन सदबुद्धि प्राप्त हो गई तथा उस ने पानमसाले के विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगा दिया अन्यथा भोलेभाले युवक व बच्चे अपने पसंदीदा कलाकारों द्वारा इस के गुणों व स्वाद के बखान से गुमराह होते रहते.

बाजारों में उपलब्ध विभिन्न ब्रांड के पानमसालों का पत्रिकाओं और वीडियो फिल्मों के जरिए युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित करने का प्रयास क्या अपराध नहीं? (बाएं ऊपर) स्वयं की खरीदी गई बरबादी : 32 साल की आयु में ही मसाले, जरदे के सेवन से गल चुका मुंह. (बाएं नीचे).

अभी भी पत्रिकाओं तथा वीडियो फिल्मों के माध्यम से इन कंपनियों द्वारा जोरशोर से विज्ञापन जारी हैं. अशोक कुमार तथा शम्मी कपूर, सईद जाफरी एवं जलाल आगा जैसे वरिष्ठ कलाकार अगर अपने सामाजिक दायित्व को भूल कर युवा पीढ़ी को दिग्भ्रांत कर रहे हैं तो यह उन का अक्षम्य अपराध है, जिस के लिए उन्हें भविष्य में अवश्य पश्चात्ताप करना पड़ेगा.

देश के समस्त नागरिकों, विशेषकर नौजवानों से हमारी यही अपील है कि इस बुरी आदत को तुरंत छोड़ दें. आप स्वयं को कितना ही स्वस्थ व भलाचंगा महसूस करें लेकिन याद रखिए कैंसर ऐसी बीमारी है जो प्रकट होने में धीमी है तथा इस के परिणाम वर्षों बाद भी सामने आ सकते हैं. ●

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★★ कभी हां कभी ना

निर्माता : विक्रम महरोत्रा
निर्देशक : कुंदन शाह
संगीत : जतिन ललित
मुख्य कलाकार : शाहरुख खान, सुचित्रा कृष्णामूर्ति, दीपक तिजोरी, सतीश शाह, गीता भादुड़ी, रवि वासवानी, गोगा कपूर, नसीरुद्दीन शाह और अंजन श्रीवास्तव.

व्यावसायिक दृष्टि से यह फिल्म चलने वाली नहीं है लेकिन फिर भी फिल्म में ऐसा बहुत कुछ है जिस कारण इसे देखा जा सकता है. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी है इस की नायिका सुचित्रा कृष्णामूर्ति. दूसरे, फिल्म की रफ्तार बहुत ही सुस्त है. फिर भी फिल्म गुदगुदाती व हंसाती तो है ही साथ ही उस में नयापन भी है.

निर्देशक कुंदन शाह ने इस फिल्म के लिए युवाप्रेम का विषय चुना है. और बंबइया लटकेझटके भी अपनाए हैं लेकिन उन के कहने का अंदाज इतना अलग है कि यह फिल्म अन्य फिल्मों से थोड़ी हट कर बन गई है और इस में भी बीचबीच में फुलझड़ियां सी छूटती रहती हैं.

ये हास्य की स्थितियां पैदा होती हैं शाहरुख खान के अभिनय पर. शाहरुख खान एक अच्छा अभिनेता है, यह उस ने 'बाजीगर' और 'डर' में साबित कर दिया है. इस फिल्म के शुरू में उस की भूमिका नेगेटिव किस्म की है पर अंत में उस की भूमिका पाजिटिव कर दी गई है. उसे अपनी प्रेमिका का त्याग करते हुए दिखा कर निर्देशक ने फिल्म का सुखद अंत करा दिया है.

सुनील (शाहरुख खान) एक बैंड ग्रुप का सदस्य है और पिता की नजरों में वह नालायक है. वह एना (सुचित्रा कृष्णामूर्ति) से प्यार करता है. परंतु एना क्रिस (दीपक तिजोरी) को चाहती है. सुनील क्रिस और एना में दरार डाल कर खुद एना का चहेता बन जाता है. एना और सुनील की शादी पक्की हो जाती है परंतु यह पता चलने पर कि एना आज भी क्रिस से प्रेम करती है. वह एना की शादी क्रिस से करवा देता है.

पूरी फिल्म की शूटिंग गोवा में की गई है. फिल्म का पूरा माहौल ईसाई समाज का है. सभी पात्रों का पहनावा, रहनसहन, बातचीत का तरीका, नाम आदि उसी के अनुरूप हैं.

निर्देशक ने फिल्म में स्वाभाविकता बनाए रखी है. और तो और, निर्देशक ने 'डान' जैसे खूंखार कलाकार गोगा कपूर के द्वारा भी हास्य की परिस्थितियां पैदा करा दी हैं. इस फिल्म की सब से अच्छी बात यह है कि इस में एक भी घूंसा नहीं चलता.

फिल्म में कार्निवाल का दृश्य बहुत लंबा हो गया है. फिल्म का अंत भी एकदम से कर दिया गया है. अंत में अचानक जूही चावला के आ जाने से हाल में तालियां बज उठती हैं. दर्शकों को लगता है कि चलो नायक ने त्याग कर दिया तो क्या हुआ, उसे

उस से अच्छी लड़की मिल गई.

फिल्म के संवाद रंजीत कपूर ने लिखे हैं और पात्रों के अनुकूल हैं. फिल्म का गीतसंगीत भी अच्छा है. 'डर' जैसा तो नहीं है, लेकिन दोतीन गीत अच्छे बन पड़े हैं. छायांकन भी अच्छा है. गोवा की सुंदर दृश्यावलियां देखने को मिलती हैं.

अभिनय की दृष्टि से शाहरुख खान ने तो अच्छा अभिनय किया ही है, नायिका सुचित्रा कृष्णामूर्ति को छोड़ कर बाकी सभी कलाकारों ने अपनाअपना काम जिम्मेदारी से निभाया है.

○ करन

निर्माता : दारासिंह
निर्देशक : शिव कुमार
संगीत : रामलक्ष्मण
मुख्य कलाकार : वीरेंद्र सिंह, तृष्णा, अनुपम खेर, किरण कुमार, रंधावा, संजीवा, प्रेम चोपड़ा और अशोक सर्राफ.

'करन' सीधीसादी बदला प्रधान फिल्म है, जिस में नायक खुद अपराधियों को सजा देता है, न्याय करता है. निर्देशक ने इस फिल्म में पुलिस की क्रूरता, सड़ीगली व्यवस्था और भ्रष्ट मंत्री के कारनामों को प्रमुखता से दिखाया है. यह सब इतनी अधिक बार दिखाया जा चुका है कि अब यह फार्मूला भी सड़ने लगा है.

इस प्रकार की फिल्मों के लिए नायक का बलिष्ठ होना जरूरी समझा जाता है. इस मायने में इस फिल्म का नायक बलिष्ठ है, हट्टाकट्टा है. उस की कदकाठी भी अच्छीखासी है. इसीलिए उस ने फिल्म में मारधाड़ के दृश्य सहजता से कर लिए हैं.

नायक वीरेंद्र सिंह दर्शकों के लिए एकदम नया है. वह अपने जमाने के प्रसिद्ध कलाकार दारा सिंह का बेटा है. इस फिल्म का निर्माण स्वयं दारा सिंह ने किया है, इसलिए कैमरे के सामने आने में वीरेंद्र सिंह को हिचकिचाहट नहीं हुई है. उस ने सहजता से अभिनय कर लिया है. परंतु वह छैलछबीला नायक बन कर नायिकाओं के साथ बागों में गाने नहीं गा सकता. उस का चेहरा कठोर है.

नेता राम प्रसाद ज्वाला (प्रेम चोपड़ा) का बेटा जगरूप (संजीवा), उद्योगपति पवन पुरी (अनुपम खेर) की बेटी नताशा (तृष्णा) और करन (वीरेंद्र) सहपाठी हैं. जगरूप कालिज में गुंडागर्दी करता है. वह नताशा को पाना चाहता है जबकि नताशा करन से प्रेम करती है. राम प्रसाद पवन पुरी पर दबाव डालता है कि वह अपनी बेटी की शादी उस के बेटे से कर दे परंतु बात नहीं बनती. वह करन की मां को तस्करी के झूठे आरोप में फंसवा कर उस की हत्या करवा देता है. वह करन पर भी अत्याचार करवाता है परंतु करन पुलिस हिरासत से भाग कर एकएक कर सब से बदला लेता है.

फिल्म में बेइंतहा एक्शन व तबाही है. निर्देशक ने जितनी भी परिस्थितियां गढ़ी हैं जानीपहचानी लगती हैं. लेकिन एक बात अच्छी है कि फिल्म का संगीत कुछ अच्छा है, गीतों के बोल भी अच्छे हैं, आजकल की अन्य मसाला फिल्मों की तरह के गीत नहीं है कि तूरूतूरूतूरू तारा किया और गीत बन गया. 'आसमां पे चांद निकला रात ढलती जाए' और 'मेरा दिल तेरा दीवाना करन' गीत अच्छे बन पड़े हैं.

फिल्म का निर्देशन सामान्य है तथा संवाद हलकेफुलके. नायिका तृष्णा की संवाद अदायगी खराब है. वीरेंद्र सिंह भी संवाद बोलते वक्त कहींकहीं गड़बड़ा गया है.

नायिका तृष्णा इस फिल्म की कमजोरी कही जा सकती है. उस की यह पहली फिल्म है. न तो उस का चेहरामोहरा ही आकर्षक है और न ही उसे अभिनय करना आता है.

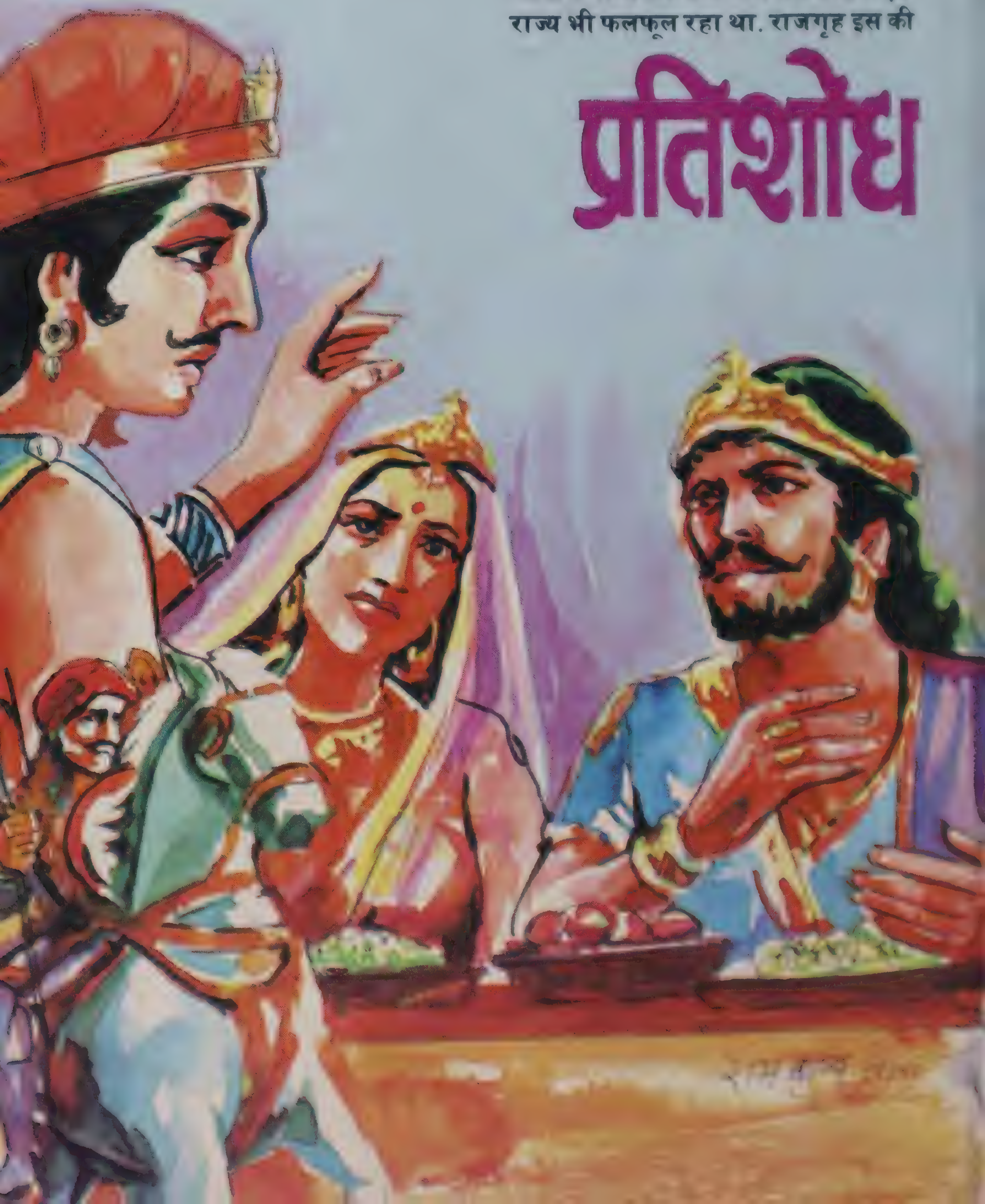
खलनायक बना संजीवा ओवरएक्टिंग का शिकार हुआ है. फिल्म को संभाला है तो अनुपम खेर और प्रेम चोपड़ा ने. अन्य कलाकार साधारण हैं. छायांकन भी साधारण है. ●

कई बार घटनाएं बड़ी तेजी से घटती हैं. वे आपस में एक दूसरी में गुंथ कर ऐसा असर भी छोड़ती हैं कि चकित रह जाना पड़ता है. छठी शताब्दी ई.पू. में गंगा के पूर्वी व पश्चिमी किनारे के 3 राजतंत्रों में ऐसी ही घटनाएं घटीं.

कपिलवस्तु में उन दिनों शाक्यों का शासन था. महात्मा बुद्ध, जो यहां उत्पन्न हुए, शाक्य राजकुमार ही थे. शाक्यों में रक्त की 'पवित्रता' को बनाए रखने की इच्छा बहुत तीव्र थी.

शाक्यों के इस राज्य के नजदीक ही कोसल था. श्रावस्ती इस की राजधानी थी. महात्मा बुद्ध के जन्म से पहले से आधुनिक पटना तथा गया जिलों में मगध नामक एक राज्य भी फलफूल रहा था. राजगृह इस की

प्रतिशोध



राजधानी थी और बिंबिसार यहां का प्रसिद्ध राजा था.

बिंबिसार की 3 रानियों में से पहली नेपाल की वैदेही कुमारी, दूसरी लिच्छवी वंशीय छलना और तीसरी कोसल की कोशल देवी थी. बिंबिसार को कोसल के साथ काशी राज्य भी दहेज में मिला था.

रानी छलना से अजातशत्रु नामक राजकुमार पैदा हुआ. उस की महत्त्वाकांक्षा और क्रूरता के डर से उस के अन्य सातों

अपना अपना

कहानी • डा. प्रभात त्यागी



भाइयों ने मगध को त्याग दिया और वे स बौद्ध भिक्षु बन गए.

अजातशत्रु ही अब मगध का उत्तराधिकारी रह गया था. पर उस ने गद्दी जल्दी हथियाने के लिए अपने पिता बिंबिसार को बंदीगृह में डाल दिया. वहां तिलतिल कर उस की मृत्यु हुई. विधवा कोशल देवी भी इस गम में चल बसीं.

अपनी बहन व जीजा की मौत का बदला लेने के लिए कोसल के राजा प्रसेनजित ने अजातशत्रु पर धावा बोल दिया. काशी राज्य भी मामा, भानजे के झगड़े का एक कारण था, क्योंकि प्रसेनजित अब इसे मगध को देने को तैयार न था.

युद्ध में कोसल की विजय हुई पर अजातशत्रु के पश्चात्ताप प्रकट करने पर प्रसेनजित ने न केवल उस का राज्य और काशी बल्कि अपनी बेटी वजिरा भी उसे सौंप दी. इस प्रकार राजगृह व श्रावस्ती में अटूट संबंध बन गए. पर कपिलवस्तु की एक घटना ने उन्हें बुरी तरह हिला डाला...

नगर के प्रत्येक दीप व मशालों की रोशनी विडूडभ को अपना उपहास उड़ाती लग रही थी.

"सच कह रहे हो तुम?" कोसल कुमार ने गुस्से में कांपते हुए प्रश्न किया.

"मेरा एक भी शब्द झूठा हो तो आप मेरा मस्तक काट डालें," सुदास ने दृढ़ता से जवाब दिया.

"तो पूरी बात बताओ जो तुम ने देखी और वहां सुनी?"

"युवराज, कपिलवस्तु के सभा भवन से आप की पालकी के निकलने के साथ ही

विडूडम कौसल राज्य का युवराज था. उस की पैदाइश एक दासी से हुई थी. यह बात उसे सदा कचोटती रहती. इस से वह आततायी बन गया. इस तानाशाह के विरुद्ध आवाज उठाने की क्षमता किसी में न थी. किंतु सोमा के प्रतिशोध ने उसे उस के परिणाम तक पहुंचा दिया.

हम सब भी बाहर निकल आए. अपने अश्वों पर हम सवार थे. आप के स्वागत में आयोजित सुंदर नृत्य, मनोरंजन और नगर की सजावट में मन इतना रम गया कि आप को उपहार में दी गई वस्तुएं मैं सभागार में ही भूल आया.

"नगर की पांचवीं प्राचीर तक आतेआते मुझे अपनी भूल का पता चला. घोड़े की रास मोड़ कर जब मैं वापस सभा भवन में प्रविष्ट हुआ तो ठगा सा खड़ा रह गया."

"क्यों?" विडूडम की भृकुटि तनी हुई थी.

"मैं ने देखा कि संभागा के फर्श को रोहिणी नदी के पानी से 20-25 लोग धो रहे हैं. इस में कोई आपत्तिजनक बात न थी, क्योंकि सफाई के लिए ऐसा किया जा सकता है.

"पर एक वृद्धा को झाड़ू लगाते हुए, आप के लिए कहे गए शब्दों को सुन कर मुझे अपने कानों पर हाथ रखने पड़ गए..."

"क्या बोली थी वह, प्रत्येक वाक्य को दोहराओ?"

"युवराज, क्षमाप्रार्थी हूं. वह जोरजोर से कह रही थी, 'दुष्ट, उत्पीड़क, शाक्य व कपिलवस्तु निवासियों की सुखसमृद्धि के हत्यारे, शांति भक्षक, निर्दयी... तू अपनेआप को कोसल का युवराज समझता है, जबकि तेरी मां यहीं कपिलवस्तु के राजमहलों में बरसों दासी बनी रही. दासीपुत्र विडूडम, शूद्र हो कर तुझे हमारे शाक्य सभागार में प्रवेश लेते लज्जा नहीं आई?

"मूर्ख, तेरे पिता पसेनजित ने जब [illegible]

परास्त कर दिया और उस ने एक शाक्य कुमारी से विवाह की शर्त को शांति संधि का आधार बनाया तो तेरी मां वासभखत्तिया को शाक्य कुमारी के रूप में उस के सामने भेजा गया. खत्तिया सुंदर तो थी ही, नाजनखरे भी उस के कम न थे. ऐसी न होती तो वह कपिलवस्तु के अंतःपुर में ही क्योंकर पहुंच पाती? नराधम, अपनी औकात देख ले कि तू वास्तव में है क्या? तेरे ही कारण आज हमें इस ठिठुरती रात्रि में सभागार को धोपोंछ कर साफ करना पड़ रहा है, जो तेरे दासीपुत्र के कदम पड़ जाने से 'अपवित्र' हो गया है.

"'पातकी, तेरी इतनी हिम्मत कि अपने पिता की विजय के नाम पर तू आज भी जब चाहा, कपिलवस्तु में आ कर अपना स्वागतसत्कार आयोजित करा लेता है? माना कि हम कमजोर हो गए हैं, पर कायर नहीं हैं. देख लेना, तुझे व तेरे पिता को तुम्हारी करनी का एक दिन दंड अवश्य मिलेगा.'

"श्रीमान, मेरी इच्छा तो हुई थी कि पीछे से जा कर उस बुढ़िया का टेंटुआ दबा दूं, पर आप को मैं शाक्य जनता की भावनाओं से परिचित कराना पहले जरूरी समझता था. मुझे यह भी डर था कि वहां काम करने वाले 20-25 व्यक्ति बुढ़िया को मार देने पर मुझे भी जिंदा नहीं छोड़ेंगे. अब आप कहें तो अभी जा कर मैं उस बुढ़िया का काम तमाम कर आऊं?"

विडूडम के कानों में तो ये बोल पड़ ही नहीं रहे थे. वह अवाक बैठा था [illegible] सत्य का पता [illegible] उस के हृदय में सहसा ही झंझावात पैदा हो [illegible] था. उस के मन में अजीब अशांति

और अनिष्ट का भाव पढ़ कर आने वाले तूफान की मानो सुदास को सूचना मिल गई.

"प्रभु, प्राणदान दें तो एक तथ्य और आप को प्रकट कर दूं? मुझे अचानक शाक्यों से इतनी चिढ़ हो गई कि आप की भेंट के आभूषण, नकद राशि और सारी वस्तुएं वहीं छोड़ कर चुपचाप आप के पास चला आया हूं. मुझे अब आगे के लिए आज्ञा दीजिए, युवराज."

"सुदास, अब हम यहीं कपिलवस्तु की सीमा पर पड़ाव डालेंगे. तुम हमारे ठहरने की चुपचाप यहां व्यवस्था कर सीधे श्रावस्ती चले जाओ. महामंत्री दीर्घ को मेरा आदेश दो कि वह तुरंत विशाल सेना ले कर यहां कपिलवस्तु में उपस्थित हों. किंतु सावधान, सम्राट अथवा रानी मां को तनिक भी मेरे युद्ध अभियान की भनक नहीं मिलनी चाहिए. यदि ऐसा हो गया तो मैं तुम्हारे व दीर्घ के जीवित तन से चमड़ियां उतार लेने में जरा भी नहीं हिचकिचाऊंगा, समझ गए?"

सुदास तो विडूडभ की मुखाकृति को देख कर ही कांप गया था. धीरे से बोला, "आप को उस का अवसर नहीं मिलेगा, प्राणपति."

नगर के उत्तरी मार्ग पर सुदास का अश्व सरपट चाल से दौड़ पड़ा.

10 दिन बाद कपिलवस्तु के सभागारों, मठों और नगर के प्रमुखप्रमुख स्थानों को नष्टभ्रष्ट कर जैसे ही विडूडभ कपिलवस्तु की सातवीं प्राचीर के निकट पहुंचा, सुदास को 2 अश्वारोहियों सहित सामने से आते देख कर उस ने अश्व को थपकी दे कर रोक दिया.

"आप का एक शत्रु नगर से भागता पकड़ा गया है, कोसल कुमार."

विडूडभ ने देखा, 2 सैनिक अश्व पर चढ़े हुए अपने दोनों हाथों के बीच एक रोती, कलपती बुढ़िया को झुलाते हुए ला रहे थे.

"यही है वह?" विडूडभ के नेत्र सुलग कर अंगार बन गए.



लाचार प्रसेनजित को द्वार के बाहर ही जमीन पर सोना पड़ा. सुबह द्वाररक्षक ने आंखें फाड़फाड़ कर देखा कि रात्रि में सर्दी में अकड़ कर कोसल शासक के प्राणपखेरू उड़ चुके हैं.

"जी, श्रीमान. यही अपनी कैंची जैसी जबान से आप को व आप के परिवार को भद्दी गालियों के कांटे भेंट कर रही थी."

"मूर्खा, देख ले, तेरे सामने इस समय दासीपुत्र विडूडम नहीं, तेरा काल खड़ा हुआ है. वाचाल स्त्री, तू ने अपनी गंदी जिह्वा से सारे कपिलवस्तु की दुर्गति करा दी है.

"सुदास, मेरे स्पर्श से तो इस की शुचिता समाप्त हो जाएगी. मैं आखिरी क्षणों में इस के साथ 'पाप' नहीं कर सकता. इसे मैं बिना स्पर्श किए ही 'यमलोक' रवाना करूंगा. सुदास सावधान, सैनिको, अपनी तलवारें म्यान से निकाल लो और इस कटारी जैसी तीखी धार की जीभ की मालकिन को पूरी ताकत से ऊपर शून्य में उछाल दो."

भयाक्रांत वृद्धा जैसे ही शून्य से धरती की ओर आई, सुदास और सैनिकों की तनी हुई तलवारों की नोकें उस के शरीर को बींधती हुई चली गईं. पर विडूडम वृद्धा के मौन स्वर शायद नहीं सुन सका. वह मानो पुकार रही थी, 'हत्यारे अपने दुखद अंत की शीघ्र प्रतीक्षा कर.'

अपनी राजधानी श्रावस्ती में पहुंच कर भी विडूडम को चैन नहीं मिला. उस ने कपिलवस्तु को अपने गुस्से का शिकार बना कर नष्ट तो कर दिया था, पर क्या शाक्य ही उसे दासी पुत्र बनाने के लिए उत्तरदायी थे? दोषी तो वास्तव में उस का पिता प्रसेनजित ही था, जिस ने अपनी वासना व महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए एक शाक्य कन्या की कपिलवस्तु से मांग की थी.

यदि वह ऐसा न करता तो उस की मां को विवाह कर कोसल क्यों आना पड़ता? क्यों वह कोसल और कपिलवस्तु में दुत्कारा जाता? व्यर्थ ही उस ने वृद्धा की हत्या की और कपिलवस्तु में शाक्यों का संहार किया? उस का असली अपमानकर्ता तो उसी के साथ एक ही छत के नीचे आठों पहर रहता है. उसी से उसे प्रतिशोध लेना चाहिए. विडूडम ने अपने पिता को दंडित करने की बात तय कर ली. केवल सुअवसर की उसे तलाश थी.

महामंत्री दीर्घ तो उस की मुट्ठी में ही था. उस के प्रयासों से राज्य का सारा प्रशासकीय ढांचा और सभी अधिकारी विडूडम की तरफ आ मिले. हमेशा से ही ऐसा होता रहा है कि सत्ता जिधर मुड़ती है, जो दिशा लेती है, प्रशासन भी आंख बंद कर उस के पीछे चल पड़ता है. पुराने शासक के प्रति जिम्मेवारी पलभर में बदल जाती है. आश्चर्यजनक गति से उस के बोल, उस के स्वर नए शासक की तारीफ में आसमान तक कुलांचें भरने लग जाते हैं.

कोसल के राजा प्रसेनजित और रानी वासमखत्तिया को यह जान कर घोर आश्चर्य हुआ कि उन्हें बताए बिना उन के बेटे विडूडम ने कपिलवस्तु में जा कर भीषण हाहाकार मचा दिया है. युवराज को बुला कर पूछने पर, उस ने मातापिता की दुश्चिंता यह कह कर दूर कर दी कि शाक्य राजधानी में बौद्ध हितों को नुकसान पहुंचाने वाले तत्त्वों के खिलाफ यह अभियान जरूरी हो गया था.

कट्टर बौद्धपंथी और महात्मा बुद्ध के परम भक्त प्रसेनजित को न सिर्फ अपने बेटे पर विश्वास ही हो गया बल्कि गर्व से और खुशी भी हुई, पर खत्तिया अपने बेटे से सशंकित ही थी.

कंस द्वारा स्थापित कोसल राज्य राजधानी श्रावस्ती सहित बौद्ध प्रभाव से अछूता न था. श्रावस्ती ही क्यों, उस शताब्दी में तो पूरा भारत ही बौद्धमय बन चुका था. महात्मा बुद्ध की सीधीसपाट बातों ने जनता को ब्राह्मणों की कट्टरता और हिंसा से भरी विचारधारा से बहुत दूर कर डाला था.

इसीलिए न चाहते हुए भी बुद्ध की पूजा की जाने लगी थी. अपनी रानी के समझाने और नई बातें मालूम होने पर प्रसेनजित ने घोषणा की कि यह खुद



"आओ, तुम्हारे स्वागत में हम सुरापान करें." विडूडम ने सोमा को ललचाई नजरों से देखते हुए कहा.

कपिलवस्तु जा कर बुद्ध के जन्म प्रदेश की असली हालत का पता लगाएगा. वह न केवल स्थिति का अवलोकन ही करेगा, बल्कि बौद्ध नगरी को पहुंचाई गई हानि का लेखाजोखा भी लेगा.

सम्राट की इस घोषणा से जितनी खुशी कपिलवस्तु के नागरिकों को हुई, उतनी ही दीर्घ और विडूडम को भी हुई. वे दोनों तो ऐसे किसी मौके की तलाश में ही थे.

प्रसेनजित और वासमखत्तिया अकेले ही कपिलवस्तु जाना चाहते थे, पर दीर्घ अपनी चिकनीचुपड़ी बातों से उन के साथ लग गया. वैसे तो उस का रोयांरोयां इन दिनों विडूडम की भक्ति से सराबोर था.

कपिलवस्तु में महात्मा बुद्ध की एक सभा में सम्राट प्रसेनजित को जाने को तैयार होता देख कर दीर्घ बोला, "कोसलाधिपति, धृष्टता के लिए माफी चाहता हूं. यदि आज्ञा हो तो एक सुझाव आप के सामने रखूं?"

"हांहां, कहो न. तुम तो मेरे विश्वस्त मंत्री, और सलाहकार, सभी कुछ हो. तुम्हें कोई राय देने के लिए मेरी अनुमति की क्या जरूरत है?"

"महान सम्राट, आप ने अपनी आंखों से अपने युवराज की करतूत तो देख ही ली कि शाक्यों पर उन्होंने कितना कहर ढाया है. अतः आप प्रायश्चित्त के रूप में क्यों न आज की सभा में ही कपिलवस्तु के सभागार, बौद्धमठों और बौद्ध भवनों के पुनर्निर्माण के लिए एक बड़ी राशि प्रदान करने की घोषणा अपनी ओर से कर दें? इस से दोनों ही राजतंत्रों में फिर से मधुर संबंध स्थापित हो जाएंगे."

"महामंत्री दीर्घ," प्रसन्नता से खिलते

हुए प्रसेनजित बोला, "सचमुच तुम मेरे श्रेष्ठ परामर्शदाता हो. मैं अभी जा कर ऐसी घोषणा करता हूं."

"पर अन्नदाता...?"

"अब क्या बात है?" प्रसेनजित ने प्रश्न किया.

"सम्राट, आप अन्यथा न लें तो राजसी भेस, और सहस्त्रों आभूषणों के साथ आप की घोषणा का अच्छा प्रभाव नहीं होगा. आप का बाह्य रूप भगवान बुद्ध की समता के आदर्श का विरोध करता दिखाई पड़ता है. मेरा कहना मान कर आप श्वेत, धवल वस्त्र पहन कर, उत्तरीय, अंगरखा और धोती सहित सफेद पगड़ी धारण कर आज की सभा में प्रवेश लें तो कपिलवस्तु की जनता आप को आंखों पर उठा लेगी."

प्रसेनजित इस सलाह को सुन कर खिल उठा. दीर्घ की पीठ ठोंक कर सच्चे भाव से उस ने सारे राजचिह्न, राजमुकुट, विरुद व कंठाहार उतार कर उसे सौंप दिए.

प्रसेनजित के महात्मा बुद्ध की सभा में जाने के साथ ही दीर्घ अश्व पर सवार हो कर सभी राजचिह्नों को संभाले, श्रावस्ती की ओर दौड़ पड़ा. उसी दिन कोसल की राजधानी में विडूडम ने अपनेआप को कोसल का नया शासक घोषित कर दिया.

विडूडम का विद्रोह जैसे ही प्रसेनजित के कानों में पड़ा, उसे अपने जामाता, अजातशत्रु का ध्यान आया, जहां उस ने वजिरा ब्याही थी. वह तुरंत राजगृह की ओर रवाना हो गया.

जब वह अर्द्धरात्रि को नगर के मुख्य द्वार पर पहुंचा, नगर परंपरा के अनुसार मुख्य द्वार पूरी रात्रि के लिए बंद था. उस के ग्रामीण भेस में द्वाररक्षक उसे पहचान भी नहीं पाए, क्योंकि राजमुकुट के बिना वह प्रसेनजित के वहां आने की अपेक्षा भी नहीं कर सकते थे.

लाचार प्रसेनजित को द्वार के बाहर ही जमीन पर सोना पड़ा. सुबह द्वाररक्षकों ने आंखें फाड़फाड़ कर देखा कि रात्रि में सर्दी में अकड़ कर कोसल शासक के प्राण पखेरू उड़ चुके हैं.

समय से पहले गद्दी मिल जाने पर विडूडम तानाशाह बन गया. उसे यह बात कचोटती रहती थी कि वह दासी पुत्र है. अतः समाज से बदला लेने के लिए उस ने कई गलत सामाजिक परंपराओं को जन्म दिया जो उस के अनैतिक और घिनौने चरित्र को ही प्रकट करती थीं.

विडंबना यह थी कि सामाजिक कुप्रथा को उस ने धर्म के नाम पर अनिवार्यता प्रदान कर दी थी. सोमा विडूडम की सामाजिक कुरीति का पंद्रहवां शिकार थी.

सोमा, साधारण वर्ग पर असाधारण चरित्र की श्रावस्ती की एक युवती थी. ठीक दीवाली के दिन उस का गौना होने वाला था. तीसरे पहर में सहेलियों ने सोमा का बड़ी लगन से शृंगार किया. दूल्हा संध्या काल तक आने वाला था.

सोमा के कमनीय तन और आकर्षक रूप को गजरों, इत्रफुलेल, आभूषणों और हलदी, उबटन से सुवासित किया गया. उस के पैरों में महावर व गोरी हथेलियों पर मेहंदी लगाई गई. उस के बालों को तेल, कंघे से संवार कर मांग पर टीका और झिलमिलाता कई जंजीरों वाला जेवर कानों के पीछे से चोटी में खोंसा गया.

कीमती वस्त्रों में ढकीदबी सोमा की गोरी देह का सौंदर्य प्रकाश में और भी गजब ढाने लगा. उस के बड़ेबड़े नयनों में खिंची काजल रेखा से आहत सोमा की सहेली बोल उठी, "अरी निगोड़ी, नजरें नीची कर, सारे तीर हम पर ही चला लेगी तो जीजाजी के दिल को क्या खाक घायल कर सकेगी. हाय, मैं तो बेसुध हो ही गई रे तेरे नयनों की मार से..."

"ठहर बेशर्म, मैं तेरी बेहोशी दूर करती हूं अभी," सोमा उस के पीछे दौड़ी.

उसी समय एक डोली दरवाजे पर आ

कर रुकी. सोमा को छोड़ कर सभी स्त्रीपुरुषों ने सहम कर आंखों ही आंखों में एकदूसरे को ताका. शोरशराबे और हंसीखुशी पर जैसे पाला पड़ गया. सोमा मुसकराहटों की जगह लेते एक गंभीर मौन का मतलब नहीं समझ सकी. वह सीधे मन से डोली में जा बैठी. पर उसे ताज्जुब था कि उस के मांबाप पलभर में ही न जाने कहां चले गए हैं?

अचिरावती नदी के किनारे श्रावस्ती के मकानों को दीपावली के कारण सजासंवरा देख कर सोमा की खुशी का अंत न था.

उसे यह तो मालूम था कि उस का पति खूबसूरत, गबरू जवान है. तभी तो उसे देख कर उस ने अपनी सहेलियों की आंखों में ईर्ष्या, और होंठों पर रोकतेरोकते भी आह देखसुन ली थी. सभी का मत था कि उस के व सोमा के पति जैसा जोड़ा प्रकृति कभीकभी ही बनाती है.

पर उस का पति इतना धनी भी है, यह बात आज ही उसे मालूम हो रही थी. अपनी डोली को कंधों पर ले जाते कहारों को सुर्ख लाल रंग के अंगरखों, पगड़ी व चुस्त पाजामों में सजा देख कर उसे अपने पति की कुलीनता में कोई संदेह नहीं रहा था.

डोली का रखरखाव और कीमती कामदार परदों, गावतकियों, मसनद, और मखमली रजाई से भी उस के मालिक का वैभव झलक रहा था. हठात सोमा की नजर सामने लगे दर्पण पर चली गई. अपने रूप को देख कर वह स्वयं ही लाज से दोहरी हो गई.

कुंडल, मुक्ताहार व अंगद जैसे आभूषणों, गजरे से गुंथी लंबी वेणी, आरक्त मुख और गुलाबी अधरों पर हलकी मुसकान लिए अपने पति से मिलन को आतुर सोमा का रोमरोम जैसे खिला जा रहा था.

सोमा को वह मधुर स्मृति आलोड़ित



बंधन

सागर दायरों में
सिमट नहीं पाए,
स्नेह किसी बंधन में
रह नहीं पाए.
—कमलेश अग्रवाल

कर गई जब फेरों के समय अचानक उस की नजरें पति की ओर उठ गई थीं. उन्होंने आंखों ही आंखों में उस पर प्यार का जैसे सागर उड़ेल दिया था. वह भीग ही तो गई थी अंदर तक. तभी उस के पति ने उस की कोमल हथेली को अपनी हथेली से जोर से दबा दिया था. पीड़ा से चीख निकल जाती उस की...

सचमुच ही वह चीख पड़ी थी. क्योंकि डोली का संतुलन बिगड़ जाने के कारण वह बाहर गिरतेगिरते बची थी. अचानक ही उस की डोली धरती पर रख दी गई.

'मारोकाटो,' 'जाने न पाए' के बोलों के साथ उस ने तलवारों की टकराहट भी सुनी. 'हाय' और 'ओह, मार डाला' के स्वरों के साथ शीघ्र ही सब कुछ शांत हो गया. वह समझ नहीं सकी कि बाहर क्या हो रहा है, क्योंकि परदे के ऊपरी छेदों से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था.

आंखें बराबर गड़ाने पर उसे यही दिखाई पड़ा कि डोली से दूर एक कहार और उस के नजदीक ही एक युवक पीठ के बल धरती पर पड़े हुए हैं. उन दोनों के

आसपास खून का ढेर इकट्ठा हो गया था. युवक की गोरी, पुष्ट कलाई को देख कर उसे बड़ा बुरा लगा कि ऐसा सुंदर तन न जाने क्यों खून में नहा गया है?

रक्त को देख कर उस ने भयभीत हो कर अपनी आंखें परदे से हटा लीं, 'कोई होगा, उस से मुझे क्या?'

अपने पति की मधुर स्मृति में उस ने खो जाने की कोशिश की, 'कितने सुंदर हैं वह. उन की कालीकाली मूंछें... और भुजाएं तो कैसी लंबी हैं, घुटनों तक पहुंचने वाली."

उन के एक हाथ पर कलाई से ऊपर उस ने एक घाव जरूर देखा था. दाहिनी भुजा ही तो थी उन की? उसी से तो फेरों में उन्होंने उस की हथेली थाम रखी थी. घाव किस तरह का था? क्या हो गया था उन्हें? किसी से झगड़ा, टकराहट? ऐं... घाव...

व्यग्रता से उस ने लाजशर्म को छोड़ कर डोली का परदा ऊपर उठा दिया. वह जानना चाहती थी कि...

तभी उसे बाहर झांकते देख कर एक कहार सिर झुका कर बोला, "क्षमा करें देवी, एक सिरफिरे युवक ने पीछे से आ कर हम पर न जाने क्यों वार कर दिया. अपनी तलवार से उस ने हम में से एक की जान ले ली. पर अपने साथी की मौत का बदला लेने के लिए हम ने भी उस दुष्ट के टुकड़ेटुकड़े कर डाले.

"आप कृपया इस घटना के बारे में किसी को कुछ न बताएं, नहीं तो हमारी सब की जान ले ली जाएगी. बस, चौथे कहार की जगह मैं खुद, उन का नेता अपने कंधे पर डोली को उठा कर चलता हूं. आप को जो असुविधा हुई, उस के लिए कृपया हमें क्षमा करें."

पर सोमा की दृष्टि तो धरती पर पड़े युवक को तलाश रही थी. उस की नजरों में युवक की खून से सनी लाश घूम रही थी, जिस की कलाई पर उस ने एक आघात का चिह्न देखा था. वह घाव था, गहरा, लंबा.

'शायद उन दोनों शवों को उठा कर कहीं भेज दिया गया है?' सोचते हुए उस का हृदय बैठा जा रहा था. पर उस के पति यहां क्या करने के लिए आएंगे? वह उन्हीं के पास तो जा रही थी, उन्हीं की डोली में बैठ कर. उस ने संतोष की सांस ली. पर एक अकुलाहट, एक चिंता उस को लगातार खाए जा रही थी. न जाने क्यों?

डोली के रुकते ही उसे आशा थी कि उस का पति और उस की ससुराल की औरतें उस के स्वागत के लिए आगे आएंगी. पर किसी को आता न देख जैसे ही वह परदा उठा रही थी एक अजीब स्वर उस के कानों में पड़ा, "चलिए, सम्राट आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं."

"सम्राट?" वह चिहुंक उठी. एकएक कर अपनी सहेलियों, परिवार के सदस्यों के मौन और मातापिता की अचानक अनुपस्थिति का रहस्य उसे ज्ञात हो गया. तो आज वह विड़ूडम की वासना का शिकार बनने के लिए लाई गई है?

उस ने सुना तो था कि प्रत्येक ब्याहता युवती को पति के घर जाने से पहले विड़ूडम की सेवा में 'आशीर्वाद' के लिए ले जाया जाता था. जो युवती उसे भा जाती थी उसे अंतःपुर में डाल दिया जाता था. सम्राट के आशीर्वाद के बाद ही, कुछ अपवादों को छोड़ कर, जिन्हें राजा के सेवक अपनी मरजी से छोड़ देते थे, युवती अपनी विवाहित जिंदगी प्रारंभ कर सकती थी.

जो लोग श्रावस्ती व कोसल में इस परिपाटी को नहीं मानते थे, उन का घर आग से स्वाहा कर दिया जाता था और जब तक संबंधित युवती खुद राजा के सामने नहीं आ जाती थी, उस के घरवालों को कड़ी यातनाएं दी जाती थीं.

ऐसी 'साहसी' युवतियों को नगरवधू बनाने के लिए श्रावस्ती के हट्ट में उन की खुली कीमत लगाई जाती थी. विड़ूडम का कुतर्क था कि जनता की रक्षा और उस की सुविधा के बदले उसे मनोवांछित युवतियों से शारीरिक संबंध का स्वाभाविक अधिकार प्राप्त है. वह 'धरती का ईश्वर

प्रतिनिधि' है, अतः उस की सेवा न करने वाली 'पाप' की भागी थीं. शुरू में कड़े विरोध के बाद वह इस नई परिपाटी या अपनी लंपटता को लागू कराने में सफल हो गया था.

कुछ पल के लिए सोमा भय से ग्रस्त रही, पर फिर उस ने विडूडम की चुनौती स्वीकार करने की बात तय कर ली. वह कोसल के राजा की गलत परंपरा की आखिरी कड़ी बनना चाहती थी.

बस, वह यह जानने को जरूर व्यग्र थी कि क्या उस के पति उस के सम्मान की रक्षा में खेत रहे? क्या वह विधवा... नहींनहीं. उस ने इस आशंका को झटक कर वर्तमान हालात का सामना करने की तरफ ध्यान लगाया.

उसे देखते ही विडूडम के चेहरे पर लालसा की लाली नाच उठी. सोमा की इच्छा हुई कि वह तुरंत उस का मुंह नोच कर उसे हक्काबक्का कर दे. पर उस का दुश्मन बहुत धूर्त था और उसे फूंकफूंक कर प्रत्येक कदम रखना था. सांप उस के सामने फन उठाए फुफकार रहा था और उसे नेवले की तरह ही उस पर वार करना था.

"आओ, तुम्हारे स्वागत में हम सुरापान करें."

"सम्राट, आप कोसल की जनता के माईबाप हैं. मैं तो इस रिश्ते से आप की बेटी हूं. वैसे भी आज दीपावली का पर्व है... मुक्ति का उत्सव. इसलिए मुझे स्वतंत्र कर दीजिए. मेरी हाथ जोड़ कर आप से विनती है कि आप मेरे सम्मान का आदर करें... क्योंकि नारी का सम्मान बचाना शासक का कर्तव्य है."

"ओह, सारा स्वाद कसैला कर दिया तुम ने, मूर्ख लड़की," विडूडम ने पूरी ताकत से सुरापात्र दीवार पर फेंका. एक झनझनाहट की आवाज राजमहल में गूंजी. इसे सुन कर एक विकराल शक्लसूरत का आदमी वहां आ खड़ा हुआ.

"आज्ञा दीजिए, सम्राट."

"तुम ने दोबारा कोई पागलपन किया तो मैं तुम्हें इसी दैत्य को सौंप दूंगा. खोत्त-जाओ, अभी तुम्हारी हमें कोई जरूरत नहीं है. आओ सुंदरी, मेरे निकट बैठो और मुझे सुरापान कराओ."

सोमा समझ गई कि वह रावण के पंजे में है. पर उसे मालूम था कि कोई राम उस की रक्षा के लिए नहीं आएगा. विडूडम को बहुत ज्यादा सुरापान कराने की चाल भी शायद वह समझ गया था.

"उठाओ इन सुरापात्रों को," कहते कहते जैसे ही वह दुष्ट उस की ओर बढ़ा, वह बोल उठी, "आप यदि चाहते ही हैं तो मैं दोबारा समर्पण के लिए तैयार हूं."

"दोबारा? क्या मतलब है तुम्हारा?" उस की पकड़ ढीली हो गई थी.

> **मौलिकता**
>
> *मौलिकता हमारे समय में बनाया गया एक और तावीज है जो चकरा देने वाली तेजी से अपने विनाश की ओर बढ़ रहा है.*
>
> —पाब्लो नेरूदा

"कोसलाधिपति, श्रावस्ती के कृष्णा मंदिर के पुजारी देवप्रिय द्वारा मैं..." वह फफकफफक कर रो पड़ी.

"अपने आंसू पोंछ कर मुझे सारी बात बताओ. कब व कैसे तुम्हारा सम्मान उस दुष्ट ने लूटा?"

"मान्यवर, वह कई सुंदर युवतियों को अपनी वासना का ग्रास बना चुका है. उस धूर्त ने महामंडप के भीतर एक ऐसा गुप्त स्थान बना रखा है कि परिक्रमा करने वाली युवतियों को वह एक पत्थर हटा कर भीतर खींच लेता है और युवती के परिवार वाले ठगे खड़े रह जाते हैं." अपनी एक सहेली के साथ घटी सच्ची घटना को उस ने आपबीती बना कर सुना दिया.

"क्या तुम मुझे वह स्थान अभी चल कर दिखा सकती हो?"

विडूडम की भयावह सूरत से वह कांपी नहीं, बोली, "जी सम्राट, यह बताना

भी मैं अपना कर्तव्य समझती हूं कि जिस डोली से आप ने मुझे यहां बुलाया है, उस पर भी एक युवक आक्रमण कर मुझे अपना शिकार बनाना चाहता था. नारी तो हर जगह ही असुरक्षित है, महान्यायवादी," रोआंसी बन कर वह बोली, "आप को कहारों ने सारी बात बता दी होगी कि एक कहार और वह युवक किस तरह आपस में टकरा कर अपने प्राण दे चुके हैं?"

सोमा विडूडम की पूरी गुप्त व्यवस्था को नष्ट करने पर तुली हुई थी. इसीलिए लालभभूका हो कर जब विडूडम ने चारों कहारों को कालकोठरी में भेजा तो उन नारी शत्रुओं से उसे तनिक भी सहानुभूति न हुई.

"ठहरो, हम अभी आते हैं," कहते हुए विडूडम भीतर चला गया.

सोमा को भय हुआ कि कहीं वह देवप्रिय को वहीं बुला कर उस का झूठ न पकड़ ले. किंतु उसे मृत्यु का कोई भय न था. अचानक ग्रामीण भेस बना कर विडूडम आते हुए बोला, "अब चलो, वह धूर्त पुजारी मुझे पहचान नहीं सकेगा. तुम परिक्रमा करते हुए आगेआगे चलना और मैं तुम्हारे पीछे रहूंगा," विडूडम ने उसे अपनी योजना बता दी.

सोमा को विश्वास था कि कामी, थुलथुल देवप्रिय उसे देख कर अपनी हरकत दोहराए बिना नहीं मानेगा. वह अपनी सरलता और भोलेपन से पुजारी को बरबस आकर्षित करती रही.

वास्तव में ही परिक्रमा के समय एक बड़ी शिला दीवार से हटी और सोमा को एक काले, खुरदरे हाथ ने खींच कर महामंडप के तहखाने में ले जाना चाहा. पर विडूडम पूरी तरह से सावधान था. भारीभरकम पत्थर के दीवार में पुनः स्थापित होने से पूर्व ही देवप्रिय को धक्का दे कर वह भी प्रविष्ट हो गया.

"नराधम, नारकीय कीड़े, मैं तेरा काल विडूडम हूं."

हक्काबक्का पुजारी जब तक संभले, विडूडम की कटार उस की भारीभरकम तोंद के आरपार हो गई.

"आओ, अब चलें," जैसे ही विडूडम ने अपनी पीठ फेरी, अंधेरे में पहले से उठाए नुकीले पत्थर का वार सोमा ने उस के सिर पर कर दिया, "मूर्ख, कुंभकरण को तो तू ने मार डाला, पर रावण के मरे बिना दीवाली कैसे मनाई जाएगी?"

भाग कर सोमा जब अपने घर पहुंची तो राजमार्ग से उठा कर लाए गए उस के पति के शव पर परिवार के सदस्य रुदनक्रंदन कर रहे थे.

"मैं ने तुम्हारा प्रतिशोध ले लिया है, प्रियतम," द्वार के बाहर ही वह फुसफुसाई. फिर वहां से जा कर वह श्रावस्ती के मुख्य मठ में बौद्ध भिक्षुणी बन गई. ●

दिन दहाड़े

मेरा एक मित्र बाल गिरने की समस्या से बहुत परेशान था. एक बार एक महिला उस के पास आई और एक तेल की शीशी दिखा कर बोली, "3 महीने तक लगातार इसे लगाने से बाल झड़ने बंद हो जाएंगे और घने बाल उग आएंगे. नए बाल उगने के बाद ही मैं पैसे लूंगी."

मित्र ने आश्वस्त हो कर तेल की एक शीशी ले ली. उस के बाद उस महिला ने तेल को इस्तेमाल करने की विधि बताई, "100 ग्राम लौंग व कपूर की राख को इस तेल में मिला कर सिर पर लगाना है."



यह कह कर उस ने कागज की पुड़िया में राख दिखाई. मेरे मित्र ने मेहनत से बचने के लिए 60 रुपए दे कर बनीबनाई राख ले ली.

जब 3 महीने बाद भी मित्र के सिर पर नए बाल नहीं उगे और न ही बालों का झड़ना बंद हुआ तब मेरे मित्र को पता चला कि उस महिला ने उस मामूली राख के बदले 60 रुपए ले कर ठग लिया था. —हेमंत पांडेय

*

एक शाम एक पुरुष एक महिला के साथ हमारे गांव के एक परिवार में आया. उस ने घर के मुखिया से पूछा, "क्या आप का ही नाम तोबियस है?"

'हां' कहने पर उस ने बताया, "हम लोग कोरबा में रहते हैं. आप का बेटा जोसेफ भी हमारी ही कालोनी में रहता है. उसी ने हमें बताया है कि आप की बड़ी बहन 5-6 साल से बीमार है. अतः उस ने हमें दवा बना देने के लिए भेजा है."

तोबियस ने उन की खूब खातिरदारी की. उन्हें रहने के लिए एक अलग कमरा दे दिया. रात को खाना खाने के बाद उन लोगों ने कुछ जड़ीबूटियां पीस कर मरीज को पिलाईं तथा हाथपैरों में मालिश की.

रात को सब के सो जाने पर उन लोगों ने तोबियस को अपनी बातों से इतना फुसला लिया कि उस ने स्वयं ही बाक्स में से 2 नए कंबल निकाल कर उन्हें दिए. यही नहीं, उस ने 5 बकरे व कुछ मुर्गे भी उन के हवाले कर दिए और पौ फटने से पहले ही उन्हें सारे सामान के साथ गांव से बाहर तक छोड़ आया.

घर लौटने पर जब उस ने देखा कि मरीज की हालत तो पहले से भी ज्यादा खराब हो गई है तब उस की समझ में आया कि उस के साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ है.

—सरिता पाठक

हमारे एक पड़ोसी डाक्टर साहब के यहां बैसाखियों के सहारे चलता हुआ एक व्यक्ति आया. उस समय डाक्टर साहब घर पर नहीं थे. डाक्टर की पत्नी ने उसे बाहर की तरफ खुलने वाले कमरे में बिठा दिया जहां डाक्टर साहब अपने मरीजों को देखा करते थे.

जब काफी देर तक डाक्टर साहब नहीं आए तो उन की पत्नी उस कमरे की ओर गई ताकि मरीज को अगले दिन आने के लिए कह कर वापस भेज दे.

लेकिन उस कमरे का नजारा देख कर वह दंग रह गई. वह



विकलांग मरीज वहां नहीं था तथा वहां से दीवार घड़ी, महंगी दवाइयां और कई डाक्टरी उपकरण गायब थे. अलबत्ता टूटीफूटी बैसाखियां वहां जरूर पड़ी थीं.

—मांगीलाल शर्मा ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बंधन के दायरे

सरिता, बीस साल पहले, अप्रैल (प्रथम) 1974

कहानी • शकील सिद्दीकी

"शीबा सो गई है. उस के सांवले नर्म कपोलों पर आंसुओं की लकीरें अब भी चमक रही हैं, ठीक आकाशगंगा की तरह. उस को इस स्थिति में देखना मेरे लिए अत्यंत कष्टदायक होता है. उस का इस तरह हिचकियां लेना, मेरी गोद में मुंह रगड़रगड़ कर सिसकना, साड़ी गीली करना और उस के बाद ऊंघने लगना अब मेरे लिए असहनीय होता जा रहा है.

'शीबा को मैं ने बहुत बार समझाने की कोशिश की है, पर समझना जैसे उस के वश की



बात नहीं. उसे समझाना स्वयं मेरे लिए बेपनाह दर्द के दौर से गुजरने के समान है. मैं तो हार जाती हूं, पर मां उसे कुछ देर के लिए खामोश कर देती हैं.

उस की 'अब्बूअब्बू' की रट समझाने के नाम पर मुझ से इतना ही कहला पाती है, "बेटी, तुम से कहा न, अब्बू जरूर आएंगे, जल्दी आएंगे. अच्छे बच्चे रोते नहीं, अब्बू आएंगे तो तुम्हें रोता देख कर क्या कहेंगे, छिछि, शब्बो रोती है. अब चुप हो जाओ, रोओगी तो अब्बू नहीं आएंगे."

पर वह नहीं मानती. माने भी कैसे? पहले भी कितनी बार उसे इन शब्दों से भरमाया है, बहलाया है. वह चुप भी हो गई है, उस ने आंसू भी पोंछ लिए हैं और मेरे कहने पर वह मुसकराई भी है. वह नम और हसरतभरी आंखों से बहुत देर तक निश्चल खड़ी दरवाजे की ओर ताकती रही है, पर उस के अब्बू नहीं आए हैं. उस ने पहाड़े याद कर लिए हैं, सौ तक गिनती भी मां को सुना दी है और साफ फ्राक भी पहन ली है, पर उस के अब्बू तब भी नहीं आए हैं. अब वह किसी बात पर विश्वास नहीं करती. बहुत समझाने के बाद भी अब वह नहीं मानती. उस का रोना और 'अब्बूअब्बू' की रट जारी रहती.

वह खामोश तब होती, जब अम्मां साड़ी के छोर से चश्मा पोंछतीं कमरे में पैर रखते ही चीखतीं, "क्या बात है? यह क्या 'अब्बूअब्बू' की रट से घर सिर पर उठा रखा है? तुम से कितनी बार कह चुकी हूं कि अब्बू को अल्लाह मियां ने अपने पास बुला लिया है. अब वह नहीं आएंगे. अगर सीधे से तुम्हारी समझ में बात नहीं आती तो धरूं एक थप्पड़?"

अम्मां का यह रूप देख कर 5 वर्ष की नन्ही शीबा मौन हो जाती और सहमीसिमटी मूर्तिवत खड़ी अपने आंसू धरती की गोद में बिखेरती रहती. कमरे में



"दुलहन, तुम्हारी बेपरदगी न तो मुझे पसंद है और न इन्हें. इस खानदान की पेशानी पर धब्बा मत लगाओ," भाभी ने नसीम से कहा.

अचानक स्थापित हुआ मौन का साम्राज्य अम्मा को वापस जाने का इशारा करता. उधर अम्मां कमरे के बाहर कदम रखतीं, इधर शीबा मेरी दोनों रानों के बीच मुख रगड़ते हुए आंसू बहाना शुरू कर देती.

अम्मां का यह रुख मुझे भी बहुत खलता. उन के शब्द विषैले बाणों की तरह मेरे तनमन को छेदते हुए मुझे पीड़ा के उस छोर तक पहुंचा देते, जहां जी चाहता कि सब कुछ तोड़फोड़ दूं, अपने चारों ओर का संसार नष्ट कर दूं और खुद भी खाक हो जाऊं. पर कुछ कर नहीं पाती. पीड़ा को नियति मान कर बगल में रखी किताबों की अलमारी पर हाथ फेरने लगती. उंगलियां 'कनुप्रिया' पर ठहर जातीं.

न जाने 'कनुप्रिया' में ऐसा क्या है, जब भी पढ़ती हूं, नया रस मिलता है. पर सुख की चरम अनुभूतियों के क्षणों में भी इन गालिब व फैज पढ़ कर बात करते समय जायसी, निराला और महादेवी की रचनाओं में इस्तेमाल शब्द ही मुख से निकलते हैं. लोग आश्चर्य करते हैं, पर... लगता है, भटक गई हूं. बात शीबा की कर रही थी.

शीबा सो रही है. मेरे हाथों में अब भी 'कनुप्रिया' मौजूद है. मेरा अस्तित्व ढेर सारे प्रश्नों के बीच उलझा हुआ है. मैं इन प्रश्नों से जूझ रही हूं. शीबा के आंसू, अम्मां की चीख और पहाड़ सी काली रात अकेले गुजारने का दर्द... यह सब क्यों? जीवन के ये दिन जब किसी चौड़ी छाती का स्पर्श पाने तथा संगमरमरी आगोश में अपने को समर्पण करने की चाह प्रत्येक नारी के हृदय में सागर की लहरों सी उमड़ा करती हैं, तब जिसे पास होना था, उस का दूर होना. आखिर, यातना की यह यात्रा कब तक?

शीबा की अब्बूअब्बू की रट नसीम को अतीत की अंधेरी खाइयों में धकेल देती और उस के सामने अपनी वह बिखरी जिंदगी साकार हो उठती जहां छिपा था अपनों का ही दिया बेपनाह दर्द. जब भी वह इस से छुटकारे की राह तलाशती, बेटी का भविष्य आड़े आ जाता. ऐसे में क्या बंधन के इस दायरे से उस की मुक्ति संभव हो पाई?

पंक्तियों में भटकती रह जाती हूं, 'सुनो, कनु, सुनो, क्या मैं सिर्फ एक सेतु थी तुम्हारे लिए?' और इस के बाद अनेक पंक्तियों के भावों से अपना दर्द जोड़ने लगती हूं. 'कनुप्रिया' की पंक्तियों में भटकतेभटकते अनायास वे दिन याद आ जाते हैं जब मैं कालिज की गीतगान प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुआ करती थी. इस स्मृति के साथ ही ढेरों वे चेहरे मेरे नयनों के सम्मुख उभर आते हैं जो मेरी आवाज पर मुग्ध हो कर मेरा सामीप्य पाने को सदा लालायित रहते थे, कितने ही ऐसे थे जो मेरा जीवनसंगी बनने का गौरव प्राप्त करने की आकांक्षा मन में भरे मुझे चाहपूर्ण नयनों से निहारा करते थे, पर मैं... और अब तो लाख मीर, उत्तर खोजने पर भी जब नहीं मिलता, तब अपने जीवन में पनपते निर्दयी एकांत, अनाथ यौवन तथा अंधकारमय भविष्य के संबंध में सोचने लगती हूं. सोचती हूं तो जी चाहता है, रोऊं, खूब रोऊं, पर रो नहीं पाती. कितना रोई हूं मैं. अब तो आंसू भी साथ नहीं देते. जी हुई जिंदगी आंखों के सामने मंडराने लगती है. अतीत को नयनों के सम्मुख आने से रोक नहीं पाती. जो झेला है, उसे फिर झेलती हूं, देख चुके को पुनः देखती हूं.

अम्मां और पापा के एक साथ नियमित रूप से दरगाह जाने के पीछे एक सोचीसमझी योजना है, इस से मैं पूरी तरह अनभिज्ञ थी. पापा तो खैर दरगाह की



"छोटे मियां ने हैदराबाद में दूसरी शादी कर ली है," अम्मां से यह खबर सुन कर नसीम सिसकने लगी.

मसजिद में नमाज पढ़ने पहले से ही जाया करते थे, पर अचानक एक दिन अम्मां भी उन के साथ रोज शाम को दरगाह जाने लगीं. नमाज पढ़ने नहीं, दरगाह की मजार पर फातिहा पढ़ने. बात तब कुछकुछ समझ में आने लगी, जब छोटे मियां घर पर खाने पर बुलाए जाने लगे. छोटे मियां यानी दरगाह के मौतबल्ली हकीम अजीजुर-रहमान के, जिन्हें लोग प्यार से बड़े मियां कहते हैं, छोटे भाई हफीजुररहमान. बड़े भाई के बाद आधी जायदाद तथा आधी आमदनी के मालिक.

छोटे मियां तब एम.ए. करने के बाद हकीमी पढ़ रहे थे और मैं एम.ए. में प्रविष्ट होने को तैयार थी. छोटे मियां के इस तरह घर आनेजाने ने मुझे उन के करीब कर दिया. उन की आंखों से निकली जानीपहचानी रोशनी के धागे में बंध गई और फिर एक दिन वह भी आया, जब छोटे मियां के घर के दरवाजे मेरे कदम चूम रहे थे.

नयनों के सम्मुख शादी का चित्र घूम जाता है. नन्ही सी बरात, गंध बिखेरते फूलों की लड़ियों से गूंथे सेहरे के बीच मंदमंद मुसकराते छोटे मियां, चंद सहेलियां, पापा के कुछ दोस्त, दोचार रिश्तेदार, निकाह, छुआरे और छोटे से पंडाल में छोटी सी दावत. न शोर, न धूम, न गीत, न संगीत. और विदाई के समय जो कुछ साथ गया था, वह सब आज भी मेरी आंखों में सहमासहमा सा सुरक्षित है. अम्मां के चंद पुराने जेवर, सहेलियों के उपहार, पापा के दोस्तों के तोहफे, रिश्तेदारों द्वारा सलामी में दिए गए नोटों की हलकी सी गड्डी, और इन सब के अतिरिक्त जो छूट गया था, पर था मूल्यवान, वह था आंसुओं का वह सिलसिला जो डोली के चारों ओर खड़े लोगों की आंखों से प्रारंभ हो कर धरती की गोद तक जा कर समाप्त हो जाता था.

यही थी वह सादा सी तकरीब, वह

छोटा सा समारोह, जिस में दो प्राणों को एक होना था. और शायद मेरी शादी के नाम पर छोटा सा समारोह, यह सादी सी तकरीब ही पापा और अम्मां की पूर्वनिश्चित योजना थी और जिस ने उन्हें एक साथ रोज शाम को दरगाह जाने के लिए प्रेरित किया था. लेकिन इन सब के बाद भी मैं संतुष्ट व प्रसन्न थी. छोटे मियां के प्यारभरे खतों, हसीन वादों तथा पवित्र सौगंध ने मेरे मन में विश्वास जमा दिया था कि अम्मां व पापा का चुनाव गलत नहीं. मेरी जिंदगी की खुशियां, मेरे भविष्य का उजाला, मेरी गोदी के फूल, सब कुछ छोटे मियां के हाथों में सुरक्षित है और इसी विश्वास के साथ उस रंगीन रात को मधुर गंध बिखेरती, गुलाबी चुनरिया में लिपटी अपनी देह छोटे मियां को सौंप दी थी.

मेरी बांहों का कसाव उन के शरीर पर बढ़ता रहा और वह मुझे सजेसंवरे सुंदर भविष्य की सैर कराते रहे, प्रेम की गागर छलकाते रहे. हर साल शादी की सालगिरह मनाने का वादा दोहराते, फूल खिलने की बात करते और मुझे अपने जीवन का प्रकाश बताते रहे, और मैं मौन बूंद सी, अस्तित्वहीन, निर्धन के दीपक की लौ सी क्षीण सब कुछ मन में समेटती रही. स्वप्नलोक में विचरती उन्हें अपने को सौंपती रही. विश्वास गाढ़ा हुआ और शंकाएं दूर हुईं. मेरे मनमस्तिष्क में छोटे मियां कनु बन उभरने लगे और मैं अपने को उन की प्रिया समझ गौरवान्वित होती रही. उन के 'युसुफ' होने के एहसास तथा खुद को 'जुलेखा' समझने की सुखानुभूति से जकड़ी मैं कल्पनालोक में विचरने लगी.

छोटे मियां कुरसी पर बैठे कुछ सोच रहे होंगे और मैं तखत पर आसीन सब्जी काटते हुए उन्हें निहारती. उन के रूप की गंध आंखों से पीती इतनी बेसुध हो जाती कि छुरी आलू या टमाटर पर चलतचलते मेरी उंगलियों पर चलने लगती. और तब मेरी आह सुन कर, मेरी रक्तरंजित उंगलियों को देख कर छोटे मियां बदहवासी के आलम में...

लेकिन अब अपनी नादानियों पर आठआठ आंसू रोती हूं. धोखा मन ने नहीं, आंखों ने भी खाया था. संतोष के लिए हृदय को समझाती हूं, 'धोखा तुम ने खाया नहीं, धोखा तुम्हें दिया गया है' और तब मुझे अम्मांपापा, छोटे मियां और फिर सारा समाज अपराधी नजर आने लगते. अपराधी किसी को भी मानूं, पर यादें पीछा नहीं छोड़तीं. स्मृतियों का एक लंबा सिलसिला मुझे घेरे ही रहता है.

स्वप्नों का जो सुंदर महल मैं ने खड़ा किया था, वह रंगीन कांच का निकला. महल खड़ा किए बहुत दिन नहीं हुए थे कि वह चटकने लगा, मैं बिखरने लगी, छोटे मियां मुझ से दूर होने लगे. हाथपैरों की मेहंदी अभी छूट नहीं पाई थी कि एक दिन बड़े मियां की बीवी ने, जिन्हें मैं भाभी कहा करती थी, हुक्म सुनाया, "दुलहन, तुम्हारी बेपरदगी न तो मुझे पसंद है और न इन्हें. तुम एक शरीफ घराने की बहू बन कर आई हो. इस खानदान की पेशानी पर धब्बा मत लगाओ. आज से ही बुरका पहनना शुरू कर दो."

भाभी की आज्ञा का पालन करना मेरे लिए कालकोठरी में बंद होने से कम यातनाप्रद नहीं था. मुझे परदे से सख्त चिढ़ थी और है. नकाब देख कर ही मुझे कोफ्त होती है. मैं भाभी का हुक्म टाल गई, पर एक दिन जब छोटे मियां ने भाभी के हुक्म को अपनी इच्छा के रूप में मुझ पर प्रकट किया तो मैं मस्तक नत करने पर मजबूर हो गई. न चाहते हुए भी परदे के बंधन में मुझे जकड़ना पड़ा.

कुछ दिनों के बाद एक अन्य फरमान जारी हुआ, 'दुलहन से कहो, हिंदी में नहीं, उर्दू में एम.ए. करे.' यह फरमान बड़े मियां की तरफ से जारी हुआ था. छोटे मियां की स्वीकृति भी उस के साथ थी. दिल टूट गया. स्वप्नलोक जल रहा था. जिन

कागजों पर छोटे मियां ने जीवनभर ईमानदारी से साथ निभाने की सौगंध खाई थी, वे कागज ही पंख बन कर आग को हवा दे रहे थे. जी चाहा, छोड़ दूं छोटे मियां को, छोड़ दूं इस घर को. लेकिन नैतिकता का प्रश्न, समाज का भय, कानून के बंधन और फिर अवलंब का अभाव. सब कुछ जान व सुन कर भी अम्मां और पापा की आंखें साफसाफ कह रही थीं, 'छोटीछोटी बातों पर ध्यान मत दो, तुम्हें वहीं रहना है, वहीं रहो.'

पापा ने समझाया था, "बेटी, कानून ने मुसलमान औरत को तलाक देने का हक नहीं दिया. तलाक का हक सिर्फ मर्द को हासिल है. वह जबान से तलाक देने का हकदार है."

मैं ने पापा से बहस करनी चाही थी, पर उन्होंने कहा था, "मान भी लो कि अदालत के दरवाजे तुम्हारे लिए खुले हैं, पर अदालत से इनसाफ पा लेना इतना आसान तो नहीं. कानून ही तुम्हारा साथ नहीं दे रहा है तो अदालत बेचारी क्या करेगी? फिर यह भी तो सोचो, कितना बड़ा खर्च, कितना लंबा अरसा, हजारों दिक्कतें, सैकड़ों मुशकिलात. बेटी, मेरा कहना मानो, हालात से सुलह कर लो."

अंततः एक और हार्दिक इच्छा पर बड़ा सा पत्थर रखने की मजबूरी से उपजी पीड़ा को झेल ही गई. इस बीच पांच वक्त नमाज तथा नियमित रूप से कुरान शरीफ पढ़ने का हुक्म भी जारी हो चुका था.

अब मेरी दिनचर्या थी, सुबह उठ कर नमाज व कुरान पढ़ना और उस के बाद सारे घर के लिए चाय व नाश्ते की व्यवस्था करना. भाभी ने अब पहले से अधिक देर तक इबादत करनी शुरू कर दी थी इसलिए काम का सारा बोझ मेरे ही कंधों पर आ पड़ा था. बहरहाल, सारा काम निबटाने के बाद कालिज जाने की तैयारी करती. बहुत भागदौड़ के बाद कहीं सही समय पर कालिज पहुंच पाती.



गुजर गई रातें

कभी लब हिले, कभी आंखों ने
इशारों से कहीं बातें,
आए करीब तो आगोश में
सिमटी सांसें,
फिर शिकवोंशिकायत का दौर चला,
रूठ कर मनाने की बातों में
गुजर गईं रातें.

—भारती पांडे

सारी परेशानियों के बाद भी संतोष इसलिए था कि चलो, कम से कम पढ़ाई तो जारी है. एम.ए. करना मेरे जीवन की बहुत बड़ी लालसा थी. मेरी इस लालसा के साथ पापा की इच्छा भी जुड़ी हुई थी. पर मेरा यह संतोष, मेरी यह खुशी भी उस रात छिनती नजर आई, जब अपनी गोद में मेरा सिर रख कर बाल सहलाते हुए छोटे मियां ने कहा, "माफ करना, निस्सो, अब तुम्हें पढ़ाई छोड़नी होगी."

मैं ने चौंक कर पूछा, "क्यों?"

छोटे मियां का उत्तर था, "तुम से घर की हालत छिपी हुई नहीं है. खर्च की किल्लत तो है ही, भाभी से अकेले घर का काम सपरता भी नहीं. फिर भाईजान को भी तुम्हारा कालिज जाना पसंद नहीं. वह कई बार मुझ से कह चुके हैं, 'छोटे, दुलहन से कहो, शरीफ घरों की बहूबेटियां कालिजों और सड़कों पर जलवा अफरोज होने के लिए नहीं, मर्दों की खिदमत के लिए होती हैं.' "

सब कुछ सुन कर भी मैं कुछ कह पाने में अपने को असमर्थ अनुभव करती हुई

बिस्तर पर पड़ी आंसू बहाती रही. अंधियारे से घिरे अपने भविष्य की कल्पना कर कांपती रही और छोटे मियां प्यारभरे शब्दों के भ्रमजाल से मुझे भविष्य के प्रति बारबार आश्वस्त कराते रहे.

दूसरे दिन कालिज जाने के लिए तैयार होती कि भाभी कि आवाज ने मुझे उन तक पहुंच जाने का संकेत दिया. मैं भाभी के पास पहुंची. पलंग पर बैठ जाने का इशारा करने के बाद वह मुझ पर अपनी समझदारी न्योछावर करने लगीं, "हमारे मजहब ने औरत को बेशकीमती मोती की तरह इज्जत, हुस्न व अहमियत बख्शी है. मोती की अहमियत, इज्जत, हुस्न व कीमत सभी कुछ उस के मखमली डब्बे में बंद रहने पर महफूज होती है और औरत की घर के भीतर खाविंद की खिदमत करने में."

और भी बहुत सी हिदायतें, बहुत सी नसीहतें दी गईं.

मेरे कालिज छोड़ने की खबर से पापा को भी गहरी ठेस पहुंची. बड़े मियां और उन के बीच गरमागरमी भी हो गई. छोटे मियां को भी वह दोचार बातें सुनाए बिना न रह सके. मामला किसी तरह रफादफा हुआ, पर पापा ने उस दिन से दरगाह की मसजिद में नमाज पढ़ना छोड़ दिया, अम्मां पहले ही दरगाह आना छोड़ चुकी थीं. और तब, दो घर पास रहते हुए भी एकदूसरे से बहुत दूर हो गए. मेरे और छोटे मियां के बीच भी एक अदृश्य खाई निरंतर अपना विस्तार करती जा रही थी. दिन का सारा दर्द, सारी कालिख छोटे मियां रात के अंधेरे में अपनी उजली बातों से धो देने का प्रयास करते. उन का यह प्रयास तब तक जारी रहता, जब तक मैं अपने को उन्हें पूरी तरह सौंप न देती. चाय पी लेने के पश्चात जिस प्रकार प्याली को भावनाहीन हो कर एक ओर खिसका दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार छोटे मियां मेरी देह से तृप्त हो कर मुझे परे हटा देते या स्वयं दूर हट जाते और पुनः दिन से तटस्थ, उदासीन और निरंकुश बन जाते. तब मुझे बहुत पहले पढ़ी एक कहानी याद आ जाती, 'मांस का दरिया.' इस के साथ ही याद आ जाते 'अश्क' का नाटक, 'कैद और उड़ान,' शरत का उपन्यास 'चरित्रहीन' और मंटो व चुगताई के अफसाने.

जिंदगी यहीं आ कर नहीं ठहर गई, और आगे बढ़ी.

छोटे मियां को दिल्ली के यूनानी अस्पताल में दो सौ रुपए माहवार पर नौकरी मिल गई. वह मुझ से साथ चलने की जिद करने लगे, पर मैं इतनी कम आय में दिल्ली जा कर भूखों मरने तथा तन पर चिथड़े लपेटने को तैयार नहीं थी. मेरा सुझाव था कि वह यहीं दवाखाना खोल कर हकीमी करें. छोटे मियां अपनी जिद पर अड़े थे और मैं अपने फैसले पर. बड़े मियां और भाभी छोटे मियां के साथ थे और पापा मेरे साथ. अम्मां तटस्थ थीं. मेरा मन पहले ही छोटे मियां और उन के घर में ऊब चुका था इसलिए मैं हर नतीजा भुगतने को तैयार थी.

आखिर छोटे मियां अकेले ही दिल्ली चले गए और मैं पापा के साथ पुनः अपने उस घर में आ गई, जहां बचपन को रौंदते हुए मैं ने जवानी की दहलीज पर कदम रखा था और जिस जवानी ने मुझे डोली में बैठ कर इस घर से जुदा होने और छोटे मियां के द्वार पर उतरने के लिए विवश कर दिया था. दिल्ली के पते पर मैं ने छोटे मियां को कई पत्र लिखे, पर उत्तर किसी का नहीं आया. कुछ दिनों के बाद पता चला कि छोटे मियां हैदराबाद चले गए हैं. यह सुन कर चोट लगी, दर्द बढ़ा पर न जाने क्यों, आस नहीं टूटी, विश्वास नहीं बिखरा.

परंतु आत्मप्रवंचना की यह प्रक्रिया आखिर कब तक चलती रहती?

शीबा की मां बनने के बाद जब मैं ने आंख खोली तो मुझे एक बहुत जबरदस्त चोट सहने की मजबूरी से दोचार होना पड़ा. खबर अम्मां ने सुनाई थी, छोटे मियां ने हैदराबाद में दूसरी शादी कर ली है.

कानों में इन शब्दों का विष घुल जाने के उपरांत मैं कब तक सिसकती रही थी, बिलखती रही थी, यह याद नहीं मुझे.

इतना गहरा आघात मैं सह कैसे गई? आज सोचती हूं तो आश्चर्य होता है. पर सहना मेरी विवशता जो बन गई है. एक लड़की की मां न बनी होती तो शायद उपेक्षा कर जाती छोटे मियां के इस घृणित कृत्य की. पर यह बहुत बड़ा प्रश्न मेरे सामने आ खड़ा हुआ था कि इस बच्ची का क्या होगा. यह किसे 'अब्बू' कहेगी, किसे 'पापा' कह कर पुकारेगी. लोग कोई शंका करेंगे तो मैं कैसे समझाऊंगी? नहींनहीं, यह मेरी जायज औलाद है. इस बच्ची के जिस्म में जो खून दौड़ रहा है, वह छोटे मियां का खून है, जो कानूनन मेरा शौहर था, सामाजिक रूप से मेरी देह का मालिक था.

एक ओर आत्मसम्मान व स्वाभिमान था, दूसरी ओर थी भविष्य की चिंता, एकांत का भय. यह इच्छा मन में बारबार उठ रही थी कि छोटे मियां से पूछूं 'क्यों किया उन्होंने ऐसा? मेरी किस गलती का इतना बेरहम फल दिया उन्होंने? मेरी नहीं तो कमसेकम अपनी इस औलाद का खयाल करते जो मेरे पेट में पल रही थी. पूछना चाह कर भी नहीं पूछ पाई थी यह सब. एक तो छोटे मियां का पताठिकाना बहुत कम लोगों को ज्ञात था, फिर जिन्हें ज्ञात भी था, उन्होंने बताने से इनकार कर दिया. अब मेरी आंखों के सामने बचा था मरुस्थलों का सूनापन, घाटियों का गहरा अंधेरा और कांटे ही कांटे.

पापा की सांत्वना तथा सहेलियों के स्नेह ने अंधकार को चीर कर आगे बढ़ने का साहस मुझे प्रदान किया. कुछ दिनों बाद मैं ने एक स्कूल में नौकरी भी कर ली. मैं आगे बढ़ती रही, बीते हुए कल को भुलाने की कोशिश में. तब से आज तक तमाम कोशिशों के बावजूद स्मृतियों से पीछा नहीं छुड़ा पाई हूं. भूलने भी लगती हूं तो शीबा याद दिला देती है. न जाने उस के नन्हे से मस्तिष्क में 'अब्बू' कहां से आ कर बैठ गए हैं. संभव है, मेरी अनुपस्थिति में पासप... के बच्चे उस के अब्बू के बार में बातें करत... हों.

कितनी बातें, कितने दर्द? याद करती हूं तो पूरी की पूरी रात बीत जाती है. और मैं ढूंढ़ने पर अपने को वहीं पाती हूं जहां से चली थी. तनमन में हजारों शूल चुभ जाते हैं. शरीर तिलतिल घायल होता रहता है और मैं पीड़ा का ढेर बनती जाती हूं. पांच साल हो रहे हैं छोटे मियां को अलग हुए मुझ से. तब से अब तक बहुत बार आग लगी है तन में, बहुत बार मुट्ठियां भिची हैं, पसीना बहा है. बहुतों ने देखा है मेरी ओर भूखी निगाहों से, पाना चाहा है मुझे, और मैं तड़प कर रह गई हूं. तोड़ती रह गई हूं अपनी देह. सहती रह गई हूं यातना की बौछारें, रात की आहें, पर...?

> **साहित्यकार का लक्ष्य**
>
> *साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है. वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सचाई भी नहीं बल्कि उन के आगे मशाल ले कर चलने वाली सचाई है.*
>
> —प्रेमचंद

"बाजी, अम्मां खाना खाने के लिए बुला रही हैं." कानों से शब्दों की टकराहट का एहसास होता है, चौंकती हूं और पुनः अपने कमरे में वापस आ जाती हूं. दृष्टि ऊपर उठाती हूं. सामने छोटा भाई उबैद खड़ा दिखाई पड़ता है. उसे देख कर लगता है, वह मुझे बुलाने कम आया है, मेरी आंखों के सूनेपन को, मेरे मुख पर छाई चिंता की लकीरों को पीने अधिक आया है. मैं कुछ बोलती नहीं हूं. वह अपनी बात को दोहराता है, "बाजी, अम्मां..."

"चलो, आती हूं."

खाना खाने को मन है नहीं, पर खाए बिना काम भी नहीं चलेगा. उबैद तब तक बराबर मुझे खटखटाता रहेगा, जब तक मैं खाने के लिए चली नहीं जाऊंगी. अनमनेपन

से कमरे से बाहर निकल कर रसोई की ओर बढ़ जाती हूं.

खाना खा कर लौट आई हूं. सूने कमरे में मेरी और शीबा की श्वासों के अतिरिक्त कुछ और गतिशील नहीं. एक ठहराव, एक खामोशी, एक भारीपन, बस. शीबा अब भी सो रही है. उस के चेहरे पर एक उजलीउजली सी रोशनी बिखरी हुई है, फरिश्तों के चेहरों जैसी रोशनी. शायद प्रत्येक बच्चे के मुख पर ऐसी ही रोशनी, ऐसा ही नूर बिखरा होता है. शायद हर बच्चा फरिश्ता होता है.

शीबा को ध्यानपूर्वक देखती हूं, बरबस छोटे मियां की आकृति नयनों के सम्मुख घूम जाती है. बिलकुल उन ही जैसा रंगरूप है शीबा का. मैं विकारों और व्याकुलता के जटिल बंधनों में जकड़ जाती हूं और तब मन में एक विचार आता है, 'काश, शीबा न होती!' पर क्यों न होती? उत्तर सोचती हूं तो पराजित हो, तर्कहीन सी अपने बेहूदा विचार पर खीझती हूं और पुनः असंतोष, अशांति, कुंठा और दर्द से भर जाती हूं. इसी समय फिर वही प्रश्न मुझे खरोचने लगते हैं, छीलने लगते हैं. यह असंतोष, यह एकांत, यह भारीपन और दर्द का लंबा सिलसिला आखिर कब तक?

जब इन प्रश्नों से घिरी होती हूं, तभी सहेली मधुरिमा की बातें मस्तिष्क में उभर आती हैं.

मधुरिमा जबतब कहा करती है, "नसीम, इतना लंबा जीवन अकेले कैसे जियोगी? कब तक स्मृतियों से चिपकी अपने को आहत करती रहोगी? नयनों का सूनापन निकाल फेंको, चेहरे पर जमी दुख की रेखाओं को नोच डालो. मेरा कहना मानो, दूसरी शादी कर लो."

मधुरिमा की बातें मुझे अच्छी लगतीं. पर अच्छा लगना ही तो सब कुछ नहीं. उस के सामने अपना पक्ष रखती, "तुम मेरी मजबूरियों को जानती हो. मैं दूसरी शादी नहीं कर सकती. समाज के नियम और कानून के बंधन तोड़ना मेरे लिए संभव नहीं. सोचो, मधुरिमा, क्या कहेंगे लोग, 'ऐश कर रही है, यही चाहती थी इसीलिए छोटे मियां से नहीं बनी.' लोग मेरी पवित्रता और संतान की वैधता पर शक करने लगेंगे."

मैं थोड़ी रुकी, चंद क्षणों के मौन के बाद पुनः बोली, "जानती हो, इस का अंजाम क्या होगा? मेरे अतीत और मेरी मासूम बच्ची के भविष्य पर हजारों कुरूप, काले धब्बे चस्पां हो जाएंगे. यह सब मुझ से सहन नहीं हो पाएगा."

मधुरिमा ने कुछ कहना चाहा, पर मैं रुकी नहीं, बोलती गई. मैं भावुक हो उठी थी, "कानून की रू से एक मुसलमान औरत तब तक दूसरी शादी नहीं कर सकती जब तक उस का पति तलाक न दे दे और तलाक देने या लेने का अधिकार औरत को नहीं, सिर्फ मर्द को हासिल है. छोटे मियां ने अभी तक मुझे तलाक नहीं दिया है. जबकि उन्होंने दूसरी शादी कर ली है. कानून उन्हें चार बीवियां रखने की इजाजत देता है. वह कानून की मदद से कभी भी मुझे हासिल कर सकते हैं. ऐसे में एक और विवाहित जीवन के श्मशान में परिवर्तित हो जाने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता."

मैं ने दम तोड़ते स्वर में कहा, "मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो."

मेरा निर्णय सुन मधुरिमा कुछ बोली नहीं, चुपचाप मुझे ताकती रही और कुछ पलों के उपरांत चली गई.

मधुरिमा चली जाती है और मैं स्मृतियों के घेरे, प्रश्नों के जाल और शंकाओं के भंवर में फंसी आहत होती रहती हूं. पुराने घाव के समान रिसती रहती हूं, सुलगती रहती हूं. यह सुलगना जब बहुत तकलीफ देने लगता है, तब मन की आग बुझाने के लिए नयनों के सागर में चंद बूंदें पानी तलाश करने लगती हूं. लेकिन न पानी मिलता है, न आग बुझती है. जलती रहती हूं और शायद अब जलना ही मेरी नियति है. ●

पाठकों की समस्याएं



मैं एक विवाहित पुरुष हूं. विवाह को 17 वर्ष हो चुके हैं और विवाह से पूर्व 4 साल तक हम दोनों के प्रेम संबंध रहे हैं. दांपत्य जीवन के 15 वर्ष हमारे ठीक गुजरे. पत्नी और बच्चों के बीच जीवन सुखमय था. इधर ढाई वर्ष से हमारे घर में तूफान चल रहा है जो थम ही नहीं रहा. यद्यपि मैं स्वयं को भी इस के लिए जिम्मेदार मान रहा हूं.

ढाई वर्ष पूर्व अचानक ही मैं एक महिला की ओर आकर्षित हो गया. उस ने मुझे अपने पति की बुराइयां बताईं कि वह पैसा नहीं देता, शराबी है, मारता है, यहां तक कि उस से वेश्यावृत्ति भी कराना चाहता है. बस, यहीं से हमदर्दी ऐसी हुई कि मैं अपने परिवार की उपेक्षा करने लगा. मेरा यह जनून 3 माह तक रहा. मैं सच कहता हूं कि न तो मैं ने उस महिला की आर्थिक सहायता ही की और न ही मेरा उस से शारीरिक संबंध रहा. अचानक मेरी चेतना जागी कि यह गलत कर रहा हूं और आत्मग्लानि में खूब शराब पी. पत्नी को सब बता दिया. उस समय तो पत्नी ने क्षमा कर दिया पर उसे काफी सदमा पहुंचा.

अभी वह उस सदमे में ही थी कि एक दिन अचानक वह स्त्री मुझे बस स्टाप पर मिल गई और मुझ से लिफ्ट मांगी. मैं मना न कर पाया. पत्नी ने सब देख लिया. उस के बाद झगड़ा शुरू हुआ. मैं 15 दिन बाहर रहा. फिर मित्रों व पड़ोसियों की मदद से मामला ठंडा पड़ गया और शांति हो गई.

मैं सही समय पर घर पहुंचता और वेतन पूरा देता पर एक बार दफ्तर से वेतन मिलने में देर हो गई तो पत्नी ने मुझ पर आरोप लगाए. हालांकि मैं ठीक था पर वह न मानी. उस के आरोपों से मुझे बेहद गुस्सा आया. यहां तक कि मामला पुलिस तक पहुंच गया. फिर मैं 2 महीने के लिए घर से बाहर चला गया. इन 2 महीनों में मेरा वजन 13 किलो कम हो गया और मुझे भी पता चल गया कि घर क्या होता है. मेरी पत्नी घर छोड़ कर जाना चाहती थी पर मैं ने न जाने दिया क्योंकि उस के अपने मांबाप से संबंध टूट चुके थे.

मेरी गैरहाजिरी में मेरी पत्नी को एक तथाकथित समाज सेवक ने मेरे विरुद्ध खूब भड़काया कि मैं औरतों के साथ घूमता हूं. मैं ने उसे समझाया पर वह न मानी. वही आदमी एक बार मेरी गैरहाजिरी में शराब पी कर रात को 11 बजे 4-5 आदमी ले कर मेरे घर आया. उस ने पत्नी से ताला खोलने को कहा पर मेरी पत्नी ने नहीं खोला. यह बात पत्नी ने मुझे बिलकुल नहीं बताई, पड़ोसियों से ही इस का पता चला.

जीवन मुझे फिर सामान्य नजर आने लगा था पर मात्र छलावा था. जितना मैं दबा पत्नी दबाती गई. मेरे सही समय पर घर पहुंचने पर भी वह पड़ोस में चली जाती और मुझे बेरुखी दिखाती. मुझे अपशब्दों में इलजाम लगाती. वेतन जब देरी से मिलता तो आरोप लगाती कि पैसे किसी और को दे दिए होंगे. दुखी हो कर मैं ने लेट आना शुरू कर दिया.

इस दौरान वह महिला संघर्ष समिति के संपर्क में आ गई. महिला सेल भी गई. बाद में एक ऐसे वकील से केस करवा दिया जो बड़ा दुष्ट है. मैं ने पत्नी को समझाया कि केस वापस ले लो पर वह मानती नहीं. मैं ने कहा, सारा वेतन ले लो पर कोई असर नहीं हो रहा. वह कहती है अब फैसला अदालत में ही होगा.

इतना सब होते हुए भी मैं अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करता हूं. एक गलती ने बरबाद कर दिया. अब मैं क्या करूं कि मेरा घर न उजड़े. मैं ने ईमानदारी से हर बात साफसाफ लिख दी है.

आप की समस्या आप की गलती और पत्नी में सहनशीलता की कमी के कारण उत्पन्न हुई है. पतिपत्नी का रिश्ता आपसी प्रेम व विश्वास पर टिका होता है. कोई भी मनमुटाव आपस में ही तय कर लेना चाहिए. बात बाहर जाते ही पराई हो जाती है. आप के केस में भी यही हुआ है. पत्नी ने मांबाप से बगावत कर के आप से शादी की, उन से

संबंधविच्छेद किया. इसलिए उसे लग रहा था कि आप कभी भी उसे धोखा नहीं देंगे, लेकिन आप के कदम ने उसे अस्थिर कर दिया और वह अपनेआप को निसहाय समझने लगी है. आप ने जो किया वह इतना गलत न था पर आप की आत्मग्लानि के कारण वह गलती गंभीर हो गई.

पत्नी समझती है कि अब उस का जीवन सुरक्षित नहीं है. वह न घर की है न घाट की. इस असुरक्षा से लड़ने का उस के पास कोई उपाय भी नहीं है. वह इसीलिए आप के वेतन के पीछे पड़ी रहती है क्योंकि उसे विश्वास नहीं कि उस का खयाल रखा जाएगा. आप का बारबार घर से चले जाना उस का डर और पक्का कर रहा है. इस सब के कारण आप स्वास्थ्य भी खो रहे हैं, पैसा भी. आप न रहेंगे तो पत्नी का क्या होगा? इस डर से भयभीत पत्नी की सोचनेसमझने की शक्ति शून्य हो गई है.

आप भलेमानस बन कर घर में रहिए. समय पर जाइए, समय पर वापस आइए और पत्नी से मधुर व्यवहार रखिए. धीरेधीरे संभव है, उस के मन में बैठा भय दूर हो जाए.

आप अपना घर, दफ्तर, शहर अगर बदल सकते हैं तो यह आप के लिए सब से सरल उपाय होगा. नई जगह आप की पत्नी को सौत की आशंका नहीं रहेगी. नए वातावरण में आप के भी न मित्र होंगे, न पुरानी शराब की दुकानें. कोशिश कीजिए कि पत्नी की सहमति से यह शहर छोड़ कर कहीं और घर बसाइए.

मैं एक 16 वर्षीया अविवाहित बालिका हूं. सब कुछ ठीक चल रहा था कि एक दिन स्वतः ही मेरी माहवारी रुक गई जो लेडी डाक्टर की दवा देने से पुनः शुरू हो कर 15 दिन तक थोड़ीथोड़ी होती रही और फिर नियमित हो गई. मुसीबत तब शुरू हुई जब मेरा परिवार मुझे गलत समझने लगा. फलस्वरूप मेरा जीवन ही नारकीय हो गया. अपने मातापिता को कैसे विश्वास दिलाऊं कि सब प्राकृतिक हुआ है? यकीन जानिए, यदि मैं उन्हें विश्वास नहीं दिला पाई तो इन सवालिया निगाहों से बचने के लिए आत्महत्या कर लूंगी. आप ही कुछ राह सुझाइए?

आत्महत्या पलायन का रास्ता है, भूल कर भी आप इस बारे में न सोचें. आत्महत्या से तो यही साबित होगा कि आप वास्तव में दोषी थीं. यह प्राकृतिक है कि कई कारणों से कई बार माहवारी रुक जाती है. अगर आप के मातापिता महिला रोग विशेषज्ञा से ठीक तरह बातचीत करें तो उन का शक भी दूर हो जाएगा. आप डाक्टर को विश्वास में ले कर कह सकती हैं कि इस छोटी सी बात का घर पर बुरा प्रभाव पड़ा है और आप परेशान हैं तो वह आप की मदद कर सकती हैं.

मैं एक 34 वर्षीया विवाहिता 2 बच्चों की मां हूं. पहले हम संयुक्त परिवार में रहते थे. अब 2 साल से अलग रह रहे हैं. अब मुझे इस की आदत भी हो गई है. इधर हमारी ही सोसाइटी में हमारे साससुर ने भी फ्लैट ले लिया जिस में देवरदेवरानियां, उन के बच्चे सभी आ गए जो हर समय मेरे घर आ कर टोकाटाकी करते रहते हैं. सास कहती हैं चौका फिर एक करें. मैं शादी के 13 साल बाद अलग हुई. अब मैं संयुक्त परिवार में नहीं रह सकती. पति भी साथ रहना चाहते हैं. मैं तनाव से पागल हो जाऊंगी. आप ही बताइए क्या करूं?"

संयुक्त परिवार में आमतौर पर सब को एकदूसरे का सहारा भी रहता है और प्रेमभाव भी बना रहता है. पर आज के परिप्रेक्ष्य में इस के मानदंड बदल गए हैं. आज भी कई परिवार संयुक्त हैं. आप को थोड़ा सा यह भी सोचना होगा कि आप के पति और बच्चे क्या चाहते हैं. सब साथ रहने में खुश हैं तो आप को इन का साथ देना चाहिए. आप के साससुर ने आप की सोसाइटी में फ्लैट ले कर अच्छा किया, इस से आप को सहारा भी रहेगा और आप अलग भी रह सकती हैं. यहां आप की सूझबूझ काम आ सकती है.

आप के ससुर का फ्लैट आप से थोड़ा दूर तो होगा ही, ऐसे में एक चौके की कल्पना कैसे की जा सकती है. आप पति को समझाएं कि दो अलग बने घरों में एक चूल्हे की बात व्यावहारिक नहीं है. आप उन से खूब मिलजुल कर रहें. देवरदेवरानी की बिना बात टोकाटाकी के लिए आप उन्हें आराम से समझा दें, आप से तो वे छोटे ही हैं. पति को भी यह एहसास दिलाएं कि आप ससुराल वालों के साथ हैं और उन का सम्मान करती हैं.

—कंचन •

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जा सकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.



संभलते कदम

कहानी • कल्पना गुप्ता

वह मुझे बड़े ही ध्यान से देख रहा था. जब भी मेरी दृष्टि उस की ओर जाती, उसे अपनी ओर देखता पाती. वह बड़ा ही सुंदर व लंबे कद का युवक था. इस बार जब मैं ने उस की ओर देखा तो वह मुसकरा दिया. जवाब में मैं भी मुसकरा दी. आखिरकार वह मेरे जन्मदिन की पार्टी का मेहमान जो ठहरा.

तभी पिताजी मेरी ओर आए और मुझे उस के पास ले जा कर उस से मिलवाया, "रोजी बेटे, इन से मिलो... यह हैं अनवर अली. यह मेरे ही विभाग में कार्य करते हैं. दोनों एकदूसरे से मिलो, बातचीत करो व पार्टी का आनंद लो."

मैं अनवर की ओर देख कर मुसकरा दी. वह खड़ा हुआ था. मैं ने इशारे से उसे सोफे पर बैठने के लिए कहा व उस के लिए शीतल पेय से भरा हुआ एक गिलास व

अपने लिए संतरे का रस ले कर आ गई. हम दोनों बातचीत करने में एेसे व्यस्त हो गए कि मां और मेरी सहेलियां कब मेरे पास आ कर खड़ी हुईं, मुझे एहसास ही न हुआ.

अनवर ने जब उन की ओर देखा तो मैं ने भी उधर ही देखा. मां कह रही थीं, "रोजी बेटे, केक नहीं काटना है क्या?"

"हांहां, क्यों नहीं," कह कर मैं उठ खड़ी हुई. मैं ने गुलाबी रंग की लंबी फ्राक पहनी हुई थी व बाल कंधों पर झूलतेलहराते ही छोड़ दिए. गले में सुंदर गुलाबी मोतियों की माला थी जो मां ने मुझे उपहार के रूप में दी थी. यह पोशाक पिताजी ने दी थी, जिसे उन्होंने 50 पौंड में खरीदा था.

जीवन की डगर पर रोजी अपने को बिलकुल अकेली महसूस कर रही थी. ऐसे में उसे रवींद्र की दोस्ती भली व दोषरहित लगी. लेकिन इस के दुष्परिणाम को जान कर क्या वह संभल पाई?

तैयार हो कर जब मैं ने शीशे में स्वयं को देखा था तो खुद ही रीझ गई थी अपनेआप पर. मेरा अंडाकार चेहरा व बड़ीबड़ी आंखें मेरे सौंदर्य को कई गुना बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई थीं.

खैर, मैं ने उठ कर केक काटा. सभी ने 'हैप्पी बर्थ डे' वाला गाना गाया. पार्टी बड़ी शानदार हुई. मां के पकवानों की खूब जम कर तारीफ हुई. पार्टी समाप्त होने पर भी मैं अनवर के बारे में सोच रही थी. उस का सुंदर चेहरा रहरह कर मेरी आंखों के सामने आ जाता था.

भारत से आ कर इंगलैंड में बसे हुए हमें एक जमाना बीत गया था. मैं तो तब मात्र 7 वर्ष की ही थी. मांबाप स्वयं ईसाई होने की वजह से बड़े ही स्वतंत्र विचारों के थे व घर पर खुला वातावरण हम दोनों बहनों को प्रदान किया हुआ था.

हम दोनों बहनें एक ही स्कूल में पढ़ती थीं. मैं 16 वर्ष की हो गई थी और इसी खुशी में यह पार्टी की गई थी. जूली मुझ से 5 वर्ष छोटी थी व ज्यादातर मेरे पीछेपीछे ही घूमती रहती थी.

मैं पार्टी के बाद से ही अनवर के खयालों में खोई हुई थी. पिताजी के पूछने पर मैं ने अनवर से मिलने की इच्छा जाहिर की. उन्होंने मुझे अनवर का फोन नंबर दे दिया और मैं उस से इधरउधर मिलने लगी. मिलनेजुलने का क्रम व घर से मिली हुई आजादी ऐसा रंग लाई कि मैं गर्भवती हो गई.

जब मां को यह बात पता चली तो उन्होंने पिताजी से विचारविमर्श के पश्चात हमारा विवाह करने का फैसला कर लिया. अनवर चूंकि इस देश में अकेला था, उस के मातापिता भारत में थे. उस ने अपने मातापिता को पत्र द्वारा खबर कर दी कि वह एक ईसाई लड़की का धर्म बदल कर विवाह करने जा रहा है.

अनवर ने मेरा धर्म बदलवा कर मेरा नाम रोजी से रजीला रख दिया. अब हमारा विवाह धूमधाम से संपन्न हो गया. समय आने पर मैं ने एक प्यारी सी बच्ची को जन्म दिया जिस का नाम हम ने सलीना रखा. शादी के बाद के तीनचार वर्ष तो हंसीखुशी से गुजर गए, परंतु अब मेरे और अनवर के बीच झगड़े शुरू हो गए थे. तंग आ कर हम ने सलीना की परवाह किए बगैर ही तलाक ले लिया.

अब तक मेरी उम्र लगभग 20 वर्ष हो चुकी थी. अनवर से हमें थोड़ा खर्चा मिलता था, पर यह रकम हम दोनों के लिए काफी नहीं थी. पिताजी भी बीचबीच में मदद करते रहते थे. इधर सलीना ने नर्सरी स्कूल जाना शुरू कर दिया था. मैं ने भी अब नौकरी करने की जरूरत महसूस की.

मैं ने जगहजगह आवेदनपत्र भेजने शुरू किए. मुझे एक स्कूल में एक अपंग बच्चे की मदद करने का अंशकालिक काम मिल गया. सुबह 9 बजे से 2 बजे तक का काम था. मैं साढ़े 12 बजे सलीना को लेती हुई घर आ जाती थी. कभीकभार सीधे बाजार चली जाती थी.

हम दोनों मांबेटी की जिंदगी यों ही आराम से गुजर रही थी. फिर पता चला कि अनवर ने किसी मुसलिम लड़की से शादी कर ली है और उस के दो बच्चे भी हो चुके हैं. सलीना 6 वर्ष की हो गई थी. जिस अपंग बच्चे की मैं मदद करती थी वह भी मुसलमान था. एक दिन स्कूल के किसी आवश्यक कार्य से मुझे उस के घर जाना पड़ा. मैं बच्चे के मांबाप से बातें कर रही थी कि उन का एक पड़ोसी उन के घर आ गया. वह देखने में काफी सुंदर था. पता चला कि वह उन का सिख पड़ोसी है, पर उस के सिर पर पगड़ी नहीं थी.

मुझे याद आया कि इस आदमी को मैं ने अपने स्कूल में कई बार देखा है. मुझे यह भी पता चला कि इस आदमी के तीन बच्चे स्कूल की निचली कक्षाओं में पढ़ते हैं. इस के बाद जब भी वह व्यक्ति अपने बच्चों को छोड़ने या लेने आता, हम दोनों एकदूसरे को देख कर मुसकरा देते.

एक दिन मैं अपने घर जाने की तैयारी में थी कि वही व्यक्ति मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया और बेहिचक बोला, "रोजी, यह मेरा फोन नंबर है. मेरा नाम रवींद्र है. मैं टैक्सी चलाता हूं. आप को कभी टैक्सी की आवश्यकता हो तो इस नंबर पर फोन कीजिएगा." फोन नंबर उस फर्म का था जिस की वह टैक्सी चलाता था.

मैं ने इस घटना को सहज भाव से ले कर उस का कार्ड अपने पर्स में रख लिया. वैसे मेरे पास कार तो थी नहीं, अतः मुझे टैक्सियों पर ही निर्भर रहना पड़ता था. अतः मैं ने उस की फर्म के नंबर पर ही फोन करना शुरू कर दिया.

जितनी बार भी मैं ने टैक्सी के लिए फोन किया, रवींद्र ही टैक्सी ले कर आया. मैं ने इसे भी एक इत्तिफाक ही समझा.

एक दिन वह टैक्सी चलातेचलाते बोला, "रोजी, तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो, मैं तुम से मिलना चाहता हूं."

"दीदी, मुझे माफ कर दो. मैं अपने स्वार्थ में अंधी हो गई थी," रोजी ने रीमा के पैरों के पास बैठ कर कहा. ▼



मैं ने उत्तर दिया, "जब भी टैक्सी बुलाती हूं, तुम ही चले आते हो. तुम्हारी फर्म में सिर्फ एक ही टैक्सी है क्या?"

वह बोला, "नहीं, हैं तो 15 टैक्सियां, पर मैं ने स्वागताधिकारी को पटा रखा है कि जब भी रोजी टैक्सी मांगे, मुझे ही भेजा करो. इसलिए बारबार मैं आता हूं."

एक दिन मेरी बच्ची सलीना, जिस का नाम मैं ने रीटा रख दिया था, के स्कूल में पार्टी थी. अतः मुझे वहां 2 घंटे बाद पहुंचना था. इसलिए सोचा था कि बाजार जा कर खरीदारी कर के रीटा को ले कर घर चली जाऊंगी. परंतु जब टैक्सी को बाजार जाने के बजाय एक पार्क की ओर जाते देखा तो मुझे बड़ा अजीब लगा.

मैं ने गुस्से से पूछा, "मैं ने टैक्सी बाजार जाने के लिए बुलाई थी कि पार्क में हवा खाने के लिए?"

वह कुछ नहीं बोला. फिर सोचा, शांति से बात कर के पूछूं कि आखिर वह चाहता क्या है? मुझे पता था कि परिवार वाला आदमी है, अतः एक तरह से मैं निश्चित थी.

अब उस ने बोलना शुरू किया, "जैसा कि आप को पता है, मेरा नाम रवींद्र सिंह है. मैं 8 वर्ष की उम्र में इंगलैंड आया था, अपने मांबाप के साथ. जब जवान हुआ तो मां ने अपनी पसंद की एक लड़की से मेरी शादी कर दी. तीन बच्चे हैं, पर मैं जैसी पत्नी चाहता था, वैसी मुझे मिली नहीं. मुझे तो तुम्हारे जैसी सुंदर व स्मार्ट लड़की पत्नी के रूप में चाहिए थी."

यह कह कर वह चुप हो गया. मैं अपनी तारीफ बहुत दिनों के बाद सुन कर खुश हो गई थी. लेकिन फिर भी मुझे सोचसमझ कर ही कुछ कहना था. अतः मैं ने कहा, "रवींद्र, तुम तो शादीशुदा हो, बालबच्चे वाले हो. मैं तुम से कैसे मिलजुल सकती हूं."

"मैं कब तुम से प्रेम संबंध बनाना चाहता हूं. तुम मुझे अच्छी लगती हो, अपनी सी लगती हो, इसलिए तुम्हें अपना दोस्त बनाना चाहता हूं. बोलो, तुम्हें कोई आपत्ति है?"

मैं सोचने लगी कि कभीकभी कितनी अकेली हो जाती हूं. मन कितना अकेला व उदास हो जाता है. क्या हर्ज है, यदि मैं इस की दोस्ती स्वीकार कर लूं. मैं ने मन ही मन अच्छी तरह से सोच कर अपना नाम, पते वाला कार्ड पर्स से निकाल कर उसे पकड़ा दिया और कहा, "तुम अगले रविवार को मेरे घर चाय पर आ जाओ, पर मुझे अब बाजार पहुंचा दो. मुझे जरूरी खरीदारी करनी है."

रविवार की शाम 4 बजे जब रवींद्र मेरे घर आया तो मैं उसे देख कर दंग रह गई. वह स्लेटी सूट व लाल टाई में खूब जंच रहा था. मेरी बेटी रीटा के लिए चाकलेट का डब्बा व मेरे लिए फूलों का एक गुच्छा ले कर आया था. फूलों को मैं ने गुलदस्ते में लगाया. फिर घर की बनाई पेस्ट्री व बाजार से खरीदे सींख कबाब व बिस्कुट के साथ चाय पेश की.

रीटा ने पहली बार घर में किसी पराए पुरुष को देखा था, पर वह शीघ्र ही रवींद्र से घुलमिल गई.

रवींद्र ने बच्ची से पूछा, "रीटा, अपने अंकल के साथ घूमने चलना है?"

रीटा ने झट हामी भर दी. मेरे मना करने के बाद भी रवींद्र हमें घर से कुछ दूर स्थित बोटिंग क्लब में ले गया. वह शायद वहां का सदस्य था. रवींद्र रीटा को ले कर एक नाव में बैठ गया. पानी के ऊपर तैरती नाव व आसपास की नैसर्गिक सुंदरता ने मानो मुझे वशीभूत कर लिया था.

शाम के 6 बज चुके थे. रवींद्र खामोश था. बस, सामने बैठ कर हम मां, बेटी को बातें करता देखता व मुसकराता रहा. शाम के 7 बजे जब हम घर पहुंचे तो रवींद्र ने फिर आने का वादा कर के हम से विदा मांगी.

खाना खा कर हम मां, बेटी सो गईं.

रात को सपने में नाव, ठंडी हवा, रंगबिरंगे फूलों की खुशबू, पानी की लहरें व रवींद्र आए. बड़ी अच्छी नींद आई. सुबह जब मैं सो कर उठी तो सोचने लगी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे यह दोस्ती महंगी पड़ जाए.

अतः अपने मन को कड़ा कर के अगली बार मैं ने रवींद्र की टैक्सी फर्म को फोन न कर के दूसरी फर्म से टैक्सी बुलवाई. इस प्रकार एक हफ्ता बीत गया.

एक दिन रवींद्र अपने बच्चों को छोड़ने स्कूल आया तो मेरे बहुत पास आ कर बोला, "मुझे तुम से मिलना है रोजी, मैं कब आ जाऊं?"

मेरा दिमाग कह रहा था कि मना कर दूं, पर दिल ने मेरी जबान का साथ दिया और कहा, "ठीक है, अगले रविवार को घर आ जाओ, खाना भी हमारे साथ ही खाना."

रवींद्र के चेहरे पर मुसकान फैल गई. वह बोला, "ठीक है, मैं रविवार को सुबह 10 बजे आऊंगा. दिन का खाना तुम्हारे साथ खाऊंगा, क्योंकि रात को तो मुझे किसी पार्टी में जाना है."

मैं ने कहा, "ठीक है."

घर पहुंच कर मैं ने स्वयं को बहुत कोसा. मेरा दिमाग ठीक सोच रहा था, परंतु दिल और जबान पहले की तरह ही एकमत थे और दिमाग के हर तर्क को किसी प्रकार झूठा व तर्कहीन सिद्ध कर देते, यह कह कर कि अगर जरा सा आनंद हम ने उठा भी लिया तो कौन सा गुनाह कर दिया? फिर वह तो हमारा दोस्त है, कौन सा मैं उस से शादी करने जा रही हूं.

शनिवार को मां का फोन आया कि तुम दोनों रविवार को घर आ जाओ. मैं ने यह कह कर मना कर दिया कि हमें किसी सहेली की पार्टी में जाना है. रविवार को रीटा खुशी से चहक रही थी. मैं ने बहुत दिनों के बाद बहुत बढ़िया खाना बनाया व साथ में गुलाब जामुन भी खुद ही बनाए.

10 बजे रवींद्र आया. साथ में वीडियो फिलम भी ले आया था. हम ने साढ़े 11 बजे खाना खाया और फिर 12 बजे से 3 बजे तक फिलम देखी. 4 बजे शाम को हम ने चाय पी और गपशप की. रवींद्र ने 5 बजे घर जाना चाहा. मैं ने न चाहते हुए भी उसे जाने दिया.

अब मैं अनुभव करने लगी थी कि रवींद्र का सुंदर व्यक्तित्व मेरे दिलोदिमाग पर छाता जा रहा है और मैं उस के मोहजाल में लगातार फंसती जा रही हूं. इधर उस के फोन भी बहुत आ रहे थे. फोन पर हम खूब गपशप करते. वह जब भी घर आता, हम घूमने निकल जाते. दिन पंख लगा कर उड़ रहे थे. रीटा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था. 'रवींद्र अंकल' की बातें करते उस की जबान नहीं थकती थी. मैं स्वयं भी अपने कपड़ों व शृंगार पर बहुत ध्यान देने लगी थी.

एक दिन जब मैं रीटा को ले कर घर आई तो देखा, एक वृद्ध दंपती व एक बड़ी ही खूबसूरत व प्यारी सी स्त्री मेरे घर के सामने मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

वृद्ध ने कहा, "बेटी, हम तुम से कुछ बात करना चाहते हैं."



आलिंगन

मेहरबानी, शुक्रिया,
आप कीजे न अब कोई गिला,
वस्ल की रात यूं ही
न गुजर जाने दो,
अपने आलिंगन में
बांध लो न पिया.

—मधुलिका मिश्र

मैं ने पूछा, "पर आप लोग हैं कौन?"

वृद्ध ने कहा, "बेटी, क्या हम अंदर बैठ कर बातें कर सकते हैं?"

मैं ने 'हां' में सिर हिलाया और उन्हें इज्जत के साथ अंदर ले गई.

वृद्ध बोला, "मैं सतविंदर सिंह हूं. मेरा बेटा रवींद्र सिंह तुम से दोस्ती की आड़ में जो खेल खेल रहा है न, वह हम से छिपा नहीं है. जो मृगमरीचिका उस ने तुम्हें दिखलाई है बेटी, वहां सूखी गरम रेत के अलावा और कुछ भी नहीं है. यह देखो, उस की पत्नी रीमा, जो रोरो कर आधी हो गई है. इस के तीन बच्चे हैं, उन का भविष्य क्या होगा? यही सब सोचसोच कर यह रोती रहती है.

"तुम इसे अपनी बड़ी बहन समझ कर इस पर दया करो और इस के पति रवींद्र को पुनः इस की फैली हुई झोली में डाल दो."

रीमा मेरे पैरों के पास घुटनों के बल बैठी अपना आंचल फैलाए दया की भीख मांग रही थी. मैं ने उस की भीगीभीगी सूजी हुई लाल आंखों में न जाने क्या देखा कि मेरा हृदय भय से तेजी से धड़कने लगा. वह अपने तीन बच्चों की दुहाई दे कर 'पतिदान' मांग रही थी.

मैं ने उसे कंधों से पकड़ कर उठाया और सोफे पर बैठा दिया. स्वयं मैं ने उस के पैरों के पास बैठ कर कहा, "दीदी, मुझे माफ कर दो. मैं अपने स्वार्थ में अंधी हो गई थी. मुझे पता नहीं था कि रवींद्र तुम जैसे हीरे को ठुकरा कर मुझे बहकाना चाहता है. जाओ, तुम घर जाओ. मैं तुम से वादा करती हूं कि आज के बाद तुम्हारे पति से कभी नहीं मिलूंगी."

इतना कह कर मेरी आंखों से आंसू बहने लगे. वृद्ध दंपती ने बारीबारी से मेरे सिर पर हाथ फेरा और रीमा ने मुझे उठा कर अपने गले लगा लिया.

आज इस बात को एक महीना बीत चुका है. मैं ने घर बदल लिया है व साथ ही स्कूल भी. प्रधानाध्यापक से भी प्रार्थना की कि मेरा पता किसी को न दिया जाए. आज मुझे अपनेआप पर 'शर्म व गर्व एक साथ अनुभव हो रहे हैं. 'शर्म इसलिए कि एक 'शादीशुदा आदमी से मैं ने दोस्ती की झूठी उम्मीद लगाई थी व संबंधों को बढ़ावा दिया था. गर्व इसलिए कि मैं सही समय पर भटकने से बच गई थी. •

उस का क्या दोष था?

कहानी • सुधा गुप्ता

"यह सत्य क्या होता है, गायत्री-जी?" शून्य में एक स्वर उभरा तो वह उसे नाश्ता परोसती हुई रुक गई. धवल पल्ला संभालते हुए पलट कर देखा.

"सुनता रहता हूं न कि आप को सत्य की प्राप्ति हो चुकी है. आप अब जल्दी ही दीक्षा ले कर संन्यासिनी बनने वाली हैं," खाते हुए मस्त भाव से बोल रहा था अभय. शायद एकांत का एक भी पल उस ने न खोने की प्रतिज्ञा कर रखी थी. जब भी बूआ आगेपीछे होतीं कुछ न कुछ वह जरूर पूछता. गायत्री उत्तर दे या न दे, बिना इस की परवाह किए.



"भगवान कैसा होता है, जरा समझाएंगी मुझे? उस की सूरत कैसी है? मेरी तरह गोरा है या आप की तरह सांवला? जल्दीजल्दी जवाब दीजिए... कहीं बूआ न आ जाएं," आगेपीछे देख कर वह जरा तीखे स्वर में बोला.

परंतु उत्तर उसे सदा की तरह इस बार भी नहीं मिला. वह जा चुकी थी. घर का



"भगवान कैसा होता है, जरा समझाएंगी मुझे?" खाना खाते हुए अभय ने प्रश्न किया परंतु गायत्री तब तक वहां से जा चुकी थी

सारा भार संभाल रखा था गायत्री ने. सुबह 4 बजे गंगा घाट नहाने जाती, भीगे कपड़ों में दो घंटे तक पूजापाठ करती. वह सिर्फ चनाचबेना, उबली दाल और सूखी रोटी ही खाती.

बूआ अकसर कहतीं, "त्याग से बड़ा कोई तप नहीं है. जिस ने इच्छाएं मार लीं, समझो सब कुछ पा लिया. इंद्रियों पर विजय ही सब से बड़ी जीत है. प्राणी सीधा 'स्वर्ग' में जाता है."

जीवन का विचित्र ही र[illegible] के सामने आ रहा था. कुछ दिनों के लि[illegible] बूआ के पास ठहरना पड़ा था. कार्यालय [illegible] किसी काम से बनारस आया था. वह नहीं चाहता था कि धर्मीकर्मी बूआ के पास ठहरे, परंतु पिताजी नाराज न हो जाएं, बस यही सोच कर यहां चला आया.

"चाय," गायत्री चुपचाप मेज पर प्याला रख कर मुड़ गई.

"सुनो...सुनो, गायत्री," अनायास पुकार लिया उस ने.

"क्या काम है अभय?" बूआ सुनते ही अंदर चली आईं.

"जी, वह मेरी किताब यहीं कहीं पड़ी थी, मिल नहीं रही," उस ने बहाना बना लिया.

मगर उस की कीमत गायत्री को इस तरह चुकानी पड़ेगी, यह कल्पना से भी परे था.

बूआ फट पड़ी थीं, "तुम्हारे यही लक्षण रहे तो मैं नहीं रखूंगी अपने पास. क्या तुम्हें शोभा देता है ऐसी गंदी किताबें पढ़ना? शर्म नहीं आती. अभय की किताब तुम ने क्यों ली? प्रायश्चित्त करना होगा, आज रात की रोटी बंद... उपवास करो, वरना..."

सिर पीट लिया अभय ने. अपनी बुद्धि पर रोना आया और बूआ की क्रूरता पर क्रोध. उस रात वह भी खाना नहीं खा सका. भला यह क्या तरीका है भगवान की प्राप्ति का. किसी जीतेजागते इनसान को यों जीवन की हर जरूरत से काट देना.

"मुझे माफ कर देना गायत्री, मेरी वजह से..." उस ने मौका मिलते ही क्षमायाचना की पर शिला समान अस्तित्व

में कोई हावभाव नहीं जागे. सिर पर आंचल संभालती हुई वह चली गई.

अभय सोचने लगा, 'क्या करूं? कैसे बूआ से गायत्री के बारे में कुछ बात करूं?'

बात करते हुए भी डर लग रहा था कि कहीं उस की भूल की सजा उस मासूम को न मिल जाए. कार्यालय के काम से आया था और उलझ गया था इस विचित्र पहेली में.

शाम को अभय घर आया तो सामने नागेश को पा कर हैरान रह गया. बूआ का बड़ा बेटा कई वर्षों से अलग रह रहा था. कभी सुनने में आता साधु हो गया है और कभी मालूम पड़ता किसी अपराधी गुट का सरगना बना हुआ है. पूरी जानकारी नहीं थी उस के बारे में.

दूध लेता है, ध्यान रखना."

गायत्री चुप थी. नाश्ते के दौरान बूआ बेटे से बतियाती रहीं और वह उस के हावभाव भांपता रहा.

"यह कौन है, मां?" नागेश ने पूछा.

"तुम्हारे प्रीतम चाचा हैं न, उन के एक दोस्त की लड़की है."

"यहां क्यों आई है? क्या विधवा है?"

"यही समझ लो... अब न घर की है न घाट की. स्वामीजी से बात की है. कह रहे हैं जरा नियम में रहना सिखा दो, दीक्षा के बारे में सोचेंगे. जनम सुधर जाएगा कर्मजली का."

बूआ की बातों का अर्थ अभय की समझ में नहीं आया पर इतना अवश्य जान

अभय ने समाज की परवाह न करते हुए गायत्री को पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया. एक निर्दोष पर समाज का अन्याय वह सहन न कर सका था. आखिर क्या दोष था गायत्री का कि उसे प्रायश्चित्त करने को मजबूर किया जा रहा था? क्या अभय जुल्मों की शिकार गायत्री को मुक्ति दिला सका?

"अरे नागेश, तुम कब आए?" वह चौंक पड़ा था.

रेशमी कुरते पर हाथ फेरता हुआ नागेश मुसकरा भर दिया, "कहो प्यारे, सुना है... बड़े अफसर हो गए हो. सुनाओ, कैसी बीत रही है?"

"अच्छी ही गुजर रही है... तुम सुनाओ."

सामने खानेपीने का सामान सजाए बैठा था नागेश. बोला, "आओ, नाश्ता कर लो."

"हां..." कहते हुए अभय हाथ धोने चला गया.

रसोई में खड़ी गायत्री पर नजर पड़ी. उधर बूआ का भाषण चालू था, "कुछ दिन को आया है नागेश, इस का खयाल रखना. मुझे तो मंदिर के उत्सव से वक्त नहीं मिल पाएगा. रात देर हो जाएगी. सोते समय वह

गया कि नागेश की नजरें साफ नहीं हैं. बूआ चली गई थीं. अभय अखबार आंखों के सामने रखे बीचबीच में नागेश को देख लेता. बारबार उस की नजरें मोटे परदे के पार गायत्री को आतेजाते देखना चाह रही थीं.

"और सुनाओ मुन्ना, शादीवादी कर ली कि नहीं? सुनने में आया है मामी बड़ी दौड़धूप कर रही हैं तुम्हारे लिए. मां ने बताया है कोई चांद का टुकड़ा चाहिए तुम्हें. कोई मिली नहीं अभी तक?"

"नागेश, तुम ने जो सुना ठीक ही सुना होगा. अपनी सुनाओ, कहां रहते हो? किस दुनिया में हो? क्या तुम भी मोक्ष का रास्ता अपना चुके हो? सुना था, साधु हो गए हो. कभी सुना, शादी करने वाले हो?"

बातें शुरू की थीं नागेश ने. अभय ने उत्तर भी दिया पर प्रश्न मात्र प्रश्न ही रहे क्योंकि साधु जैसा तो कुछ भी नहीं था.



"लड़की नहीं ले आया, अपनी पत्नी को ले आया हूं," अभय मां के पास बैठ कर बोला.



"तुम ने शादी कर ली कि नहीं, कैसी है मेरी भाभी?" अभय ने पूछा.

"अरे भाई, हम तो संन्यासी हैं. शादी के बंधन से कोसों दूर. बस देशदेश, नगरनगर घूमघूम कर धर्म का प्रचार करते हैं."

मुसकरा पड़ा अभय. 'चांद का टुकड़ा' शब्द विचित्र लगा था नागेश के होठों से. उस के लिए उस की मां कैसी पत्नी तलाश कर रही है, उसे क्या उपमा देनी चाहिए, क्या नागेश यह भी समझ नहीं पाया? क्या होने वाली भाभी के विषय में किसी भाई को इस तरह से बात करनी चाहिए.

"मेरे साथ चलो मुन्ना, एक से एक चीज दिला दूंगा, हसीन से हसीन लड़की चुनना भूल जाओगे. अपनी मां का काम आसान कर दो, भैया..." होंठ चबाचबा कर बोला नागेश.

उसी पल गायत्री बरतन उठाने आई. उस के सांवले चेहरे पर गहरी नजरें जमाए रहा नागेश. फिर रोब से बोला, "ऐ... जरा मेरे पैर दबाना." इशारे से उसे बुलाया और फिर अभय की ओर देखते हुए बोला, "कभी भोपाल गए हो? कभी हिमाचल की लड़कियां देखी हैं तुम ने? भई, क्या बात है. पिछली बार जब हम वहां प्रचार के लिए गए तो क्या बताऊं कैसीकैसी..."

नागेश बताने लगा तो अभय सोचने लगा, 'क्या सचमुच गायत्री नागेश के पैर दबाने आएगी? यह तो किसी भी औरत के विषय में बात करना भी नहीं जानता, 'चीज' कहता है जो लड़की को, मात्र एक वस्तु समझता है.

'कैसा है यह नागेश? सचमुच यह तो संस्कारविहीन पुरुष है. कैसी घिनौनी चमक है इस की आंखों में. बातें हैं, जिनका विषय लड़की से ऊपर उठता ही नहीं है और दावा करता है संन्यासी होने का. घरगृहस्थी को



गिरफ्त

बाहुपाश की गिरफ्त में
अमरबेल बन जकड़ लो मुझे,
कहीं सांसों की गरमाहट से,
ओस की बूंदों सी,
फिसल न जाऊं मैं.

—अनिता प्रसाद 'अंशु'

इतना ही बुरा समझता है तो किसी औरत से पैर दबवाने का क्या अर्थ? यह दोहरा जीवन जीने का क्या अर्थ है? क्या जीवन से पलायन नहीं है यह? जीवन से ही नहीं, वास्तव में जिम्मेदारी से पलायन है.'

"ऐ लड़की, सुना नहीं तुम ने?" नागेश दहाड़ा तो अभय की तंद्रा टूटी.

"मैं ने कहा था, पैर दबाने को..." वह पुनः बोला.

गायत्री नहीं आई तो अभय को ऐसा लगा, जैसे कोई उम्मीद मरतेमरते जीने लगी है.

"ऐ...क्या नाम है तुम्हारा... जरा सुनो?" नागेश ने फिर पुकारा.

गायत्री भीतर चली आई. धवल वस्त्रों पर उस के काले, घने बाल लहरा रहे थे और हाथ आटे से सने थे.

"पैर दबाने को कहा था मैं ने... क्या बहरी हो? गूंगी हो क्या? जवाब क्यों नहीं देती? कब से पुकार रहा हूं. चलो, हाथ का काम निबटा कर जल्दी चली आओ."

गायत्री गई पर लौट कर नहीं आई. नागेश की आंखों में एक क्रूर चमक उभर आई थी. मन ही मन घबरा रहा था अभय कि कहीं गायत्री का मानसम्मान तो असुरक्षित नहीं होने वाला?

बचपन से ही नागेश उसे पसंद नहीं था. जब भी बूआ के साथ आता, अभय की हर प्रिय वस्तु उस की हो जाया करती. बूआ दादी के साथ कथाकीर्तन में व्यस्त रहतीं और वह उस के खिलौनों और किताबों का सत्यानास करता रहता.

पिता भी भानजे से कुछ न कहते. अभय बेबस सा बस आक्रोश पीता रहता. पता नहीं कैसे गंदे संस्कार अंकुरित हो चुके थे नागेश में जो अब स्वार्थ और विलासिता का एक घना वृक्ष बन चुके थे.

गहरी नजरों से उसे पढ़ता रहा अभय. खाने के समय उस ने महसूस किया कि गायत्री सभी रोटियां एकसाथ ही उस के सामने रख गई थी. वह चुपचाप रसोई में ही छिपी बैठी रही थी. आधा भूखा ही उठ गया था नागेश.

"दूध मेरे कमरे में ले आना... समझी न," एकाएक उसे आदेश सा दे कर नागेश दनदनाता हुआ चला गया.

अभय ने देखा, गायत्री बत्ती बुझा कर अपने कमरे में चली गई है. करीब सारी रात अभय सो नहीं पाया. नागेश के कमरे की बत्ती जलती रही. बूआ रातभर नहीं आई. सुबह आईं तो घर में कुहराम मच गया.

"अरी, जब छःछः के साथ सोई तब तेरी लाजशर्म कहां गई थी? तभी क्यों नहीं डूब मरी थी? अब ऐसा चरित्र दिखा रही है कि कोई भूखाप्यासा जागता रहा और इस नामुराद से उसे दूध तक नहीं पहुंचाया गया. बड़ी दूध की धुली है न जो नाटक करने लगी है." बूआ की बातें सुन कर अभय के सिर पर जैसे धमाका सा हुआ.

"दीक्षा के बाद क्या स्वामीजी की सेवा नहीं करेगी? यही सब वहां भी करेगी तो निकाल बाहर करेंगे वे लोग तुझे. अरी, तुझ से तो मेरे बच्चे की ही देखभाल नहीं की गई..."

अपने स्थान पर जड़ हो गया अभय.

खिड़की से बाहर गायत्री तटस्थ खड़ी थी और बूआ माला जपती उसे कोस रही थीं.

"मैं चली जाऊंगी यहां से," गायत्री का स्वर उस के कानों में पड़ा, "ऐसी दीक्षा मुझे नहीं चाहिए."

"अरी, कहां जाएगी तू? मांबाप तो तेरा काला मुंह देखते ही चलते बने, भाईभावज ने यहां पटक दिया... अब कहां जाएगी?"

"कहीं भी चली जाऊंगी."

क्षणभर को पंगु हो गया अभय का विवेक. क्या उसे कुछ करना चाहिए? क्या गायत्री के लिए चंद कदम आगे बढ़ाने चाहिए?

"जा, चली जा. पर अब मेरे पास कभी मत आना. अरी, मैं ही थी जिस ने कीचड़ को घर में रखा. रामराम, ऐसी तेजतर्रार लड़की से कैसे गुजर होगी," कानों को हाथ लगा कर बूआ ने पूजाघर की राह ली. सच तो यह था अभय भीतर तक कांप कर रह गया था. अखबारों और किताबों में पढ़ी घटनाएं वास्तविक रूप में सामने दिखाई दे रही थीं. भुक्तभोगी कैसा पत्थर हो जाता है, गायत्री के रूप में यह देख कर वह विश्वास ही नहीं कर पा रहा था कि सच में मनुष्य जानवर नहीं बन चुका.

"सूरत देखी, कैसी भोलीभाली है साली की... सुना है उठा कर ले गए थे इसे. छःछः के साथ मस्ती की है और अब नखरा देखा है इस का? जरा सा पैर दबाने को कह दिया तो कैसी अदाएं दिखा रही है," भद्दी सी गाली दी नागेश ने.

फिर वह अभय के समीप आया और धीरे से बोला, "सूरत नमकीन है इस की... आज रात देखना. तू भी आ जाना... भाग कर कहीं नहीं जा सकेगी. नखरा दिखाती है हराम..."

"बस कर नागेश," आवेश में अभय ने एक जोरदार थप्पड़ उस के गाल पर दे मारा. नागेश बुरी तरह हड़बड़ा गया. अपना घिनौना रूप उजागर हो जाने पर बिलबिला उठा. लपक कर आंगन में खड़ी गायत्री को खींच लाया और अभय की तरफ ... दिया.

फिर चीखचीख कर मां को बुला लिया. यह सब इतनी जल्दी में हो गया कि अभय कुछ सोच ही नहीं पाया. जब सब समझ में आया, तब तक चित्र ही बदल चुका था. गायत्री उस की बांहों में अचेत पड़ी थी और बूआ छाती पीटपीट कर रो रही थीं.

"गायत्री रातभर इस के पास थी मां... देखा न..." नागेश का आरोप सुन कर बूआ का रुदन शुरू हो गया, "हाय, भाई को क्या मुंह दिखाऊंगी. कैसे 'नरक' में जा गिरा रामराम..."

एक के बाद एक निराधार आरोप लगने लगे अभय पर. पर वह संस्कारविहीन नहीं था, इसलिए नागेश के गंदे शब्दों का उत्तर नहीं दे पाया. बस, अचेत गायत्री को संभाल कर बिस्तर पर डाला. फिर अपना सारा सामान समेटा, कपड़े बदले और एक निश्चय ले कर गायत्री का हाथ पकड़ उसे जगाया. होश में लाने का प्रयास किया, "उठो गायत्री, उठो. शाबाश, चलो मेरे साथ..."

गायत्री को बैठा कर अपनी शाल ओढ़ा दी. वह अवाक थी, उस के शब्दों पर. आंखें फाड़फाड़ कर सब का मुंह देख रही थी. अभय ने एक हाथ में अटैची उठा कर दूसरे से उस का थरथर कांपता हाथ पकड़ लिया, "अपनी बहू देख लो, बूआ. तुम कहा करती थीं न, मेरी पत्नी को सोने के कंगन पहनाओगी, पहना सको तो पहना लो."

"यह क्या पागलपन है बेटे? क्यों बुढ़ापे में मेरे भाई पर तोहमत लगाने पर तुला है. लोग क्या कहेंगे, यह भी सोचा है? पूछना कभी इस चुड़ैल के शहर जा कर, लोग थूथू कर के कानों को हाथ लगाते हैं. अरे, मथुरा में गिरधारी लाल के साथ क्याक्या हुआ..."

"बस बूआ, कुछ मत कहो अब..." मुड़ कर पीछे नहीं देखा अभय ने.

गायत्री को एक होटल में ठहरा कर वह सीधा अपने कार्यालय गया और जल्दी ही वापस चला आया. उस के लिए कुछ

कपड़े, एक स्वेटर और शाल लेता आया. उसे सामने पा कर विश्वास ही नहीं हो रहा था अभय को. लगभग पिछले महीनेभर से वह उसे जी भर कर देखने को, उस से बातें करने को बेचैन था परंतु अब वह वास्तव में पास थी.

"आप मुझे किसी आश्रम में पहुंचा दीजिए. मैं किसी के भी घर नहीं जाऊंगी," गायत्री धीरे से बोली.

"आश्रम में क्यों? मेरे साथ मेरे घर चलो. तुम ने क्या समझा, मैं बूआ के साथ मजाक कर के आया हूं. तुम्हें पत्नी मान लिया है गायत्री और अब जीवनभर साथ निभाऊंगा."

"नहीं...यह कैसे..."

गुलाबी सूट उस के हाथों में दे कर उस का सर थपथपा दिया अभय ने, "जाओ, कपड़े बदल लो. मैं क्या सफेद कपड़ों में तुम्हें घर ले जाऊंगा. मां क्या सोचेंगी..."

"नहीं, आप समझते क्यों..."

"तुम्हारे साथ जो सब हुआ... मैं ने सुन लिया है. बारबार वही सब सुनना नहीं चाहता."

"देखिए, आप बिना वजह अपने सिर मुसीबत मत लीजिए. आप के साथ चली आई, मात्र इसलिए कि आप पर जरा सा विश्वास कर पाई. आप मेरी बात सुनिए..."

बारबार कहा गायत्री ने परंतु अभय पर जैसे भूत सवार था, कुछ भी कर गुजरने का भूत, "मैं ने कह दिया न, कपड़े बदल कर आओ."

गायत्री कपड़े बदल कर आई तो उस के सांवले रूप को अभय बस निहारता ही रह गया. बचपन में मां जब बहुत प्यार करतीं तो अकसर एक कहानी सुनाया करती थीं. परियों की रानी की कहानी. कहा करती थीं, जब उन का राजा बेटा बड़ा हो जाएगा तो वह उस के लिए सुंदर दुलहन लाएंगी... इतनी सुंदर कि छूने भर से मैली हो जाए.

वह जब रोएगी तो उस की आंखों से मोती गिरेंगे. जब हंसेगी तब होंठों से फूल झड़ेंगे. न जाने मां द्वारा कितनी कहानियां सुनाई गई थीं परंतु दो कहानियां सदा मन में प्रश्न बन कर समाई रहीं, जिन का उत्तर उसे कभी नहीं मिला. एक तो परियों की रानी की कहानी, जैसे उस के होंठों से फूलों का झड़ना और आंखों से मोती. भला यह कैसे हो सकता हैं? भला किसी इनसान की आंखों से मोती कैसे टपक सकते हैं?

सहसा चौंक पड़ा वह गायत्री के भीगे स्वर से, "आप मुझे किसी आश्रम में छोड़ दीजिए... अपने साथ मत ले जाइए."



"...आज इतना अधिक दूध...?"



"...तुम्हें दूध का धुला बनाना है."

''यह स्वेटर पहन लो और शाल ओढ़ लो, बहुत सर्दी है,'' सामान समेटते हुए वह बोला. फिर बढ़ कर उस का हाथ पकड़ लिया, ''गाड़ी का वक्त हो गया है, सुबह तड़के हम अपने घर आगरा पहुंच जाएंगे.''

''आप सोच लीजिए...''

''महीनेभर से सोच ही तो रहा हूं. जब से तुम्हें देखा है, तभी से... अब और कितना सोचूं?''

''आप का जीवन बरबाद हो जाएगा, लोग उंगलियां उठाएंगे.''

''मुझे किसी की परवाह नहीं है. अगर शादी के बाद मेरी पत्नी पर बलात्कार हो जाता तो भी उस का त्याग कभी नहीं करता. उस की रक्षा करता और अगर नहीं कर पाता तो भी रास्ते पर नहीं छोड़ देता ताकि हर आताजाता उस पर हाथ उठाए, उस का अपमान करता फिरे और नागेश जैसा कोई भी अपने पैर दबवाए.

''यह तो घोर अन्याय है गायत्री, जिन्होंने भोगा, जिस ने अपमान किया वे मुक्त घूमें, आजाद रहें और जिस ने सब सहा वह सदा के लिए मिट्टी बन जाए, जिसे कोई भी रौंद कर चला जाए,'' कहतेकहते वह रुक गया, जेब से रूमाल निकाल कर गायत्री को दिया. ''अपने आंसू पोंछ लो. समझ लो, इस होटल के बाहर एक घर है जहां तुम्हें जाना है.''

लंबा सफर तय कर गायत्री के साथ अभय घर पहुंचा. मांबाप उसे विचित्र से लगे, लगभग घूरते से लगे. उस के पीछे किसी को खोजते से लगे.

''नागेश का फोन आया था. सुना है, कोई लड़की ले आया है तू?'' पिता ने कड़क कर पूछा.

उत्तर तो देना ही था, सो वह मां के पास जा बैठा, ''लड़की नहीं ले आया, अपनी पत्नी को ले आया हूं. नागेश की भाषा में क्यों बोल रहे हैं आप?''

''उस बाजारू लड़की को... जिस का बाप सदमे से मर गया, जिस पर पूरी मथुरा थूथू करती है, उसे तू साथ ले आया [illegible] उसे अपनी पत्नी कहता है... उस ने तुझे भी [illegible] जाल में फंसा लिया है...''

अभय जानता था, पिता सदा बहन और भानजे पर ही विश्वास करेंगे. बचपन से करते आए थे, भला अब पीछे कैसे रह सकेंगे. इसलिए उन से कुछ नहीं कहा. बस, मां के सहमे चेहरे की ओर देखा, ''मेरे साथ चलो मां, गायत्री को घर ले आओ.''

फिर उड़ती नजर पिता पर भी डाली, ''वह आप की बेटी जैसी है पिताजी, अच्छी लड़की है... बहुत ही अच्छी. उस निर्दोष को दोष मत दीजिए. जो अपराध उस ने किया ही नहीं, उस की सजा सहने की पीड़ा उसे देना उचित नहीं है.''

''तो कहीं डूब क्यों नहीं मरी वह... उस का जिंदा रहना ही अपराध है...''

''डूब मरना तो उस के भाई को चाहिए, उस के परिवार को चाहिए, जो उस की रक्षा नहीं कर पाए. आप को और मुझे डूब मरना चाहिए कि हम अपनी बहूबेटियों की रक्षा नहीं कर पाते.''

आवेश से भर उठा अभय, ''नागेश ने क्या चाहा और उसे क्या नहीं मिल पाया, यह तो वही जाने, मगर यह सच है कि उसे अपना भाई कहते हुए भी मुझे आज शर्म आती है. बूआ को बूआ कहने से भी पीड़ा का आभास होता है. धर्मकर्म और दीक्षा के नाम पर वह उस मासूम को न जाने कहांकहां भटकातीं.

''अब आप के समाज पर से मेरा विश्वास उठ गया है पिताजी. सच क्या है, यह वही जानता है जो स्वयं भोगता है. शेष सब झूठ है. बस अब मैं इतना ही दावा कर सकता हूं, आप भी झूठ को ही सच मानते हैं. दोहरा जीवन जीते हैं आप लोग. अंदर से कुछ, बाहर से कुछ... बनावटी सब...''

''नागेश ने कहा है कि उस का भी उस लड़की से कुछ संबंध है...'' रोतेरोते मां बोलीं तो अभय अवाक रह गया. पूरा चित्र ही आंखों के सामने घूम गया.

"तू कहीं भटक तो नहीं गया बेटे?" मां ने धीरे से पूछा.

"नहीं मां, नहीं. उसे महीनेभर से देख रहा हूं. बूआ दीक्षा के बहाने साथ ले आई थीं. नागेश तो उसे जानता भी नहीं था, मेरे सामने ही तो पहली बार बूआ से उस के बारे में पूछा था उस ने... ओह, इतना बड़ा झूठ..."

मौन छा गया कुछ देर को. पिता आक्रोश व्यक्त करते रहे और मां आंसू पोंछती रहीं. भीतर तक हिल गया था अभय इस एक और आरोप से.

"मेरे साथ चलोगी न मां उस से मिलने. घर लाऊं तो पिताजी उस का अपमान करेंगे... होटल में छोड़ कर आया हूं." उस ने मां की ओर देखा.

मां चुप रहीं.

मेहनत

मनुष्य की मेहनत कभी भी घटिया नहीं होती बशर्ते वह ठीक से करे. **—बिल कास्बी**

अभय जानता था ऐसा ही होगा क्योंकि पति के सामने वह सदा हारी थीं. भला उन्हें दोष कैसे देता.

फिर वह अपने कार्यालय गया और कुछ रुपयों का इंतजाम किया. 2 कमरों का छोटा सा घर मिल गया. चंद दिना बाद कुछ मित्रों की उपस्थिति में विवाह किया और गायत्री के साथ गृहस्थी आरंभ की.

परंतु गायत्री पूरी तरह भावहीन थी. शादी की पहली ही रात जब वह जमीन पर जा सोई तो अभय समझ गया कि असामान्य गायत्री को सामान्य होने में समय लगेगा.

"वहां नहीं गायत्री, बिस्तर पर आ जाओ," उस ने निर्देश दिया तो वह एकाएक सहम गई.

"आओ,यहां आओ, मेरे पास. अभी भी संन्यास लेने का विचार है क्या?" अभय हाथ पकड़ कर अपने पास ले आया. उस ने जुआ खेला था, जिस में जीतना चाह रहा था. एक टूटी हुई प्रतिमा घर ले आया था,इस आशा पर कि बेहद कोमल हाथों से उसे जोड़ पाएगा. पूरी निष्ठा और संपूर्ण आशा संजो कर पत्नी को बांहों में लिए सोच रहा था, उसे इतना प्यार, इतनी सुरक्षा देगा कि सारी पीड़ा, सारा संत्रास बह जाएगा.

पर ऐसा हो नहीं पाया. उसे परे धकेल कर लगभग अचेत ही होने लगी गायत्री.

"नहीं गायत्री... घबराओ नहीं. मुझ से मत डरो. मैं अभय हूं, पगली."

परंतु बेहद नाजुक प्रणय अनुभूति अतीत में किन्हीं वहशियों द्वारा कुचली जा चुकी थी, उसे बदले हुए रूप में वह कैसे सह पाती?

धैर्य और संयम का धनी था अभय. अपने स्नेह से गायत्री को जीत पाएगा, यह विश्वास तो था ही, साथ में यह अनुभूति भी होने लगी कि मुशकिल काम करने में ज्यादा सुख है.

वह मधुर स्वर में बोला, "अगर मेरे पास यहां नहीं सोना चाहती तो जमीन पर मैं सो जाता हूं... तुम यहां पलंग पर आ जाओ."

गायत्री के गाल थपथपा कर वह स्वयं जमीन पर जा सोया. ठंडे फर्श ने रातभर सोने नहीं दिया. सोचा, गायत्री कैसे जमीन पर सोती रही होगी? सुबह तक इस पीड़ा को स्वयं भी जान चुका था. पतलीदुबली, नाजुक काया क्या इतनी यातना मात्र इसीलिए सहती रही कि चंद लोगों ने उस के शरीर को भोगा, दूषित किया और छोड़ दिया. उसे यह सब बूआ इसीलिए सिखाती रहीं कि मोक्ष का रास्ता बस स्वयं को कष्ट दे कर ही पाया जा सकता है. क्योंकि अब वह किसी के साथ गृहस्थी बसाने के योग्य नहीं.

परंतु नहीं, राह चलते कभी गंदगी के छींटें तन पर पड़ जाएं तो उन का हृदय से क्या नाता? हृदय से भला उस कीचड़, उस तूफान का क्या नाता जो शरीर को भिगोता हुआ चला जाए. गंदगी को उतार कर तन स्वच्छ कर लेता है मनुष्य, कहीं शरीर के उस भाग को काट कर तो नहीं फेंक देता.

—क्रमशः

मद्रास
(पृष्ठ 146 का शेषांश)

का गिरजाघर है, जिसे अंगरेजों द्वारा निर्मित पूर्व का प्राचीनतम गिरजाघर कहा जाता है.

इस के अतिरिक्त द्रविड़ स्थापत्य शैली का कपिलेश्वर मंदिर, रिपिन बिल्डिंग, चिड़ियाघर, वल्लुवर कोट्टम, सेदापेट में चिन्नामलाई का गिरजाघर, संतोभ में बना गोथिक स्थापत्य शैली का गिरजाघर, कला क्षेत्र, राजाजी सभागार, नवनिर्मित वंडलूर जू और हर शुक्रवार बिडला प्लेनेटोरियम भी देखा जा सकता है. मद्रास के आसपास अन्य अनेक रमणीक स्थल भी देखने योग्य हैं.

कंडक्टिड टूर

यात्रियों के लिए तमिलनाडु सरकार की ओर से विशेष बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं जिन के द्वारा यात्री आसानी से सब दर्शनीय स्थानों को देख सकते हैं.

बस नं.–1 मद्रास सिटी

सुबह 7-30 बजे से दोपहर

मद्रास का पार्थसारथी मंदिर शिल्पकला में बेजोड़ है. ▼



मद्रास
कहां ठहरें?

होटल

मद्रास इंटरनेशनल होटल, 693 माउंट रोड, फोन: 8261811.

होटल अटलांटिक, नं. 2, मांटीएथ रोड, इगमोर, फोन : 8260422.

दि एंबेसडर पल्लव, 53, मांटीएथ रोड, इगमोर, फोन : 8268584

होटल ब्लू डायमंड, 934, पी.एच.आर. पेरियार सलाई, फोन : 6412244.

होटल ट्राइडेंट 1/24, जी.एस.टी. रोड, फोन : 2344747.

वेलकम ग्रुप पार्क शेरेटन, 132, टी.टी.के. रोड, एलवारपेट, फोन : 452525.

ताज कोरोमंडल होटल, 17, नूगमबकम हाई रोड, फोन : 8272827.

होटल दाश प्रकाश, 100, पूनमल्ली हाई रोड, फोन : 8255111.

फिशरमैंस कोवलांग बीच, चिंगलेपुट, फोन : 04128-2304.

दि रैसीडेंसी, 49, जी.एन. चेट्टी रोड, टी. नगर, फोन : 8253434.

होटल इंपीरियल, नं. 6, गांधी इरविन रोड, इगमोर, फोन : 8250376.

होटल गार्डन, 68–ए, पुरसवाल कम हाई रोड, फोन : 662677.

होटल हरिनिवास, बोर्डिंग लॉजिंग एंड रेस्टोरेंट, 163, थंबू चेट्टी स्ट्रीट, फोन: 582121/582.

होटल पेनिनसुला, 26, जी.एन. रोड, टी. नगर, फोन : 8252770, 8250853.

होटल पिकाक, नं. 1089, पूनमल्ली हाई रोड, फोन : 39081.

साधारण श्रेणी के होटल

होटल गुरु, फोन : 8262041.
होटल इंपीरियल, फोन : 8250376.
होटल हैरीसन, फोन : 8275271.
होटल अशोक, फोन : 8253377.
होटल शक्ति प्रिया, फोन : 6421093.
टूरिस्ट होटल, फोन : 838311.
टूरिस्ट होम.
होटल मारिस, फोन : 8270541.

धर्मशालाएं

राजाराम स्वामी मुदालियर की धर्मशाला, पार्क स्टेशन के सामने.
बंशीलाल अबीरचंद की धर्मशाला, नं. 7 तोलसिंगम स्ट्रीट. साहूकार पेट.
माहेश्वरी भवन नं. 444, साहूकार पेट.
अग्रवाल भवन, आदियप्पा नायक स्ट्रीट.
दिगंबर जैन धर्मशाला, नं. 5 सुब्रमण्यम, मुदालियर स्ट्रीट, चायना बाजार.

1-30 बजे तक. दोपहर 1-30 बजे से शाम 7 बजे तक.किराया प्रति व्यक्ति 45 रु. है और यह बस शहर के सब प्रमुख स्थानों की सैर करा देती है.

बस नं.–2 महाबलीपुरम

यह बस सर्विस कांचीपुरम, महाबलीपुरम, मगरमच्छ पार्क, गोल्डन बीच की सैर कराती है. यह सुबह 6 बज कर 20 मिनट पर चलती है और शाम को सात बजे लौटती है. इस का किराया प्रति व्यक्ति 105 रुपए है. इसी में सुबह का नाश्ता और दोपहर का खाना भी मिलता है.

बस नं.–3 मद्रास से तिरुपति

सुबह 6 बजे चल कर यह बस रात के साढ़े नौ बजे लौटती है और इस का किराया प्रति व्यक्ति 200 रुपए है और इसी में नाश्ता, खाना और मंदिर की सैर की मुफ्त टिकट भी सम्मिलित है.

मद्रास से ही दक्षिण के अन्य प्रमुख शहरों की सैर भी की जा सकती है. इस के लिए भी बस सेवा उपलब्ध है. यह बस सोमवार को शुरू हो कर शनिवार को लौट आती है. यह पिच्चावरम, चिदांबरम पूमपुहार, तंजौर, रामेश्वरम, मंडपम कन्याकुमारी, सुचिंद्रम, त्रिवेंद्रम, मदुरै, कोडैकनाल, त्रिची और पांडिचेरी घुमाती हुई मद्रास लौटती है. प्रति व्यक्ति इस का किराया 1,700 रुपए है. यदि दो व्यक्ति एक कमरे में रुकें तो किराया 1,600 रुपए है और यदि बच्चा भी साथ में है तो एक बच्चे का किराया 1,300 रु. है.

तमिलनाडु पर्यटन विकास निगम अर्थात टी.डी.सी. यात्रियों के लिए अति उत्तम सेवा उपलब्ध कराता है. इस का फोन नंबर और पता निम्नांकित है जिस पर संपर्क स्थापित किया जा सकता है:

टी.टी.डी.सी. 143, अन्नासलाय मद्रास-600002. फोन : 830390, 830498.

क्या खरीदें

मद्रास पर्यटन के दौरान कांसे की चोल शैली की मूर्तियां, शंख, घोंघे, सीपियां, राखदान, अगरबत्ती स्टैंड, आभूषण इत्यादि खरीदे जा सकते हैं. यहां विभिन्न वाद्ययंत्रों का निर्माण काफी संख्या में किया जाता है. संगीत प्रेमी पर्यटक इन्हें खुद के लिए या किसी को देने के लिए खरीद सकते हैं. यहां की साड़ियां भी अपना खासा आकर्षण रखती हैं. पैरीज कार्नर अन्नामलाई, पौंड़ी बाजार, लूज कार्नर खरीदारी के मुख्य केंद्र हैं. कोआपटेक्स हैंडलूम शाप, कामधेनु एवं सुपर मार्केट से सामान्य खरीदारी की जा सकती है.



महाबलीपुरम

महाबलीपुरम मद्रास से केवल 58 किलोमीटर की दूरी पर है. मद्रास से यह दूरी बस या टैक्सी द्वारा तय की जा सकती है. महाबलीपुरम के लिए हर आधे घंटे बाद मद्रास से राज्य



रथमंडपम : महाबलीपुरम की प्राचीनतम विरासतों में से एक.



बस सेवा उपलब्ध है जो डेढ़ घंटा लेती है.

बंगाल की खाड़ी के तट पर बसे महाबलीपुरम का प्रचीन नाम मामालापुरम था.

यहां की कलाकृतियां कठोर चट्टानों को तराशतराश कर गढ़ी गई थीं.

पल्लवों ने आज से लगभग 14-15 सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के एक बड़े हिस्से पर राज्य किया था. उस समय महाबलीपुरम उन्नत बंदरगाह था. वे यहां से दूरदूर तक व्यापार करते थे. लेकिन व्यापारिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त पल्लव शासन ने यहां वास्तुकला के अनेक स्मारकों, मंदिरों, रथ मंदिरों, गुफा मंदिरों आदि का निर्माण किया था. उन की दी ये विरासतें संपूर्ण विश्वभर में सराही जाती हैं.

क्या देखें

पांच रथ : एक पहाड़ी को ऊपर से नीचे तक तराश कर 5 रथों के रूप में महत्त्वपूर्ण कलाकृतियां निर्मित की गई हैं. अनेक देवीदेवताओं की मूर्तियां रथ में प्रतिष्ठित हैं. छोटेछोटे मंदिर, जिन का सातवीं शताब्दी के आसपास निर्माण हुआ, कला की दृष्टि से अद्भुत हैं.

बास रिलीफ : महाबलीपुरम का एक अन्य आकर्षक पर्यटन स्थल 'बास रिलीफ' देखने योग्य है. ह्वेल मछली की तरह बनी 'बास रिलीफ' नाम की इस चट्टान में दोनों ओर देखने पर आप देवता, अर्धदेवता, मनुष्य, एवं पक्षियों की मूर्तियां पाएंगे.

अर्जुन की तपस्या वाला पत्थर : 27 मीटर लंबी एवं 9 मीटर ऊंची एक विशाल चट्टान पर शानदार नक्काशी की गई है. मानव, जानवर की आकृतियों के अतिरिक्त हिमालय से निकलती गंगा का चित्रांकन एक खूबसूरत समां बांध देता है. यह कलाकृति संसार में अपनी तरह की विशाल एवं सर्वश्रेष्ठ है.

बरहा मंडप : यह छोटा सा मंडप है. चट्टान को ही काट कर बनाए गए इस मंडप में नक्काशी का सुंदर काम है.

तटीय मंदिर : सातवीं सदी का यह भव्य एवं आकर्षक मंदिर समुद्र तट पर स्थित है. इस का निर्माण राजा जय सिंहा ने करवाया था. रथ मंदिर से

महाबलीपुरम

कहां ठहरें?

यों तो आप मद्रास से सुबह जा कर महाबलीपुरम शाम तक देखकर वापस लौट सकते हैं. लेकिन यदि आप यहां की कलात्मकता को गौर से देखना चाहते हैं तो आप के अधिक दिन ठहरने हेतु होटलों और धर्मशालाओं में अच्छी व्यवस्था है.

होटल

टैंपल वे अशोक, बीच रिसोर्ट, फोन :.251-257.

सिल्वर सैंड्स, कोवलांग रोड, फोन: 4113, 2228.

गोल्डन सन होटल एंड बीच रिसोर्ट, 59, कोवलांग रोड, फोन : 245-46

शोर टैंपल महाबलीपुरम, फोन : 235, 268

फिशरमैन कोव, कोवलांग, रोड, फोन : 478

अलग शैली में इस का निर्माण चट्टानों को काट एवं तराश कर किया गया है. इस मंदिर के आसपास सांडों की मूर्तियां भी दर्शनीय हैं. मंदिर के साथसाथ समुद्र तट भी रमणीय है.

इस के अतिरिक्त यहां और भी कई समुद्र तट एवं मंदिर हैं. यद्यपि ऐसा समझा जाता है कि ऐसे ही 2-3 मंदिर सागर की लहरों में लुप्त हो गए.

क्या खरीदें?

गवर्नमेंट कालेज आफ आर्किटेक्चर एंड स्कल्पचर, पूमपुहार एवं प्राइवेट हस्तशिल्प की दुकानों से आप हस्तशिल्प की चीजें खरीद सकते हैं

रामेश्वरम

रामेश्वरम शताब्दियों से देशीविदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है. रामेश्वरम जाने के लिए मंडपम के बाद समुद्र पर बना रेल का पुल भी दर्शनीय है.

पौराणिक और ऐतिहासिक काव्यों के अनुसार यह वही स्थान है, जहां से लंका तक सागर पर श्रीराम ने वास्तुविद नलनील की सहायता से पुल बनवाया था. इसी पुल के माध्यम से सेना सहित श्रीराम लंका पर चढ़ाई कर सके थे. यहीं पर उन्होंने एक शिवलिंग की स्थापना कर के शैव मत और शिव पूजा का प्रचार किया था. वस्तुतः रामेश्वरम हिंदुओं का प्रमुख तीर्थ स्थान है.

समुद्र की गोद में बसा रामेश्वरम अपनी कुदरती सुंदरता के कारण भी दर्शनीय स्थल है. दूरदूर तक फैले रेतीले सागर तट चमकीली धूप में बिखरे चांदी कणों के मानिंद लगते हैं. प्रकृति एवं इतिहास के संगम के अतिरिक्त यहां की कला भी निहारने योग्य है. शिल्पकारों ने बेहद परिश्रम एवं बारीकी से अपनी कला को खूबसूरत अंजाम दिया है.

कब जाएं?

रामेश्वरम पर्यटन हेतु वर्ष में किसी भी समय जाया जा सकता है.

कैसे जाएं?

वायु मार्ग : चूंकि रामेश्वरम में कोई हवाई अड्डा नहीं है, इसलिए हवाई मार्ग से पर्यटक मदुरै तक जा सकते हैं. रामेश्वरम का यही एक निकटतम हवाई अड्डा है, जो रामेश्वरम से 167 किलोमीटर की दूरी पर है. मदुरै से रामेश्वरम तक की दूरी टैक्सी या बस द्वारा तय की जा सकती है.



समुद्र की गोद में बसा रामेश्वरम अपनी कुदरती सुंदरता के कारण दर्शनीय है.

रेल मार्ग : रामेश्वरम मुख्य भारत से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा है. मद्रास, मदुरै, कोडेकनाल, तिरुचिरापल्ली, कोयंबटूर आदि स्थानों से रामेश्वरम के लिए रेल सुविधाएं उपलब्ध हैं.

सड़क मार्ग : किसी समय रामेश्वरम सड़क मार्ग से मुख्य भारत भूमि से कटा हुआ था

किंतु अब पुल बन जाने से यह दक्षिण भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से जुड़ गया है.

प्रमुख नगरों से दूरी

दिल्ली – 2,618 किलोमीटर
कन्याकुमारी – 409 किलोमीटर
मद्रास – 583 किलोमीटर
मदुरै – 167 किलोमीटर
पांडिचेरी – 462 किलोमीटर
तिरुचिरापल्ली – 264 किलोमीटर
तिरुपति – 737 किलोमीटर



क्या देखें

रामनाथस्वामी मंदिर : रामनाथस्वामी मंदिर वास्तव में दर्शनीय स्थल है. इस मंदिर की कला व निर्माणशैली अद्भुत है. 12वीं सदी के बाद की इस रचना को और अधिक कलात्मक बनाने के प्रयास विभिन्न राजाओं द्वारा होते रहे. यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है.

इस मंदिर में विश्व का सब से बड़ा गलियारा है. इस की लंबाई 4,000 फुट और चौड़ाई 17 से 21 फुट तक है. ऊंचाई 30 फुट है. गलियारे के स्तंभ ग्रेनाइट पत्थर के बने हैं. इन पर बनी कलाकृतियां देखते ही बनती हैं. मंदिर के प्रवेश द्वार पर ऊंचेऊंचे गोपुरम बने हैं.

गंधमादन पर्वत : रामेश्वरम का सब से ऊंचा शिखर गंधमादन पर्वत अपनी रमणीयता के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है. यह पर्वत रामेश्वरम जलडमरूमध्य के उत्तर में स्थित है.

पौराणिक कथाओं के अनुसार सूर्यवंशी राजा पुरूरवा ने उर्वशी के साथ इसी पर्वत पर विहार किया था. इस दृष्टि से यह देखने योग्य तो है, लेकिन अतीत की इस पौराणिक कथा के साथसाथ वर्तमान दृष्टि से भी यह कम महत्त्व नहीं रखता, क्योंकि इस पर्वत से संपूर्ण नगर का नजारा बेहद खूबसूरत लगता है.

प्रवाल शैलमाला : प्रवाल शैलमालाएं विश्व की सर्वाधिक रमणीय शैलमालाओं में गिनी जाती हैं. लंबेलंबे वृक्षों, खजूर,

रामेश्वरम: प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
मद्रास	सेतु एक्सप्रेस	17.20
	रामेश्वरम एक्सप्रेस	20.50
कोयंबटूर	कोयंबटूर रामेश्वरम एक्सप्रेस	22.45

रामेश्वरम
कहां ठहरें?

होटल :
होटल तमिलनाडु (टी.टी.डी.सी.), फोन : 277.
अन्य
यूथ होस्टल (टी.टी.डी.सी).
मीनाक्षी लाज.
रेलवे रिटायरिंग रूम.
धर्मशालाएं :
बंशीलाल अबीरचंद की धर्मशाला.
रायबहादुर भगवान दास बागला की धर्मशाला.
बलदेव दास बसंत लाल दइया वाले की धर्मशाला.

ताड़ से घिरी होने के कारण शैलमालाओं की सुंदरता में चौगुनी वृद्धि होती है. देखने के साथसाथ यह श्रेष्ठ पिकनिक स्थल भी है. इन शैलमालाओं के अतिरिक्त रामेश्वरम में और भी टापुओं एवं मूंगे की चट्टानों को देखा जा सकता है.

रामनाथपुरम : रामनाथपुरम में जिले का मुख्यालय है. यहीं पर एक महल रामलिंग विलासम है. इस महल में दर्शकों के देखने हेतु चित्रकथाएं रखी गई हैं.

देवी पट्टिनम : रामनाथपुरम से मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित देवी पट्टि भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. भौगोलिक दृष्टि से भी यह जानकारी देने वाला पर्यटन स्थल है, क्योंकि यहां पर 9 पत्थर 9 ग्रहों की उपस्थिति का भान कराते हैं. नवबशनम के नाम से भी जाना जाता यह एक तटीय गांव है. यहां पर देवी को समर्पित एक मंदिर भी है.

क्या खरीदें?

रामनाथ स्वामी मंदिर के पास ताड़ के पत्तों से बनी वस्तुएं, मनके एवं शंख इत्यादि खरीदे जा सकते हैं.

कन्याकुमारी

सुदूर दक्षिण में बसा कन्याकुमारी भारत का अंतिम छोर है. प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर यह एक रमणीक पर्यटन स्थल है. कन्याकुमारी, अरब सागर, हिंद महासागर तथा बंगाल की खाड़ी से घिरा है. बंगाल की खाड़ी का सूर्योदय एवं अरब सागर का सूर्यास्त दृश्य देखने वाले पलकों को झपकाना भी भूल जाते हैं. लेकिन पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त एवं चांद उदित होने के दृश्य जब आसमान पर उभरते हैं तो उस क्षण की रमणीयता अवर्णनीय है. इसे भारत का 'लैंड आफ एंड' कहा जाता है. यहां का सदाबहार मौसम वर्षभर पर्यटकों को अपनी ओर खींचता रहता है.

कब जाएं?

कन्याकुमारी पर्यटन के लिए वर्षभर का समय अनुकूल है.

कैसे जाएं

वायु मार्ग : कन्याकुमारी का नजदीकी हवाई अड्डा त्रिवेंद्रम है. त्रिवेंद्रम कन्याकुमारी से 93 किलोमीटर की दूरी पर है. पर्यटक त्रिवेंद्रम तक वायु मार्ग से पहुंच सकते हैं. त्रिवेंद्रम बंगलौर, बंबई, दिल्ली, मद्रास, कोचीन, कोलंबो आदि नगरों से कन्याकुमारी वायु मार्ग द्वारा जुड़ा है. त्रिवेंद्रम से कन्याकुमारी तक रेलगाड़ी, बस या टैक्सी, किसी भी साधन द्वारा जा सकते हैं.

रेल मार्ग : कन्याकुमारी देश के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

सड़क मार्ग : 'तिरुवल्लूवर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन' कन्याकुमारी के लिए एक्सप्रेस बसें उपलब्ध करवाती हैं. दक्षिण भारत में अन्य प्रमुख नगरों से भी बेहतर बस सुविधा उपलब्ध है. दक्षिण भारत के किसी भी शहर से आप कन्याकुमारी पहुंच सकते हैं.

प्रमुख स्थानों से दूरी

भुवनेश्वर – 1,928 किलोमीटर
बंबई – 1,655 किलोमीटर
कलकत्ता – 2,381 किलोमीटर
दिल्ली – 2,693 किलोमीटर
हैदराबाद – 1,240 किलोमीटर
कोचीन – 304 किलोमीटर
मद्रास – 703 किलोमीटर
विजयवाड़ा – 1,136 किलोमीटर
विशाखापट्टनम – 1,502 किलोमीटर
पांडिचेरी – 582 किलोमीटर

क्या देखें

कुमारी अम्मान मंदिर : यह कन्याकुमारी का एक बहुत सुंदर मंदिर है. मंदिर में प्रतिष्ठित पार्वती की मूर्ति में एक कीमती हीरा लगा है. मंदिर के पूर्वी द्वार के ऊपर 3 मूर्तियां हैं, बाल सुंदरी, देह सुंदरी और कन्याकुमारी. कहते हैं, कन्याकुमारी ने शिव को पति रूप में पाने के लिए इसी स्थान पर तपस्या की थी

कन्याकुमारी : प्रमुख रेल सेवाएं

कहां से	गाड़ी का नाम	प्रस्थान
जम्मू	हिमसागर एक्सप्रेस	19.45
बंबई	कन्याकुमारी एक्सप्रेस	15.35
बंगलौर	बंगलौरकन्याकुमारी एक्सप्रेस	21.00



कन्याकुमारी : प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर रमणीक पर्यटन स्थल.

गांधी स्मारक : 1952 में बनाया गया महात्मा गांधी स्मारक वास्तुशिल्प का अद्‌भुत नमूना है.

सर्कुलर फोर्ट : गोलाकार दुर्ग के नाम से भी जाना जाता यह किला कन्याकुमारी से 6 किलोमीटर दूर है. 10वीं सदी में बना यह फोर्ट एक अच्छा पिकनिक स्थल है. शांत समुद्र पर्यटकों को आकर्षित तो करता ही है, साथ ही तैराकी का शौक रखने वाले लोग यहां अपना शौक भी पूरा करते हैं.

थानुमलायन मंदिर : कन्याकुमारी से 13 किलोमीटर की दूरी पर सुचिंद्रम में स्थित यह मंदिर वास्तव में दर्शनीय है. इस मंदिर में 19वीं सदी के अभिलेख सुरक्षित हैं. इसी मंदिर के अन्य आकर्षण हैं, 'म्यूजिकल पिलर्स' एवं 18 फुट ऊंची विशाल हनुमान मूर्ति, जो कला की अद्‌भुत मिसाल है.

विवेकानंद स्मारक : कुमारी अम्मान मंदिर के दक्षिणपूर्व में सागर में उभरी 2 चट्टानें हैं. ये चट्टानें भारत के अंतिम छोर का ही नजारा नहीं दिखातीं वरन पर्यटकों को स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन का भी ज्ञान कराती हैं. इस स्मारक तक 'फैरी' के माध्यम से पहुंचा जा सकता है. स्मारक 2 भागों में विभाजित है. विवेकानंद मंडपम का एक प्रमुख आकर्षण है, इस भाग में सूर्योदय के एक कैलेंडर का बना होना. इस से इस बात की जानकारी मिलती है कि किस माह की किन तिथियों में किस कोण पर सूर्योदय होगा. यह केंद्र दोपहर में लगभग 3 घंटे के लिए बंद रहता है.

क्या खरीदें

कन्याकुमारी से ताड़पत्रों और शंख, सीपियों आदि से बनाया गया साजसज्जा का सामान खरीदा जा सकता है. कुमारी अम्मान मंदिर के आसपास की दुकानों से इन की खरीददारी की जा सकती है.

कन्याकुमारी में अन्य खरीददारी के केंद्र हैं, तमिलनाडु कोआपटेक्स सेल्स इंपोरियम (गांधी स्मारक के नजदीक), तमिलनाडु खादी क्राफ्ट सेल्स सेंटर, साउथ कार स्ट्रीट आदि.

कन्याकुमारी

कहां ठहरें?

होटल

होटल तमिलनाडु, फोन : 257.
केप होटल, फोन : 222.
त्रि सी काटेज, फोन : 283.
कावेरी लाज, फोन : 288.
शंकर गेस्ट हाउस, फोन : 260.
श्री भगवती लाज, फोन : 298.
केरल गेस्ट हाउस, फोन : 2…

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

कोरी (जुलाहा), 23/165/2,800/-, एम.ए., बी.एड., सेंट्रल स्कूल टीचर, गेहुआं, सुशील कन्या हेतु सजातीय, अधिकारी वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 929, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 24½ वर्षीया, सुंदर, लंबी, गौरवर्ण, एम.ए., बी.एड. इंगलिश, कन्या हेतु कार्यरत, योग्य अथवा अध्ययनरत मेडिको वर चाहिए. पिता स्वजाति में प्रतिष्ठित पुराने राजनीतिज्ञ, कई फर्मों तथा कई अपने निजी निवास, सविवरण लिखें. वि.नं. 930, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, मंगली, 22/156, एम.ए. फाइनल अर्थशास्त्र, स्लिम, सुंदर, गेहुआं रंग, ब्यूटीशियन डिप्लोमा, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 28 वर्षीया, 5'2", मंगलिक, इंटरमीडिएट कन्या हेतु मंगलिक वर की आवश्यकता है. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 932, सरिता. नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, धनगर, क्षत्रिय कन्या, 23, 45, 154, एम.ए., बी.एड., हेतु बारोजगार वर चाहिए. अधिकारीगण परिवार, दहेज नहीं. वि.नं. 933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (आगाल), 26, 155, एम.ए., पी.जी. डिप्लोमा (अंगरेजी पत्रकारिता), रंग गेहुआं, प्रतिष्ठित परिवारीय, सेवारत (दिल्ली) कन्यार्थ सजातीय, अग्रवाल, जैन, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गर्ग गोत्र, 32 वर्ष, 5'1½", गौरवर्ण, ग्रेजुएट तलाकशुदा कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, मित्तल, 25/160, सुंदर, स्लिम, गोरी, गृहकार्यदक्ष, बी.एससी., बी.एड., कंप्यूटर डिप्लोमा, पिता स्वराजपत्रित अधिकारी, भोपाल निवासी, कन्यार्थ सुयोग्य, शासकीय अधिकारी अथवा उत्तम व्यवसायी वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. मध्य प्रदेशीय को प्राथमिकता, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 150, बी.काम., कंप्यूटर में एम.एससी., सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्यार्थ उपयुक्त, शिक्षित वर चाहिए. वि.नं. 937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.ए., बिदल गोत्र, बिश्नोई संप्रदाय से संबंधित, गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर, सुशील कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. वि.नं. 9.38, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोंड (धूरिया), 23 वर्षीया, 5', एम.ए. एवं सी.टी. कोर्स अध्ययनरत, गोरी, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 1022, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कपिल गोत्र, ब्राह्मण, 28, 150, बी.ए. उत्तीर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 1023, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, पंजाबी खत्री, विधवा, अध्यापिका, बी.ए., बी.एड., फरीदाबाद निवासी हेतु वर. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1024, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव (अ. जाति), 24, 5'3", सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, ग्रेजुएट कन्या हेतु उचित पद पर सरकारी सेवारत वर चाहिए. सारा परिवार शिक्षित है. पिता इंजीनियर, भाई मर्चेंट नेवी में, शानदार शीघ्र शादी. संपूर्ण विवरण सहित भेजें. वि.नं. 1025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 22, एम.ए. अध्ययनरत, कंप्यूटर डिप्लोमा प्राप्त, ब्यूटीशियन कोर्स प्राप्त, गेहुआं रंग कन्या हेतु सुयोग्य वर. माता शिक्षा विभाग में राजपत्रित अधिकारी. वि.नं. 1026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 25, 153, डबल एम.ए., सुंदर, प्रतिष्ठित, अति संपन्न परिवारीय, आंशिक विकलांग (केवल बाएं हाथ की उंगलियां), समस्त गृहकार्य करने में पूर्णरूपेण सक्षम, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. आंशिक विकलांग को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. उच्चस्तरीय विवाह. लिखें : वि.नं. 1027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 158, रंग गेहुआं, साधारण नयननक्श, एम.काम. फाइनल, कश्यप कहार कन्या हेतु सरकारी सेवारत, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 1028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (धीवर, कहार, महार) पश्चिम उत्तरप्रदेशीय निवासी, 23/160, बी.ई. इलेक्ट्रोनिक्स एवं 21, 158, बी.ई. इलेक्ट्रिकल, सुंदर, गेहुआं रंग, परिवारीय बहनों के लिए सजातीय, योग्य वर चाहिए. पिता वरिष्ठ अधिकारी. वि.नं. 1029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर (खटीक), 31, 158, अविवाहित, स्नातक, रंग साफ, गृहकार्यदक्ष, लखनऊ निवासी कार्यरतार्थ सजातीय वर. निसंतान, कानूनन तलाकशुदा या विधुर विचारणीय. वि.नं. 1030, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 19 वर्षीया, 5'3½", बी.ए. अंतिम वर्ष अध्ययनरत, गौरवर्ण, आकर्षक, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु योग्य, सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1031, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्ष, 160 सें.मी., एम.टेक. अध्ययनरत एवं कार्यरत, आकर्षक, स्मार्ट कन्यार्थ सुयोग्य, शिक्षित, माहेश्वरी, अग्रवाल, जैन समाज के डाक्टर/

इंजीनियर/सी.ए., अधिकारी वर्ग वर चाहिए. वि.नं. 1032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिर्फ मंगली लड़का, सुंदर, गोरी, स्नातक, गोयल कन्या, 23/157/50 के लिए. उत्तम विवाह. वि.नं. 1033, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 20, 152, बी.ए., आकर्षक, गोरी, सुंदर, सिलाई, कढ़ाई डिप्लोमा, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ वर. वि.नं. 1034, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 158, प्रथम श्रेणी, मेधावी, बी.एससी. बाटनी, एम.एससी. एग्रीकल्चर, बी.एड. उच्च श्रेणी, अध्यापिका गवर्नमेंट हाई स्कूल, स्थायी सेवारत, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, मध्य प्रदेश निवासी, प्रतिष्ठित परिवार, कन्यार्थ सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. सरकारी सेवारत प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1035, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई (हिंदू), 22, 158, बी.काम. आनर्स, एम.काम., देहली अध्ययनरत, देहलीवासी, स्मार्ट, आकर्षक व्यक्तित्व, पिता तकनीकी अधिकारी, कन्यार्थ इंजीनियर, बैंक, प्रशासनिक अधिकारी, एलाइड, उच्च सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 1036, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, विधवा, 28, 5'2". बी.काम., बैंक कार्यरत दिल्ली, दो पुत्र (5 व 1½), हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1037, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, हिंदीभाषी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 23½, 46, 156, अंगरेजी एम.ए. (प्रथम वर्ष), स्वच्छ वर्ण, गृहकार्य जानने वाली पुत्री वास्ते दहेजविरोधी, किसी प्रांत से किसी ब्राह्मण का अधिकारी/समकक्ष/सुस्थापित व्यवसायी (सद्यः विधुर भी) वर चाहिए. शीघ्र सादा विवाह. वि.नं. 1038, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 160, कानवेंट शिक्षित, एम.ए. इंगलिश, कंप्यूटर डिप्लोमा, गौरवर्ण, राजस्थान निवासी कन्या हेतु वर चाहिए. उच्च व्यवसायरत या सी.ए., डाक्टर, इंजीनियर को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 1039, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाति चमार, संपन्न परिवार, 20, 156 सें.मी., कानवेंट स्कूलिंग, स्नातक आनर्स की छात्रा, गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर, बिहार सरकार के शीर्षस्थ अभियंता की पुत्री हेतु सुयोग्य, भारतीय प्रशासनिक/समकक्ष सेवा के स्वजातीय वर चाहिए. वि.नं. 1040, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 29, 158, 4,000/-, केंद्रीय मंत्रालय, सरकारी आवास, तलाकशुदा, निसंतान, कन्यार्थ दिल्लीवासी. वि.नं. 1041, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रमाद कायस्थ, 21, 160, बी.ए. (अंतिम वर्ष), आसनसोल निवासी, सुंदर, गृहकार्य, सिलाई,इंलायडरी-दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर. दहेजरहित शीघ्र विवाह. पिता केंद्रीय अधिकारी. वि.नं. 10- सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, गोरी, स्लिम, सुंदर, एम.ए., म.प्र. निवासी, बलाई, अ.जा. कन्या हेतु सेवारत, प्रोफेशनल वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 1043, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी राजपूत, 18½, 157, बी.ए. प्रथम वर्ष, पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी, सांवला रंग, आकर्षक व्यक्तित्व, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. भाई द्वितीय श्रेणी राजपत्रित अधिकारी. सरकारी सेवा वालों को प्राथमिकता. विवरण सहित भेजें. वि.नं. 1044, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 158, राजपूत, पोस्ट ग्रेजुएट, अध्यापिका, सुंदर, स्मार्ट, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सुयोग्य, उच्चाधिकारी, व्यावसायिक, दहेजविरोधी वर. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1045, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 5'1", सुंदर, शिक्षित, सुशील एवं आत्मनिर्भर विधवा (जिस के चार वर्ष की पुत्री है) के लिए योग्य वर चाहिए. पति की विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी. वर्तमान में लड़की कलकत्ता में वस्त्र परिधान एवं आभूषण डिजाइन के कार्य में रत है. पुनर्विवाह के लिए लड़की के पिता, श्वसुर एवं स्वयं सभी सहमत हैं. बागड़ी छोड़ कर पूर्ण विवरण संपर्क करें. वि.नं. 1046, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धीमान (विश्वकर्मा), 27, 145, एम.ए. (फाइनल), गौरवर्ण, अति सुंदर कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर, शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 1047, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न माहेश्वरी, 22/152, ग्रेजुएट, सुंदर, सुशील, मृदुभाषी, गृहकार्यनिपुण, विशेषज्ञ ड्रेस डिजाईनिंग, हेतु उच्च शासकीय/व्यवसायी, सुंदर, वर, उत्तम चयन. वि.नं. 1048, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राधास्वामी सक्सेना, 18 वर्षीया, 145 सें.मी., गोरा रंग, गोल चेहरा, XI इंगलिश माध्यम से पढ़ रही कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. जूनियर ग्रेड टाईपिंग कंप्यूटर, कढ़ाई व फेबरिक पेंटिंग कोर्स कर चुकी है, भाई उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं. दहेज के स्थान पर मानवता के प्रेमी सज्जन चाहिए. वि.नं. 1049, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 29 वर्ष, 5'3", गोरी कन्या, एम.एससी. (वनस्पति), हेतु कुलीन वर. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1050, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय राजपूत, 25 वर्षीया, 163 सें.मी., एम.डी. (मेडीसीन) में अध्ययनरत कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर या शासकीय अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1051, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता (वैश्य), 28, 152, हर क्लास में प्रथम, एम.एससी., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय में टी.जी.टी., वेतन रु. 3,800/-, पावर ग्लास प्रयोग करती, पिता

एजुकेशन [illegible] आफीसर, कन्या हेतु दहेजविरोधी, राजपत्रित अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, बैंक आफीसर, डिफेंस आफीसर, केंद्रीय विद्यालय टीचर, [illegible], बिजनेसमैन, सजातीय वर की आवश्यकता है. ग्वालियर में रहने वालों को प्राथमिकता, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. कायस्थ, क्षत्रिय, ब्राह्मण वर्ग के लोग भी विचारणीय. वि.नं. 1052, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (कोइरी), 21 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.एससी. (जीव विज्ञान) अध्ययनरत, सुशील, रंग गेहुआं, कन्या हेतु सजातीय, सेवारत योग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1053, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, गर्ग गोत्र, मांगलिक, 22, 5′4″, एम.ए. प्रीवियस, स्वस्थ, सुंदर, गोरी, इकहरा बदन, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक, प्रतिष्ठित, परिवारीय कन्या हेतु योग्य, सजातीय वर चाहिए, कुंडली, बायोडाटा प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें, उत्तम विवाह. वि.नं. 1054, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, 22, 5′3″, शिक्षा बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, अच्छी आमदनी, सरकारी सर्विस, योग्य वर चाहिए. वि.नं. 1055, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शिक्षित, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, 23, 160, मूक कन्या के लिए सेवारत वर. वि.नं. 1056, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, गोरी, स्लिम, सुंदर, एम.ए., म.प्र. निवासी, बलाई, अ.जा. कन्या हेतु सेवारत, प्रोफेशनल वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 1057, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 24, 155, प्रशिक्षित, ग्रेजुएट, सुंदरता सामान्य, पिता कार्यालय अधीक्षक, जयपुर पोस्टेड, स्थायी सहारनपुरवासी, कन्यार्थ सरकारी सेवारत, स्वजातीय वर चाहिए. वि.नं. 1058, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य (जायसवाल), 26, 156, एम.ए., शोधकार्यरत, अति सुंदर, गोरी, स्लिम कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 1059, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, स्मार्ट, प्रतिभावान, 22/157, एम.बी.बी.एस., पोस्ट ग्रेजुएशन इच्छुक, संपन्न, प्रोफेशनल परिवार की कन्या हेतु मेडिको/एक्जीक्यूटिव वर चाहिए. वि.नं. 1060, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, अंबष्ट, 26, 158, 4,000/-, एम.ए. (इकोनोमिक्स), बी.एड., शिक्षिका, बिहार स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल, गेहुआं रंग, पिता रक्षा वैज्ञानिक, कन्यार्थ सजातीय, सेवारत, इंजीनियर अथवा समकक्ष वर चाहिए. वि.नं. 1061, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, 160 सें.मी., अंडर मैट्रिक, रंग गेहुआं, गृहकार्यदक्ष, गरीब, बंगाली कन्या, जो कि म.प्र. निवासी है, हेतु योग्य, सरकारी सेवारत व निजी व्यवसायरत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. दहेज के इच्छुक क्षमा करें. लिखें : वि.नं. 1062, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन ओसवाल, 28, 155, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, गोरी, सुंदर, तलाकशुदा, निसंतान कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत/व्यवसायी वर चाहिए. विधुर (एक संतान वाले) विचारणीय. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1063, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (कन्नौजिया), 26, 156, बी.ए., बी.एड., रंग सांवला, गृहकार्यदक्ष, हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 1064, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 26 वर्ष 9 माह, कद 5 फुट 2 इंच, एम.एससी. (जंतु विज्ञान) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण, बी.एड. प्रथम व द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण, रंग साफ, सरल स्वभाव, शिक्षित कन्या की दहेजरहित शादी, वरपक्ष का शोभनीय स्वागत, शीघ्र शादी हेतु शिक्षित वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 1065, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 5′2″, बी.ए., एलएल.बी., सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित परिवारीय, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुव्यवस्थित, अधिकारी, प्रोफेशनल वर चाहिए. वि.नं. 1066, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण भारद्वाज, बी.ए. आनर्स, गोरी, 20 वर्षीया, 5′2″, गृहकार्यदक्ष, अति प्रतिष्ठित, संपन्न ब्राह्मण परिवार की कन्या हेतु सुस्थापित, योग्य, कुलीन, किसी भी प्रकार के ब्राह्मण परिवार का वर चाहिए. उत्तम विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण समेत भेजें. वि.नं. 1067, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रोहिला राजपूत, 25, 154, एम.ए., बी.एड., सच्ची, सुंदर, विनीत, सामाजिक मूल्यांकनवान हेतु दयावान, उत्तम मूल्यांकन परिवारीय, अच्छा, नैतिकवान वर. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1068, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 150, पंजाबी खत्री, गेहुआं रंग, शाकाहारी, ग्रेजुएट, शिक्षिका, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. सजातीय वर को वरीयता. उत्तम शीघ्र विवाह. वि.नं. 1069, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 150 सें.मी., मेधावी, स्मार्ट, साइंस रिसर्चरत कन्यार्थ सुयोग्य वर. इंजीनियर, डाक्टर, शिक्षाशास्त्री प्राथमिकता. वि.नं. 1070, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, स्मार्ट, आकर्षक, अंगरेजी माध्यम शिक्षित, 25, 163 सें.मी., एम.एससी., पी.जी.टी. केंद्रीय स्कूल, 21, 161, एम.एससी. (फाइनल), बी.एड. कन्याओं हेतु दहेजविरोधी, प्रोफेशनल, बैंक/एल आई सी./पब्लिक सेक्टर, राजपत्रित अधिकारी वर. पिता रक्षा विभाग, बंधन नहीं. शीघ्र साधारण विवाह. वि.नं. 1071, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 158 सें.मी., लंबी, पतली, आकर्षक, केंद्रीय सेवा में कार्यरत, (3,000/-) प्रतिमाह,

हिंदीभाषी, ग्रेजुएट, रोमन कैथोलिक कन्या हेतु रोमन कैथोलिक, सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 1072, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल गोत्र, अग्रवाल, कानवेंट शिक्षित, बी.काम., पी.जी. डिप्लोमा कंप्यूटर, 23 वर्षीया, 5'3", गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, उच्च मध्यवर्गीय, तलाकशुदा कन्या हेतु उच्च शिक्षित, सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 1073, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 162, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय कार्यरत, 2,500/-, जाट, मेरठ, संपन्न परिवार, रंग साफ, सफेद दाग, मुंह छोड़ कर, हेतु 30-31 वर्षीय आयु, संपन्न वर चाहिए. वि.नं. 1074, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमाऊंनी शाह, 25/152, कानवेंट शिक्षित, ग्रेजुएट, कंप्यूटर डिप्लोमा, गौरवर्ण कन्यार्थ सुयोग्य, कुमाऊंनी वर चाहिए. प्रथम बार पूर्ण विवरण लिखें . वि.नं. 1075, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मारवाड़ी, बिंदल गोत्रीय, कानवेंट शिक्षित, बी.ए. (इकोनोमिक्स आनर्स) में अध्ययनरत, इंगलिश मीडियम, 20, 5'4", सुंदर, गेहुआं वर्ण, 50 कि.ग्रा., गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वरीयता व्यवसायी, इंजीनियर, डाक्टर. उत्तम शीघ्र विवाह. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 1076, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 30, 157, बी.एससी., एम.ए., भोपाल स्थित बैंक सेवारत, गौरवर्ण, आकर्षक कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 1077, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शांडिल्य गोत्र, 22, 5'3½", बी.एच.सी. (फाइनल), सुंदर, गोरी, पिता प्राचार्य (म.प्र.), कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 1078, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 22, 160, बंबई निवासी (बिहारी), ग्रेजुएट, सुशील, रंग गेहुआं, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. पिता वरिष्ठ मैनेजर. वि.नं. 1079, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, अग्रवाल, मित्तल, साफ रंग, सुंदर, स्वस्थ, बंधनमुक्त, संतानमुक्त, आय मासिक 4,000/-, वार्षिक 50,000/-, महिला हेतु स्वस्थ, सजातीय वर चाहिए. सविवरण लिखें. वि.नं. 1080. सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, सुंदर, प्रतिभावान, 22/157, एम.ए., यूनिवर्सिटी टापर, प्रशासक/लेक्चरर बनने की इच्छुक, राजस्थान निवासी कन्यार्थ प्रशासनिक/बैंक आफीसर, लेक्चरर, सी.ए., डाक्टर, इंजीनियर या अच्छा व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. उत्तम शीघ्र विवाह. वि.नं. 1081, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुलश्रेष्ठ, 24, 168, एम.काम., रंग गेहुआं, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कायस्थ वर चाहिए. वि.नं. 1082, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, डाक्टर, 24, 152, सुंदर, स्मार्ट, राजस्थान के प्रतिष्ठित परिवार, पिता राजपत्रित अधिकारी, हेतु सजातीय, डाक्टर, आई.ए.एस., सी.ए., इंजीनियर वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 1083, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (कारपेंटर), 24, 5'3", ग्रेजुएट कास्ट एकाउंटेंसी (इंटर), बिजनेस मैनेजमेंट डिप्लोमा, राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, मध्यप्रदेशीय, प्रतिष्ठित परिवार की गोरी, सुंदर कन्या हेतु दहेजविरोधी, सजातीय, सुयोग्य, सेवारत/व्यवसायी वर चाहिए. पत्राचार: वि.नं. 1084, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, म.प्र. निवासी, 23/155, एम.ए., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. पिता राजकीय सेवा, द्वितीय श्रेणी सहायक यंत्री पद पर कार्यरत. वि.नं. 1085, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पाल क्षत्रिय, एम.ए. प्रीवियस, 22, 157 सें.मी., कन्या हेतु सुशिक्षित, गड़रिया, खटीक वर चाहिए. वि.नं. 1086, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, सुशिक्षित परिवार, बारहवीं पास, केंद्रीय अस्पताल दिल्ली में स्टाफ नर्स, 24 वर्ष, 160 सें.मी., हेतु सुयोग्य वर चाहिए. इच्छुक विवरण सहित लिखें. देहली निवासी को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. शीघ्र अच्छी शादी. वि.नं. 1087, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 25, 158, एम.ए., गौराकर्षक, गृहकार्यदक्ष उंगलियां, एड़ी पर हलके सफेद दाग, हेतु वर चाहिए. अच्छी शीघ्र शादी. वि.नं. 1088, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, मुद्गल, 25½, 150, 42 किलो, एम.एससी., जूलोजी, बी.एड., गेहुआं रंग, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, पिता वरिष्ठ राजपत्रित अधिकारी, उ.प्र. का प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. वि.नं. 1089, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 23/158, भारत सरकार के अधीन वैज्ञानिक पद पर कार्यरत कन्यार्थ हैदराबाद, पूना, बंगलौर में कार्यरत इंजीनियर/डाक्टर/सी.ए./बैंक पी.ओ./ शासकीय अधिकारी वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1090, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (नाई), दो कन्याएं, 29 तथा 27 वर्षीया, बी.ए., एलएल.बी. तथा आर्ट्स द्वितीय वर्ष, गौरवर्ण रंग कन्याओं हेतु शाकाहारी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1091, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24 वर्षीया, 144 सें.मी., गेहुआं रंग, बी.एससी. एवं डिप्लोमा कंप्यूटर प्रोग्रामर, कार्यरत कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. पिता वायु सेना में, भाई डाक्टर, उत्तम शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 1160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

बीसा अग्रवाल, कंसल, 25, 152, नाथां पैर

पोलियोग्रस्त, वैसाखी सहित, लखनऊ निवासी, पारिवारिक आय 25,000/-, इंटरमीडिएट युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. विकलांग को प्राथमिकता. वि. नं. 973, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, परित्यक्त, इकहरा, बिलकुल अकेला, गेहुआं, स्मार्ट, मध्यमवर्ग, हेतु परिपक्व जीवनसाथी. वि. नं. 974, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी युवक, 30, 5′10″, गोरा, हैंडसम, ग्रेजुएट, बिजनेसमैन, वार्षिक आय 6 अंकों में, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी/अग्रवाल कन्या. सुंदर कन्या मुख्य प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 975, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 26, 165, जूनियर इंजीनियर, प्रा. लि. नोएडा कार्यरत को सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. वि. नं. 976, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, गौरवर्ण, 28, 184, एम.टेक., भारत सरकार के प्रतिष्ठान में कार्यरत इंजीनियर हेतु माहेश्वरी/अग्रवाल, व्यावसायिक, उच्च शिक्षा प्राप्त वधू. वि. नं. 977, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, विधुर, 53, 8,000/-, हेतु शुद्ध शाकाहारी, सत्यनिष्ठ, समझदार, घरेलू, आस्तिक जीवनसाथी. वि. नं. 978, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल, आयु 24 वर्षीय, कद 167 सें.मी., दोहरा बदन, स्मार्ट, स्नातक, निजी फैक्ट्रियां, आवास, गाड़ियां आदि सभी आधुनिक सुविधायुक्त घराने, वार्षिक आय सात अंकीय, हेतु शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, गोरी कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि. नं. 979, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 30, 183 सें.मी., स्नातक, एकदम गोरा, खूबसूरत, विशाल स्वव्यवसाय, अच्छी आमदनी, हेतु गोरी, मीनिमम 165 सें.मी., खूबसूरत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार ही बायोडाटा सहित भेजें. वि. नं. 980, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 174, 3,700/-, धोबी, प्रथम श्रेणी बैंक अधिकारी, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु आकर्षक, सुसंस्कृत, स्नातक कन्या चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण दें. वि. नं. 981, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 170, इंजीनियर, एम.बी.ए. (आई.आई.एम.), संभ्रांत परिवार, कंपनी अधिकारी हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि. नं. 985, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कंपनी सेक्रेटरी (इंटर), 29, 180, 7,000/-, गोरा, सरकारी प्रतिष्ठान में सीनियर फाइनेंस आफीसर हेतु लंबी, गोरी, सुंदर, सजातीय, ग्रेजुएट/मेडिको वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि. नं. 986, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 159, रु. 3,900/-, एम.ए. अंगरेजी, इंडियन आयल सेवारत, दृष्टिहीन हेतु सेवारत या उच्च शिक्षित वधू चाहिए. बंधन नहीं. वि. नं. 988, सरिता, नई दिल्ली-110055

कुर्मि क्षत्रिय, 28, 180, 4,500/-, होटल मैनेजमेंट, इकलौता, निर्व्यसनी, गौराकर्षक, संपन्न परिवार, उत्तरप्रदेशीय हेतु लंबी, सुंदर वधू. प्राथमिकता मेडिको, विज्ञान स्नातक, उत्तम चयनार्थ. वि. नं. 990, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजकीय अध्यापक, 6,000/-, चलाचल शहरी संपत्ति, विधुर, 48, कान्यकुब्ज ब्राह्मण को घरेलू जिम्मेदारी संभालने हेतु प्रौढ़ा चाहिए. सत्वर परिणय. वि. नं. 991, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, 27, 171, 54, 5,200/-, सरकारी अधिकारी हेतु सुशिक्षित/कार्यरत वधू चाहिए. वि. नं. 992, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25/172, 71, 4,500/-, स्वस्थ, संभ्रांत परिवारीय, इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर हेतु आकर्षक, सुशील, गौरवर्ण (साइंस ग्रेजुएट को प्राथमिकता), सजातीय वधू चाहिए. बायोडाटा भेजें. वि. नं. 994, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, कानूनी तलाकशुदा, स्वस्थ, बैंक आफीसर, 54, आय रु. 10,000/- मासिक, निजी मकान, हेतु वास्तविक वैवाहिक आमंत्रण, हंसमुख, स्वामिभक्त, संपन्न, सेवारत महिला. जाति, पंथबंधन नहीं. वि. नं. 995, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27 वर्षीय, 5′9″, खूबसूरत, लंबा, अंगरेजी माध्यम, कानवेंट शिक्षित एवं बी.काम. डिग्री, अपना निजी उत्तम व्यवसाय, उज्ज्वल भविष्य एवं लखनऊ में खूबसूरत घर, अच्छा परिवार, दो अंकल, एक डाक्टर, एक इंजीनियर, यू.एस.ए. में स्थापित, हेतु सुयोग्य, सुंदर वधू. बंधन नहीं. कन्या ही मुख्य विचारणीय, कृपया विवरण सहित लिखें. SHIV N. VERMA, 182 ROBERTSON WAY, LINCOLN PARK, NJ. 07035, U.S.A.

जायसवाल, 28, 164, एम. फार्म. (स्वर्ण पदक). पीएच.डी. अध्ययनरत, लेक्चरर हेतु सुशिक्षित एवं सेवारत वधू चाहिए. उपजाति व दहेजबंधन नहीं, सादगीपूर्ण विवाह. वि. नं. 1092, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्तावासी, साव (मगही तेली), 30, 5′4″, 2,300/-, उच्च माध्यमिक, म्यूनिसिपल नौकरी, आंखों पर चश्मा, सुंदर वर हेतु गोरी, खूबसूरत, शांत स्वभावी, नौकरीपेशा अथवा घरेलू, स्वजाति वधू. वि.नं. 1093, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 25, 168, मैट्रिक, निजी व्यवसाय, रंग मध्यम, हेतु वधू. सुंदर, सुशील कन्या के मातापिता एक बार में पूर्ण विवरण भेजें. वि. नं. 1094. सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 30, 167, 3,500/-, एम.ए., बी.एड., राजकीय अध्यापक, सरकारी आवास (दिल्ली), हेतु मैट्रिक वधू चाहिए. आंशिक विकलांग विचारणीय, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1095, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, व्यवसायी, 27, 168, मासिक आय

पांच अंक, बी.ए., स्वस्थ, गौरवर्ण, शीघ्र विवाह, हेतु सुयोग्य कन्या चाहिए. वि.नं. 1096, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भुवनेश्वर (उड़ीसावासी), जायसवाल (वैश्य), 28, 5'7", 7,000/-, सी.ए., गोरा, स्मार्ट, निजी मकान, कार, प्रतिष्ठित परिवार युवकार्थ गोरी, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय वधू. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1097, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, बैंक अधिकारी बंगलौर, 28½, 164, 5,000/-, हेतु सेवारत/शिक्षित वधू, सभी वैश्य मान्य. वि.नं. 1098, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पुजारी (वैष्णव) ब्राह्मण, 29, 165, बी.एससी., बी.ए.एम.एस., एम.डी. (अध्ययनरत), गौरवर्ण, सुंदर, डाक्टर हेतु मेडिको/नान मेडिको कन्या चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 1099, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 24, 5'3", 1,800/-, इंटर, राजकीय सेवारत युवक हेतु शिक्षित, सुयोग्य बधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 1100, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुमारतनय वैश्य (गुप्ता), 23/168, इंटर, प्रतिष्ठित परिवार, उच्च व्यवसायी, प्रापर्टी मालिक, युवक हेतु सजातीय, शिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. प्रथम बार में बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 1101, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मारवाड़ी बंसल, 27,6', बी.काम., एम.बी.ए., अमेरिका में कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु लंबी, स्नातक, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, घरेलू, अमेरिका में रहने की इच्छुक, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. विवाह शीघ्र. संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 1102, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 180, 6,000/-, एम.एससी., एक्जीक्यूटिव युवक हेतु सजातीय, शिक्षित, गोरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, सुयोग्य कन्या चाहिए.विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. धूत व तोषनीवाल छोड़ कर, पूर्ण विवरण तथा जन्मपत्रिका सहित संपर्क करें. वि.नं. 1103, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्याहुत कलवार, हैहय क्षत्रिय परिवार, 27/26, 175/160, स्नातक, गोरवर्ण, गेहुआं, दो भाई, निजी उद्योग विद्युत उपकरण की चार प्रतिष्ठान, बोकारो इस्पात नगर, बिहार में संपन्न परिवार, निजी वाहन, बिल्डिंग, टेलीफोन, आर्थिक रूप से संपन्न, उद्योगपति वर हेतु सुयोग्य, गुणी वधू. सुंदर, सुशील, मृदुभाषी, साफ गौरवर्ण, आकर्षक व्यक्तित्व, निरोगी, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक, मिलनसार, उच्च प्रगतिशील, विचारवान, कुशाग्रबुद्धि, सुशिक्षित, जाति, दहेजबंधन नहीं, केवल रंगरूप, योग्यता, सजातीय, उपजातीय को प्राथमिकता. जन्मपत्री, योग्यता, शिक्षा प्रमाणपत्र मार्कशीट, फोटोकापी, स्वहस्तलिखित निबंधपत्र बायोडाटा, उत्तम शीघ्र विवाह चयनार्थ हेतु प्रथम बार भेजें. वि.नं. 1104, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अहमदाबाद निवासी, हिंदू धोबी, 27, 170, 53, 5,300/-, अधिकारी हेतु सुशिक्षित/कार्यरत वधू चाहिए. वि.नं. 1105, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 28, 165 सें.मी., बी.काम. (आनर्स), स्मार्ट, कलकत्ता निवासी युवक हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, अंगरेजी माध्यम से शिक्षित, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, घरेलू जैन कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, शीघ्र विवाह. प्रथम बार में जन्मकुंडली एवं संपूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1106, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बलाई इंजीनियर (बी.ई.), 24, 5'9", गौरवर्णार्थ ग्रेजुएट, सुंदर, सजातीय वधू. वि.नं. 1107, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बैरवा, 28/176, 24/176, बी.ई. (मैकेनिकल इलेक्ट्रिकल), सरकारी सेवारत हेतु स्नातक (प्राथमिकता) या सुशिक्षित, शाकाहारी वधुएं चाहिए. दहेज नहीं. वि.नं. 1108, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 32, एडवोकेट हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. वि.नं. 1109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, सिंघल, 12वीं, 28 वर्षीय, इकहरा बदन, स्वस्थ, स्वयं का व्यापार, हेतु स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 1110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 183, 10,000/-, मैकेनिकल इंजीनियर, एम.बी.ए., आई.आई.एम.ए., कार्यरत हेतु अति सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 1111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (लाहोटी), 23½, 178 सें.मी., अमेरिका में मास्टर्स (मेडिकल इंजीनियरिंग) अध्ययनरत, सुंदर युवक के लिए शिक्षित, लंबी, माहेश्वरी/अग्रवाल कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1112, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली, 26, 5'4", सुंदर, नर्सिंग स्नातक, राज्य सेवारत, 3,500/- मासिक आय, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 1113, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 41, 170, व्यवसायी, मासिक आय पांच अंकीय, पहली पत्नी से आपसी सहमति से संबंध विच्छेदित (एक पुत्र, एक पुत्री), युवक हेतु निसंतान, विधवा जीवनसंगिनी चाहिए. तलाकशुदा भी विचारणीय. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1114 सरिता, नई दिल्ली-110055.

बाल्मीकि, 27, 167, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा, रेलवे असि. ड्राइवर, 4,200/- मासिक, हेतु ग्रेजुएट (वरीयता साइंस), सजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1115, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, गर्ग गोत्र, मांगलिक, 24, 5'3", स्मार्ट, निजी मेडिकल स्टोर्स, बी.काम. द्वितीय, 46 कि.ग्रा., वर हेतु सुंदर, गोरी, नाटी, सजातीय वधू चाहिए. कुंडली बायोडाटा, पारिवारिक विवरण

आदि प्रथम बार में लिखें. वि.नं. 1116, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कर्ण कायस्थ, 30, 165, 4,000/-, होमियोपैथिक चिकित्सक हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. मेडिको कन्या को वरीयता, उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 1117, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा (कोइरी), 26, 5'10", बी.एससी., निजी व्यवसाय, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 1118, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विख्यात कंपनी में कार्यरत, कंप्यूटर प्रोफेशनल, 27 वर्षीय, 175 सें.मी. के लिए वधू चाहिए. संपन्न परिवार की विकलांग, विधवा स्वीकार्य. धर्म, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1119, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 32, 5'7", 4,000/-, बी.ए., निजी फार्म (मथुरा), आलीशान मकान, हेतु सुंदर वधू चाहिए. तलाकशुदा, विधवा स्वीकार्य. दहेज, जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1120, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 5'8", 4,000/-, मैट्रिक, गुर्जर, पंजाबी, निजी फार्म, मकान, हेतु सुंदर वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 1121, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता (मध्यदेशीय वैश्य), 28, 168, 4,000/-, असिस्टेंट इंजीनियर, बी.एससी. द्वितीय, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियरिंग डिप्लोमा, यू.के. कोलोबरेशन सहित, हाईटेक, प्रतिष्ठित कंपनी में कार्यरत युवक, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. इलेक्ट्रोनिक्स डिप्लोमा या साइंस ग्रुप को प्राथमिकता. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 1122, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 160, 60, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शांडिल्य, विधि स्नातक, बिहार (हजारीबाग) निवासी, सरकारी सेवारत, साफ, स्वस्थ, सुदर्शन युवक, स्वयं निर्णायक हेतु सजातीय, सुयोग्य, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष एवं सुशिक्षित कन्या चाहिए. प्रस्ताव पूर्ण विवरण के साथ स्वीकार्य, उपजाति भी स्वीकार्य. वि.नं. 1123, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण वर, 26, 167, 34,000/- मासिक, मैकेनिकल इंजीनियर, कार्यरत दुबई, पिता जनरल मैनेजर, हेतु सुंदर, न्यूनतम विज्ञान स्नातक, प्रोफेशनल वरीयता, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. वि.नं. 1124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 23, 171, 69, बी.काम., निजी व्यवसाय, गौरवर्ण, आकर्षक युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, सुसंस्कृत परिवार की वधू चाहिए. वि.नं. 1125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 175, बी.काम., गौरवर्ण, स्मार्ट, निजी व्यवसाय, युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. जन्मपत्रिका, बायोडाटा सहित लिखें. वि.नं. 1126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, 28, 152, 2,800/-, बैंक दफ्तरी, मैट्रिकुलेट, एक आंख खराब, हेतु वधू, नेत्रहीन, विकलांग, तलाकशुदा, विधवा, कार्यरत भी लिखें. वि.नं. 1127, सरिता, नई दिल्ली-110055.

त्यागी ब्राह्मण, 24 वर्ष, 5'3", 2,000/- रु. एवं कृषि फार्म, अर्द्धशासकीय सेवा, दफ्तरी, इंटर कालिज, हेतु सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं शीघ्र विवाह. वि.नं. 1128, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, शुद्ध शाकाहारी, गौरवर्ण, कलकत्ता स्थित व्यवसायी, मारवाड़ी पुरुष के लिए जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 1129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (फूलमाली), बी.एससी. (गणित), बी.एड., 24, 160, हेतु सरकारी नौकरीवाली अथवा बी.एड./एस.टी.सी. वधू चाहिए. वि.नं. 1130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पासी (अ.जा.), 42, राजपत्रित पदाधिकारी, एक पुत्र 6 वर्ष, स्वजातीय, निसंतान, घरेलू, विधवा, परित्यक्ता चाहिए. वि.नं. 1131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन श्वेतांबर, 31, परिवार से अलग, निर्व्यसनी, 8,000/-, हेतु निसर्ग प्रेमी, उच्च मानसिक स्तरीय जीवनसाथी. आत्मनिर्भर विधवा, तलाकशुदा भी विचारणीय. वि.नं. 1132, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (राठी), पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी, चार्टर्ड एकाउंटेंट, 27, 5'5", 6,000/-, गौरवर्ण, स्मार्ट, कार्यरत, प्रतिष्ठित, सीमित परिवार, हेतु सुशिक्षित, सुंदर, घरेलू, माहेश्वरी/अग्रवाल वधू चाहिए. प्रथम बार में ही संपूर्ण विवरण, कुंडली सहित लिखें. वि.नं. 1133, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 5'4½", 65, स्वस्थ, आकर्षक, सांवला, स्लिम, कर्मठ, अति सुशिक्षित, प्रतिष्ठित, आत्मज्ञानी, व्यवहारकुशल, आदर्शवादी, दूरदर्शी, पूर्ण आत्मनिर्भर, स्वावलंबी, सुसंस्कृत, मृदुभाषी, निश्छल, मासूम, आर्थिक संपन्नता, उच्चाकांक्षी, धूम्रपानरहित, आत्मविश्वास से भरपूर, कला, साहित्य प्रेमी, जन्मभूमिवासी, कलकत्ता, निजी मकान, प्रतिष्ठित परिवार, हिंदीभाषी, सेवाभाव से परिपूर्ण, इस स्वभाव से मेल खाने वाला जीवनसाथी चाहिए. योग्यता ही एकमात्र कसौटी. कोई आर्थिक, जाति, धर्म, रंग, दहेजबंधन नहीं. जिस की अधिकतम उम्र 25, न्यूनतम लंबाई 5', हिंदीभाषी, सुशिक्षित हो, व्यक्तिगत या अनाथालय वाले भी संपर्क करें, शीघ्र एवं सादा विवाह. आदर्श जीवन जीने की गारंटी. वि.नं. 1134, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, राजपूत, पोस्ट ग्रेजुएट, बैंक सेवारत, विवाह के तुरंत बाद विवाह विच्छेद, युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 1135, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, विधुर, 38 वर्षीय, 170 सें.मी., बी.काम., केंद्र सरकार में पी.ए., 4,000/- मासिक, अपना मकान, जयपुर में दो बच्चे, एक लड़का 5 वर्ष व एक लड़की 8 वर्ष, पत्नी सड़क दुर्घटना में मृत्यु 24 सितंबर 93 को, विधवा व तलाकशुदा भी मान्य. पहले

ही पत्र में पूरा विवरण शीघ्र भेजें. वि.नं. 1136, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरे, आकर्षक, स्मार्ट, उ.प्र., प्रतिष्ठित परिवारीय, अमेरिका कार्यरत, पीएच.डी., इलेक्ट्रिक इंजीनियर, 27, 175, हेतु गोरी, सुंदर,स्मार्ट, डाक्टर, उच्च शिक्षा, पीएच.डी. वधू चाहिए. Resident 1640, Hancock, C.T. Brookfield Wi. 53045 U.S.A.

अग्रवाल, बीसा गर्ग गोत्री, 23 वर्षीय, 167 सें.मी., प्रतिष्ठित परिवार, सराफा व्यवसायी, आकर्षक युवक हेतु. विज्ञापन अच्छे चयन हेतु. वि.नं. 1137, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 35, 162, एम.काम., बैंक क्लर्क, 4,000/-, तलाकशुदा, संतानरहित हेतु आकर्षक, सुसंस्कृत, शिक्षित वधू चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता, अन्य जाति के प्रस्ताव भी स्वीकार. वि.नं. 1138, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौधरी (धोबी), आयु 29, लंबाई 165 सें.मी., मासिक आय रु. 6,000/-, स्वस्थ, रूपवान हेतु सुसभ्य, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष एवं कम से कम 10वीं कक्षा पास वधू चाहिए. शादी शीघ्र Naresh Choudhary P.B. No. 1649 Doha Katar (A.G.).

हिंदू, 39 वर्षीय, तलाकशुदा, शारजाह में उत्तम व्यवस्थित, पांच अंकीय आय, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. दहेज नहीं. यदि संभव हो तो वापसी योग्य फोटोग्राफ भेजें. लिखें : The Advertiser, Post Box 20989. SHARJAH (U.A.E.)

ग्रेजुएट, कुलीन, दिखने में पूर्ण युवक, खूबसूरत, शाकाहारी, अविवाहित, साधारण आदतों का, 40, 175, प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवार, हिंदीभाषी, कलकत्ता में निजी घर, पिता स्वर्गवासी, प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय उद्योगपति हेतु घरेलू, आकर्षक, युवा, उत्तम पृष्ठभूमि कन्या. कन्या ही मुख्य विचारणीय. वि.नं. 1139, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 24, 169, सरकारी सेवारत, पंजाबी सचदेवा, हेतु सरकारी सेवारत वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 1140, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिटायर्ड प्रोफेसर हेतु जीवन सहयोगी, सुशील, स्वस्थ, बंधनमुक्त, शिक्षा कार्य रुचि, पूर्ण विवरण लिखें. वि.नं. 1141, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33½ वर्षीय, 165 सें.मी., दृष्टिहीन, लेक्चरर, 5,500/- मासिक, एम.ए., बी.एड., अंगरेजी डिप्लोमा, स्पेशल एजुकेशन, उत्तम प्रकृति, हेतु सुयोग्य, ग्रेजुएट वधू. प्राथमिकता 32 वर्षीया से नीचे. दहेज नहीं. जाति, रंग, पंथबंधन नहीं. वि.नं. 1142, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44 वर्षीय, एम.बी.ए., बंबई स्थापित युवक हेतु सुयोग्य वधू प्रस्ताव आमंत्रित. जातिबंधन नहीं. तलाकशुदा, विधवा मान्य. वि.नं. 1143, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित औद्योगिक परिवार के अग्रवाल बंसल, 25, 182, चार्टर्ड एकाउंटेंट, आकर्षक व्यक्तित्व, परिश्रमी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सुसंस्कृत, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित, सजातीय, परिवारीय वधू चाहिए. वि.नं. 1144, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू, जाटव, 25, 160, संभ्रांत परिवार, प्रबंधक, निजी जूनियर हाई स्कूल, हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. वि.नं. 1145, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, निर्व्यसनी, शाकाहारी, लंदन कार्यरत, 27½, 173 सें.मी., चार्टर्ड एकाउंटेंट तथा 25, 178 सें.मी., मेडिकल डाक्टर हेतु उपयुक्त, कुलीन वधुएं चाहिए. JAINS, 25, NAPIER ROAD, WEMBLEY (MIDDX), HAO 4UA. U.K.

हैदराबादवासी, अग्रवाल बंसल गोत्र, 23/170, एम.बी.ए., पांच अंकीय आय, निजी व्यवसाय, हेतु शिक्षित, घरेलू, खूबसूरत, गौरवर्ण वधू. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 1146, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, सिंधी, तलाकशुदा, एक आंख में हलका दोष, संपन्न परिवार, दायित्वमुक्त, आय पांच अंकों में, व्यवसायरत हेतु निर्धन, बेसहारा, तलाकशुदा, सजातीय जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 1147, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, आत्मनिर्भर, सुस्थापित, विकलांग, इंजीनियर हेतु सुयोग्य जीवनसाथी चाहिए. बंधन नहीं. वि.नं. 1148, सरिता, नई दिल्ली-110055.

52, 167, 6,500/-, अग्रवाल, राजपत्रित अधिकारी (शिक्षा विभाग), विधुर, जयपुर निवासी, निजी आवास, दायित्वमुक्त हेतु सुयोग्य, दायित्वमुक्त जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 1149, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ (अंबष्ठ), 29, 5'8", स्मार्ट, स्नातक, व्यवसायरत, बिहार (हजारीबाग) निवासी हेतु लंबी, गोरी, आकर्षक, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, स्नातक वधू चाहिए. वि.नं. 1150, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 29, 160, 3,200/-, सरकारी संस्थान में सेवारत, दिल्ली निवासी हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. कार्यरत को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1151, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 166, जायसवाल, स्मार्ट, गेहुआं रंग, बी.ए., निजी व्यवसाय, मकान, हर तरह से सुविधासंपन्न युवकार्थ, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 1153, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, सुंदर, सुशील, शिक्षित, पारिवारिक, 30/35 वर्षीया वधू चाहिए. संपन्न अधिशासी अभियंतार्थ. निसंतान विधवा मान्य. बरनवाल अग्रवाल को वरीयता. विस्तृत जानकारी शीघ्र, सुंदर संबंध हेतु लिखें. वि.नं. 1154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 27, 167, 7,000/-, बी.काम., कंप्यूटर में डिप्लोमा, निजी मकान, सुसंपन्न, भाई एडवोकेट, युवक हेतु दिल्लीवासी गृहकार्यनिपुण, सुयोग्य, आकर्षक वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 1155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, मुद्गल, उ.प्र. का प्रतिष्ठित परिवार, इकलौता पुत्र, 27, 6,500/-, 169, बी.ई. मैकेनिकल, विद्युत मंडल में इंजीनियर, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 1156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27 वर्षीय, 175 सें.मी., एम.ए., एलएल.बी., निजी व्यवसाय, 55 एकड़ फार्म तथा चार प्लाट, आय पांच अंकों में, हेतु सुंदर एवं सजातीय वधू चाहिए. वि.नं. 1157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चंद्रवंशी (भुर्जी), 28, 172, स्नातक, सार्वजनिक संस्थान में कंप्यूटर आपरेटर पद पर कार्यरतार्थ स्वस्थ, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. प्राथमिकता बी.टी.सी./बी.एड.. वि.नं. 1158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लंबे, आकर्षक, गोरे, वार्ष्णेय व्यापारी लड़के, 25, 176, के विवाह हेतु प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, गोरी, घरेलू लड़की (157 सें.मी. या अधिक) का संबंध निमंत्रित है. वि.नं. 1159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कुर्मी क्षत्रिय, 26, 5'11", 5,200/-, असिस्टेंट सेंट्रल इंटेलीजेंस आफीसर, आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर, सुसंस्कृत वधू चाहिए एवं 24, 5'3", एम.ए., सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु अधिकारी वर्ग, इंडस्ट्रियलिस्ट वर चाहिए. वि.नं. 999, सरिता, नई दिल्ली-110055.

तेली, 24, 160, बी.ए., बी.एड., सुंदर बहन एवं 27, 172, एम.बी.बी.एस. भाई हेतु उच्च शिक्षित वरवधू चाहिए. दहेज इच्छुक न लिखें. वि.नं. 1161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सोनकर (खटीक), 24/160, स्नातक, सुंदरी एवं 32/165, 6,500/-, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (जी.आई.सी.) युवक हेतु जीवनसाथी चाहिए. वि.नं. 1162, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27, 180, एम.ए., मास कम्यूनिकेशन फोटो पत्रकार, मासिक आय 4,500/-, हेतु शिक्षित वधू एवं 24½, 168, एम.ए., सुंदर, सुशील कन्या हेतु सेवारत या व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 1163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आसनसोल निवासी, बरनवाल, सुंदर कन्या, बी.ए., 22, 5'3", गृहकार्यनिपुण हेतु सरकारी सेवारत वर तथा 26, 5'9", बी.काम., सी.ए. अध्ययनरत, टैक्स कंसलटेंट, सुंदर, स्मार्ट लड़के के लिए ग्रेजुएट तथा गृहकार्यनिपुण वधू चाहिए. यू.पी. तथा दिल्ली तरफ के मेन रेलवे लाइन के निवासी को प्राथमिकता. वि.नं. 1164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा पंचाल ब्राह्मण (लोहार), 32/161, 3,500/-, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, जीवन बीमा निगम, निजी मकान, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर सुयोग्य कन्या एवं 28, 148, एम.ए., साफ रंग, सुंदर कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 1165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

एक स्वस्थ, सुशील, गरीब, बेसहारा कन्या गोद चाहते हैं. आयु, जाति, प्रांत, शिक्षा बंधन नहीं. वि.नं. 1166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लेखकों के लिए

लेखकोपयोगी पत्रिका, पुस्तकें, शिविर आवास, पुस्तकालय, पर्यटन, पत्रव्यवहार. विवरणी मंगाएं : मनमुक्ता महाविद्यालय, पांवटा साहिब-173025 (हि.प्र.).

पुस्तकें

हर आयु वर्ग के लिए सुरुचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक पुस्तकों की सूची के लिए लिखें. वि.नं. 1167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

42 वर्षीय, प्रोफेशनल कंसलटेंट एक्जीक्यूटिव हेतु स्मार्ट, परिपक्व, शिक्षित, 35 वर्ष तक की महिला सेक्रेटरी प्रबंधकीय श्रेणी चाहिए. बंबई में आवास की सुविधा दी जा सकती है. लिखें : वि.नं. 1169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिसेप्शनिष्ट, एकाउंटेंट्स, टाईपिस्ट, स्टेनो, कंप्यूटर आपरेटर्स, मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव्स (लड़के/लड़कियां) चाहिए. संपर्क : Any Way Placement, UG-59. Palika Place, Panchkuian Road, 345254.

व्यवसाय

अमेरिकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,000, उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.

फूल एवं सब्जियों के बीज गर्मियों के मौसम की, गार्डन टूल्स, खाद, किताब आदि उपलब्ध. मुफ्त लिस्ट हेतु लिखें : To: IKEBANA, C-135, Mauryalok Complex, Patna-800001.

नाम पते के रंगीन स्टीकर छपवाएं मात्र 25 रु. में 100. एजे लेमीनेट, ¾, शब्द. प्रताप आश्रम, ग्वालियर-474012.

गोरिका स्टीकर बिंदी, गोरिका हर्बल मेहंदी हेतु हर जिले में वितरक चाहिए. स्टाकिस्ट संपर्क करें : गोरिका प्रोडक्ट्स इंडिया, पोस्ट बाक्स नं. 2612, नई दिल्ली-110005.


Parle-G
PARLE
Gluco
BISCUITS
स्टंप उड़े तो क्या बोले ? खेल की सच्ची शक्ति हैं जी
पारले-जी
स्वाद भरे, शक्ति भरे.
भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट.
everest/93/PP/173-hn